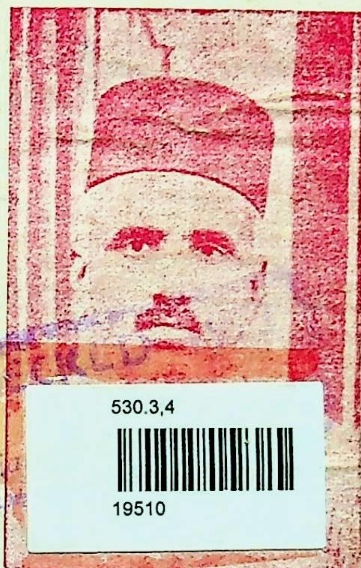
आयुर्वेदा[illegible]ति की मासिक पत्रिका

पुराणायुर्वेद

# अनुभूत योगमाला








वा० मू० ४)
इस अङ्क का
चार रुपया
१५ जून
सन् १९४३



सम्पादक व प्रकाशक—

चि० चू० पं० विश्वेश्वरदयालु वैद्यराज
बरालोकपुर-इटावा ( यू० पी० )

अधिकृत पृ० २ से १२० तक
पृ० १२१ से ३१८ तक

# विशेषता

इसमें अन्य आयुर्वेदीय ग्रंथों से भी कुछ विशेषतायें हैं, तैल मदन की विशेषता पृ० ३० पर, अजीर्ण से ही रोग होते हैं, पृ० १३१। औषधि देने का मंत्र, औषधि संग्रह के मंत्र और विधान ७२। वृक्षायुर्वेद, गवायुर्वेद। अश्वायुर्वेद। हयायुर्वेद। बालतंत्र ७३। केशकृष्णीकरणम् १०३। पंचपल्लव १७४। दंत कटकटहरं २ ४। चोरवारण। रक्तदन्तकरण २२६। दंतश्वैत्यकरणम् २३२ दधिभक्षण। हिंसकजंतुवारण २४२। पारदमारण २४४। रौप्य और हेमकरण। इन्द्रजालम् २४४। एक २ औषधि के अनेक योग यथा।

## एक एक वनौषधियों के योग

कृमिरोगे—विडंग-गोमूत्र के साथ देना या मधु के साथ ५३

कर्णरोगे—बकरे का मूत्र, केले का रस नमक मिला गरम कर डालना इसी प्रकार. सेंजना, आद्रक रस का डालना, कर्णस्रावे-वस्तमूत्र १७५

वृष्ये—शतावरी रस दुग्ध से सिद्ध घृतपान।

मूत्र दोषे—वचादि घृत

व्रणरोपणे—निम्ब चूर्ण, गूगल दूध में पीस भस्म कर भरना, नारियल गरी घृत का सेक ३७

सर्प विषे—निम्ब १२

शिरीष पुष्प रस भावित श्वेत मिर्च प्रयोग ६८

शिरीष पंचाग ६८

वृश्चिक विषे—पलाश बीज अर्क दुग्ध से

विरेचने—त्रिवृत, स्निग्धस्विन्न-यवतोय ५७

वमने—मदन फलम्

नासारक्ते—दूर्वा स्वरस नस्यम्

रक्तपित्ते—वासारस-मधु ३५

श्लीपदे—शाखोटक क्वाथ समधु

कासे—श्वासे अरुचौ-आद्रक रस मधु ४४

कासे—शिरस पुष्प भावित

मिरच मधु से देना ४५
विषे—अंकोल, तंडुली, निगुंडी
प्रयोग
वातरक्ते—गुडूची सेवन ५०
क्रोष्ठुशीर्षे—गुग्गुल गुडूची
क्वाथ से ५१
वाजीकरणे—आमलातद्रस
भावित दुग्ध से ५४
रसायने—भूमी आमला १
तो० मधु से ऊपर से दूध
पीना या निर्गुण्डी चूर्ण सेवन
५६, पलास तैल ६ मास तक
पीना मालकंगुनी पत्र रस
दुग्ध से ५६, रुद्रवन्ती चूर्ण
मधु, घृत से ६०,अशोक चूर्ण,
पुनर्नवा चूर्ण, ६१, कूष्माण्ड
चूर्ण
मूषकविषे—कर्पास स्वरस
पान ७०, गुलाबांस के फूलों
का सतैल लेप ७०, शिरषि
बीज मट्ठे में पीस लेप करना ७१
प्रदरे—रक्त, शुक्ल ओढहुलपुष्प
भक्षण ८६
प्लीहा हरं—पिप्पली ९५
अजीर्ण से ही रोग होते हैं
अर्शे—निर्गुण्डी रस साधित
घृत १५५
स्वरभंगे—तैलाक्तखदिर धारण
छर्दिहरं—त्रिफला मधु युक्त
अश्मरीहरं—शिग्रुमूल क्वाथ १६०
प्रमेहं—आमलक रस मधुयुक्त
उदर रोगे—चित्रक घृत १६१
प्लीहाहर—वर्द्धमान पिप्पली
शोथे—पुनर्नवा घृत
अंत्रवृद्धौ—वला तैलम् १६२
कंठमाला में—निर्गुण्डीमूल
नस्य
गलगंडे—हस्तिकर्ण पलाश लेप
व्रणे—शरपुंखा मधु युक्त लेप
विद्रधौ—शोभाञ्जन क्वाथ
हिंगु नमक युक्त
नाड़ीव्रणे—निर्गुण्डी तैल १६५
भग्ने—रसोन योग
दद्रौ—आरग्वध पत्र लेप
कुष्टे—वाकुची प्रयोग, भल्लातक
तैल योगः १६६
पामायां—दूर्वा रस तैलम्
अम्लपित्ते—पिप्पली मधु युक्त
मशके—रसोनघर्षणम्
कर्णस्रावे—जातीरस तैल
प्रतिश्याये—लंघनम् १७५
नेत्रकोपे—धात्रीरस पूरणम् १७५

शोभाञ्जन पत्ररस २०८
आटरूषकमूत्र लेप २१०
वदरीमूल लेप
राज्यान्धे—दध्नामरिच
अंजनम् १७६
शिरो रोगे—मुचकुन्द पुष्पलेप
असृग्दरे—कुशमूल पानम् १७९
योनिक्षते—वदरीपत्र लेपः १८०
वन्ध्यारोगे—लक्ष्मणा नस्य
मक्कलशूले—यवक्षार
स्तन्यवृद्धौ—शालितंडुल योग
स्तन्य शुद्धौ—कर्पासमूल रस
हिक्कायां—मातुलुंग रस १८२
सर्पविषे—शिरीषमूल पान
वाजीकरणे—विदारीकंद योग
केशसूक्ष्मे—आम्रास्थि लेपः
केशकृष्णे— शंखचूर्ण सीसक
लेप २०६
तिमिरे—गुञ्जामूल
कामलायां—देवदाली नस्य
नासार्शसि—कोंचमूल नस्य
मुखरोगे—जातीपत्रचर्वण २१२
दंतदढ़े—वकुलफल चर्वण
गलशुण्डौ—निर्गुण्डीमूल
चर्वण
दंतकीटे—गुञ्जामूलचर्वण
दंतकटकटे—कर्कटघृतम्
विषम ज्वरे—काकजंघारस,
गोपुरीष रस घृतम्
संघातवाते—वृहतीमूल पान २१९
अस्थिभंगे—अस्थि संहारक
योग
पादस्फुटौ—कटु तैल लेपः
शस्त्राघाते—आम्रमूल रस
व्रण रोपणे—काकजंघा लेप २२०
अक्षिरोगे—निम्बमूल वंधनम्
कटौ।
वृद्धताहरणे—लांगली कंद
लेपः।
रोगोत्थाने—चंदन नस्य।
सर्प दूरी करणं—सुदर्शनामूल
रक्षणं। २२२
वश्ये—खंजरीट मांस लेप-




वंधनम्। भूलताप्रयोग २३०
पुत्र प्रदं—मातुलुंगबीजयोगः।
रजोरोधे—पलाश बीज मधु
युक्त भक्षण।
कर्णस्रावे—मूलकरसनिक्षेप। २२६

कर्णशूले--अर्कपत्र रस पूरणं ।
कर्णकृमौ—कटुतैल प्रयोगः ।
श्वास कासे—चित्रक भस्म ।
दधि प्रयोग— २३२
×वाजीकरणे—गुडभक्षणम् ।
बुद्धिवर्द्धने—भुक्ते शर्करा
भक्षणम् २३३
बलीपलिते—कुष्टचूर्ण स्वप्ने
प्राशनम् ।
क्षये—कुलीर चूर्ण । २३४
रक्तप्रदरे—मधुयुक्तदुग्धपान २३६
शीघ्रप्रसवे—आटरुषक मूललेप
रक्तातिसारे—तण्डुलजलपानम् ।
चातुर्थिकज्वरे—पुष्पदानम् ।
प्लीहायां—सूरण भोजनम् । २३६
अजादुग्ध—आर्द्रक रसयुक्त पानम्
अर्शसि—आटरुषकपत्ररसेन घृत
पाकम् । श्वेतगुञ्जामूलबंधन
अग्निदग्धे—यवमसीलेपः
ज्वरे—निर्गुण्डी मूल बंधः ।
चोर—व्याघ्रादिरक्षणे-विष्णुक्रांता,
ब्रह्मदण्डीमूल लेपः
कुष्टे—त्रिफला प्रयोग । २४२
शुक्रवृद्धौ—वानरीबीजयोगः
×रौप्य करण । हैमकरण ×समाधौ
मसूर बीज तैलम् ।
पाण्डुरोगे--तक्रेण लोह सेवनम्
अजीर्णे--जातीमूल । कोलमूल
कुशमूल । मर्कटीमूल प्रयोग ।
दन्तरोगे—वाकुची मूल धारण
विषे--इन्द्रवारुणी । कदली मूल
रस योगः ।
शिरोरोगे—गुञ्जा लेपः ।
कंठमालायां--निर्गुण्डीमूल पानम्
शोषे--काकजंघा ।
पृष्टशूले--मृग श्रृंगभस्म प्रयोगः
शम्बूक भस्म प्रयोगः २४७
शूले--अपामार्ग मूलम् २४८
अतिसारे--वटाङ्कुर प्रयोगः
स्नुहीदुग्ध पानम् २४६
श्वासे—विभीतक भक्षणम् ।
पक्ष्मशाते--देवदारु अंजनम् ।
मूत्ररोधे--मालती मूल प्रयोगः ।
गलगंडे--भारंगी लेपः ।
उपदंशे--पूगफललेपः । करवीर
मूल लेपः ।
भगंदरे--जलौकारक्त प्रयोगः ।
अर्शसि--घोषाफल लेपः ।
हरिद्रा लेप ।
रक्तार्शे--दग्धबिल्व फल
प्रयोगः २५३
रसायने--पलाशपत्र योग ।
पलाश बीज प्रयोगः ।

केशकृष्णी करणे--त्रिफला लेपः ।
नेत्ररोगे—त्रिफला अंजनम् २५६
रसायने—भृंगराज प्रयोगः २५७
प्रहारे—घृत प्रयोग, अपामार्ग योग
शल्ये—लांगली प्रयोगः
रक्तदोषे--भारंगीफल प्रयोगः २५८
भूतदोषे—श्वेतापराजितायोग २५६
पटले-- ,, २६०
मकरादिभये-- ,, २६३,
गंडमालायाम्-- ,, २६३
श्वेतकुष्टे-- ,, २६६
शिरःशूले—अगस्त पुष्प नस्यम्
दन्तकीटे—गोत्तुरमूलचर्वणम् २६०
गुल्मे—अर्कमूल प्रयोगः २६०
प्रसूतौ--श्वेतार्कपुष्प प्रयोगः २६१
सर्पवारणे-- ,, २७१
ज्वरे—पलाशमूल,
अपामार्गमूल २६१
दाहे—पुनर्नवामूल प्रयोग
ज्वरे च २६१
विषेच, विद्रधौ २६४
सर्पवारणे २७१
वश्ये—लज्जालु प्रयोगः,
विषे—पाठामूल योगः,
शिरीष योग २६२
कामलायाम्—रक्तचित्रक प्रयोगः?
क्षये—कोकिलाक्ष योगः ?
रक्तस्रावे—नारिकेलपुष्प योगः२६२
भूतबाधायाम्—सुदर्शनामूल योगः
सर्पविषे—श्वेतगुञ्जामूल योगः,
ग्रह सिंहादिपशुभीतौ २६३
बाहुस्तम्भे—इन्द्रायणमूल योग,
प्लीहाहरम् २६४
उदररोगे—कदलीक्षार प्रयोग२६४
कृमौ, २६५
सिध्महरं २६७
कुष्टे—निम्बदलयोगः २६५
दद्रौ—तक्रयोगः २६५
श्वेतकुष्टौ–सोमराजीबीजयोग २६६
शीतपित्ते—खंभारी प्रयोगः २६६
सिध्मे—कूष्माण्डक्षार प्रयोग २६७
सौंदर्ये—हरिद्रा प्रयोगः २६७
घर्मदोषे—दुग्धसेकः २६८
सौन्दर्ये—काकजंघा प्रयोग २६८
रक्तपित्ते—वासकयोग २६६
वमने—दूर्वायोगः २७०
सर्पविषे--तण्डुलीमूलयोगः २७१
दंशकविषे—कूष्माण्डस्वरस २७२
ताम्बूलदग्धे—शीतजलपानम् २७२
मदात्यये—घृतपानम् २७२
गरविषे—कृष्णांकोलमूलम् २७२

वृश्चिकदंशे—घृतयोगः २७३
खर्जूर विषे—दीपतैलम् २७३
कुक्कुर विषे—शिरीषबीज २७४
दर्दुर विषे—अग्निसेक २७४
कुक्कुर विषे—धत्तूर रस २७४
अश्वकण्डौ—घृतकुमारीयोग २७५
बुद्धिवृद्धौ—वचाप्रयोगः २८१
व्रणे—सर्षपतैलम् २८६
योनिशूले—पुनर्नवायोग २६४
स्तनशूले—इन्द्रवारुणीलेपः २६५
योनिभ्रंशे—कारवेल्लक प्रयोग २६५
मसूरिकायां—पाठामूल योगः वास्योदकञ्च २६५
पुत्रपुत्रीपरीक्षायाम्—अपामार्ग मूलम्। गर्भशूले च २६७
रसायने—पलाशबीजयोगः २६८
आमलकयोगः। कुष्टयोगः। चूर्णम्। माषप्रयोगः ३००
कृमिहरं—वरुणफलरस

इसकी विशिष्टतायें चारचांद लगा देने वाली हैं यह इसके आदि काल के और प्राथमिकज्ञान के द्योतक।

# विशिष्ट-सूची

ज्वरे—२, ४२, ४३, ८५, १४६, २०१, २०४, २१६, २३०, २३८, २३६, २४२, २६०, २६१, २८६
रक्तपित्ते—३, १५५, ३५०, २३१, २३८, २६८, ५३
अतिसारे—४, १५१, ३७, ५३, ५४, २३६, २४८,
ग्रहण्याम्—४, १५२, २३६, २४८
पाण्डौ—३५, १५५, २४४, ८६, २११, २३७
क्षये—६, १५५, ७, ३६, ५२, २३३, २४७
कासे—६, १५५, ४३, ४५, ८६, २३१, २६६, २८५
श्वासे—६, १५५, ४४, ८५, २३१, २५०
हिक्कायां—६, १५५, ४४, ८५
स्वरभेद—१५६, २६६, २८१, २३१
वमने—८, १४, १५६, १७२, १४, ४०, ४४, ४७, ५६, २३८, २७०, १८७
अपस्मारे—४५, १५६, ८४, २३८, २८४
अर्शरोगे—८, ३४, ५२, १५३, २४२, २४१, २५३, २६६

घृष्ये—१२६, २२१, ११
गुल्मे—४, ३६, ५२, १२६, २६०
उदररोगे—४, ३५, १६१, २६४
कुष्ठे—४, ३४, ४६, २६७, १७०, २४०, १६७, २३६, २४२,२६५ २६६, १७१, २५८, २८२,२८४
प्रमेहे—५, ३४, १६०, २४६
शोथे—६, ३६, ५१, १५७, १६२
वातरोगे—७, १२, ५०, ५१,१५८ १६३, १६७,१६८, २१७, २१८ २३७, २१५, २८३,
मदात्यये—७, २७२,
उरःक्षते—७, ३७
मूत्रकृच्छ्रे—८, ३८, १६०, २४१,
उरुस्तम्भे—६, १५७, २१८, २३७
वातरक्ते—६, ५०, १५
तृष्णायाम्—८, ३८, ४४, २६६
विसर्पे—६, ३६, १७२
नासारोगे—६, १७५, २५०
शिरोरोगे—६, ५५, १७७, १७८, १८५ २०५, २०६, २०७, २४५,
दन्तरोगे—१०, ३३, १७४, २१४, २४५, २५१, २२६, ३६०, २३२
कर्णरोगे—१०, ३३, ५६, १७४, २०७, २७६, २८२, २२६, २२८
नेत्ररोगे—१०, ५६, १७५, १७६, २५०, १७७, २०८, २०६, २१०, २४१, २८२, २२८, २६०
नासारोगे—३२, २१२,
ओष्ठरोगे—३३, २१२
जह्वारोगे—३३
मुखपाके—३८, १७४, २१२, २१५, २४४
कंठरोगे—३८, २१३ २१४
कृमिरोगे—१०, ३३, ५३
स्त्रीरोगे—१२, ३२, ५५ ८६, २६४, ८७, ८८, ८६, १७८, १७६, १८० १८१, २२५, २६६, २२६, २३०, २३१, २३५, २३६, २४२ २४५, २६१, २६७
बालरोगे—३२, ३३, ७३, १८१, १८३, २६७
वलीपलितौ—११, ४०, ४७, ८६, १७३, २२२, २३३, २३२
विरेचने—४०, १७३, २३७, २८६, ५७
वाजीकरणे—५४, ८७, २२४, २३३, २४३, २६४, १८५, २०८
भूतदोषे—११, २५६, २२१, २५६
व्रणे—१२, ३६, ४८, २४६, २५८, २८३, १६३, १६४, १६५
सर्पविषे—१२, १८३, २७०, २७१, २४४
वृश्चिकविषे—१३, ४५, २७३, २३५
श्वानादिकीट विषे—१३, ६७ से ७२, ७३, २७२, २७३, २७४
प्लीहायाम्—३५, १६१, २३६, २४६, २६४

विद्रधौ—४८, २५८, २६४, ३६
आमवाते—५०, १५७
गंडमालायाम्—३४, १६३,
१९९, २४१, २५१
भगंदरे—३६, ४६, १६५, १९९,
२४१, २५३
शूले—३७
श्लीपदे—३८, १६३
पादरोगे—
अश्मरिनाशने–३८, १६०, २५२,
मंदाग्नि व अरोचके—४४, १५८,
२२०, २४५, २७५
मूर्च्छा—४५, १५६,
उन्मादे—४५
उपदंशे—४७, १६६, २५२,
क्रोष्टुशीर्षे—५१
रसायनम्—५४, ५८, ६४, २९८
१८४, २५४, २५५, २५६,२५७
वशीकरणे—८७
व्यंगे—८७
शूले—१५८,१५९,२३३,२४०,
२४६,२४७,२४८,२४९,२५९ २८५
उदावर्त्त—आनाहे, १५९,
मूत्राघाते—१६०, २५१,
स्थौल्पकरं—१६१, २३३,
कृशताकरं—१६१
मंत्रवृद्धौ–१६२, २८१, २८४,२९८

विबंधे—१६४
भग्ने—१६६, २१८
अम्लपित्ते—१७१
विस्फोटे—१७२
मसूरिकायाम्—१७३, २९६,
क्षुद्ररोगे—१७३, २०५, २०६,
२१९, २६४,
दाहे—२१६, २१७
हृद्रोगे—२१६, २३३, २४६
निद्राकरम्—२१७
अग्निदग्धे—२१९, २२१, २४१
आघाते—२२०, २५७, २५८
देहकान्तिकरं—२२१, २६७
वश्ये–२२१,२२४,२२५,२१९,२४३
सर्पादिहरणम्–२२२, २२३, २३०
चोर वारणम्—२२४, २४२
विसूचिकायाम्—२४९
ग्रीष्मप्रवाधिकाहरम्—२६८, २६८
ताम्बूलदग्धे—२७२ गरे—२७२
गजायुर्वेद—९०, २९३
हयायुर्वेद—९५, २८७
गवायुर्वेद—१०३, ८९, ३००
वृक्षायुर्वेद–१०६ निघण्टुकम्–१०१
शारीरम्–१०८ पारदमारण–२४३
रौप्यकरणम्—हैमकरणम्,
इन्द्रजालिकम्—२४४

# सम्पादकीय

यद्यपि आयुर्वेद शास्त्र अपार है इसे ब्रह्मा जी ने एक लक्ष श्लोकों में कहा था ऐसा बहुत से स्थलों में देखने को मिलता है। इसको सबसे प्रथम आत्रेय जी ने ही जो इस शास्त्र को पृथ्वी पर सबसे प्रथम अवतीर्ण करने वाले हैं। कहते हैं—

**आयुर्वेदोऽपार एव श्लोकानां लक्षसंख्यया। आ०**

इसी का समर्थन सुश्रुताचार्य्य सुश्रुत में करते हुये कहते हैं।

**श्लोकशतसहस्रमध्यायसहस्रं च कृतवान् स्वयंभूः। सु०**

इस लिये यह तो सिद्ध हो ही गया कि आयुर्वेद एक लक्ष श्लोक वाला था, परन्तु संसारिक जीवों की आयु को कम देखकर आत्रेयादि ऋषियों ने इसे सूक्ष्म करके लोकों में प्रवृत्त किया, अर्थात् युग युग में इसका ह्रास होता चला गया। स्वयं आत्रेय जी ही कहते हैं कि मैंने सबसे पहिली सहिता चौबीस हजार श्लोकों की बनाई। इसके बाद दूसरी बारह हजार श्लोक वाली संहिता बनाई। तीसरी संहिता छः हजार श्लोक वाली बनाई और चौथी संहिता तीन हजार श्लोक वाली ही बनाई। पांचवीं संहिता पन्द्रह सौ श्लोकों वाली ही बनाई। इस प्रकार पांच संहितायें प्रत्येक युग के पुरुषों के अनुरूप ही बनाई गई प्रतीत होती हैं।

इसमें चौबीस हजार श्लोक की प्रथम आत्रेय संहिता का तो पता नहीं चलता परन्तु दूसरी बारह हजार श्लोक वाली आत्रेय संहिता इस समय चरक संहिता ही मालूम देती है। लिखा भी है—

यस्यद्वादशसाहस्री हृदि तिष्ठति संहिता।
सोऽर्थज्ञः स विचारज्ञश्चिकित्सा कुशलश्च सः॥
च० चि० अ० १२

तीसरी संहिता—छः हजार श्लोकों वाली अप्राप्य है। जिसे हम आगे प्रकाशित करने वाले हैं संग्रह करचुके हैं। और चौथी—तीन हजार श्लोकों की हारीत संहिता है। यहभी आत्रेय संहिता कही जासकती है।

पांचवीं—१५०० श्लोकों की संहिता का पता अभी तक कहीं भी नहीं था पुराणों के देखने से यह संहिता गरुड़पुराणगत मालूम देती है। कारण सुश्रुत को या धन्वन्तरि को पढ़ाने वाले आत्रेय जी ही इसका वर्णन करते हैं। निदान और चिकित्साक्रम को मिलादेने से १५०० श्लोक पूरे इसमें हो जाते इससे यह पांचवी आत्रेय संहिता कही जा सकती है। यदि शिष्योपक्रम देखा जाय तो चरक के अनुसार निम्न ऋषियोंने आत्रेय से ही आयुर्वेद पढ़ कर उसका प्रचार किया। यथा—

अग्निवेशश्चभेडश्च जतूकर्णः पराशरः।
हारीतः क्षारपाणिश्च जगृहुस्तन्मुनेर्वचः॥ ३१॥
तंत्रप्रणेता प्रथममग्निवेशोयतोऽभवत्।
अथभेडादयश्चक्रुः स्वं स्वं तंत्रं कृतानि च॥ चरक अ० १

इस प्रकार आत्रेय के यह छः शिष्य हुये जिन्होंने ६ तंत्र रचे इनमें जतूकर्ण और क्षारपाणि के ग्रन्थों का पता नहीं कि इन्होंने कौन ? ग्रन्थ रचे थे। अग्निवेश का चरक, भेड की भेड संहिता, पराशर की पराशर संहिता, हारीतकी हारीत संहिता, के कुछ भाग अभी भी दृष्टिगोचर होते हैं।

इस प्रकार आत्रेय सम्प्रदाय में ५ आत्रेयकृत और छः उनके शिष्यों द्वारा रचित ११ संहितायें थी, धन्वन्तरि संप्रदाय में औपधेनव, वैतरण, उरभ्र, पौष्कल, आवत, करवीर्य्य, गोपुर रक्षित, सुश्रुत आदि आठ शिष्य एवं तंत्रकार हुये।

ब्रह्मवैवर्त्त के मत से ब्रह्मा जी ने सूर्य्य को प्रथम आयुर्वेद दिया, बाद को सूर्य्य ने अपने शिष्यों धन्वन्तरि, दिवोदास, काशि-राज, अश्वनीकुमार, नकुल, सहदेव, अर्कि, च्यवन, जनक, बुध, जाबालि, जाजलि, पैल, करथ, अगस्त्य को पढ़ाया, इन्होंने क्रम से अपनी २ संहितायें बनाई, यथा धन्वन्तरि भगवान ने चिकित्सा तत्व विज्ञान नामक ग्रंथ रचा। दिवोदास ने चिकित्सादर्पण, काशि-राज ने चिकित्साकौमुदी, अश्वनीकुमारों ने चिकित्सासारतंत्र, चिकित्साभ्रमघ्न, नकुल ने वैद्यकसर्वस्व, सहदेव ने व्याधिसिन्धु विमर्दन, यमराज ( अर्कि ) ने ज्ञानार्णव, च्यवन ने जीवदानतंत्र, जनक ने वैद्यसंदेहभंजनतंत्र, बुध ने सर्वसारतंत्र, जाबालि ने तंत्र-सार, जाजलि ने वेदांगसार, पैल ने निदानतंत्र, करथ ने सर्वधरतंत्र अगस्त्य ने द्वैधनिर्णयतंत्र, यह सोलहों तंत्र चिकित्सोपयोगी हैं, इन्हीं से अन्य तन्त्रों की रचना हुई है। अभी तक वैद्यों ने इनके नाम भी नहीं सुने होंगे, फिर तलाश करना कैसा। अब इनकी भी तलाशी कीजिये।

इस प्रकार ३५ तंत्रकार हुये इनकी ३५ संहिताओं में सिर्फ दो ही उपलब्ध हैं और ३३ का कुछ भी पता नहीं।

इन ३३ तंतिस संहिताओं के विषय की खोज एवं संहितायें प्राप्त करना वैद्यों के लिये बहुत ही उपयोगी एवं आयुर्वेद के गौरववृद्धि का कारण होगा। यही समझ कर हमने इनकी खोज में आकाश पाताल एक कर दिया प्रत्येक लुप्त संहिता की खोज के लिये १००) का इनाम भी रखा जो अब भी एक संहिता प्रदान करने वाले को दिया जासकता है। जब इस प्रकार भी आयुर्वेद का साहित्य बढ़ते न देखा, तब ध्यानमें आया कि पुराणों से ही आयुर्वेद का संकलन करनाचाहिये, इस प्रकार भी बहुत कुछ ज्ञातव्य विषय वैद्योपयोगी एवंआयुर्वेदकी गौरव बृद्धिके लिये हो सकेगा। ऐसी धारणा करके ही मैंने अब तक दस पुराणों का प्रतिवचन करके यह संग्रह किया है। इनमें सबसे अधिक सामिग्री गरुड और अग्नि पुराण में ही मिली है, आठ पुराणों का प्रतिवचन शेष रह गया है। जिसके लिये बार २ विद्वानों से प्रार्थना की गई, परन्तु किसी ने भी सहायता का वचन नहीं दिया, इसलिये इसी प्राप्त सामिग्री को लेकर आपके समक्ष मैं होता हूँ, इससे भी बहुत कुछ ज्ञान वैद्यों को मय नवीन जानकारी के प्राप्त होगा। यदि फिर भी समय मिला तो शेष पुराणों को भी देखकर उनसे भी संग्रह कर प्रकाशित किया जावेगा, इसके बाद तंत्र ग्रंथों से भी संग्रह करना है। अच्छा होता कि वैद्य लोग सहायता करना सीख जाते तो प्रत्येक कार्य बहुत ही जल्द हो जाया करता।

चूंकि आत्रेय जी ही प्रथम आयुर्वेद प्रवर्तक हैं, अतः उनका उपदेश मूलभूत ही होगा और उसका विशद वर्णन आगे

चलकर होता गया होगा। अग्निपुराण में आत्रेय और धन्वन्तरि के ही उवाच हैं, जिससे साफ भाषित होता है कि आत्रेय जी ही धन्वन्तरि ( सुश्रुत ) के भी गुरू थे और धन्वन्तरि जी को दिया गया उनका उपदेश सबसे प्राथमिक शिक्षण हैं, विषय भी बड़ा उपयोगी है। गरुड पुराण में निदान, निघण्टु चिकित्सा रसायनादि भाग बहुत ही उपयोगी है, परन्तु निदान भाग को देखने से पता चलता है कि इसका निदान विल्कुल अक्षरशः वागभट्ट ने संग्रह किया है। वागभट्ट में कहीं २ परिशुद्ध पाठ भी है, जो पीछे से संशोधित किये गये हैं, वागभट्ट के टीकाकारों को यह भाग देख कर प्राचीन शब्दार्थों एवं भावों को परिशुद्ध करने में यह बहुत बड़ी मदद देंगे। शंका तो प्रथम यही हुई थी, कि यह अंश वागभट्ट से किसी ने पूर्ण किया है, परन्तु पुराणों की प्राचीनता इस बात को स्वीकार करने से मना करती है। यही हाल चिकित्साक्रम में भी है। सूची में अग्निवेशादि हारीतोक्त निदान चिकित्सा का वर्णन किया गया है। और हारीत ने और भी संहिताओं का होना माना है। यथा—

वैष्णवी आश्विनी गार्गी तत्रमाध्याह्नि कापरा।
मार्कण्डेया च कथिता योगराजेन धीमता॥

अर्थात्–विष्णुसंहिता, अश्विनीकुमारसंहिता, गार्गीसंहिता मध्याह्नि का संहिता, मार्कण्डेय संहितायें भी आयुर्वेद प्रवर्तक थी। इस प्रकार यह पांच खोज के लिये और हैं।

सबसे प्रथम ब्रह्मा ने फिर अत्रि ने और धन्वन्तरि ने एवं अश्विनीकुमारों ने इसका वर्णन किया है। चरक के मत से ब्रह्मा

ने इन्द्र से, इन्द्र ने भारद्वाज से और भारद्वाज ने, आत्रेयादिकों से कहा है। सभी प्रकारों से आत्रेय ही इसके प्रथम प्रवतक होते हैं। भारद्वाज द्वारा आत्रेय को उपदेश देना अन्य पुराणादिकों में कहीं भी उपलब्ध नहीं होता, साम्प्रतिक उपलब्ध ग्रंथों में। कश्यप संहिता में इन्द्र ने कश्यप, वशिष्ट, अत्रि और भृगु को पढ़ाया और इन्होंने अपने पुत्रों और शिष्यों को पढ़ाया।

कश्यप, वशिष्ट, भृगु के शिष्यों का भी तो पता नहीं है अतः वैद्यों को इस तरफ बहुत ही खोज करना है। जो भी संग्रह हमने किया है सबके उपकारार्थ इसकी हिन्दी टीका भी करदी गई है ताकि सबको लाभ मिले। और एक संग्रह के रूपमें स्थाई साहित्य वैद्यों के पास रहे। इससे कितना लाभ वैद्यों को होगा यह आप लोगों पर ही निर्भरहै शायद १५०० श्लोक वाली यही आत्रेयसंहिता गरुड़पुराणोक्त है इस लिये इसे ही यहां देते हैं। आदि में आत्रेय ने सबसे प्रथम इसे ही धन्वन्तरि को दी होगी। यह समुद्रोद्भूत धन्वन्तरि जिन्हें अब्ज कहा है और इन्हें फिर चंद्रवश में धन्व के पुत्र रूप से काशिराज के यहां जन्म लेना पड़ा है उन्हीं आयुर्वेद के प्रवर्तक को सुनाना प्राथमिक मूल सिद्धान्त सूत्ररूप से दिखाना हो सक्ता है। अतः इसे हम आत्रेय संहिता ही मानते हैं।

अत्रि मुनि सृष्टि काल में सव से प्रथम ब्रह्मा के मानसिक पुत्रों में से हैं, अत्रि पुत्र चन्द्रमा हैं, अत्रेरपत्यं आत्रेयः इस व्युत्पत्ति से चंद्रमा ही आत्रेय हो सकते हैं, यह औषधीश होने से वैद्यक प्रवर्तक माने जा सकते है। ऐसा मानने से ही सृष्टि काल

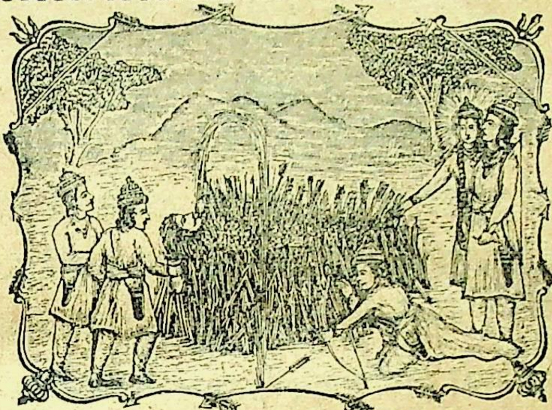
के प्रारम्भ के साथ ही आयुर्वेद का प्रारम्भ काल माना जा सकता है। इसी वंशमें चन्द्रमा के बुध, और बुधके पुरुरवा, और पुरुरवा के आयु, आयु के पांच पुत्र हुए नहुष, रजि, रंभ, अनेना, क्षत्रवृद्धि इन्हीं पांचवीं संतान, क्षत्रवृद्धि के तीन पुत्र हुये कुश, गृत्समद, काश्य, इस तीसरे पुत्र काश्य के काशि और काशि के राष्ट्र और राष्ट के दीर्घतपा जिन्हें हरिवंशकार धन्व उपनाम से भी सम्बोधित करते हैं हुये इन्हीं का पुत्र धन्वन्तरि ब्रह्मा से १३ वीं पीढी में पैदा हुआ इसने ही आयुर्वेद को आठ अंगों में विभाजित कर विस्तारित किया।

चरकाचार्य के मत से भारद्वाज से इस आयुर्वेद के विकाश की बात कही गई है यह भारद्वाज भी इसी आत्रेय वंश के हैं यथा—ब्रह्मा की छटवीं पीढी में आयु के पांच पुत्रों में एक नहुष भी है इनके छः पुत्र हुये याति, ययाति, संयाति, आयाति, बियति, कृति,। इन में ययाति के शर्मिष्टा से द्रुह्य, अनु, पुरु तीन पुत्र हुये, पुरु के जन्मेजय, जन्मेजय के प्रचिन्वान। प्रचिन्वान के प्रवीर। प्रवीर के नभस्यु। नभस्यु के चारुपद। चारुपद के संयु। संयुके वहुगव। बहुगवके संयाति। संयातिके अहंयाति। अहंयाति के रौद्राश्व। रौद्राश्व के घृताची अप्सरा से ऋतेयु। ऋतेयु के रंतिभार। रंतिभार के सुमति, ध्रुव, अप्रतिरथ। यह तीन पुत्र हुये इनमें सुमति के रैभ। रैभके दुष्यन्त। दुष्यन्त के भरत। भरत के भारद्वाज। इस प्रकार आयु की बीसवीं पीढी में भारद्वाज आयुर्वेद के प्रवर्तक हुये। धन्वन्तरि से सात पीढी बाद भारद्वाज हुये। यह दोनों ही आत्रेय कहे जा सकते हैं।

चरकाचार्य अग्निवेश महाराजा युधिष्ठर के समय में हुये है। महाभारत बनपर्व में युधिष्टर के साथ बन में मिलना इनका प्रमाणित होता है। अत: यह भारद्वाज आत्रेय के ही शिष्य हो सकते हैं, और आत्रय कहे जा सकते हैं। आत्रेय के लिये पुराणों में और भी लेख उपलब्ध होते हैं। अत्रि के बंश को आत्रेय कहा जा सकता है। आत्रेय उष्ट्रपयः कल्पभेद, नाड़ीज्ञान, हारीतसंहिता आत्रेय हारीतोत्तरार्द्ध, आत्रेयसंहिता ग्रंथों के रचयिता हुये हैं। इन्हीं की सारभूत १५०० श्लोकों वाली गरुड़पुराणोक्त यह संहिता आत्रेय संहिता है। इसका निदान भाग इस खंड में प्रकाशित न करने के कई कारण हैं। एक कागज की कमी, दूसरे आयुर्वेद में निदानों की अपूर्णता और मतभेद, इस मतभेद को मिटाने के लिये ही दूसरे भाग में उपलब्ध सभी निदानों का संग्रह एक २ स्थान पर करके तुलनात्मक विवेचना कर प्रकाशित करने की उत्कट अभिलाषा ने इसे रोक रखा है यह आगे ग्राहकों की इच्छानुरूप शीघ्र ही प्रकाशित किया जावेगा। तीसरे अन्य पुराणोंके उद्धरण भी शेष रहे जाते है जो कागज की कमी से हम नहीं दे सके। चौथे सात पुराणों का प्रतिवचन भी अभी शेष है यह कमी भी पूरा करने में बाधित है। आशा है यह सभी विषय द्वितीय भाग के प्रकाशन होने तक पूर्ण हो जावेगा और सभी अभिलषित उपादानों से पूर्ण द्वितीय भाग भी आपको समर्पण करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। प्रकाशन का बहुत सामान हमारे पास है अभी २ अश्वनीकुमार संहिता का पता भी लग गयाहै। इसके संग्रह एवं लेखनकी व्यवस्था भी करनी है। अत: इसे यहीं समाप्त करना पड़ा यदि वैद्यबन्धुओं का इससे कुछ भी उपकार हुआ तो हम अपने श्रम को सार्थक समझेंगे। आप भी हमारी सहायता करें। और ग्राहक वृद्धि कर शीघ्र लुप्तप्राय: आयुर्वेदीय साहित्य प्रकाशन में सहायता देने की दया करें और लेखन आदि में मदद दें।

सम्पादक:—

# अनुभूत योगमाला



नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम् ।
प्राणिनां दुःख तप्तानां कामये दुःखनाशनम् ॥

वर्ष २१ } १५ जून सन् १९४३ ई० { अङ्क ६

## मङ्गलाचरणम्

( रचयिता—श्री पं० मुकुन्द झा व्याकरणाचार्य्य, गङ्गौली )

नौमिश्रीपति वाहनं खगवरं श्रीवैनतेयं सदा ।
यत्कारुण्य कला मत्राप्यसहसा विष्णुश्चदूरङ्गमः ॥
येनाकारि पुराणमेव नितरां सद्गारुडं भासुरम् ।
विश्वेषां च सुरोगिणामुपकृतिः संजायते वैयतः ॥

# समर्पणम्

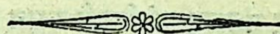
( चि० चू० पं० विश्वेश्वरदयालु वैद्यराज प्र० सं० "माला" )

हे वैद्यवन्धु कुछ साज सजा, हम पास आपके आते हैं ।
सब भांति सुखद उपहार सुभग, ले तुम्हें रिझाने आते हैं॥
यह कितने श्रम से साध्य हुआ, था लुप्तज्ञान दिखलाते हैं।
तब करने को परमोद शुभग, हम पास तुम्हारे लाते हैं।।
है समय वड़ा बिकराल महा, लखिजिसको जी घवड़ाता है।
हो ईश अनुग्रह हम पर जो, फिर आवे समय सुहाता है।।
ले शेष शीघ्र सामिग्री को, यह सेवक सन्मुख आता है ।
होजाने पर तो लाचार वन्धु, फिर चारा नजर न आताहै।।
करते आये जिस तरह प्यार, वह प्यार भूलने ना पाये ।
जो है जिसका कर्तव्य शुभग, वह लखो भूलने ना पाये।।
इस समय वना जो भी जैसा, ले पास आपके आये हैं ।
होकर मनसे मुदित इसेकर, लो स्वीकृत जो कुछ लाये हैं॥



* श्री धन्वन्तरयेनमः *

# अथ पुराणायुर्वेदः



पाथोधेः परिमन्थनात्परिगतं पीयूषपानं परम् ।
देवानां दिविदेवनाय भवते दीर्घायुषे दीप्तये ॥
पौराणापरिशीलनात्प्रतिफलं प्रत्यक्षप्रत्यायदम् ।
भैषज्यादिविभूतिदं हि भिषजां भूयाद् भृशंभोगदम् ॥
विन्ध्यारण्यविलासिनीं वसुमतीं विघ्नादिव्यूहापहाम् ।
विद्याबुद्धिविभूतिदां विजयदां वागीश्वरीं वाकदाम् ॥
वैद्यानां विभवादिवर्धनकरीं टीकां च विश्वेश्वरीम् ।
वैद्यानां विबुधो विवन्द्य वितते विश्वेश्वरो वैद्यराट् ॥

# अग्निपुराणे-आयुर्वेद

## अग्नि पुराणान्तर्गत ( धन्वन्तरि संहिता )

|| पथ्यम् ||

अग्निरुवाच

आयुर्वेदं प्रवक्ष्यामि सुश्रुताय यमब्रवीत् ।
देवोधन्वन्तरिः सारं मृतसंजीवनीकरम् ।। १ ।।

अग्निदेव कहने लगे । मैं उस आयुर्वेद के सार को कहता हूं जिसे धन्वन्तरि भगवान ने सुश्रुत ( विश्वामित्र पुत्र ) को कहा था यह मृत-संजीवनी कर नाम का है । १

सुश्रुत उवाच

आयुर्वेदं ममब्रूहि नराश्वेभरुगर्दनम् ।
सिद्धयोगात्सिद्ध मंत्रान्मृतसंजीवनी करान् ।। २ ।।

एक दफे सुश्रुत ने धन्वन्तरि काशिराज से पूछा था कि महाराज मनुष्यों एवं अश्वादिकों के रोगों को नाश करने वाले सिद्ध योगों एवं सिद्ध मंत्रों को जिन्हें मृत संजीवनी कर कहते हैं कहिये । २

धन्वन्तरि उवाच

रक्षन्बलं हि ज्वरितं लंघितं भोजयेद्भिषक् ।
सविश्वं लाजमंण्डं तु तृड्ज्वरान्तंश्शृतं जलम् ।।३।। ज्वरे

तब धन्वन्तरि जी कहने लगे । सब से प्रथम ज्वर वाले रोगी को लंघन करावे परन्तु उसके बल का ह्रास न होने पावे, सात दिन के बाद पाचनादि दें । सोंठ के सहित धान की खीलों का मांड दें । तृषादि शान्ति के लिये गरम किया हुआ पानी दें । ३

मुस्तपपटकोशीर  चन्दनोदीच्यनागरैः ।
षडहं च व्यतिक्रान्ते तिक्तकं पाययेद्ध्रुवम्॥ ४ ॥

नागरमोंथा, पित्तपापरा, रक्त चन्दन, खस, सोंठ, सुगन्धवाला, मिलित २ तो० एक सेर पानी में उबालें और आधा शेष रहने पर इसे ही पीने को जल के स्थान में दें इससे प्यास और ज्वर नष्ट हो जाते हैं ।

स्नेह येतत्यक्तदोषन्तु ततस्तं च विरेचयेत् ।
जीर्णाः षष्टिकनीवाररक्त शालि प्रमोदकाः ॥ ५ ॥

दोष शान्ति होने पर स्नेहन करावे इसके बाद बिरेचन दें बाद को पुराने साठी के चावल, पसाई, रक्त शालि, प्रमोद धान दें । ५

तद्विधास्ते ज्वरेष्विष्टा यवानां विकृतिस्तथा ।
मुद्गाः मसूराश्चणकाः कुलत्थाश्च मकुष्टकाः ॥६॥

धान्य के समान हलके पदार्थ ज्वर में पथ्य हैं धान्य—या यवों की विकृति ( भुने यवों ) से बने यूषादि दें । या मूंग, मसूर कुलथी या मोंठ का यूष दें । ६

आढक्यो वार्ताकुश्च कर्कोटक कठिल्लकम् ।
पटोलं सफलं निम्बं पर्पटं दाड़िमं ज्वरे ॥ ७ ॥

अरहर, भट्टा ( बेंगन ) ककोड़ा; करेला, पटोलपत्र, परवर निम्ब, पित्तपापड़ा अनार यह ज्वर में दें ।

अधोगे वमनं शस्तमूर्ध्वगे च विरेचनम् ।
रक्तपित्ते तथापानं षडङ्गं शुण्ठिवर्जितम् ॥ ८ ॥ रक्तपित्ते

अधोगतरक्त पित्त में, वमन ऊर्ध्वगरक्त पित्त में विरेचन दें और शुण्ठी रहित षडङ्ग पानीय दें । ८

सक्तुगोधूमलाजाश्च यवशालिमसूरकाः ।
मकुष्टचणकामुद्गा भक्ष्यागोधूमका हिताः ॥ ९ ॥
साधिताघृतदुग्धाभ्यां क्षौद्रं वृषरसोमधु ।

सत्तू, गेहूं, लाजा, जौ चावल, मसूर, मोंठ, चना, मूंग घृत और दुग्ध से बनाये गेहूं के लड्डू आदि और अडूसे का रस मधु मिला रक्त पित्त में सेवन करें । ९

अतिसारे पुराणानां शालीनां भक्षणंहितम्॥ १० ॥ अतिसारे
अनभिष्यन्दि यच्चान्नं लोध्रवल्कलसंयुतम् ।
मारुतं वर्जयेद्यत्नः कार्योगुल्मेषु सर्वथा ॥ ११ ॥ गुल्मे

अतिसार में पुराने चावलों का खाना हितकर है, और जो अन्न शीघ्र पाकी हो उन्हें लोध छाल के साथ पका कर लें और हवासे बचते रहें ऐसा ही गुल्म रोग में भी करें । १० । ११

वाट्यं क्षीरेण चाश्नीयात् वास्तूकं घृतसाधितम् ।
गोधूमशालयस्तिक्ता हिता जठरिणामथ ॥ १२ ॥ उदररोगे

भुने हुये यव को दूध से खावे, वास्तूक शाक को घृत से बना कर खावे, गोधूम, शालि, और कुटकी उदररोगियों को हितकर है । १२

गोधूमशालयो मुद्गा ब्रह्मवृक्षखदिरोऽभया ।
पंचकोलं जांगलाश्च निम्बधात्र्यपटोलकाः॥ १३ ॥ कुष्टे
मातुलुङ्गरसा जातिशुष्कमूलकसैन्धवाः ।

गेहूं, चावल, मूंग, पलास, अमलतास, खदिर, हरीतकी, पंचकोल, नीव, आवला, परबर, जांगल पशुओं के मांस रस, नीबू रस चमेली की शुष्क जड़ सेंधे नमक के साथ भी सेवन करते रहें । १३

कुष्ठिनां च तथाशस्तं पानार्थे खदिरोदकम्॥ १४ ॥
मसूरमुद्गौ पेयार्थे भोज्याजीर्णाश्च शालयः।
निम्बपर्पटकैः शाकै र्जाङ्गलानां तथा रसः ॥१५॥
विडंगं मरिचं मुस्तं कुष्टं लोध्रं सुवर्चिका।
मनः शिलावचालेपः कुष्ठहामूत्रपेषितः ॥ १६ ॥

कुष्टियों के लिये भी यही क्रम ठीक है परन्तु पीने को खदिर का पानी दें, मसूर, मूंग की पेया खाने में पुराने चावल नीव, पित्त-पापड़ा, का शाक, जंगल जीवों के मांस रस दें विडंग, मिर्च, मौथा, कूठ लोध सज्जो, मनशिला, बच, का लेप गोमूत्र में पीस कर लगाना कुष्टहर है। १४।१५।१६

अपूपकुष्टकुल्माषयवाद्या मेहिनां हिताः।
यवान्नविकृतिमु द्गा कुलत्था जीर्ण शालयः॥१७॥ प्रमेहे

अपूप (पुआ) कुल्माष ( कुन्नयी या अर्द्धस्विन्न गोधूमादिअन्न ) यव, कूठ यह प्रमेहियों के लिये हितकर है। १७

तिक्तरुक्षाणिशाकानि तिक्तानिहरितानिच।
तैलानि तिलशिग्रूक विभीतकेङ्गु दानिच ॥ १८ ॥

यवादि की विकृति ( भीगे और कुटे हुये यव ) मूंग कुलथी पुराने चावल तिक्त और रूक्ष, शाक, परन्तु तिक्त शाक गुडूची पत्र, निम्ब पत्र पटोलादि शाक हरे ही लें, तैलों में तिल, सेंजना बीज का तैल, विभीतक मज्जा तैल, हिंगोट मज्जा तैल लें ॥ १८ ॥

मुद्गाः सयवगोधूमा धान्यं वर्षस्थितं चतत् ।
जांगलस्यरसःशस्तो भोजनेराजयक्ष्मिणाम् ॥१९॥ राजयक्ष्मणि

मूंग, यव गेहूं एक वर्ष के पुरानेही हों और जंगली जीवों का मांस रस राजयक्ष्मा के रोगियों को हितहर है। १९

कुलत्थमुद्गकोलाद्यैः शुष्कमूलकजांगलैः ।
यूषैर्वा विष्करैः सिद्धै र्दधिदाड़िमसाधितैः॥ २० ॥ कासे
मातुलुंगरसक्षौद्रद्राक्षा व्योषादिसंस्कृतैः ।
यवगोधूमशाल्यन्नै र्भोजयेच्छ्वासकासिनाम् ॥ २१ ॥

कुलथी, मूंग, कोलकन्द शुष्क मूली; जांगल रस, विष्कर (लावा, तीतर, बटेर, आदि) का मांस दही और अनार रस साधित यूष दें नीबू, मधु, दाख त्रिकुटादि से संस्कारित कर यव, गेहुँ चावल के यूष बना कर दें यह श्वास कास वाले रोगियों को हितकर है। २०

दशमूलवलारास्ना कुलत्थै रूपसाधिताः ।
पेयायूषरसाःक्राथाः श्वासहिक्कानिवारणाः॥२२॥ हिक्काश्वासे

दशमूल वला ( खिरेटो ) रास्ना, कुलथी, से साधित पेया, यूष, क्वाथ, हिक्का,श्वास, में हितकर हैं। २२ ॥

शुष्कमूलक कौलत्थमूल जांगलजैः रसैः ।
यवगोधूमशाल्यन्नं जीर्णं सोशीर माचरेत्॥२३॥ शोथे
शोथवान्सगुडां पथ्यां खादेद्वा गुडनागरम् ।+

शुष्कमूली, कुलथीमूल, जांगलीय मांस से साधित पुराने जौ, गेहूं, चांवल, सुगन्धवाला युक्त खावें या गुड हर्र, या गुडसोंठ खावे। २३

तक्रं च चित्रकं चोभौ ग्रहणीरोगनाशनौ ॥ २४ ॥ ग्रहणीरोगे

तक्र और चित्रक यह दोनों ग्रहणी नाशक हैं । २४ ॥

पुराणयवगोधूमशालयो जांगलोरसः ।
मुद्गामलकखर्जूर मृद्वीकाबदराणि च ॥ २५ ॥
मधुसर्पिः पयःशक्रं निम्बपर्पटकौवृषम् ।
तक्रारिष्टश्चशस्यन्ते सततं वातरोगिणाम् ॥ २६ ।' वातरोगे

पुराने जौ, गेहूं, चांवल, जांगलरस, मूंग, आमला, छुहारा, दाख, वेर, शहद घृत, दूध, इन्द्रजौ, नीम, पित्तपापडा, अडूसा, तक्रारिष्ट का सेवन वात रोगियों को हित कर हैं । २६ ॥

हृद्रोगिणो विरेच्यास्तु पिपल्यो हिक्किनां हिताः ।
तक्रारनालसीधूनि युक्तानि शिशिराम्भसा ॥२७॥ मदात्यये

हृदय रोगियों को विरेचन, हिक्का रोग वालों को पीपल, तक्र, कांजी, सीधु ( इक्षुरस कृतमद्य ) ठंडा पानी मिला कर देना । २७

मुक्तासौवर्च लाजादि मद्यं शस्तं मदात्यये ।
सक्षौद्रपयसालाक्षां पिवेच्चक्षतवान्नरः ॥ २८ ॥ क्षते

मोती, कालानमक, लाजा मद्य, मदात्यय में हित कारी हैं । उरःक्षत वाले रोगो को दूध में मधु मिला लाक्षाका चूर्ण हितकारी हैं । २८ ॥

क्षये मांसरसाहारो वह्निसंरक्षणाज्जयेत् ।
शालयो भोजने रक्ता नीवार कमलादयः ॥ २९ ॥ क्षये

क्षयमें मासरस का आहर अग्नि की रक्षा करता हुवादे । भोजन में लाल चांवल, पसाई, कमलादिधान दें ।२९

यवान्नविकृतिर्मांसं शाकं सौवर्चलं शठी +
पथ्यातथैवार्शसां यन्मण्डं तक्रं च वारिणा॥३०॥ अर्शसि

जौ की विकृति, मांस, शाक, कालानमक, कचूर, हर्रा, मण्ड, तक्र, पानी मिला अर्श में देना हितकर हैं । ३०

मुस्ताभ्यासस्तथालेपश्चि त्रकेण हरिद्रया ।+

मोंथा का नित्य सेवन, चित्रक या हल्दी का लेप हित कारी हैं । ३१ ॥

यवान्नविकृतिः शालिर्वास्तूकं ससुवर्चलम् ॥ ३१ ॥
त्रपुषैर्वारुगोधूमाः क्षीरेक्षु घृतसंयुताः ।
मूत्रकृच्छ्रे च शस्तास्युः पाने मंडसुरादयः ॥ ३२॥ मूत्रकृच्छ्रे

यवों की विकृति, शालि, बथुआ, सज्जी या यवक्षार, खीरा, खर्बूजा, गेहूं, दूध, ईखरस, या घृतयुक्त, पीने को माड या शराब मूत्र कृच्छ्र रोग में हितकर हैं । ३२ ॥

लाजासक्तुस्तथाक्षौद्रं शल्यं मासं परुषकम् ।
वार्ताकुलावशिखिनःछर्दिघ्नाः पानकानिच॥ ३३ ॥ वमने

लाजा, सत्तू, मधु, कवाव, फालसा, वेंगन, लवा, अपामार्ग, और पानकादि ( पन्ने ) वमन हर हैं । ३३ ॥

शाल्यन्नं तोयपयसी केवलोष्णे श्रृतेऽपिवा ।
तृष्णाघ्ने मुस्तगुडगुटिका वा मुखेधृता ॥ ३४ ॥ तृष्णायाम

तृष्णा रोगी के लिये, शालि चांवल, दूध पानी, केवल उष्ण या श्रृत जल दें मोंथा और गुड की गोली मुखमें रखें । ३४ ॥

यवान्नविकृति: यूषं शुष्कमूलकजं तथा ।
शाकं पटोलवेत्राग्रमुरुस्तम्भ विनाशनम् ॥ ३५ ॥ उरुस्तम्भे

उरु स्तम्भ रोग में यवों की विकृति, शुष्कमूलक यूष शाकों में पटोल, वेतकी कोंपल हित कर हैं । ३५ ॥

मुद्गाढ़क मसूराणां सतिलैर्जाङ्गलै रसैः ।
ससैन्धव घृतद्राक्षा शुंठ्यामलक कोलजैः ॥ ३६ ॥
यूषैः पुराणगोधूम यवशाल्यन्नमभ्यसेत् ।

विसर्प रोग वाले मूंग, अरहर, मसूर, तिल, जांगल रस, सेंधा नमक, घृत दाख, सोंठ आमला, बेर का यूष पुराने चावल गेहूँ, जौ शालि को खावे । ३६

विसर्पी स सिताक्षौद्र मृद्वीकादाड़िमोदकम् ॥ ३७ ॥ विसर्पे
रक्तषष्टिकगोधूम यबमुद्गादिकं लघु ।
काकमारीच वेत्राग्रं वास्तुकं च सुवर्चला ॥ ३८ ॥
वातशोणितनाशाय तोयं शस्तं सितंमधु ।

वात रक्त के रोगी—मिश्री, शहद, दाख, अनार रस, रक्त शालि गेहूं, जौ मूंग काली मकोय, वेंत की कोंपल, बथुआ, ब्रह्मी शाक खावें । ३७

नासारोगेषु चहितं घृतं दूर्वा प्रसाधितम् । नासारोगे

मिश्री मधु दूर्वाद्य घृत नासा रोग में हितकर है । ३८

भृङ्गराजरसे सिद्धं तैलंधात्री रसेऽपिवा ॥ ३९ ॥ शिरोरोगे
नस्यसर्वामयेष्विष्टं मूर्ध्वजंतूद्भयेषु च ।

भमरा या आमला रस से सिद्ध तैल का नस्य शिरो रोग नाशक है । ३९

शीततोयान्नपानं च तिलानां विप्र भक्षणम्।                दन्तरोगे
द्विजदार्ढ्यकरं प्रोक्तं तथा तुष्टि करं परम् ॥ ४० ॥

गण्डूषं तिलतैलेन द्विजदार्ढ्य करं परम्।

शीतल जल पान शीतल अन्न तिल भक्षण—दान्तों को दृढ़ करता है। ४० तिल तैल का गंडूष भी दांतों को दृढ़ करता है ४१

विडंग। चूर्णं गोमूत्रं सर्वत्र कृमिनाशने ॥ ४२ ॥ कृमिरोगे

विडंग का चूर्ण गोमूत्र से लेना सर्व प्रकार की कृमि नाशक है। ४२

धात्रीफलान्यथाज्यं च शिरोलेपनमुत्तमम्।
शिरोरोग विनाशाय स्निग्धमुष्णं च भोजनम् ॥ ४३ ॥

आमला, घृत, का लेप शिरो रोग हर है और स्निग्ध एवं उष्ण भोजन पथ्य है। ४३

तैलं वा बस्तमूत्रं च कर्णपूरण मुत्तमम्।                कर्णरोगे
कर्णशूल विनाशाय सर्वाशुक्तानिवाद्विज? ॥ ४४ ॥

तैल या बकरी का मूत्र सब प्रकार के सिर्के भी कर्ण शूल हर है। ४४

गिरिमृच्चंदनं लाक्षां मालतीं कलिकां तथा।
संयोज्यया कृतावर्तिः क्षतशुक्रहरी तु सा ॥ ४५ ॥ नेत्ररोगे

गेरु, चन्दन, लाख, चमेली की कली की वत्ती नेत्र क्षत और शुक्र को नाश करने वाली है। ४५

व्योषं त्रिफलयायुक्तं तुत्थकं च तथा जलम् ।
सर्वाक्षिरोग शमनं तथैव च रसांजनम् ॥ ४६ ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, नीलाथोथा, का जल अथवा रसाञ्जन का जल समस्त नेत्र रोग हर है । ४६

आज्यभ्रष्टं शिलापिष्टं लोध्रकांजिक सैन्धवैः।
आश्च्योतनं विनाशाय सर्वनेत्रामये हितम् ॥ ४७ ॥

घी में भुना और शिला पर पीसा हुवा लोध कांजी और सैन्धव नमक के साथ दिया गया आश्चोतन सर्व नेत्र रोग हर है । ४७

गिरिमृच्चदनं लेपो वहिर्नेत्रस्य शस्यते ।
नेत्रामयविघातार्थं त्रिफलां शीलयेत् सदा ॥ ४८ ॥
रात्रौतु मधुसर्पिभ्र्यां दीर्घमायुर्जिजीविषुः ।

गेरु, लाल चंदन का लेप नेत्रों के बाहर करने से और सदा त्रिफला मधु घृत के साथ रात्रि को खाना सर्व नेत्र रोगहर है । ४८

शतावरी रसेसिद्धौ बृष्यौ क्षीरघृतौस्मृतौ ॥ ४९ ॥ बृष्ये

शतावरी रस से सिद्ध घृत और दूध घृत का सेवन वृष्य है । ४९

कलम्बिकानि माषाश्च वृष्यौक्षीरघृतौ तथा ।

नाड़ी या पोई शाक उरद दूध और घृत वृष्य है । ५०

आयुष्या त्रिफला ज्ञेया पूर्ववन्मधुकान्विता ॥ ५० ॥
मधुकादिरसोपेता वलीपलितनाशिनी ।

त्रिफला मधु के साथ आयु बढ़ाती है । मोरेठी के साथ वली पलित नाश करती है ।

वचासिद्ध घृतंविप्र भूतदोष विनाशनम् ॥ ५१ ॥ भूतदोषे

वचा से सिद्ध हुवा घृत भूतदोष नाशक है । ५१

कव्यं बुद्धिप्रदं चैव तथा सर्वार्थ साधनम् ।
वलाकल्ककषायेण सिद्धमभ्यञ्जने हितम् ॥ ५२ ॥
रास्नासहचरैर्वापि तैलं वातविकारिणाम् ।

कव्य ( तिलादि साधित लड्डू ) बुद्धिप्रद एवं सर्वार्थ साधक है । वला कल्क और कषाय से सिद्ध तैल मर्दन योग्य होता है । रास्ना, सहचर ( पियावांस ) से सिद्ध तैल वातहर है ।

अनभिष्यन्दि यच्चान्नं तद्व्रणेषु प्रशस्यते ॥ ५३ ॥ व्रणे
सक्तुपिण्डी तथैवाम्ला पाचनाय प्रशस्यते ।
पक्वस्य च तथाभेदे निम्बचूर्णं च रोपणे ॥ ५४ ॥

व्रण में शीघ्रपाकी अन्न हितकर है । सत्तू की पिंडी वा अम्ल पदार्थ पाचन करते हैं और पके व्रण को फोड़ देते हैं । रोपण में निम्ब चूर्ण हितकारी है ॥ ५४ ॥

तथासूत्युपचारश्च वलिकर्म विशेषतः ।
सूतिका च तथा रक्षा प्राणिनां तु सदाहिता ॥ ५५ ॥

सूतिका रोगोपचार और वलिकर्म से सदा सूतिका की रक्षा करना मनुष्यों को योग्य है ॥ ५५ ॥

भक्षणं निम्वपत्राणां सर्पदंष्ट्रस्य भेषजम् ।

सांप काटे पर निम्ब पत्र खिलाना उत्तम दवा है ।

तालनिम्बदलंकेश्यं जीर्णतैल मथवा घृतम् ॥ ५६ ॥

ताड़ के पत्ते, नीव के पत्ते केशों में हितकर हैं, इनसे पके घृत और तैल भी यही गुण करते हैं ॥ ५६ ॥

धूमोवृश्चिक दंष्ट्रस्य शिखिपत्रघृतेन वा ।
अकर्क्षारेण संपिष्टं लेपोवीजं पलाशजम् ॥ ५७ ॥

अपामार्ग के पत्तों में घृत मिला धूप देना, अर्क दुग्ध में पलाश वीजों को पीस लेप करना विच्छू दंश पर हितकर हैं । ॥ ५७ ॥

वृश्चिकार्तस्यकृष्णा वा शिवा च फल संयुता ।
अर्कक्षीरतिलं तैलं पललं च गुड़ं समम् ॥ ५८ ॥

विच्छू दंश से पीड़ित को पीपल, शमीफल, अर्क क्षीर और तिल तैल मिला लेप करना उत्तम है ॥ ५८ ॥

पानाज्जयतिदुर्वारं श्वविषं शीघ्रमेव च ।

तिलकुट और गुड़ बराबर लेकर खाने से कुत्ते का विष नष्ट हो जाता है ।

पीत्वामूलं त्रिवृत्तुल्यं तण्डुलीयस्य सर्पिषा ॥ ५६ ॥
सर्पकीट विषाण्याषु जयत्यति वलान्यपि ।

चौंराई की जड़, निशोथ समान भाग ले घृत से पीने से बलवान सर्प और कीटों का विष नाश होता है ॥ ५९ ॥

चन्दनं पद्मकं कुष्टं लताम्बू शीरपाटला ।
निगुण्डी शारिवा सेलुलू ता विषहरोऽगदः ॥ ६० ॥

लूताविषहरम्

चंदन, पद्माक, कूठ, गुडूचीपत्र, सुगंधवाला, खस, पाटला, निर्गुण्डी ( संभालू ) शारिवा, वरुण यह मकड़ी विश नाशक अगद है ॥ ६० ॥

शिरोविरेचनं शस्तं गुडनागरकं द्विज ।
स्नेहपाने तथा वस्तौ तैलं घृत मनुत्तमम् ॥ ६१ ॥

शिरोविरेचन के लिये गुड़ और सोंठ उत्तम है । स्नेहपान में घृत और वस्ति में तैल उत्तम है ॥ ६१ ॥

स्वेदनीयः परोवह्निः शीताम्भः स्तम्भनं परम् ।
त्रिवृद्धिरेचने श्रेष्टा वमने मदनं तथा ॥ ६२ ॥

स्वेदन में अग्नि, स्तम्भन में ठंडा जल श्रेष्ट है । विरेचन में निशोथ और वमन में मैनफल उत्तम है ॥ ६२ ॥

वस्तिर्विरेको वमनं तैलं सर्पिस्तथामधु ।
वातपित्त बलासाणाम् क्रमेण परमौषधम् ॥ ६३ ॥

वात पित्त, कफज रोगों के लिये, वस्ति, विरेक, वमन, तैल, घृत, मधु क्रमशे श्रेष्ट औषधि कही गई है ॥ ६३ ॥

इत्यादि महापुराणे आग्नेये सिद्धौषधादि कथनं नामैकोनाशीत्यधिक द्विशततमोऽध्यायः चि० चू० पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकाया सनाथीकृतः समाप्तः ॥ २७६ ॥

धन्वन्तरिरुवाच

शारीरमानसागन्तु सहजा व्याधयोमताः ।

शारीराज्वर कुष्टाद्याः क्रोधाद्या मानसीमताः ॥ १ ॥

आगन्तवो विधातोत्थाः सहजाक्षुज्जरादयः ।

धन्वन्तर जी फिर कहने लगे । हे सुश्रुत ! शारीरिक, मानसिक, आगन्तुज और सहज ये चार तरह के रोग होते हैं । ज्वर, कुष्टादि तो शारीरिक कहलाते हैं । क्रोध, लोभ, मोहादि मानसिक कहलाते हैं । चोटादि से होने वाले रोग आगन्तुज कहलाते हैं । सहज भूख, प्यास बुढ़ापादि कहलाते हैं ।

शरीरागन्तुनाशाय सूर्यवारे घृतं गुड़म् ॥ २ ॥

लवणं सहिरण्यं च विप्रायाचर्य समर्पयेत् ।

चन्द्रेचाभ्यंगदोविप्र सर्वरोगैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥

शारीरिक और आगन्तुज रोग नाश के लिये रविबार के दिन घृत, गुड़, लवण, सोना ब्राह्मण को पूज कर देना चाहिये । चंद्रबार को तैल दान करने से सब रोगों से छूट जाता है ॥ ३ ॥

तैलं शनैश्चरे दद्यादाश्विने गोरसान्नदः ।

घृतेन पयसालिगं संस्नाप्यस्याद्रुगुज्झितः ॥ ४ ॥

शनिश्चर को तैल दान करने वाला, आश्विन मास में तीन भाग दही और एक भाग जल से बना मट्ठा पीने वाला, शिवलिंग को दुग्ध और घृत से स्नान कराने वाला रोगों से छूट जाता है ॥ ४ ॥

गायत्र्या जुहुयाद्वह्नौ दूर्वां त्रिमधुरप्लुताम् ।

यस्मिन्भे व्याधिमाप्नोति तस्मिन्स्नानं बलिं शुभे ॥ ५ ॥

गायत्री मंत्र से मधु, घृत, शर्करा से आप्लुत दूर्वा का अग्नि में हवन करे, जिस नक्षत्र में रोग हो उसी दिन या उसी नक्षत्र में स्नान एवं बलिदान करें ॥ ५ ॥

मानसानां रुजादीनां विष्णोःस्तोत्रं हरंभजेत् ।
वात पित्त कफादोषा धातवश्च तथा शृणु ॥ ६ ॥

मानसिक रोगों के लिये विष्णु का स्तवन या शंकर का पूजन करें। वात, पित्त, कफ ये तीनों दोष कहलाते हैं। धातुओं को आगे सुनो ॥ ६ ॥

भुक्तं पक्वाशयादन्नं द्विधायाति च सुश्रुत ।
अंशेनैकेन किट्टत्वं रसतां चापरेण च ॥ ७ ॥
किट्टभागोमलस्तत्र विण्मूत्र स्वेददूषिकाः ।
नासामलं कर्णमलं तथा देहमलं च यत् ॥ ८ ॥

हे सुश्रुत खाया हुआ अन्न पक्वाशय से दो भागों में विभक्त होता है, एक भाग तो रस रूप में और दूसरा किट्ट रूप में होता है। किट्ट भाग ही मल, मूत्र, स्वेद, नाक, कान, आंख तथा देह का मल होता है ॥ ८ ॥

रसभागाद्रसस्तत्र रसोहि रक्ततां व्रजेत् ।
मांसंरक्तात्ततोमेदो मेदसोऽस्थ्नश्च संभवः ॥ ६ ॥
अस्थ्नोमज्जा ततः शुक्रं शुक्राद्रागस्तथौजसः ।

रस भाग ही रस कहलाता है, यही रस रक्त हो जाता है। रक्त से मांस, मांस से मेद, मेद से हड्डी, हड्डी से मज्जा और मज्जा से शुक्र, शुक्र से ओज होते हैं ॥ ६ ॥

देशमातिवलं शक्तिं कालं प्रकृतिमेव च ॥ १० ॥
ज्ञात्वाचिकित्सितं कुर्य्याद्भेषजस्यतथा बलम् ।

देश, रोगी का बल, शक्ति, काल, प्रकृति को देख कर और औषधि का बल देख चिकित्सा करें ॥ ९-१० ॥

तिथिरिक्तांज्यजेद्भौमं मन्दभं दारुणांग्रकम् ॥ ११ ॥
हरिगोद्विज चन्द्रार्कं सुरादीन्प्रतिपूज्यच ।
श्रृणुमंत्र मिमं विद्वान्भेषजारम्भमाचरेत् ॥ १२ ॥

रिक्ता ४।९।१४ तिथियों को और मंगल शनिवार दिनों को उग्र तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, दारुण-मूल, जेष्ठा, आर्द्रा, अश्वलेषा, नक्षत्रों को छोड़दें । और भगवान का गौ ब्राह्मण, चद्र, सूर्य, गुरू, का पूजन कर दवा प्रारंभ करें दवा देते समय यह मंत्र पढ औषधि को अभिमंत्रित कर देना चाहिये । ११।१२ ॥

ब्रह्मादक्षाश्व रुद्रेन्द्र भूचन्द्रा र्काऽनिलानलाः ।
ऋषयश्चौषधिग्रामा भूत संघाश्चपान्तुते ॥ १३ ॥
रसायन मिवर्षीणां देवानाममृतं यथा ।
सुधेवोत्तम नागानां भैषज्य मिदमस्तुते ॥ १४ ॥

हे ब्रह्मा, दक्ष, अश्विनीकुमार, शिव, इन्द्र, पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, वायु, अग्नि, समस्त ऋषियो, समस्त औषधियों, भूतादि को के समूहो इस रोगी की रक्षा करो ! ऋषियो के लिये जैसे रसायन, देवताओं के लिये जैसे अमृत, नागों के लिये जैसे सुधा उपकारी होती है उसी प्रकार इस रोगी के लिये यह औषधि हितकारी होवे । १३। १४ ॥

वात श्लेष्मातको देशो वहुवृत्तो वहूदकः।

अनूप इति विख्यातो ! जांगलस्तद्विवर्जितः ॥ १५ ॥

किञ्चिद्वृत्तोदको देश स्तथा साधारणः स्मृतः॥ जांगलदेशाः

जांगलः पित्त वहुलो मध्यः साधारणः स्मृतः ॥ १६ ॥

अनूपदेश वहुत वृत्तोंवाला, वहुत जलाशयों वाला होता है इस में वात और कफ के रोग होते हैं। १५ ॥

जांगलदेश इसका उलटा अर्थात् वृत्त और जल का नाम न हो सिर्फ हो बालू इसमें पित्तज रोग होते हैं। साधारणदेश इसमें थोड़े वृत्त और थोड़ा जल होता है और साधारणतया सभी दोषों का कोप होता है।॥ १६ ॥

रुत्तः शीतश्चलो वायुः पित्त मुष्णं कटुत्रयम्।

स्थिराम्ल स्निग्ध मधुरं वलाशं च प्रचत्तते॥ १७॥

वायु चलहै यह शीत और रूत्त से बढती है। पित्त उष्ण है यह कटु अम्ल, लवण से बढता है। कफ स्थिर है अम्ल, स्निग्ध, मधुर से बढता है १७ ॥

वृद्धिः समानैरेतेषां बिपरीतैर्विपर्य्ययः।

रसाःस्वाद्वम्लवणाः श्लेष्मलावायु नाशनाः ॥ १८॥

समान गुण वालों से इनकी वृद्धि होती है और विपरीत गुणों वाले पदार्थों से नाश होता है। जैसे मीठा, अम्ल, लवण रस कफकारी है परन्तु यही रस वायु नाशक हैं। १८ ॥

कटुतिक्त कषायाश्च वातलाः श्लेष्मनाशकाः।

कट्वम्ल लवणाज्ञेयास्तथा पित्तविवर्धनाः॥ १९॥

कटु तिक्तकषाय रस वातल हैं परन्तु कफ का नाशक हैं । कटु अम्ल, लवण पित्त बर्धक हैं । १९ ॥

तिक्त स्वादु कषायाश्च तथा पित्त विनाशनाः ।
रसस्यैषगुणोनास्ति विपाकस्यैष इष्यते ॥ २० ॥

तिक्त, मीठे, कषैले रस पित्त नाशक है यह रस का ही गुण नही विपाक का गुण है । २० ॥

वीर्योष्णाः कफ वातघ्नाः शीताः पित्त विनाशनाः ।
प्रभावतस्तथाकर्म तेकुर्वन्ति च सुश्रुत ? ॥ २१ ॥

उष्ण वीर्य कफ वातघ्न है शीतल रस पित्तघ्न हैं हे सुश्रुत यह प्रभाव से एसा काम करते हैं । २१ ॥

शिशिरेच वसंते च निदाघेच तथाक्रमात ।
चय प्रकोप प्रशमाः कफस्यतु प्रकीतिताः ॥ २२ ॥

शिशिर वसंत और ग्रीष्म ऋतु में कफका चय, प्रकोप, प्रशम होता है । २२

निदाधवर्षा रात्रौच तथा शरदि सुश्रुत ? ।
चय प्रकोप प्रशमाः पवनस्य प्रकीर्तिताः ॥ २३ ॥

ग्रीष्म, वर्षा, रात्रि, और शरद ऋतु में हे सुश्रुत वायु का चय प्रकोप और शमन होता है । २३ ॥

मेघ कालेच शरदि हेमन्ते च यथा क्रमात् ।
चयप्रकोप प्रशमास्तथा पित्तस्य कीर्तिताः ॥ २४ ॥

वर्षा, शरद, हेमन्त ऋतुओं में पित्तका चय, प्रकोप, शमन होता है । २४ ॥

वर्षादयो विसर्गास्तु हेमन्ताद्यास्तथात्रयः ।
शिशिराद्यास्तथाऽऽदाने ग्रीष्मान्ता ऋतवस्त्रयः ॥ २५ ॥
सौम्योविसर्गस्त्वादान माग्नेयं परिकीर्तितं ।
वर्षादीं स्त्री नृतून्सोमश्चरन्पर्य्याय शोरसान् ॥ २६ ॥
जनयत्यम्ललवण मधुरां स्त्रीन्यथाक्रमात् ।
शिशिरादीनृतूनकश्चरन्पर्य्यायशोरसान् ॥ २७ ॥
विवर्धयेत्तथा तिक्त कषाय कटु कान्क्रमात् ।
यथा रजन्यो वर्द्धन्ते बलमेकांहि वर्धते ॥ २८ ॥
क्रमशोऽथ मनुष्याणां हीयमाना सुहीयते ।

वर्षा, शरद, हेमन्त यह विसर्गकाल कहलाता है, शिशिर वसंत, ग्रीष्म यह आदान काल कहलाता है। वर्षा, शरद, हेमन्त ऋतुओं में चन्द्रमा क्रमसे अम्ल, लवण मधुर रस देता है। और शिशिर, वसंत, ग्रीष्म में सूर्य तिक्त, कषाय, कटु रसों को बढाता है। जब रात्रियें बढती हैं तो बल भी बढता है और रात्रियां जैसे जैसे कम होती और दिन बढता है बल भी कम होता जाता है। २६ ॥

रात्रि भुक्त दिनानांच वयसश्च तथैव च ॥ २६ ॥
आदि मध्यावसानेषु कफ पित्त समीरणाः ।

रात्रि और भोजन समय तथा दिन और आयु की आदि, मध्य, अन्तावस्थाओं में क्रमशः कफ, पित्त, वायु बढाता है। ३० ॥

प्रकोपं यान्तिकोपादौ कालेतेषां चयः स्मृतः ॥ ३० ॥
प्रकोपोत्तर के काले शमस्तेषां प्रकीर्तिता ।
अति भोजनतो विप्र तथा चाभोजनेन च ॥ ३१ ॥

रोगाहि सर्वे जायन्ते वेगोदीरण धारणैः ।

उन्हीं अवस्थाओं में उनका कोप भी होता है, और आगे उनका चय, प्रकोप, शमन भी होता है यथा भोजन समय में कफ, पाचन में पित्त, इनकी अन्तिमावस्था जीर्णता में वायु बढती है। कोप से प्रथम चय इसके बाद, प्रकोप, बाद को शमन होता है। भोजन आदि में कफ का प्रकोप होता है तो पित्त का चय होता है आगे पाचकावस्था में पित्तकुपित होता है कफ का शमन न हो वायुका संचय होता है। जीर्ण वस्था में वायु का कोप कफ का संचय हो पित्त का नाश होता है इसी प्रकार ऋतु आदि में भी जानो। ज्यादा खाने से बिल्कुल न खाने से वेगों के रोकने से ही रोग होते हैं। ३२ ॥

अन्नेन कुक्षेद्वावंशावेकं पानेन पूरयेत् ॥ ३२ ॥
आश्रयं पवनादीनां तथैकमवशेषयेत् ।

अन्न से पेट के दो भागों को भरे एक पानी से और एक भाग हवा के लिये छोड़ दें ॥ ३३ ॥

व्याधेर्निदानस्यतथा विपरीतमथौषधम् ॥ ३३ ॥
कर्तव्यमेतदेवात्र मयासारं प्रकीर्तितम् ।

रोग निदान ( कारण ) के विपरीत ही औषधि है यही विचार कर कार्य करें यही सार ( तत्व ) चिकित्सा है। ३४ ॥

नाभेरूर्ध्वमधश्चैव गुदश्रोण्यास्तथैव च ॥ ३४ ॥
बलाश पित्त वातानां देहेस्थानं प्रकीर्तितम् ।
तथापिसर्वगाश्चैते देहेवायुर्विशेषतः ॥ ३५ ॥

देहस्यमध्ये हृदयं स्थानं तन्मनसः स्मृतम् ।

नाभि के ऊपर और नीचे, गुदा श्रोणि भाग में वात, पित्त, कफ का स्थान है परन्तु वायु का समस्त देह में स्थान है । विशेष कर हृदय के वीच में वायु का स्थान है यही मन का भी स्थान है । ३६ ॥

कृशोल्पकेशश्चपलो वहुवाग्विषमानलः ।। ३६ ।।

व्योमगश्चतथास्वप्ने वातप्रकृतिरुच्यते ॥ ३७ ॥

अकालपलितः क्रोधी प्रस्वेदी मधुर प्रियः ।

स्वप्नेच दीप्तिमत्प्रेक्षा पित्तप्रकृतिरुच्यते ।। ३८ ॥

पतली देह थोड़े केश वाला, चंचल, बहुत वोलने वाला, विषमाग्नि वाला सोने में आकाश गमन करने वाला वात प्रकुति वाला होता है । अकाल पलित ( सफेद वाल होना ) क्रोधी, पसीना ज्यादा निकले, मीठा बोले, सोते में प्रकाश देखे ऐसा पुरुष पित्त प्रकृति वाला कहा जाता है । ३८

दृढाङ्गः स्थिरचित्तश्च सुप्रभः स्निग्धमूर्ध्वजः ।

शुद्धाम्बुदर्शी स्वप्नेच कफप्रकृतिको नरः।। ३९ ।।

मजबूत अंगों वाला, स्थिर चित्त वाला, सुन्दर चिकने शिर के वालों वाला, सोते में जलाशयादि देखने वाला, कफ प्रकृति वाला कहलाता है । ३९

तामसाराजसाश्चैव सात्विकाश्च तथास्मृताः ।

मनुष्या मुनिशार्दूल वातपित्तकफात्मकाः।। ४० ।।

तामस, राजस, सात्विक, पुरुष ही क्रम से हेमुनिशार्दूल बात, पित्त, कफ वाले कहे जाते हैं ॥ ४०

रक्तपित्तं व्यवायाच्च गुरुकर्मप्रवर्तनैः ।
कदन्नभोजनाद्वायुर्देहे शोकाच्चकुप्यति ॥ ४१ ॥

अधिक मैथुन से या ज्यादा कार्य करने से रक्त पित्त होता है। खराब अन्न खाने या शोक से वायु कुपित होता हैं। ४१

विदाहिनां तथोल्कानामुष्णान्नध्वनिषेविणाम् ।
पित्तं प्रकोपमायाति भयेनचतथा द्विज ॥ ४२ ॥

विदाही और उष्ण अन्न खाने से, अग्नि और मार्ग सेवन से, भय से, पित्त प्रकुपित होता है। ४२

अत्यम्बुपानगुर्वन्नभोजिनां भुक्तशायिनां ।
श्लेष्माप्रकोपमायाति तथा ये चालसा जनाः ॥ ४३ ॥

ज्यादा पानी पीने से गुरु अन्न खाने से खाकर सोने से, आलस से कफ कोपित होता है। ४३

वाताद्युत्थानि रोगाणि ज्ञात्वा शाम्यानि लक्षणैः ।
अस्थिभंगः कषायत्वमास्ये शुष्कास्यता तथा ॥ ४४ ॥
जृंभणं लोमहर्षश्च वातिकव्याधि लक्षणम् ।

वातादि रोगों को लक्षणों से जान कर शमन करें। हड्डियों का दर्द मुख का कषैलापन, मुख का सूखना, जंभाई, रोमहर्ष, होना, वातज रोगों का लक्षण है ॥ ४४ ॥

नखनेत्रशिराणां तु पीतत्वं कटुता मुखे ।
तृष्णादाहोष्णता चैव पितव्याधिनिदर्शनम् । ४५ ॥

नख, नेत्र, शिराओं का पीलः होना; मुख में कडवांपन, तृष्णा, दाह, उष्णता, होना पित्त रोगों का लक्षण है ॥ ४५ ॥

आलस्यं च प्रसेकश्च गुरुतामधुरास्यता ।
उष्णाभिलाषिता चेति श्लेष्मकव्याधिलक्षणम् ॥ ४६ ॥

आलस रहना, मुख में पानी आना, देह में भारी पन मुख में मधुरता, गरम चीजों की इच्छा, कफज रोगों का लक्षण है । ॥ ४६ ॥

स्निग्धोष्णमन्नमभ्यंगस्तैलपानादिवातनुत् ।
आज्यं क्षीरं सितावांच चन्द्ररश्म्यादि पित्तनुत् ॥ ४७ ॥

स्निग्ध, उष्ण, अन्न, तैल मर्दन तैल पान बातहर है, बकरी का दूध, चांदनी का सेवन पित्त नाशक है ॥ ४७ ॥

सक्षौद्रं त्रिफलातैलं व्यायामादिकफापहम् ।
सर्वरोगप्रशान्त्यैस्याद्विष्णोर्ध्यानं च पूजनम् ॥ ४८ ॥

मधु, त्रिफला, तैल, व्यायाम, कफहर हैं । सब रोगों के नाश के लिये विष्णु का ध्यान और पूजन श्रेष्ठ है ॥ ४८ ॥

इत्यादि महापुराणे आग्नेये सर्वरोगहरौषधादिकथनं नामाशीत्यधिक द्विशततमोऽध्यायः चि० चू० पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया सनाथीकृतः समाप्तः ॥२८०॥

## अथ रसादि लक्षणम्

भन्वन्तरिरुवाच

रसादि लक्षणं वक्ष्ये भेषजानां गुणं शृणु ।
रसवीर्यविपाकज्ञो नृपादीन्त्रत्रयेन्नर: ॥ १ ॥

धन्वन्तरि जी कहने लगे । औषधियों के गुणों को और उनके रसादिकों को कहते हैं रस वीर्य विपाक जाननें वाला ही राजादिकों की रक्षा कर सकता है ॥ १ ॥

रसास्वादुम्ललवणा: सोमजा: परिकीर्तिता: ।
कटुतिक्तकषायाणि तथाग्नेया महाभुज ॥ २ ॥

मीठा, अम्ल, लवण यह तीनों रस सोमज कहलाते हैं । कटु, तिक्त, कषाय यह तीनों अग्नेय कहलाते हैं ॥ २ ॥

त्रिधाविपाकोद्रव्यस्य कट्वम्ललवणात्मक: ।
द्विधावीर्यं समुद्दिष्टमुष्णं शीतं तथैव च ॥ ३ ॥

द्रव्यों का विपाक कटु, अम्ल लवण यह तीन प्रकार का होता है और वीर्य शीत उष्ण दो प्रकार का होता है ॥ ३ ॥

अनिर्देश्यप्रभावश्च औषधीनां द्विजोत्तम ।
मधुरश्च कषायश्च तिक्तश्चैव तथा रस: ॥ ४ ॥
शीतवीर्य्या: समुद्दिष्टा: शेषास्तूष्णा: प्रकीर्तिता ।

औषधियों का प्रभाव विचित्र होता है । मधुर, तिक्त, कषाय रस शीत वीर्य वाले होते हैं; शेष उष्ण वीर्य वाले होते हैं ॥ ४ ॥

गुडूची तम्रतिक्तापि भवत्युष्णाति वीर्य्यत: ॥ ५ ॥

उष्णाकषायापि तथा पथ्या भवति मानद ।
मधुरोऽपितथा मांस उष्ण एव प्रकीर्तितः ॥ ६ ॥

गुडूची स्वाद में तिक्त होने पर भी वीर्य्य में उष्ण होती है । हर्र कषैली होने पर भी उष्ण वीर्य्य होती है । मांस मधुर रस होने पर भी उष्ण वीर्य्य होता है ॥ ५-६ ॥

लवणो मधुरश्चैव विपाकमधुरौ स्मृतौ ।
आम्लोष्णश्च तथा प्रोक्तः शेषाकटुविपाकिनः ॥ ७ ॥

लवण और मधुर रस का विपाक मधुर ही होता है, अम्ल का उष्ण विपाक होता है, शेष का कटु विपाक ही होता है ॥ ७ ॥

वीर्य्यपाके विपर्य्यस्त प्रभावात्तत्र निश्चयः ।
मधुरोऽपि कटुःपाके यच्चक्षौद्रं प्रकीर्तितम् ॥ ८ ॥

वीर्य और विपाक के विरुद्ध प्रभाव का गुण होता है, जैसे मधु मधुर होते हुये भी पाक में कटु होता है ॥ ८ ॥

क्वाथयेत्षोडशगुणं पिवेद्द्रव्याच्चतुर्गुणम् ।
कल्पनैषा कषायस्य यत्र नोक्तो विधिर्भवेत् ॥ ९ ॥

द्रव्य ( औषधि ) से सोलह गुना पानी डाल चौथाई रखना क्वाथ कहलाता है, जहां कोई विधान न हो वहां यह विधि काम में लावें ॥ ९ ॥

कषायंतु भवेत्तोयं स्नेहपाके चतुर्गुणम् ।
द्रवतुल्यं समुद्धृत्य द्रवे स्नेहं क्षिपेद्बुधः ॥ १० ॥

तैलादि पाक में स्नेह से चौगुना कषाय या जल देना, यदि किसी स्वरस से ही पाक करना हो तो द्रव स्वरस तैल के समान ही लेना ॥ १० ॥

तावत्प्रमाणं द्रव्यस्य स्नेहपादं ततः क्षिपेत् ।
तोयवर्ज्यं तु यद् द्रव्यं स्नेहद्रव्यं तथाभवेत् ॥ ११ ॥

स्वरसादि रहित द्रव्य ( सूखे द्रव्य ) स्नेह द्रव्य ( कल्क ) कहे जाते हैं, यह तैलादि से चौथाई लेने चाहिये ॥ ११ ॥

संवर्त्तितौषधः पाकः स्नेहानां परिकीर्तितः ।
तत्तुल्यता तु लेहस्य तथा भवति सुश्रुत ॥ १२ ॥

औषधियों का इकट्ठा होकर करछुल से चिपक जाना स्नेह पाक कहलाता है, ऐसा ही अवलेहों में भी जानना ॥ १२ ॥

स्वच्छमल्पौषधं क्वाथं कषायं चोक्तवद् भवेत् ।
अक्षं चूर्णस्यनिर्दिष्टं कषायस्य चतुष्पलम्॥ १३ ॥

पीने का क्वाथ साफ अल्प औषधि वाला होना चाहिये, चूर्ण की मात्रा एक तोला और क्वाथ की मात्रा ४ पल हो ॥ १३ ॥

मध्यमैषास्मृता मात्रा नास्तिमात्रा विकल्पना ।
वयः कालं बलं वह्निं देशं द्रव्यं रुजं तथा ॥ १४ ॥
समवेक्ष्यमहाभाग मात्रायाः कल्पना भवेत् ।

यह तो साधारणतया मात्रा का निर्देश है, मात्रा का प्रमाण ठीक नहीं हो सकता, बल, काल उम्र, अग्नि, देश, रोग और द्रव्य की तीक्ष्णादि को देख मात्रा का निश्चय करना चाहिये ॥ १४ ॥

सौम्यास्तत्ररसाः प्रायो विज्ञेया धातुवर्धना ॥ १५ ॥
मधुरातु विशेषेण विज्ञेया धातु वर्धनाः ।
दोषाणां चैव धातूनां द्रव्य समगुणं तु यत् ॥ १६ ॥

तदेववृद्धयेज्ञेयं विपरीतं क्षयावहम् ।

सौम्यरस (मधुर, अम्ल,लवण) और मधुर रस धातुवर्द्धक होतेहैं, दोष और धातु के समान गुण वाले द्रव्य उनकी वृद्धि करतेहैं और उनके विपरीत गुण वाले द्रव्य उनका नाश करते हैं ॥ १५-१६ ॥

उपक्रमत्रयं प्रोक्तं देहेऽस्मिन्मनुजोत्तम ॥ १७ ॥
आहारो मैथुनं निद्रा तेषुयत्नः सदाभवेत् ॥
असेवनात्सेवनाच्च अत्यन्तं नाशमाप्नुयात् ॥ १८ ॥

हे मनुजोत्तम इस देह में तीन बल हैं, आहार, मैथुन, निद्रा इनका सदा ध्यान रखें, विलकुल न सेवन से या अधिक इनके सेवन से ये नाश हो जाते हैं ॥ १७-१८ ॥

क्षयस्य बृंहणं कार्य्यं स्थूल देहस्यकर्षणम् ।
रक्षणं मध्यकायस्य देहभेदास्त्रयोमताः ॥ १९ ॥

क्षय हुये देह का बृंहण ( बढ़ाना ) स्थूल देह का कर्षण ( कमी करना ) मध्य देह वालों का रक्षण करना यही तीन देह के भेद हैं ॥ १९ ॥

उपक्रमद्वयं प्रोक्तं तर्पणं वाप्यतर्पणम् ।
हिताशी च मिताशी च जीर्णाशी च तथा भवेत् ॥ २० ॥

चिकित्सा सिर्फ दो प्रकार की है एक तर्पण ( वृद्धि कर ) दूसरी अपतर्पण ( क्षयकर ) हिता वह भोजन, परमित जीर्ण होने पर ही भोजन करने वाले स्वस्थ रहते हैं ॥ २० ॥

ओषधीनां पञ्चविधा तथा भवति कल्पना।
रस:कल्क: शृत: शीत: फाण्टश्च मनुजोत्तम ॥ २१ ॥
रसश्च पीड़ितो ज्ञेय: कल्क आलोड़िताद्भवेत्।
क्वथितश्च शृतो ज्ञेय: शीत: पर्य्युषितो निशाम् ॥ २२ ॥
सद्योऽभिशृतपूतं यत्तत्फाण्टमभिधीयते।
करणानां शतं चैव षष्टिं चैवाधिकास्मृता ॥ २३ ॥
यो वेत्ति सह्यजेय: स्यात्सम्बन्धे वाहुशोण्डिक:।
आहारशुद्धिरग्न्यर्थमग्निमूलं वलं नृणाम् ॥ २४ ॥

औषधियों का विधान पांच प्रकार का है, स्वरस, कल्क, शृत (कषाय) शीत कषाय और फांट कषाय। स्वरस द्रव्यों को पीस कर निचोड़ा हुआ होता है, कल्क (चूर्ण) पीसा हुआ, क्वाथ को ही शृत कहते हैं, शीत कषाय ठंडे पानी में ही डाल दूसरे दिन लेना कहलाता है। गरम पानी में डाल कर थोड़ी देर बाद लिया गया फांट कहलाता है। इन विधानों के १६० से अधिक भेद हैं, जो इनको जानता है, वही हे वाहुशोण्ड (हाथी की सूंड के समान भुजा वाले) सम्बन्ध ज्ञान में अजेय है। अग्नि रक्षा के लिये आहार की शुद्धि होना जरूरी है, कारण अग्नि ही पुरुषों का प्रधान वल है ॥ २४ ॥

ससिन्धुत्रिफलां चाद्यात्सुष्टु राज्ञाभिवर्णदाम्।
जांगलं च रसं सिन्धुयुक्तं दधिपय: कणाम् ॥ २५ ॥

अग्नि बढ़ाने के लिये सेंधानमक मिला त्रिफला का खाना उत्तम है, यह आज्ञा रंग बढ़ाने वाली भी है। या जांगल रस सेंधानमक मिलालें या दही के पानी के साथ पीपल लें।

रसाधिकं समं कुर्य्यान्नरा वाताधिकोऽपिवा ।

वाताधिक मनुष्य मधुर रस अधिक या अम्ल मधुर समान भाग में लें ॥ २५ ॥

निदाघेमर्दन प्रोक्तं शिशिरे च समं वहु ।
वसन्तेमध्यमं ज्ञेयं निदाघेमर्दनोल्वणम् ॥ २६ ॥

ग्रीष्म में तैल मर्दन बहुत करें, शिशिर ऋतु में सामान्य मर्दन करें, बसंत में मध्यम रूप से ग्रीष्म में मर्दन अधिक करें ॥ २६ ॥

त्वचं तु प्रथमं मर्द्यं मज्जाञ्च तदनन्तरम् ।
स्नायुरुधिरदेहषु अस्थि चातीव मांसलम् ॥ २७ ॥
स्कन्धौ वाहूतथैवेह तथा जंघे सजानुनो ।
आरिवन्मर्दयेत्प्राज्ञो जत्रुवक्षश्च पूर्ववत् ॥ २८ ॥

प्रथम त्वचा का मर्दन होता है, फिर मज्जा का, फिर स्नायु, रुधिर और देह में, अस्थि और मांसल स्थानों में स्कंध, वाहु, जंघा, जानु को शत्रु की तरह खूब मर्दन करें । जत्रु और वक्षस्थल को साधारण तौर पर ही मलें ॥ २८ ॥

अंगसन्धिषु सर्वेषु निष्पीडय वहुलं तथा ।
प्रसारयेदंग सन्धीन्न च क्षेपेणचाक्रमात् ॥ २९ ॥

समस्त अंगसंधियों को मलकर खूब पसारे, परन्तु संधियों को इकाइक झटका न दें ॥ २९ ॥

नाजीर्णे तु श्रमं कुर्य्यान्नभुक्ता पीतवान्नर: ।

खाना खाकर जल पीकर तथा अजीर्ण में श्रम न करें ॥ ३० ॥

दिनस्यतु चतुर्भागं उर्ध्वं तुप्रहरार्द्धके।
व्यायामं नैव कर्तव्यं स्नायाच्छीताम्बुनासकृत ॥ ३१ ॥

सायंकाल आधे पहर के बाद व्यायाम न करें। एक बार शीतल जल से स्नान करें ॥ ३१ ॥

वाय्युष्णं च श्रमं जह्याद्धृदा श्वासंनधारयेत् ॥ ३२ ॥

गरम पानी थकानको दूर करता है, हृदय से श्वास न रोके ॥ ३२

व्यायमश्चकफंहन्यात् वातं हन्याच्च मर्दनम्।
स्नानं पित्ताधिकं हन्यात्तस्यान्ते चातपाप्रिया: ॥ ३३ ॥
आतपक्लेशकर्मादौ क्षेमव्यायामिनोनराः ॥ ३४ ॥

व्यायाम से कफ, मर्दन से वायु, स्नान पित्त को नाश करता है। स्नान के बाद धूप सेवन भी करें ॥ ३३ ॥

व्यायाम करने वाले पुरुष धूप और कार्य की कठिनता को सहन करके सुखी रहते हैं ॥ ३४ ॥

रसादिलक्षणं नामैकाशतीत्यधिक द्विशततमोऽध्यायः चिकित्सक चूड़ामणि
पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया
सनाथीकृतः समाप्तः ॥ २८१ ॥

# अथ नाना रोग हराण्यौषधानि

धन्वन्तरिरुवाच

सिंहीशठीनिशायुग्मं वत्सकं क्वाथसेवनम् ।
शिशोः सर्वातिसारेषु स्तन्यदोषेषु शस्यते ॥ १ ॥

धन्वन्तरि जी कहने लगे । बड़ी कटेली, कचूर, दोनों हल्दी, कुडाछाल, का काढ़ा बालकों के अतिसार और स्तन्य ( दूध ) के दोषों का नाश करता है ॥ १ ॥

शृंगीसकृष्णातिविषां चूर्णितां मधुना लिहेत् ।
एका चातिविषा कासच्छर्दि ज्वरहरी शिशोः ॥ २ ॥

काकड़ासिंगी, पीपल, अतीस, का चूर्ण मधु से चाटने से तथा केवल अतीस का चूर्ण मधु से देने से बच्चों का कास, वमन, ज्वर नाश करता है ॥ २ ॥

बालैः सेव्या वचा साज्या सदुग्धा वाथ तैलयुक् ।
यष्टिकां शंखपुष्पीं वा बालः क्षीरान्वितां पिबेत् ॥ ३ ॥
वाग्रूपसम्पद्युक्तायुर्मेधाश्रीर्वर्धते शिशोः ।

बच का चूर्ण, दूध, घृत या तेल से देना तथा मोरेठी, शंखपुष्पी का चूर्ण दुग्ध सहित पिलाना बच्चों की वाणी, रूप, आयु, मेधा, को बढ़ाता है । ३ ।

वचाह्यग्निशिखावासा शुण्ठी कृष्णा निशागदम् ।
सयष्टि सैन्धवं बालः प्रातर्मेधाकरं पिबेत् ॥ ४ ॥

बच, केसर, अडूसा, सोंठ, पीपल, हल्दी, कूठ, मौरेठी, सैंधानमक सुबह पीने से बच्चों की बुद्धि बढ़ाता है ॥ ४ ॥

देवदारु महाशिग्रुफलत्रयपयोमुचाम् ।
काथः सकृष्णा मृद्वीका कल्कः सर्वान्कृमीन्हरेत् ॥ ५ ॥

देवदारु, मीठे सेंजने के बीज, त्रिफला, मोंथा का काथ, पीपल, और मुनक्का का कल्क समस्त कृमियों को नष्ट कर देता है ॥ ५ ॥

त्रिफला भृङ्गविश्वानां रसेषुमधुसर्पिषोः ।
मेषी क्षीरेच गौमूत्रे सिक्तं रोगे हितं शिशोः ॥ ६ ॥

त्रिफला, घमरा, सोंठ के रस में घृत मधु मिला देने से या भेड़ के दूध या गोमूत्र का सेक बाल रोगों में हितकर है ॥ ६ ॥

नासारक्तहरोनस्याद्दूर्वारसइहोत्तमः ॥ ७ ॥

नाक से रुधिर आने पर दूर्वा रस का नस्य उत्तम है ॥ ७ ॥

लशुनाद्रक शिग्रूणां रसः कर्णस्यपूरणम् ।
तैलमाद्रकजायं वा शूलहा चोष्ट रोगनुत ॥ ८ ॥

लहसुन, आद्रक, सेंजना का रस, या आद्रक रस से पकाया तैल कान में डालने से कर्ण रोगों को नष्ट करता है ॥ ८ ॥

जातीपत्रंफलं व्योषं कवलं मूत्रकं निशा ।
दुग्धकाथेऽभयाकल्के सिद्धं तैलं द्विजार्तिनुत् ॥ ६ ॥

ओठों के रोगों को चमेलीपत्र, जायफल, त्रिकुटा का कवल धारण करना गोमूत्र, हल्दी का काथ, अभया कल्क और दुग्ध से सिद्ध तैल दांतों की पीड़ा हरण करता है ॥ ६ ॥

धान्याम्बुनारि केलं गौमूत्रं क्रमुक विश्वयुत् ।
काथितं कवलं कार्य्यं जिह्वा व्याधि प्रशान्तये ॥ १० ॥

धनियां, सुगन्धवाला, नारियल, गोमूत्र, सुपारी, सोंठ के क्काथ का कवल जिह्वा रोगों को नष्ट करता है ॥ १० ॥

साधितं लांगलीकल्कै तैलं निगुण्डिकारसैः ।
गण्डमाला गलगण्डौ नाशयेन्नस्यकर्मणा ॥ ११ ॥

कलिहारी का कल्क और निगुण्डी का रस डाल पकाया तैल का नस्य लेने से गण्ड माला और गलगंड दूर होते हैं । ११ ॥

पल्लवैरर्कपूतीक स्नुहीरुग्घातजातिकैः ।
उद्वर्त्तयेत्सामेमूत्रैः सर्वत्वग्दोष नाशनैः ॥ १२ ॥

आक,करंज, स्नुही ( थूहर ) अमलतास, चमेली के पत्तों का रस गौमूत्र युक्त लेप करने से समस्त चमड़ी के रोग दूर होते हैं । १२॥

वाकुची सतिला भुक्ता वत्सरात्कुष्टनाशिनी ।
पथ्या भल्लातकी तैल गुड पिण्डीतु कुष्टजित्॥ १३ ॥

वाकुची, तिल का चूर्ण एक बर्ष में कुष्टनाश करता है, हर्रा, भल्लातक तैल, गुड़ का बना पिण्ड कुष्ट नष्ट करता है । १३ ॥

यूथिका वन्हि रजनी त्रिफला व्योषचूर्णयुक् ।
तक्रं गुदांकुरेपेयं भक्ष्यावा सगुडाऽभया ॥ १४ ॥

जुहीमूल, चित्रक, हल्दी त्रिफला, त्रिकुटा के चूर्ण को मट्ठे से पीना । हर्रा और गुड़ का खाना बवासीर नाशक है ॥ १४ ॥

फलदार्वी विषाणां तु काथौ धात्रीरसोऽथवा ।
पातव्यो रजनीकल्कः क्षौद्रा क्षौद्र प्रमेहिणां ॥ १५ ॥

त्रिफला, दारुहल्दी, अतीस ( काकोली ) का काढ़ा, आमला का स्वरस, हल्दी चूर्ण और मधु के साथ देना क्षौद्र मेहघ्न है ॥ १५ ॥

वासागर्भो व्याधिघात क्काथ एरण्ड तैलयुक् ।
वातशोणित हृत्पानात्पिप्पली स्यात्प्लीहा हरी ॥ १६ ॥

अमलतास का काढ़ा, वांसा ( अड्डूसा ) चूर्ण, एरण्ड तैल मिला देना वातरक्त को दूर करती है। और पीपल प्लीहानाशक है ॥१६

सेव्याजाठरिणा कृष्णा स्नुकक्षीर बहु भाविता।
पयोवा रुच्यदन्त्याग्नि विडङ्गव्योषकल्कयुक् ॥ १७ ॥

सेंहुड के दूध से बहुत बार भावना दी हुई पीपल उदर रोगियों को हितकर है। या काला नमक, दन्ती, चित्रक, विडंग, त्रिकुटा का चूर्ण पानी से लेना ॥ १७ ॥

ग्रंथिकोग्राभयाकृष्णा विडंगाक्ता घृते स्थिता।
मासं तक्रं ग्रहण्यर्शः पांडुगुल्म कृमीन्हरेत् ॥ १८ ॥

गोपरामूल, बच, हर्रा, पीपल, विडंग घृतयुक्त तक्र से लेने पर एक मास में ग्रहणी, अर्श, पांडु, गुल्म, कृमि नष्ट करता है ॥ १८ ॥

फलत्रयामृतावासातिक्तभूनिम्बजस्तथा।
क्वाथः समाक्षिको हन्यात्पाण्डुरोगंसकामलं ॥ १६ ॥

त्रिफला, गुडूची, अडूसा, कुटकी, चिरायता का क्काथ, शहद युक्त देने से कामला और पांडु रोग को नाश करता है ॥ १६ ॥

रक्तपित्ती पिवेद्वासासुरसं ससितं मधु।
वरीद्राक्षावलाशुंठी साधितं वा पयः प्रथक् ॥ २० ॥

रक्तपित्त वाला अडूसे का रस शहद मिश्री मिला पीवे। शतावरी दाख, वला, सोंठ, से बनाया दूध पीना या अलग २ औषधि से बना दूध पीना ॥ २० ॥

वरीविदारी पथ्या च वलात्रयं सवासकम् ।

श्वदंष्ट्रा मधुसर्पिर्भ्यामालिहेत्त्त्वयरोगवान् ॥ २१ ॥

शतावर, विदारीकंद, हर्रा, वला, अतिबला, महावला, अडूसा, गुखुरू का चूर्ण मधु घृत से त्तय रोग वाला चाटे ॥ २१ ॥

पथ्याशिग्रुकरञ्जार्क त्वक्सारं मधुसिन्धुमत् ।

समूत्रंविद्रधिंहन्ति परिपाकायतंत्रजित् ॥ २२ ॥

वन्ध्याककोड़ाकन्द, सेंजना, कंजा की मींग, बांस की छाज, सेंधा नमक मधु गौमूत्र मिला लेप करने से विद्रधि नष्ट होती है और ज्यादा दिन की निकली हुई पक जाती है ॥ २२ ॥

त्रिवृता जीवतीदन्ती मञ्जिष्टा शर्वरी द्वयम् ।

तार्क्ष्यजं निम्वपत्रं च लेपः शस्तो भगंदरे ॥ २३ ॥

निशोथ, जोवन्ती, दन्तीमूल, मजीठ, हल्दी दोनों, मजीठ, रसौंत नींव की पत्ती का लेप भगन्दर को नष्ट करता है ॥ २३ ॥

रुग्घातरजनीलात्ताचूर्णाजत्तौद्रसंयुता ।

वासोवर्त्तिर्व्रणेयोज्या शोधिनीगति नाशिनी ॥ २४ ॥

अमलतास की पत्ती, हल्दी, लाख, चूना, सोनामक्खी की शहद से कपड़े की वर्त्ती वना घाव में देने से नासूर अच्छा होता है ॥ २४ ॥

श्यामायष्टिनिशालोध्रपद्मकोत्पल चंदनैः ।

समरीचैः शृतं तैलं त्तीरेस्याद्व्रणरोहणम् ॥ २५ ॥

अनन्तमूल या शीशम, मौरेठी, हल्दी, लोध, पद्माख, कमल, लालचन्दन, मिर्च का कल्क, बना तैल पकावें चतुर्गुण दुग्ध डालकर; यह व्रण को भरने वाला होता है ॥ २५ ॥

श्रीकार्पासदलैर्भस्मफलोपलवणा निशा ।
तत्पिण्डीशोधनं ताम्रे तत्तैलंस्यात्क्षतौषधम् ॥ २६ ॥

वेलपत्र, कपासपत्र की भस्म, त्रिफला, सेंधा नमक, हल्दी, की टिकिया ताम्रपत्र पर लेप कर घाव में भरने से या तैल सिद्ध कर लेने से घाव को भरती है यह तैल भी ताम्रपात्र में पाक करें । २६ ॥

कुंभीसारपयोयुक्तं वन्हिदग्धं व्रणे लिपेत् ।
तद्वनाशयेत्सेकान्नारिकेलिरजोघृतम् ॥ २७ ॥

कुंभीसार ( गूगल ) दूध में पीस कर अग्नि में भस्म करें अन्तधूर्म, इसको व्रण में भरने से या नारियल की गरी, घृत मिला सेक करने से व्रण नष्ट होता है । २७ ॥

विश्वाजमोदसिन्धूत्थ चिञ्चात्वग्भिः समाभया ।
तक्रेणोष्णाम्बुनावाथ पीतातीसार नाशिनी ॥ २८ ॥

सोंठ, अजवायन, सेंधानमक, इमलीछाल इन चारों के बराबर हर्र का चूर्ण गर्म जल या मट्ठे से पीना अतिसार नाशक है । २८ ॥

वत्सकातिविषाविश्वविल्वमुस्तश्रृतं जलम् ।
सामे पुराणेऽतिसारे सासृक्शूले च पाययेत् ॥ २९ ॥

कुडाछाल, अतीस, सोंठ, वेलगूदा, मोंथा का काढा सामातीसार, पुरानातीसार, रक्तातीसार, और दर्द में पिलाना । २९ ॥

अंगारदग्धंसुनतंसिन्धुमुष्णाम्बुना पिवेत् ।
शूलवानथ वातार्तः सिन्धुहिंगुकणाभया ॥ ३० ॥

कोयलों पर जलाया हुआ तगर, सेंधा नमक मिला गर्म जल से लेने से शूल नष्ट होता है, उसी प्रकार सेंधा नमक हींग, पीपल, हर्र का चूर्ण भी वात शूल नाशक होता है । ३० ॥

कटुरोहीत्कणातङ्कलाजचूर्णं मधुप्लुतम् ।

वस्त्रछिद्रगतं वक्त्रे न्यस्तं तृष्णां विनाशयेत् ॥ ३१ ॥

कुटकी, पीपल, कूठ, धानकीखील, के चूर्ण को वस्त्र में बाध पोटली कर मुख में रखने से तृष्णा नष्ट होती है। ३१ ॥

पाठादार्वीजातिदलं द्राक्षामूलफलत्रयैः ।

साधितं समधुक्वाथं कवलं मुखपाकहृत् ॥ ३२ ॥

पाठा, दारुहल्दी, चमेलीपत्र, दाखकी जड़, त्रिफला, का क्वाथ शहद मिला कुल्ले करने से मुख पाक दूर होता है । ३२ ॥

कृष्णाति विषातिक्तेन्द्रदारुपाठापयो मुचाम् ।

क्वाथो मूत्रेश्रृतः क्षौद्रः सर्वकंठगदापहा ॥ ३३ ॥

पीपल, अतीस, कुटकी, इन्द्रजौ, दारुहल्दी, पाठा मोथा का मूत्र में किया गया क्वाथ मधु मिला कुल्ले करने से कंठ रोग नाश करता है। ३३ ॥

पथ्यागोक्षुरदुस्पर्शा राजवृक्षाशिलाभिदाम् ।

कषायः समधुः पीतो मूत्रकृच्छ्रं व्यपोहति ॥ ३४ ॥

हर्रा, गुखुरु, जवासा, अमलतास का गूदा, पाषाणभेद, का क्वाथ शहद युक्त पीने से मूत्र कृच्छ्र नष्ट करता है । ३४ ॥

वंशत्वग् वरुणक्वाथः शर्कराऽश्मविघातनः ॥ ३५ ॥

वांस की छाल, वरुणछाल का काढा शकर मिला पीना शर्करा पथरी को नष्ट करता है । ३५ ॥

शाखोटक्वाथसक्षौद्रं क्षीराशी श्लीपदी भवेत् ॥३६॥

सहोरा की छाल का क्वाथ मधु मिला और केवल दूध पर ही रहना श्लीपद रोग नाशक है । ३६ ॥

माषार्कत्वक्पयस्तैलं मधुसिक्तं च सैन्धवम् ।
पाद रोगं हरेत्सर्पिर्जाल कुक्कटजं तथा ॥ ३७ ॥

उरद, आक की छाल, आक का दूध, तैल, मधु, सेंधा नमक, का मलहम पाव के रोग पाददारी को नष्ट करता है इसी तरह मुर्गे की शिखा ( चोटी ) का चूर्ण घृत मिला लगाने से भी होता है ॥ ३७ ॥

शुण्ठीसौवर्चलोहिंगुचूर्णं शुंठी रसैघृतम् ।
रुजं हरेद्‌थक्वाथ विद्धि वह्न्याग्निसाधने ॥ ३८ ॥

सोंठ, काला नमक, हींग का चूर्ण शुण्ठी रस और घृत के साथ देना या सोंठ के क्वाथ में हींग, सोंठ, काला नमक मिला पिलाना मन्दाग्नि नाशक है ॥ ३८ ॥

सौवर्चलाग्नि हिंगूनां सदीप्यानां रसैयुतम् ।
विडदीप्यकयुक्तंवा तक्रं गुल्मातुरः पिवेत् ॥ ३९ ॥

काला नमक, चित्रक, हींग, अजवायन का चूर्ण या विड नमक, अजवायन का चूर्ण तक्र से लेना गुल्म नष्ठ करता है ॥ ३९ ॥

धात्रीपटोलमुद्गानां क्वाथः साज्यो विसर्पहा ।
शुंठीदारुत्वक्षीर क्वाथोमूत्रान्वितोऽपरः ॥ ४० ॥

आमला, परवर, मूंग का क्वाथ घृतयुक्त विसर्प रोग को नष्ट करता है । इसी प्रकार सोंठ, देवदारु, तवाखीर का क्वाथ मूत्र मिला देना विसर्प रोग हर है ॥ ४० ॥

सव्योषायो रजः क्षारः फलक्वाथश्च शोथहृत ।

त्रिकुटा, लोहचूर्ण यवक्षार त्रिफला का क्वाथ शोथहर होता है ।

गुडशिग्रुत्रिवृद्भिश्च सैन्धवानां रजोयुतः ॥ ४१ ॥

त्रिफला फलजः क्वाथः सगुडः स्याद्वि रेचनः ॥ ४२ ॥

गुड मिला सेंजना छाल का क्वाथ, निशोथ का क्वाथ सेंधा नमक मिला देना या त्रिफला का क्वाथ गुड मिला देना विरेचन है ॥ ४२ ॥

वचाफलकषायोत्थं पयो वमन कृद्भवेत् ॥ ४३ ॥

बच, मदनफल का क्वाथ वमन कारक है ॥ ४३ ॥

त्रिफलायाः पलशतं पृथग् भृङ्गजभावितम् ।

विडंगं लोहचूर्णञ्च दशभाग समन्वितम् ॥ ४४ ॥

शतावरीगुडूच्याग्निपलानां शत ( पञ्च ) विंशतिः ।

मध्वाज्यतिलजैर्लिह्याद्वलीपलितवर्जितः ॥ ४५ ॥

शतमब्दं हि जीवेत् सर्व रोग विवर्जितः ॥ ४६ ॥

त्रिफला १०० पल को लेकर घमरे की ७ भावना दें फिर उसका दशमांश विडंग चूर्ण और लोहभस्म मिलावे । शतावरी, गुडूची, चित्रक चूर्ण २५-२५ पल मिलालें मधु, घृत, तिल तैल मिला खाने से वली पलित से रहित हो सौ वर्ष तक जीवित रहता है ॥ ४४ । ४६ ॥

त्रिफलासर्वरोगघ्नी समधुः शर्करान्विता ।

सितामधुघृतैर्युक्ता सकृष्णा त्रिफलातथा ॥ ४७ ॥

त्रिफला मधु और शकर के साथ खाना सर्व रोग नाशक है । इसी प्रकार त्रिफला, पीपल, का चूर्ण मधु घृतशकर से खाना भी । ४७

पथ्याचित्रकशुण्ठ्यश्च गुडूचीमुशलीरजः ।

सगुडंभक्षितं रोगहरं त्रिशतवर्षकृत् ॥ ४८ ॥

हर्रा, चित्रक, सोंठ, गुडुची, मूसली, का चूर्ण गुड के साथ सेवन समस्त रोगों को नष्ट कर तीन सौ वर्ष की उम्र करता है ॥ ४८ ॥

किञ्चित्चूर्णं जवापुष्पं पिंडितं विसृजेज्जले।
तैलं भवेद्घृताकारं किञ्चिच्चूर्णं जलान्वितं ॥ ४९ ॥

थोड़ी सी गुडहल के चूर्ण की गोली जल में डाले यह जल और थोड़ा सा गुड़हल चूर्ण तैल में डालने से तैल घृत के समान हो जाता है ॥ ४९ ॥

धूमार्थं दृश्यतेचित्रं वृषदंशजरायुना।
पुनर्माक्षिकधूपेन दृश्यते तद्यथापुरा ॥ ५० ॥

बिल्ली की जरायु की धूप देने से विचित्रता दीखती है उसे बंद करने को शहद की धूप देनी चाहिये ॥ ५० ॥

कर्पूरजलकाभेकतैलं पाटलिमूलयुक्।
पिष्ट्वा लिप्यपदे द्वे च चरेदंगारकेनरः ॥ ५१ ॥

कपूर, नेत्रवाला, मेंढक की वसा, पैरों पर लगा कर अंगारों पर चल सकता है ॥ ५१ ॥

तृणोत्थानादिकं व्यूह्य दर्शयन्वै कुतूहलम्।

इससे तृणों का उठाना आदि कौतूहलता भी दिखाई जा सकती है ॥ ५२ ॥

विषग्रहरुजध्वंसश्चुद्रनर्मच कामिकम् ॥ ५२ ॥
तत्तेषट्कर्मकं प्रोक्तं सिद्धद्वय समाश्रयम्।
मंत्रध्यानौषधिकथा मुद्रज्या यत्रमुष्टयः ॥ ५३ ॥

विष, ग्रह, रोग नाश, हंसी मजाक, खेल, कामुकता यह षट् कर्म कहे गये है और दो प्रकार को सिद्धियां हैं ॥ ५३ ॥

चतुर्वर्गफलं प्रोक्तं यः पठेत् सदिवं व्रजेत् ॥ २४ ॥

मंत्र, ध्यान, औषधि गुण, यह मुद्रा है और चतुर्वर्ग फल (धर्म, अर्थ काम, मोक्ष) कहलाते हैं इन्हें जो पढ़ता है वह स्वर्ग को जाता है ॥ २४ ॥

नानारोगहराण्यौषधानि नामद्वयाशीत्यधिक द्विशततमोऽध्यायः चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया सनाथीकृतः समाप्तः ॥ २८२ ॥

## अथ मृतसंजीवनी करसिद्ध योगाः

धन्वन्तरिरुवाच

सिद्धयोगान् पुनर्वक्ष्ये मृतसंजीवनी करान् ।
आत्रेयभाषितान् दिव्यान सर्वव्याधिविमर्दनान् ॥ १ ॥

धन्वन्तरि जी कहने लगे। कि अब मैं मृत को संजीवन करने वाले सिद्ध योगों को जो आत्रेय जी के कहे हुये दिव्य एवं सर्व रोगों के नष्ट करने वाले हैं उन्हें कहता हूं ॥ १ ॥

आत्रेयउवाच

विल्वादिपंचमूलस्य क्वाथः स्याद्वातिके ज्वरे । ज्वरे
पाचनं पिप्पलीमूलं गुडूची विश्वजोऽथवा ॥ २ ॥

आत्रेय जी ने कहा। वेल, स्योनाक, खंभारी पाटला, अग्निमंथ का क्वाथ वात ज्वर हर है। पीपलामूल, सोंठ, गुडूची का क्वाथ भी पाचक और वातहर है ॥ २ ॥

आमलक्य भया कृष्णा वन्हिःसर्व ज्वरान्तकः ।

आमला, हर्रा, पीपल, चित्रक का चूर्ण सर्व ज्वर नाशक है, शार्ङ्गधर में सेन्धा नमक और इस आमलक्यादि में बढ़ाया हुवा देखा गया है, यह चूर्ण सर्व ज्वर नाशक है ॥ ३ ॥

त्रिल्वाग्नि मंथश्योनाक काश्यर्ग्यः पाटला स्थिरा ॥ ३ ॥

त्रिकंटक, पृश्निपर्णी बृहती कंटकारिकाः ।

ज्वर विपाक पार्श्वार्ति कासनुत् दशमूलकम् ॥ ४ ॥

बेल, हरनी छाल, सोनापाठा, गंभारी, पाटला, शालिपर्णी, पृष्ट-पर्णी, गुखुरु, फल कटैया, भटकटैया, यह दशमूल क्वाथ, है वह ज्वर को पकाने वाला, पसली का दर्द खांसी को नष्ट करता है । ॥ ४ ॥

गुडूची पर्पटी मुस्त किरातं विश्वभेषजम् ।

बात पित्त ज्वरे देयं पञ्चभद्रमिदं स्मृतम् ॥ ५ ॥वातपित्त ज्वरे ।

गुडूची, पित्त पापड़ा, नागरमोथा, चिरायता, सोंठ यह पंचभद्र क्वाथ वात पित्त ज्वर नाशक है ॥ ५ ॥

त्रिवृद्विशाला कटुका त्रिफलारग्वधैःकृतः ।

संस्कारो भेदनः क्वाथः पेयः सर्व ज्वरापहः ॥ ६ ॥ सर्वज्वरे ।

निशोथ, इद्रायण का गूदा, कुटकी त्रिफला, अमलतास का गूदा, यह सर्व ज्वर नाशक भेदन क्वाथ है खूब दस्त लाता है ॥ ६ ॥

देवदारु वला वासा त्रिफला व्योषपद्मकैः ।

सविडंगैः सितातुल्यं तच्चूर्णं पंचकासजित् ॥ ७ ॥ कासे ।

देवदारु, बला, अड़ूसा, त्रिफला, त्रिकुटा, पद्माख, विडंग चूर्ण सब के समान मिश्री मिला देने से पांचों प्रकार की खांसी दूर होती है ॥ ६ ॥

दशमूली शठी रास्ना पिप्पली विल्व पौष्करैः ।

शृङ्गीतामलकी भार्गी गुडूची नागवल्लिभिः ॥ ८ ॥

यवागूविधिना सिद्धां कषायंवा पिवेन्नरः।
कासहृद्ग्रहणीपार्श्वहिक्काश्वास प्रशान्तये ॥ ६ ॥ श्वासे

दशमूल, कचूर, रास्ना, पीपल, बेलका गूदा, पुष्करमूल, काकड़ा सिंगी, भूमी आमला, भारंगी, गुडूची, पान का क्वाथ या इन्हीं से सिद्ध पेयादि कास, ग्रहणी, पसली दर्द, हिक्का श्वास को नष्ट करता है। ८।९।

मधुकं मधुनायुक्तं पिप्पली शर्करान्विताम्।
नागरं गुड संयुक्तं हिक्काघ्नं लवणत्रयम् ॥ १० ॥ हिक्काहरम् ॥

मधुयुक्त मोरेठी, शकरयुक्त पीपल, गुड़युक्त सोंठ, तीनों नमक यह चारों योग हिक्का नाशक हैं ॥ १० ॥

कारव्यजाजीमरिचं द्राक्षा वृक्षाम्लदाड़िमम्।
सौवचलं गुडं क्षौद्रं सर्वारोचक नाशनम् ॥ ११ ॥ अरोचके।

कलौंजी, कालाजीरा, कालीमिर्च, दाख, इमली फल, अनार दाना, काला नमक, गुड़, मधु यह सब अरुचि नाशक है ॥ ११ ॥

श्रृंगवेररसं चैव मधुनासहपाययेत्।
अरुचि श्वासकासघ्नं प्रतिश्यायकफान्तकृत् ॥ १२ ॥

आर्द्रक रस में मधु मिला पिलाने से अरुचि, श्वास, कास, प्रतिश्याय कफ दूर होते हैं ॥ १२ ॥

वटं श्रृङ्गीशिलालोध्रदाडिम मधुकं मधु।
पिवेतण्डुलतोयेन छर्दितृष्णानिवारणम् ॥१३॥ छर्दितृष्णाहरम

वरगद की दाढी, आमला, लोध, गेरू, अनार दाना, मोरेठी, का चूर्ण शहद मिले चावल धोवन से पीने पर वमन तृषा को दूर करते हैं ॥ १३ ॥

गुडूचीवासकंलोध्रं पिप्पलीक्षौद्रसंयुतम् ।
कफान्वितं जयेद्रक्तं तृष्णाकासज्वरापहम् ॥ १४ ॥ कफयुक्तरक्ते

गुडूची, अडूसा, लोध, पीपल का चूर्ण, मधु के साथ चाटने से कफ के साथ रक्त आना, तृषा, कास, ज्वर को मिटाता है ॥ १४ ॥

वासकस्यरसस्तद्वत्समधुस्ताम्रजोरसः ।
शिरीषपुष्पसुरसभावितं मरिचं हितम् ॥ १५ ॥ कासे

अडूसे का रस मधुयुक्त, ताम्रभस्म मिला देना या शिरष के पुष्पों से भावित कालीमिर्च का चूर्ण मधु से देना कास नाशक है ॥१५

सर्वात्तिनुन्मसूरोऽथ पित्तमुक् तंडुलीयकम् ।
निर्गुण्डीशारि वाशेलुरंकोलश्च विषापहः ॥ १६ ॥

समस्त पीड़ाओं को मसूर हरतो है । तण्डुली शाक पित्त नाश करता है । निर्गुंडी, शारिवा, लभेरा, अंकोल विषहर हैं ॥ १६ ॥

महौषधामृताक्षुद्रापुष्करग्रंथिकोद्भवम् ।
पिबेत्कणायुतं क्वाथं मूर्च्छायां च मदेषुच ॥ १७ ॥ मूर्च्छायाम्

सोंठ, गुडूचो, कटैली, पुष्करमूल, पीपलामूल का क्वाथ पिप्पली का प्रक्षेप देकर पीना, मूर्च्छा और मद को नष्ट करता है ॥ १७ ॥

हिंगुसौवर्चलव्योषैर्द्विपलांशैर्घृताढकम् ।
चतुर्गुणे गवांमूत्रे सिद्धमुन्मादनाशनम् ॥ १८ ॥ उन्मादे

हींग, काला नमक, त्रिकुटा २–२ पल, घृत ४ सेर, गोमूत्र १२ सेर डाल सिद्ध किया घृत उन्माद को नष्ट करता है ॥ १८ ॥

शंखपुष्पीवचाकुष्टैः सिद्धं ब्राह्मीरसैर्युतम् ।
पुराणं हन्त्यपस्मारं सोन्मादं मेध्यमुत्तमम् ॥ १९ ॥ अपस्मारे

शंखपुष्पी, वच, कूठ का कल्क और चौगुने ब्राह्मीरस से सिद्ध घृत, पुराने अपस्मार और उन्माद को नष्ट करता है यह बुद्धि वर्धक है।

× पंचगव्यं घृतं तद्वत्कुष्टनुच्चाभयायुतम् ।
पटोलत्रिफलानिम्बगुडूचीधावनीवृषैः ॥
सकरञ्जैर्घृतं सिद्धं कुष्टनुद्वज्रकं स्मृतम् ॥ २० ॥ कुष्टे

× पंचगव्य घृत भी उन्मादहर है यही घृत हरीतकी युक्त कुष्ट नाशक है। परवरपत्र, त्रिफला, निम्बछाल, गुडूची, कटैली, अडूसा, करंजछाल, का कल्क डाल पकाया हुआ घृत कुष्ट नाशक है इसे वज्रक घृत भी कहते हैं ॥ २० ॥

निम्बं पटोलं व्याघ्री च गुडूची वासकं तथा ।
कुर्य्याद्दशपलानभागानेकैकस्य सुकुट्टितान् ॥ २१ ॥
जलद्रोणे विपक्तव्यं यावत्पादावशेषितम् ।
घृतप्रस्थं पचेत्तेन त्रिफलागर्भसंयुतम् ॥ २२ ॥
पंचतिक्तमितिख्यातं सर्पिः कुष्टविनाशनम् ।
अशीतिं वातजानोरागाश्चत्वारिंशश्चपैत्तिकान् ॥ २३ ॥
विंशतिं श्लैष्मिकान्कासपीनसार्शो व्रणादिकान् ।
हन्त्यन्यान्योगराजोऽयं यथार्कस्तिमिरं खलु ॥ २४ ॥

नीवछाल, परवलपत्र, कटैली, गुडूची, अडूसा प्रत्येक १०-१० पल लेकर और कूटकर १६ सेर पानी में पकावें और चौथाई शेष रख छानलें इसमें एक सेर गोघृत डाल पाक करें त्रिफलाचूर्ण का कल्क

---

× गोशकृद्रसदध्यम्ल क्षीर मूत्रैः समैर्घृतम् ।
सिद्धं चातुर्थकोन्माद ग्रहापस्मारनाशनम् ॥ भै० र० ॥

इसमें डालें इसे पंचतिक्त घृत कहते हैं। यह कुष्ट नाशक है। अस्सी वातज रोगों को, चालीस पित्त रोगों को, बीस कफज रोगों को और कास, पीनस, अर्श, व्रणादि रोगों को भी नष्ट करता है यह योगों का राजा है। सूर्य जैसे अंधकार को दूर करता है उसी प्रकार यह भी रोगों को दूर करता है ॥ २१ । २४ ॥

त्रिफलायाः कषायेण भृङ्गराजरसेन च ।
व्रणप्रक्षालनं कुर्य्यादुपदंशप्रशान्तये ॥ २५ ॥ उपदंशे

त्रिफला क्वाथ, भृङ्गराज स्वरस, उपदंश के व्रणों को धोने से नष्ट करता है ॥ २५ ॥

पटोलदलचूर्णेन दाड़िमत्वग्रजोऽथवा ।
गुण्डयेच्चगजेनापि त्रिफलाचूर्णकेनच ॥ २६ ॥

परवर पत्र चूर्ण, अनार छाल चूर्ण, नाग केशर चूर्ण, त्रिफला चूर्ण को व्रणों पर बुरकना उत्तम है ॥ २६ ॥

त्रिफलायोरजोयष्टिमार्कवोत्पलमारिचैः ।
ससैन्धवैः पचेत्तैलमभ्यंगाच्छर्दिकापहम् ॥ २७ ॥ वमनहरम्

त्रिफला लोह चूर्ण मोरेठी, वमरा, कमल, मिरच सेंधानमक, इनके कल्क से पकाया तैल मर्दन से वमन को दूर कर देता है ॥ २७ ॥

सक्षीरान्मार्कवरसाद्द्विप्रस्थमधुकोत्पलैः ।
पचेत्तु तैलकुडवं तन्नस्यं पलितापहम् ॥ २८ ॥ वलीपलिते

मोरेठी, कमल पुष्प का कल्क गोदुग्ध, भृङ्गराज स्वरस १-१ सेर डाल आधा सेर तिल तैल पका नस्य लेने से कुसमय में होने वाली बालों की सफेदी दूर हो जाती हैं ॥ २८ ॥

निम्बं पटोलं त्रिफला गुडूचीखदिरं वृषम्।
भूनिम्बपाठात्रिफलागुडूची रक्तचंदनम्।
योगद्वयं ज्वरंहन्ति कुष्टविस्फोटकादिकम् ॥ २६ ॥ विस्फोटज्वरे

नींव छाल, परवर पत्र, त्रिफला गुडूची, खैर, अडूसा या चिरायता, पाठा, त्रिफला, गुडूची, लाल चन्दन, यह दोनों योग ज्वर, कुष्ठ, फोड़ा फुन्सी नष्ट करने वाले हैं ॥ २६ ॥

पटोलामृतभूनिम्ब, वासारिष्टकपर्पटैः।
खदिरान्तयुतैः क्वाथो विस्फोटज्वर शान्तिकृत् ॥ ३० ॥

परवर पत्र, गुडूची, चिरायता, अडूसा, नीम छाल, पित्तपापड़ा, खदिर का क्वाथ फोड़ों वाले ज्वर को नष्ट कर देता है ॥ ३० ॥

दशमूलीछिन्नरुहा पथ्यादारुपुनर्नवा।
ज्वरविद्रधि शोथेषु शिग्रुविश्वजिता हिता। ३१ ॥ विद्रधौ
मधूकं निम्बपत्राणि लेपः स्याद्व्रणशोधना ॥ ३२ ॥ व्रणे

दशमूल, गुडूची, हर्रा, देवदारु, पुनर्नवा का क्वाथ या सॅजना छाल, और सोंठ का क्वाथ ज्वर, विद्रधि और शोथ को नष्ट करता है। मोरेठी औरनीव के पत्तों का लेप व्रण को शोधन करता है। घृत, मधु; दारुहल्दी तिल, यह चार चीजें शार्ङ्गधर में और भी अधिक है ॥ ३२ ॥

त्रिफलाखदिरोदार्वी न्यग्रोधातिवला कुशाः।
निम्बमूलकपत्राणां कषायाः शोधने हिताः ॥ ३३ ॥ व्रणशोधने

त्रिफला, खदिर, दारुहल्दी, वटछाल, अतिवला, कुश, नींम की मूल छाल, नींम के पत्तों का क्वाथ व्रणों को शोधन करने में हितकारी है ॥ ३३ ॥

करञ्जारिष्टनिगुण्डीरसोहन्याद्व्रणक्रमीन् ।। ३४ ।।

करंजछाल, संभालू की छाल का रस व्रण के कीड़ों को नष्ट करदेता है ॥ ३४ ॥

धातकीचंदनवलासमंगामधुकोत्पलैः ।
दार्वी मेदान्विते लेपः सर्पिर्व्रणरोपणः ।। ३५ ।। व्रणरोपणे

आमला, चंदन, वला, मजीठ, मोरेठी, कूठ, रसोत का चूर्ण घृत युक्त किया गया लेप व्रण को रोपण करता है ॥ ३५ ॥

गुग्गुलत्रिफलाव्योष समांशैः घृतयोगतः ।
नाड़ीदुष्टव्रणं शूलं भगंदरमुखं हरेत् ॥३६॥ भगंदरे,नाड़ीव्रणे च

गूगल, त्रिफला का समान चूर्ण घृत के साथ खाना, नासूर, शूल और भगंदर के मुख को दूर करदेता है । शार्ङ्गधर में गूगल ३ पल पीपल १ पल, गूगल ५ पल लेकर वनाया गया है ॥ ३६ ॥

हरीतकीं मूत्रसिद्धां सतैललवणान्वितां ।
प्रातः प्रातः सेवेत कफवातामयापहाम् ।। ३७ ।। कफवातरोगे

हर्रा वडावडालें जो २-२ तोले के हो इनको गौ मूत्र में ३ या ४ दिन तक भिगोवें गौ मूत्र को प्रति दिन वदलते रहें वाद को इनकी गुठली निकाल फेक इन्हें सुखाले वाद को इनका चूर्ण करलें और तैल लवण मिला प्रातः काल २ माशा सेवन करने से कफ के और वात के रोग नष्ट होजाते हैं ॥ ३७ ॥

त्रिकटु त्रिफलाक्वाथं सक्षारंसलवणंपिवेत् ।
कफवातात्मकेष्वेव विरेकः कफवृद्धिनुत् ।। ३८ ।।

त्रिकुटा, त्रिफला का क्वाथ यवक्षार या काला नमक डाल पीने से भी दस्त होकर कफ, वात की वृद्धि दूर होती है ॥ ३८ ॥

पिप्पली पिप्पलीमूल वचाचित्रक नागरैः ।
क्वथितं वा पिवेत्पेयमामवात विनाशनम् ॥ ३९ ॥ आमवाते

पीपल, पीपलामूल, बच, चित्रक, सोंठ का क्वाथ आमबात को दूर करता है ॥ ३९ ॥

रास्नागुडूचीमेरण्डदेवदारुमहौषधम् ।
पिवेत्सर्वाङ्गिकेवाते सामेसन्ध्यस्थि मज्जगे ॥ ४० ॥

रास्ना, गुडुची, एरण्डबीज, देवदारू, सोंठ का क्वाथ सर्वाङ्गिक सन्धि, अस्थिमज्जागत, सामबात में गुण कारी हैं ॥ ४० ॥

दशमूलकषायंवा पिवेद्वानाभराम्भसा ।
शुण्ठीगोक्षुरकः क्वाथः प्रातः प्रातर्निषेवितः ॥
सामवातकटीशूलपाचनो रुक् प्रणाशनः ॥ ४१ ॥
समूल पत्र शाखायाः प्रसारण्याश्चतैलकम् ॥ ४२ ॥

दशमूल का क्वाथ, सोंठ का क्वाथ या सोंठ और गुखुरू का क्वाथ, प्रातः प्रातः पीने से आमवात, कमरशूल, को नष्ट करता है यही गुण पत्र, शाखा, जड़ सहित प्रसारिणी से सिद्ध हुआ तैल करता है ४१ । ४२

गुडूच्याः सुरसः कल्कः चूर्णंवा क्वाथमेवच ।
प्रभूतकालमासेव्य मुच्यते वात शोणितात् ॥ ४३ ॥ वातरक्ते ।

गुडूची का स्वरस, कल्क का चूर्ण या क्वाथ बहुत दिन तक पीने से वातरक्त से मनुष्य छूट जाता है ॥ ४३ ॥

गुग्गुलं क्रोष्टुशीर्षेतु गुडूची त्रिफलाम्भसा ।। ४४ ।। क्रोष्टुशीर्षे ।

गुडूची और त्रिफला के क्काथ से सिद्ध गूगल क्रोटुशीर्ष ( जानु-शोथ ) को दूर कर देता है ॥ ४४ ॥

बला पुनर्नवैरण्ड बृहतीद्वयगोक्षुरैः ।
सहिंगुलवणैः पीतं सद्यो वात रुजापहम् ।। ४५ ।। वात रोगे ।

बला, पुनर्नवा, एरंडबीज, दोनों कटेली, गुखुरु का क्काथ हींग और लवण का प्रक्षेप दे पीने से वात शूल को शीघ्र दूर करता है ।

कार्षिकं पिप्पली मूलं पञ्चैव लवणानिच ।
पिप्पली चित्रकं शुण्ठी त्रिफला त्रिवृतावचा ।। ४६ ।।
द्वौक्षारौ शाद्वला दन्ती स्वर्ण क्षीरी विषाणिका ।
कोलप्रमाणां बटिकां पिवेत्सौवीरकायुताम् ।। ४७ ॥
शोथावपाके त्रिवृता प्रवृद्धे चोदरादिके ।। ४८ ।। शोथे

पीपलामूल, पांचों नमक, पीपल, चित्रक, सोंठ, निशोथ, त्रिफला वच, दोनों क्षार ( यव-सज्जी ) दूर्वा, दन्तीमूल, स्वर्णक्षीरीमूल, सनाय १—१ तोला लेकर जंगली बेर के समान गोली बनालें और कांजी के साथ शोथ के पकने पर दें । केवल निशोथ को पेट के बढ़ जाने में प्रयोग करें ॥ ४६—४८ ॥

क्षीरं शोथहरं दारुवर्षाभूनागरैः शुभम् ।
सेकस्तथार्कवर्षाभूनिम्ब क्काथे न शोथजित् ।। ४६ ॥ शोथे ।

देवदारु, पुनर्नवा, सोंठ से पकाया दूध पीने से और आकपत्र, पुनर्नवा पंचांग; नींवपत्र के क्काथ से सेक देना शोथघ्न हैं ॥ ४६ ॥

व्योषगर्भं पलाशस्य त्रिगुणे भस्मवारिणि ।
साधितं पिबतः सर्पिः पतत्यर्शो न संशयः ॥ ५० ॥ अर्शसि ।

त्रिकुटा का कल्क, पलाश ( ढाक ) की भस्म को तिगुने पानी में डाल निथारा हुआ जल ४ सेर घृत १ सेर में डाल पका सिद्ध कर पीने से बवासीर के मस्से गिर जाते हैं, इसमें संशय नहीं ये प्रयोग सिद्ध है ॥ ५० ॥

विष्वक्सेनाब्ज निर्गुण्डी साधितं चापि लावणम् ।
विडंगानिलासैन्धून्थरास्नायक्षारदारुभिः ॥ ५१ ॥
तैलं चतुर्गुणं सिद्धं कटु द्रव्यं जलेऽथवा ।
गण्डमालापहं तैलमभ्यङ्गाद्गलगण्डनुत् ॥ ५२ ॥ गंडमालायाम्

प्रियंगूलता, कमल, निर्गुण्डी, लवण, विडंग, सँजना बीज, सेंधानमक, रास्ना, यवक्षार, दारुहल्दी का कल्क कटुद्रव्य ( सुरसादिगण पिपल्यादिगण, कटुकवर्ग ) से साधित तैल कंठमाला, गलगंड को मर्दन से नष्ट करता है ॥ ५१-५२ ॥

शठीकुनाग वलयक्वाथः क्षीररसेयुतम् ।
पयस्या पिप्पलीवासा कल्कं सिद्धं क्षयेहितम् ॥ ५३ ॥ क्षये

कचूर, भूनाग ( केंकड़ा ) गंधक का क्षीर कषाय ( दुग्धपाक ) अथवा विदारीकंद या दुधी, पीपल, अडूसा का कल्क और चौगुना दूध डाल सिद्ध किया घृत राजयक्ष्मा नाशक है ॥

वचाविडभयाशुण्ठी हिंगुकुष्ठाग्नि दीप्यकान् ।
द्वित्रिषट्चतुरेकाष्ट सप्तपंचातिकाक्रमात ॥ ५४ ॥
चूर्णं पीतं हन्ति गुल्ममुदरं शूलकासनुत् ॥ ५५ ॥ गुल्मे

वच, विडनमक, हर्रा, सोंठ, हींग, कूठ, चित्रक, अजवाइन को क्रम से २, ३, ६, ४, १, ८, ७, ५ भाग का किया चूर्ण गुल्म, उदररोग शूल, कास को नष्ट करता है ॥ ५५ ॥ वृ० नि० रत्नाकर में वच, के बाद हर्रा फिर विड को कहा है, इतना ही फर्क इसमें है।

पाठानिकुम्भत्रिकटुत्रिफलाग्निषु साधितम् ।
मूत्रेणचूर्णं गुटिका गुल्मप्लीहादि मर्दिनी ॥ ५६ ॥ प्लीहायाम्

पाठा, दन्ती, त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक का चूर्ण या गुटिका मूत्र से सेवन करने पर गुल्म, प्लीहा को नष्ट करती है ॥ ५६ ॥

वासानिम्बपटोलानि त्रिफला वातपित्तनुत ॥ ५७ ॥ वातपित्ते

अडूसा, नींब, परवर, त्रिफला वात, पित्त को नष्ट करने वाली है ॥ ५७ ॥

लिह्यात्क्षौद्रेण विडङ्गचूर्णं कृमिनाशनम ॥ कृमौ
विडंग सैन्धवक्षार मूत्रेणापि हरीतकी ॥ ५८ ॥

विडंग चूर्ण को मधु से चाटने से कृमिहर है। विडंग, सेंधानमक हरीतकी, यवक्षार का चूर्ण मूत्र से पीना भी कृमिहर है ॥ ५८ ॥

शल्लकी बदरीजम्बूप्रियालाम्राजु र्नत्वचः ।
पीताक्षीरेण मध्वक्ताः पृथक् शोणितवारणाः ॥ ५९ ॥ रक्तरोधे

शल्लकी, बेर, जामुन, गोंदनी, आम, अर्जुन की छाल मधुयुक्त दुग्ध से लेने से रक्त रोधक है, यह सभी अलग २ भी यह गुण रखते हैं ॥ ५९ ॥

विल्वाम्रधातकी पाठा शुण्ठीमोचरसाः समाः ।
पीतारुन्धन्त्यतीसारं गुड़तक्रेण दुर्जयम् ॥ ६० ॥ अतीसारे

बेल, आम को छाल, धाय के फूल, पाठा, सोंठ, मोचरस का चूर्ण गुड़ मिले तक्र से पीने से दुर्जय अतिसार को नष्ट करता है ॥ ६०॥

चांगेरीकोलदध्यम्बुनागर क्षार संयुतम् ।

घृतयुत् क्वथितंपेयं गुदभ्रंशरुजापहम् ॥ ६१ ॥ गुदभ्रंशे

चांगेरी ( अमलोना ) स्वरस १ सेर, बेर, अंकोल छालरस १-१ सेर, दही का पानी १ सेर, सोंठ, जवाखार १०-१० तोला डाल पकाया घृत गुदभ्रंश को नष्ट करता है ॥ ६१ ॥

विडंगातिविषामुस्तदारुपाठा कलिङ्गकम् ।

मरीचेन समायुक्तं शोथातीसार नाशनम् । ६२ ॥ शोथातिसार

विडंग, अतीस, मोथा, देवदारु, पाठा, इन्द्रजौ, मिर्च का चूर्ण शोथ सहित अतिसार को नष्ट करता है ॥ ६२ ॥

शर्करासिन्धुशुण्ठीभिः कृष्णामधु गुड़ेन वा ।

द्वे द्वे खादेद्धरीतक्यौ जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥ ६३ ॥ रसायनम्

त्रिफला पिप्पलीयुक्ता समध्वाज्या तथैवसा ॥ ६३

शकर, नमक, सोंठ, पीपल, मधु, गुड़ के साथ २-२ हरीतकी खाने से १०० वर्ष की आयु होती है, यह क्रम ६ ऋतुओं का है, ग्रीष्मादि क्रम से जानो पीपलयुक्त त्रिफला भी मधु-घृत से यही गुण करता है॥६३

चूर्णमामलकं तेन सुरसेनतु भावितम् ।

मध्वाज्य शर्करायुक्तं लीढ्वास्त्रीशः पयः पिबेत् ॥६४ ॥

वाजीकरणे

आमले का चूर्ण बना आमले के स्वरस की ही भावना दें सुखा लें । घृत, शकर, मधु मिला खावें और ऊपर से दूध पीने से स्त्रियों पर प्रभुत्व करने वाला होता है, यह वाजीकरण है ॥ ६४ ॥

माषपिप्पलिशालीनां यवगोधूमयोस्तथा ।
चूर्णं भागैः समांशैश्च पचेत्पिप्पलिकां शुभाम् । ६५ ॥
तां भक्षयित्वा च पिवेच्छर्करामधुरं पयः ।
नवश्चटकवद्गच्छेद्दशवारान्स्त्रियं ध्रुवम् ॥ ६६ ॥

उरद, पीपल, चावल, जौ, गेहूं समान भाग ले और इनको पीपलों के समान बना घृत में पकावें, इनको खाकर ऊपर से शकर मिला दूध पीने से चटक पक्षी की तरह दश बार तक की रति शक्ति बढ जाती है, यह सत्य है ॥ ६५-६६ ॥

समङ्गाधातकीपुष्प लोध्रनीलोत्पलानि च ।
एतत्क्षीरेणदातव्यं स्त्रीणां प्रदर नाशनम् ॥ ६७ ॥ प्रदरे

लजवन्ती, धाय के फूल, लोध, कमल पुष्प का चूर्ण दूध से देना प्रदर को नष्ट कर देता है ॥ ६७ ॥

बीजं कौरण्टकं चापि मधुकं श्वेत चन्दनम् ।
पद्मोत्पलस्य मूलानि मधुकं शर्करा तिलान् ॥
द्रवमाणेषु गर्भेषु गर्भस्थापन मुत्तमम् ॥ ६८ ॥ गर्भरोधने

पियावांसा के बीज, मोरेठी, सफेद चंदन। कमल की जड़, मोरेठी, तिल, शकर यह दोनों योग गर्भ को गिरने से बचाते हैं ॥ ६८ ॥

देवदारुनभः कुष्टं नलदं विश्वभेषजम् ।
लेपः कांजिकसम्पिष्टस्तैलयुक्तः शिरोर्तिनुत् ॥ ६९ ॥ शिरःशूले

देवदारु, नागरमोंथा, कूठ, खस, सोंठ को कांजी में पीस किया गया लेप शिर की वेदना को दूर कर देता है ॥ ६९ ॥

वस्त्रपूतं क्षिपेत् कौष्णं सिन्धूत्थं कर्णशूलनुत् ।
लशुनार्द्रकशिग्रूणां कदल्याः वा रसः पृथक् ॥ ७० ॥ कर्णशूले

बकरे का पेशाब गर्म कर सेंधानमक मिला कान में भरना कर्ण शूल को नष्ट करता है इसी प्रकार लहसुन, आद्रक, सेंजनापत्र रस, कदली का रस प्रथक् २ कर्णशूल को नष्ट करने वाले हैं ॥ ७० ॥

वलाशतावरी रास्ना मृताः सैरीयकैः पिवेत् ।
त्रिफला सहितं सर्पिस्तिमिरघ्नमनुत्तमम् ॥ ७१ ॥ तिमिरे

वला, शतावर, रास्ना, गुडूची, नीले फूल की झिंटी का कषाय त्रिफला, गर्भ ( कल्क ) दे पकाया घृत तिमिर हर होता है ॥ ७१ ॥

त्रिफलाव्योषसिन्धूत्थैघृतं सिद्धं पिवेन्नरः ।
चाक्षुष्यं भेदनं हृद्यं दीपनं कफरोगनुत् ॥ ७२ ॥+नेत्ररोगे

त्रिफला, त्रिकुटा, सेन्धा नमक का कल्क डाल पकाया गया घृत नेत्रों को हृदय को हितकर होता है। यह दीपन, भेदन, और कफ रोग हर भी है ॥ ७२ ॥

नीलोत्पलस्यकिञ्जल्कं गोशकृद्रससंयुतम् ।
गुटिकाञ्जनमेतत्स्याद्दिनरात्र्यान्धयोर्हितम् ॥७३॥ रात्रिंदिवान्धे

कमल की केशर को लेकर गौ के गोवर के रस में पीस गोली वना ले यह घिस कर आंख में लगाने से दिन में और रात्रि में न दीखने वालों के लिये हितकारी है ॥ ७३ ॥

यष्टीमधुवचा कृष्णा बीजानां कुटजस्य च ।
कल्कनालोडर्यनिम्बस्य कषाया वमनाय सः ॥ ७४ ॥ बमनाय

मोरेठी, बच, पीपल, नीलबीज, कुडा के बीज, इन्हें निम्ब पत्र रस की भावना दे रखले या नीब के कल्क में रख सुखा ले इनका क्वाथ वमन कराने के लिये उत्तम है ॥ ७४ ॥

स्निग्धस्विन्नयवं तोयं प्रदातव्यं विरेचनम् । विरेचनाय॥
अन्यथायोजितं कुर्य्यान्मन्दाग्निं गौरवारुची ॥७५ ॥

उबाले हुये यवों के पानी में घृत मिला पिलाना विरेचन करता है। बिना घृत के दिया मंदाग्नि, अरुचि, गुरुता करता है ॥ ७५ ॥

पथ्यासैंधवकृष्णानां चूर्णमुष्णाम्बुनापिवेत् ।
विरेकः सर्वरोगघ्नः श्रेष्ठो नाराच संज्ञकः ॥ ७६ ॥

हर्रा, सेन्धा नमक, पीपल का चूर्ण गर्मजलसे पीना दस्त लाता है यह नाराच संज्ञक कहा जाता है औरसर्व रोगों में प्रसस्त है ॥ ७६ ॥

सिद्धयोगा मुनिभ्योये आत्रेयेणप्रदर्शिताः ।
सव रोगहराः सर्वयोगाग्र्याः सुश्रुतेनहि ॥ ७७ ॥

महर्षि आत्रेय ने जिन सब रोगों को हरने वाले सब योगों में अग्रणीय सिद्ध योगों को कहा उन्हें ही सुश्रुत ने सब ऋषियों के लिये प्रदान किया ॥ ७७॥

मृतसंजीवनीकर सिद्धयोगो नाम पंचाशीत्यधिक द्विशततमोऽध्यायः
चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया
विश्वेश्वरी टीकया सनाथीकृतः समाप्तः ॥२८५॥



## अथ मृत्युञ्जय कल्पाः ।

धन्वन्तरि रुवाच ।

कल्पान्मृत्युञ्जयान्वक्ष्ये ह्यायुर्दात्रोगमर्दनान् ।
त्रिशती रोगहासेव्यामध्वाज्यात्रिफलामृता ॥ १ ॥

धन्वतारि जी कहने लगे । मृत्यु को जीतने वाले कल्पों को कहता हूं यह आयु देने वाले और रोगों को नाश करने वाले हैं । मधु घृत से खाया गया त्रिफला और गुडूची का चूर्ण रोगहर और तीनसौ वर्ष की आयु करने वाला है ॥ १ ॥

पलंपलार्द्धं कर्षवा त्रिफलां सकलां तथा ।
विल्वतैलस्यनस्यंच मासं पञ्चशती कविः ॥ २ ॥

समस्त त्रिफला पल, आधा पल, कर्षमान से लें या वरावर लें खावें और विल्व तैल कानस्य एक मास लेने से ही कविवनाता है और पांचसौ वर्ष की आयु देता है ॥ २ ॥

रोगापमृत्युवलिजित्तिलं भल्लातकं तथा ।
पंचाङ्ग वाकुची चूर्णं षण्मासंखदिरोदकैः ॥ ३ ॥
काथैः कुष्टं जयेत्सेव्यं चूर्णं नील कुरण्टकम् ।
क्षीरेण मधुनावापि शतायुः खण्डदुग्धभुक् ॥ ४ ॥

रोग अपमृत्यु, और वलीपलित को दूर करने के लिये भिलावा और तिल समान भाग लें या छः मास तक वाकुची पंचांग चूर्ण खदिर जल से लें या क्वाथ से लेने से सब प्रकार के कुष्ट दूर होते हैं । नील पुष्पाकिंटी का चूर्ण मधु से या दुग्ध से लेने और दूध शकर पीने से भी यही कार्य होता है ॥ ३ । ४ ॥

मध्वाज्यशुण्ठीं संसेव्यं पलं प्रातः समृत्युजित्।

वली पलितजिज्जीवेन्मांडूकी चूर्णंदुग्धपाः ॥ ५ ॥

मधु, घृत, सोंठ तीनों एक पल प्रातः प्रातः लेनेसे मृत्यु दूर होती है। ब्रह्मी चूर्ण दूध से लेने पर भी वलीपलित रहित हो बहुत दिनों तक जीता है ॥ ५ ॥

उच्चटामधुनाकर्षं पयःपामृत्युजिन्नरः।

मध्वाज्यैः पयसा वापि निर्गुण्डी रोग मृत्युजित् ॥ ६ ॥

भूमी आमला का चूर्ण मधु से एक कर्ष प्रातः ले और दूध को ही पीने से मृत्यु दूर होती है। कोई कोई श्वेत गुञ्जा को उच्चटा कहते हैं। निर्गुण्डी चूर्ण, मधु,घृत, से या दुग्ध से लेने पर रोग और मृत्यु को दूर कर देती हैं ॥ ६ ॥

पलाश तैलं कर्षैकं षण्मासं मधुना पिबेत्।

दुग्धभोजी पञ्चशती सहस्रायुर्भवेन्नरः ॥ ७ ॥

ढांक के बीजों का बना तैल छः मास तक मधु से पीने से और केवल दुग्ध भोजी रहने से पांच सो या हजार वर्ष की आयु वाला होता है ॥ ७ ॥

ज्योतिष्मतीपत्र रसं पयसा त्रिफलां पिबेत्।

मधुनाज्यं ततस्तद्वच्छतावर्य्याः रजः पलम् ॥

क्षौद्राज्यैः पयसावापि निर्गुंडी रोग मृत्युजित् ॥ ८ ॥

मालकंगुनी के पत्तों का रस दूध में मिला पीने से, मधु, घृत से त्रिफला या शतावरीचूर्ण एकपल लेनेसे या, मधु,घृत या दुग्ध सेनिर्गुण्डी चूर्ण लेने से मृत्यु को हटाता है ॥ ८ ॥

पंचांगनिम्ब चूर्णस्य खदिरक्वाथ भावितम् ।
कर्ष भृङ्गरसेनापि रोगजिच्चामरोभवेत् ॥ ९ ॥

नीव के पंचांग का चूर्ण खदिर क्वाथ की भावना देकर एक तोला भर भांगरे के रस के साथ लेने से रोग दूर होते हैं और अमर हो जाता है ॥ ९ ॥

रुदन्तिकाज्यमधुभुग्दुग्धभोजी च मृत्युजित् ॥ १० ॥

रुद्रवन्ती का चूर्ण मधु घृत से खावे और केवल दुग्ध भोजी रहने से मृत्यु से बचता है ॥ १० ॥

कर्षं चूर्णं हरीतक्या भावितं भृङ्गराड्रसैः ।
घृतेन मधुनाऽसेव्य त्रिशतायुश्च रोगजित् ॥ ११ ॥

हर्रा का चूर्ण घमरे के रस में भावना देकर मधु घृत से खाने से तीन सौ वर्ष रोग रहित हो जीता है ॥ ११ ॥

वाराहिका भृङ्गरसं लोहचूर्णं शतावरी ।
साज्यं कर्षं पञ्चशतीकार्त्तं चूर्णं शतावरी ।
भावितं भृङ्गराजेन मध्वाज्यं त्रिशतीभवेत् ॥ १२ ॥

वराहीकंद, घमरा का रस, लोह भस्म, शतावर का चूर्ण १ तो० घृत से खाने पर तीन सो वर्ष जीता है, स्वर्ण भस्म, शतावरी चूर्ण घमरे के रस से भावित कर मधु घृत से खाने पर तीन सौ वर्ष की आयु होती है ॥ १२ ॥

आम्रामृतात्रिवृत्तुल्यं गंधकं च कुमारिका ।
रसैर्विमर्दयद्वेगुञ्जे साज्यंपञ्चशताव्दवान् ॥ १३ ॥

आमछाल, गुडूची, निशोथ, गंधक समान भाग ले घृतकुमारी के रस में मर्दन कर २-२ रत्ती घृत के साथ लेने से पांच सौ वर्ष की आयु होती है ॥ १३ ॥

अश्वगंधापलं तैलं साज्यं खण्डं शताब्दवान् ॥ १४ ॥

असगंध चूर्ण १ पल, तैल, घृत, शकर के साथ लेने से सौ वर्ष की आयु होती है ॥ १४ ॥

पलं पुनर्नवाचूर्णं मध्वाज्यपयसा पिबन् ।
अशोकचूर्णस्य पलं मध्वाज्यं पयसाऽत्तिनुत् ॥ १५ ॥

पुनर्नवा चूर्ण १ पल मधु घृत में मिला दूध से लें या अशोक चूर्ण १ पल मधु, घृत के साथ लें और दूध पीने से रोग नष्ट होते हैं ॥ १५ ॥

तिलस्यतैलं समधु नस्यात्कृष्णकचः शती ।
कर्षमक्षंसमध्वाज्यं शतायुः पयसा पिबन् ॥ १६ ॥

काले तिल का तेल मधु मिला नस्य लेने से बाल काले होते हैं और १०० वर्ष की आयु होती है । बहेरे का चूर्ण १ तोला मधु घृत से ले ऊपर से दुध पीने से १०० वर्ष की आयु होती है ॥ १६ ॥

अभयां सगुड़ां जग्ध्वा घृतेन मधुरादिभिः ।
दुग्धान्नभुक्कृष्णकेशोऽरोगी पञ्चशताब्दवान् ॥ १७ ॥

हरीतकी चूर्ण गुड़ के साथ घृत से या मधुर द्रव्यों से खाकर केवल दूध भात खाने से बाल काले होते हैं और रोग रहित हो पांच सौ वर्ष जीता है ॥ १७ ॥

पलं कूष्मांडका चूर्णं मध्वाज्यपयसापिवन् ।
मांसंदुग्धान्नभोजी च सहस्रायुर्विरोगवान् ॥ १८ ॥

कुम्हेड़े का चूर्ण १ पल मधु घृत से खा ऊपर दूध पीवे एक मास तक और दूध के साथ भोजन करने से रोग रहित हो हजार वर्ष जीता है ॥ १८॥

शालूकचूर्णं भृङ्गाज्यं समध्वाज्यं शताब्दकृत् ।
कटुतुम्बीतैलनस्यं कर्षं शतद्वयाब्दवान् ॥ १६ ॥

कमलकंद चूर्ण घमरे के रस से भावित मधु घृत के साथ लेने से सौ वर्ष की आयु होती है । कड़वी तुम्वी के तेल का नस्य १ तोला लेने से दो सो वर्ष जीता है ॥ १६ ॥

त्रिफला पिप्पलीशुण्ठी सेवितात्रिशताब्दकृत ।
शतावर्य्याः पूर्वयोगः सहस्रायुर्वलातिकृत् ॥ २० ॥

त्रिफला, पीपल, सोंठ का चूर्ण सेवन करने से तीन सौ वर्ष जीता है, पूर्व का शतावरी वाला योग हजार वर्ष की आयु करता है और अतिबल देता है ॥ २० ॥

चित्रकेण तथापूर्वस्तथाशुण्ठी विडङ्गतः ।
लोहेन भृङ्गराजेन वलयानिम्द पंचकैः ॥ २१ ॥
खदिरेण च निगुर्ण्डया कंटकार्य्याथवासकात् ।
वर्षाभुवातद्रसैर्वा भावितो वटिका कृतः ॥ २२ ॥
चूर्णंघृतैर्वामधुना गुड़ाद्यैर्वारिणा तथा ।
ओं हूँ स इति मंत्रेण मंत्रितो योगराजकः ॥ २३ ॥

मृत्संजीवनी कल्पो रोगमृत्युञ्जयो भवेत् ।
सुरासुरैश्च मुनिभिः सेविता कल्पसागराः ॥ २४ ॥

चित्रक, सोंठ, विडंग, लोह, वमरा, गुखुरू, नीम पंचांग, खदिर, निगुंडी, कंटकारी, अडूसा, पुनर्नवा का चूर्ण इन्हीं के रसों से भावना देकर गोली बनाले या चूर्ण ही रख घृत, मधु से गुड़ से या जल से लेने से भी रोग नाश करता है और मृत्यु को हटाता है। ओं हूं सः इस मंत्र से मंत्रित कर सेवन एवं निर्माण करना चाहिये, यह मंत्र सभी योगों के लिये है। ये कल्प योग सुर, असुर, मुनियों द्वारा सेवित किये जा चुके हैं ॥ २४ ॥

इति आग्नेयपुराणोक्त कल्पयोगवर्णनं नाम षडशीत्यधिक द्विशततमोऽध्यायः

श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया

विश्वेश्वरीटीकया सनाथीकृतः समाप्तः ॥२८६॥



## षड्त्रिंशत्पदकम्

ईश्वर उवाच

षट् त्रिंशत्पदसंस्थानामौषधीनां वदे फलम् ।
अमरीकरणंनृणाम ब्रह्मरुद्रेन्द्रसेवितम् ।। १ ।।

भगवान कहने लगे । छत्तीस स्थानों में लिखी हुई दवाइयों के गुणों को कहता हूं यह ब्रह्मा रुद्र, इन्द्र से सेवित अमर करने वाली है ॥ १ ॥

१ २ ३ ४ ५
हरीतक्यक्षिधात्र्यश्च मरीचं पिप्पलीशिफा ।
६ ७ ८ ९ १० ११
वन्हिशुण्ठी पिप्पलीच गुडूचीवचानिम्बकाः ।। २ ।।
१२ १३ १४ १५
वासकः शतमूलीच सैन्धवं सिन्धुवारकम् ।
१६ १७ १८ १९ २०
कण्टकारीगोक्षुरका विल्वं पौनर्नवं बला ।। ३ ।।
२१ २२ २३ २४ २५ २६
एरंडमुन्डीरुचको भृङ्गक्षारोऽथ पर्पटः ।
२७ २८ २९ ३०
धान्याकोजीरकश्चैव शतपुष्पी यवानिका ।। ४ ।।
३१ ३२ ३३ ३४
विडंगखदिरश्चैव कृतमालो हरिद्रया ।
३५ ३६
वचासिद्धार्थ एतानि षट्त्रिंशत्पदकानि हि ।। ५ ।।

१–हर्रा, २–वहेड़ा, ३–आमला ४–मिर्च, ५–पीपलामूल, ६–चित्रक, ७–सोंठ, ८–पीपल, ९–गुडूची । १–बच, २–नीम, ३–वासा, ४–शतावर, ५–सेंधानमक, ६–संभालू, ७–कटेली, ८–गुखुरू, ९–बेल ।

१–पुनर्नवा, २–वला, ३–एरण्ड, ४–मुण्डी, ५–कालानमक, ६–घमरा, ७–यवक्षार, ८–पित्तपापड़ा, ९–धनियां। १–जीरा, २–सोंफ, ३–अजवाइन, ४–विडग, ५–खैर, ६–अमलतास, ७–हल्दी, ८–वच, ९–सेंजना बीज। यह छत्तीस औषधियां हैं ॥ ५ ॥

क्रमादेकादिसंज्ञानि ह्यौषधानि महान्ति च।
सर्वरोगहराणि स्युरमरीकरणानि च ॥ ६ ॥
वलीपलितभेत्तृणि सर्वकोष्ठगतानि तु।
एषां चूर्णं च वटिका रसेनपरभाविता ॥ ७ ॥
अवलेह कषायो वा मोदका गुडखंडक:।
मधुतो घृततो वापि घृतं तैलमथापिवा ॥ ८ ॥
सर्वात्मनोपयुक्तं हि मृतसंजीवनं भवेत्।
कर्षार्द्धं कर्षमेकं वा पलार्द्धं पलमेककम् ॥ ९ ॥
यथेष्टाचारनिरतो जीवेद्वर्षशतंत्रयम्।
मृतसंजीवनीकल्पे योगो नास्मात्परोऽस्ति हि ॥ १० ॥

क्रम से प्रत्येक एक-एक औषधि ही महान् एवं सर्वरोगहर और अमर करने वाली है। वलीपलित नाश करने वाली है समस्त कोष्ठों में इनका प्रवेश होता है इनका चूर्ण या वटी इन्हीं के रसों से भावित कर वनाना चाहिये या अवलेह, क्वाथ, मोदक, गुड़ या खांड से बनालें या घृत, मधुसे लें या तैल घृत पकादें सव प्रकृति वालोंके लिये यह हितकर है और सजीवन करने वाली है आधा तोला, एक तोला, पल या आध पल खाने से और इच्छित आहार विहार करने पर भी तीनसौ वर्ष तक जीता है। इसे मृतसंजीवन कल्प कहा गया है इससे उत्तम कोई भी योग नहीं है ॥ १० ॥

प्रथमान्नवकाद्योगात्सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।
द्वितीयाच्च तृतीयाच्च चतुर्थान्मुच्यते रुजः ॥ ११ ॥
एवंषटकाच्च प्रथमाद्वितीयाच्च तृतीयतः ।
चतुर्थात्पञ्चमात्षष्ठात्तथा नव चतुष्कतः ॥ १२ ॥
एकद्वित्रिचतुष्पञ्च षट् सप्ताष्टमतोऽनिलात् ।
अग्निभास्करषड्विंश सप्तविंशैश्चापत्ततः ॥ १३ ॥
बाणतु शैल वसुभिस्तथिभिमुच्यते कफात् ।
वेदाग्निभिर्बाणगुणैः षड् गुणैः स्याद्वशे घृते ॥ १४ ॥
ग्रहादिग्रहणान्तैश्च सर्वै रेव विमुच्यते ।
एकद्वित्ररसैः शैलैर्वसुग्रह शिवैः क्रमात् ॥ १५ ॥
द्वात्रिंशात्तिथिसूर्यैश्च नात्रकार्याविचारणा ।
षट्त्रिंशत्पदकं ज्ञानं न देयं यस्यकस्यचित् ॥ अ० १४१

प्रथम की नौ दवायें सर्वरोगघ्न हैं। दूसरे, तीसरे, चौथे नवक पीड़ा नाशक हैं। पीपल, हर्रा, बहेरा, आमला, मिर्च, पीपरामूल, चित्रक से तथा गुडूची, मिर्च से हर्रा, बहेरा, आमला, गुर्च, पीपलामूल, चित्रक, सोंठ, पीपल से वात रोग दूर होते हैं। आमला, अडूसा, पित्त-पापरा, धनियां से पित्त रोग शमन होते हैं।

पीपरामूल, गुडूची, सोंठ, वच, संभालू से कफ रोग दूर होते हैं।

मिर्च, आमला तथा पीपलामूल, आमला या चित्रक, आमला का घृत वशीकरण है और हर्रा, गुर्च, बच, विल्व, पुनर्नवा, धनियां, जीरा, सफेद सरसों, त्रिफला, चित्रक, सोंठ, पीपल, गुडूची, निम्ब, खदिर, संभालू, यह भी त्रिदोष हर हैं। यह छत्तीस औषधियों का ज्ञान साधारणतया किसी को नहीं देना चाहिये।

## सर्पविषे

अग्निरुवाच

ओं नमोभगवतेरुद्राय छिन्द २ विषं ज्वलितपरशुपाणयेच । नमोभगवते पक्षिरुद्राय दष्टकं उत्थापय २ दष्टकं कम्पय २ जल्पय जल्पय ॥ सर्वदष्टमुत्थापय लल २ वन्ध २ मोचय २ वररुद्रगच्छ २ वध२ त्रुट२ बुरु२ भीषय२ मुष्टिना संहर विषं ठठ । पक्षिरुद्रेण हविषं नाशमायाति मंत्रणात् ॥ ओं नमोभगवते रुद्र नाशय विषं स्थावर जंगमं कृत्रिमाकृत्रिमविषमुपविषं नाशय नानाविषं दष्टक विषं धम २ दम २ वम २ मेघान्धकारधारावर्षे निर्विषीभव सहर २ गच्छ २ आवेशय २ विषोत्थापनरुपं मंत्रान्ताद्विषधारणम् । ओं क्षिप २ स्वाहा ओं ह्रां ह्रीं खीं सः ठं द्रौं ह्रीं ठः ॥

जपादिनासाधितस्तुसर्पान्वध्नाति नित्यशः ॥ १ ॥

एकद्वित्रि चतुर्बीजः कृष्ण चक्राङ्ग पंचकः ।

गोपीजनवल्लभाय स्वाहा सर्वार्थसाधकः ॥

ओं नमो भगवते रुद्राय प्रेताधिपतये शृणु २ गर्ज २ भ्रामय २ मुञ्च २ मुह्य २ कट२ आविश२ सुवर्णपतंग रुद्रा ज्ञापयति ठठ । पातालक्षोभमंत्रोऽयं मंत्रणाद्विषनाशनः २ ॥

ऊपर के मन्त्र हैं झाड़ने आदि के ॥ २ ॥

दंशकाहिदंशे सद्योदष्टः काष्टशिलादिना ।

विषशान्त्यैदहेद्दंश ज्वालकोकनदादिना ॥ ३ ॥

सांप के काटे हुये स्थान को शीघ्र ही काट देना या काठ, पत्थर या स्वर्णादि धातु से जला देना चाहिये ॥ ३ ॥

शिरीषबीजपुष्पार्क क्षीरबीजकटुत्रयम् ।
विषंनाशयेत्पानलेपनाञ्जनादिना ॥ ४ ॥

शिरस के बीज और पुष्प आक का दूध और बीज, त्रिकुटा का खाना, लेप करना, अंजन देना विषहर है ॥ ४ ॥

शिरीषपुष्पस्य रस भावितं मरिचं सितम् ।
पाननस्याञ्जनाद्यैश्च विषंहन्यान्न संशयः ॥ ५ ॥

शिरस के पुष्प रस से भावित श्वेत मिर्चों को खिलाना, और नस्य, अंजन करने से भी सर्पविष दूर होता है ॥ ५ ॥

कोषातकी वचाहिङ्गु शिरीषार्कपयोयुतम् ।
कटुत्रयं समेषाम्भो हरेन्नस्यादिना विषम् ॥ ६ ॥

कड़वी तरोई, बच, हींग, सिरसबीज, आक का दूध, त्रिकुटा, समान भाग ले जल से नस्यादि देने से विष नष्ट होता है ॥ ६ ॥

रामठेक्ष्वाकु सर्वाङ्ग चूर्णं नस्याद्विषापहम् ।

हींग, कड़वी तोंभी का पंचांग चूर्ण का नस्य देने से विष दूर होता है ।

इन्द्रवलाग्निकं द्रोणं तुलशी देविका सहा ।
तद्रसाक्तं त्रिकटुकं चूर्णभक्ष्यं विषापहम् ॥ ७ ॥

इन्द्रजौ, बला, चित्रक, द्रोणपुष्पी, तुलसी, धत्तूरबीज घृतकुमारी के रस से भावित त्रिकुटा का चूर्ण खाने से विष दूर होता है ॥ ७ ॥

पञ्चाङ्गं कृष्णपञ्चम्यां शिरीषस्य विषापहम् ॥ ८ ॥

कृष्णपक्ष की पंचमी के दिन लाया हुआ शिरस का पंचांग विष नष्ट करता है ॥ ८ ॥

———

# गोनसादि चिकित्सा

अग्निरुवाच

गोनसादि चिकित्सां च वसिष्ट शृणु वच्मिते ।
ह्रीं ह्रीं अमलपक्षिस्वाहा । ताम्बूलखादनान्मंत्री हरेन्मण्डलिनो विषम् ॥ १ ॥

अग्निदेव कहने लगे । हे वसिष्ट अब अन्य गोनसादि सर्पों की चिकित्सा कहते हैं । ह्रीं ह्रीं अमलपक्षिस्वाहा इस मंत्र को पान पर रख पान खाने से मण्डली सर्प का विष नष्ट हो जाता है ॥ १ ॥

लशुनं रामठफलं कुष्टाग्नि व्योषकं विष ।
स्नुहीक्षीर गव्यघृतं पक्षंपीत्वाऽहिजेविषे ॥ २ ॥

लहसन, हींग के फल, कूठ, चित्रक, त्रिकुटा, सिंघिया सेंहुण्डका दुग्ध गोघृत मिला १५ दिन पीने से सर्प विष नष्ट होता है ॥ २ ॥

अथ राजिलदष्टे च पेया कृष्णा स सैन्धवा ।
आज्यक्षौद्रशकृत्तोयं पुरातत्या विषापहम् ॥ ३ ॥

राजिल सर्पविषमें सेंधे नमकके साथ पीपल का खाना या बकरीकी विष्टा का रस और मधु घृत का सेवन नाड़ियों में फैले हुये विष को नष्ठ कर देता है ॥ ३ ॥

सकृष्णा खण्डदुग्धाज्यं पातव्यं तेन माक्षिकम् ।
व्योषंपिच्छं विडालास्थि नकुलांगरुहैः समैः ॥ ४ ॥
चूर्णितैर्मेषदुग्धाक्तैर्धूपः सर्व विषापहः ।
रोमनिर्गुण्डिका कोलवर्णैर्वा लशुनं समम् ॥ ५ ॥

मुनिपत्रैः कृतः स्वेदं दृष्टं कांजिकपाचितैः ।

मूषिकाः षोडश प्रोक्ता रसं कार्पासजं पिवेत् ॥ ६ ॥

पीपल, शक्कर, दुग्ध घृत वा मधु के साथ पीना। त्रिकुटा, मोरपंख, नेवले के रोम समान भाग लें भेड़ के दुग्ध के साथ दी गई धूप सब विषों को नष्ट करती है। वाल, निगुंण्डी, बेरपत्र, हरताल, लहसन, अगस्तपत्र रस से स्वेदन करने से या कांजी के साथ पका कर लेप करने से सब विष नष्ट होते हैं। मूषक विष सोलह तरह का है उसमें कपास का रस पीना ॥ ६ ॥

सतैलं मूषिकार्त्तिघ्नं फलिनी कुसुम तथा ।

सनागरगुडं भक्ष्यं तद्विषारोचकापहम् ॥ ७ ॥

तैल युक्त, गुलाबांस के फूलों का लेप मूषक विष नष्ट करता है या सोंठ, गुड खाना मूषक विष और अरुचि को दूर करता है ॥ ७ ॥

चिकित्साविंशतिर्भूता लूता विष हरोगणः ।

पद्मकं पाटली कुष्टंनत मुशीर चंदनम् ॥ ८ ॥

निगुंण्डी शारिबा लेलु लूतार्त्तं सेचयेज्जलैः ॥ ८ ॥

मकडी की चिकित्सा के बीस भेद हैं उनमें लूता बिष हरगण यह है पद्माख, रक्तकनेरपुष्प, कूठ, तगर, खस, सफेद चंदन, निगुंण्डी शारिवा, लहसोडाफल, के जल से लूता ( मकड़ी ) विष पर सेचन करें ॥ ८ ॥

गुञ्जानिगुंण्डिकं कोलपर्णं शुण्डीनिशाद्वयम् ।

करञ्जास्थि च तत्पङ्कं वृश्चिकार्त्तिहरं शृणु ॥ ६ ॥

गुंजा, निगुंण्डी, बेरपत्र, सोंठ, दोनोंहल्दी, करंजमींग का लेप वृश्चिक वेदना हर है ॥ ६ ॥

मंजिष्टाचन्दनं व्योषपुष्पं शिरीष कौमुदम्।

संयोज्याश्चतुरोयोगा लेपादौ वृश्चिकापहाः॥ १० ॥

मंजीठ, चदन, त्रिकुटा; सिरसफूल, कुमुदपुष्प, ये चार योग हैं इनका लेप विच्छू की पीड़ा दूर करता है॥ १० ॥

ओं नमोभगवतेरुद्राय चिर्बाचिर्व छिन्दछिन्द किरीकीर भिन्द भिन्द खङ्गेनच्छेदयच्छेदय शूलेनभेदयभेदय चक्रेणदारयदारय आ ह्रूं फट्। मंत्रेण मंत्रितोदेया गर्दभादीन्नकृन्तति॥ ११ ॥

इस मंत्र से मंत्रित करने पर गदहिया आदि की पीड़ा का भी शमन होता है॥ ११ ॥

त्रिफलोशीरमुस्ताम्बु मांसीपद्मक चंदनम्

अजाक्षीरेण पानादेगर्द्धभादेर्विषंहरेत्॥ १२ ॥

त्रिफला, खस, मोंथा, सुगन्धबाला, जटामांसी, पद्माख, चंदन, बकरी के दूध से खाने लगाने से गर्दभादि के विष दूर होते हैं॥ १२ ॥

हरेच्छिरीषपंचागं व्योषंशतपदी विषम्।

सक्रन्धरं शिरीषास्थि हरदुन्दूरजं विषम्॥ १३ ॥

शिरसप चाग, और त्रिकुटा, शतपदी ( कांतर ) का विष दूर करता है मट्ठे में पीस शिरीष बीज का लेप मूषक विष दूर करता है॥ १३ ॥

व्योषंससर्पिः पिण्डीतमूलमस्य विषंहरेत्।

त्रिकुटा, तगरमूल, का घृत के साथ लेप भी मूषक विष हर है

क्षारव्योषवचाहिंगु विडंगं सैन्धवम् नतम्॥ १४ ॥

अम्बष्टातिवलाकुष्टं सर्वकीटविषं हरेत्॥ १५ ॥

थवक्षार, त्रिकुटा, हींग, विड ंग, सेंधा नमक तगर, आमेला, अतिवला, कूठ, कालेय सर्प कीट विषों को नष्ट करता है ।। १५ ॥

यष्टिव्योषगुडक्षीरयोगः शुनो विषापहः ॥ १६ ॥

मोरेठी, त्रिकुटा, गुड, और दूध का योग कुत्ते के विष को नष्ट करता है ॥ १६ ॥

ओं सुभद्रायै नमः ओं सुप्रभायै नमः ।
यान्यौषधानि गृह्यन्ते विधानेन विनाजनैः ।
तेषांवीजं त्वयाग्राह्यमितिब्रह्माऽब्रवीच्चताम् ॥ १७ ॥

जो औषधियां विन विधान के लीगई हों उनके बीज लेने चाहिये एसा ब्रह्मा जी ने कहा हैं ॥ १७ ॥

तां प्रणम्यौषधीं पश्चाद्यवान्प्रक्षिप्यमुष्टिना ।
दश जप्त्वा मंत्रमिदं नमस्कुर्यात्तदौषधम् ॥
त्वामुद्धराम्यूर्ध्वनेत्रानैव च भक्षयेत् ॥ ८ ॥

औषधि लेने का विधान यह है; प्रथम औषधि को नमस्कार करें फिर एक मुट्ठी यव विखेर ओं सुभद्रायै नमऽ ओं सुप्रभायै नमः इस मंत्र को दशवार जप कर फिर नमस्कार करें और कहे है ऊर्ध्वजड वाली मैं तुम्हें उखाडता हूं और इसी मंत्र से भक्षण भी करें ॥ १८ ॥

नमः पुरुषसिंहाय नमोगोपालकायच ।
आत्मनैवाभिजानाति रणे कृष्णपराजयम् ॥ १९ ॥
एतेनसत्यवाक्येन अगदो मेऽस्तु सिध्यतु ।
नमोवैदूर्य्यमात्रेच तत्ररक्ष मां सर्वविषेभ्यो गौरिगन्धारि ।

चाण्डालि मातंगिनि स्वाहा हरिमाये।

औषधादौ प्रयोक्तव्यो मंत्रोऽयं स्थावरे विषे ॥ २० ॥

यह मंत्र स्थावर विषों में औषधि देने आदि कामों में प्रयोग करें ॥२०॥

भुक्तमात्रे स्थिते ज्वाले पद्मं शीताम्बुसेवितम्।

पाययेत्सघृतं क्षौद्रं विषंचेत्तदनन्तरम् ॥ २१ ॥

यदि विष खाने पर दाह हो तो तो कमल पुष्प ठंडे जल से लें या घृत मधु, लें ॥ २१ ॥

---

## बालतंत्रम्

अग्निरुवाच

बालतंत्रं प्रवक्ष्यामि बालादिग्रह मर्दनम्।

अथ जात दिने वत्सं ग्रही गृह्णाति पापिनी ॥ १ ॥

अग्निदेव कहने लगे। अब मैं बालतंत्र को कहता हूँ यह बालग्रहों को नष्ट करने वाला है ॥ १ ॥

पैदा होने के दिन बालक को पापिनीग्रही पकड़ती है ॥ १ ॥

गात्रोद्वेगो निराहारो नानाग्रीवाविवर्तनम्।

तच्चेष्टितमिदं तस्यान्मातृणां च बलं हरेत् ॥ २ ॥

मत्स्यमांससुराभक्ष्य गन्धस्रग्धूपदीपकैः।

लिम्पेच्चधातकीलोध्रमञ्जिष्टातालचंदनैः ॥ ३ ॥

गात्रोद्वेग, दूध न पीना, ग्रीवा का इधर उधर करना यह उस के लक्षण हैं। मछली मांस, शराब, की बलि दें, चंदन, माला धूप, दीप दें। और बालक को धायफूल, लोध मजीठ, हरताल, चंदन, से लेप दें और गूगल की धूप दें ॥ ३ ॥

महिषाक्तेणधूपश्च । द्विरात्रे भीषणी ग्रही ।
तच्चेष्टाकासनिश्वासौ गात्रसंकोचनं मुहुः ॥ ४ ॥
अजामूत्रैर्लिपेत्कृष्णासेव्यापामार्ग चंदनैः ।
गोशृङ्गदन्तकेशैश्च धूपयेत्पूर्ववद्बलिः ॥ ५ ॥

दूसरे दिन भीषणी ग्रही बालक को पकड़ती है उसके लक्षण कास, श्वास, वार बार शरीर का संकोच होता है । बकरी की पेशाव का लेप बालक के शरीर पर करें और पीपल, खस अपामार्ग, चंदन, गौ का सींग, दांत, बाल की धूप दें और पूर्व के समान बलि दें ॥ ५ ॥

ग्रहीत्रिरात्रेघंटाली तच्चेष्टाऽक्रंदनं मुहुः ।
जृम्भणंस्वनितं त्रासो गात्रोद्वेगमरोचनम् ॥ ६ ॥
केसराञ्जनगोहस्तिदन्तं साजपया लिपेत् ।
नखराजीविल्वदलैर्धूपयेच्च बलिं हरेत् ॥ ७ ॥

तीसरे दिन घंटाली नामक ग्रही बालक को पकडती है, इसका लक्षण वार २ रोना, जंभाई श्वास शरीर का संकोच, अरुचि होती है । इसमें केशर रसोंत, गो, और हाथी का दांत बकरी के दूध में पीस लेप करना, नख, सरसों विल्वपत्र की धूनी दें और पूर्व वत बलि दें ॥ ७ ॥

ग्रहीचतुर्थी काकोली गात्रोद्वेग मरोचनम् ।
फेनोद्गारो दिशोदृष्टिः कुल्माषैः सासवैर्बलिः ॥ ८ ॥
गजदन्ताहिनिर्मोकवाजिमूत्रप्रलेपनम् ।
सराजीनिम्ब पत्रेण धूर्तकेशेनधूपयेत् ॥ ९ ॥

चौथे दिन काकोली नामक ग्रही बालक को पकड़ती है । इसमें गात्र की चंचलता, अरुचि, फेनगिरना, चारों तरफ निगाह होती है इसमें

कुलथी और शराब से वलि दें। हाथी दान्त, सांप की केचुली, घोड़े के मूत्र से लेप करे सरसों, नींव पत्र, स्यार के रोम की धूप दें।

हंसाधिकापंचमी स्याज्जृम्भा श्वासोर्ध्वधारिणी।
मुष्टिवन्धश्च तच्चेष्टा वलिं मत्स्यादिनाहरेत् ॥ १० ॥
मेषशृङ्ग वलालोध्र शिलातालैः शिशुं लिपेत्।

पंचमी हंसाधिकाग्रही. पांचवे दिन पकड़ती है। जंभाई, ऊर्ध्व-श्वास, मुट्ठी बांधना, यह लक्षण होते हैं। इस में मछली को वलि दें। भेड़ के वाल–वला, लोध, मनःशिला, हरताल, से वालक को लेपन करें ॥ १० ॥

फट्कारीतु ग्रही षष्टी भयमोहप्ररोदनम्।
निराहारोऽङ्ग विक्षेपो हरेन्मत्स्यादिना वलिम् ॥ ११ ॥
राजीगुग्गुलकुष्ठेभदन्ताद्यैर्धू पलेपनैः ॥ १२ ॥

फट्कारी नाम की छटी छटवें दिन वालक पर आक्रमण करती है उसके लक्षण, भय, बेहोशी. रोना, दूध न पीना, शरीर का इधर उधर करना होते हैं। मछली आदि की वलि दें। सरसों, गूगर, कूठ, हाथी दांत की धूप और लेप दें ॥ १२ ॥

सप्तमे मुक्तकेश्यार्त्तः पूतिगंधोविजृम्भणम्।
सादः प्ररोदनं कासो धूपो व्याघ्रनखैर्लिपेत् ॥ १३ ॥
वचागोमयगोमूत्रैः।

सातवें दिन मुक्त केशी नामक मातृ का बच्चे पर आक्रमण करती है। बच्चा के शरीर में दुर्गन्ध आती है जंभाई, आती है कालापन, रोना, कास ये लक्षण होते हैं। व्याघ्र नख, की धूनी दें। और बच्चे पर बच, गौ का गोबर गौमूत्र का लेप करना ॥ १३ ॥

श्रीदण्डी चाष्टमेग्रही । दिशोनिरीक्षणं जिह्वाचालनं कासरोदनम् । बलि: पूर्वैव मत्स्याद्यैधूपलेपे च हिंगुला । वचासिद्धार्थलशुनै: ॥ १४ ॥

आठवें दिन, श्री दण्डी नामक माता का आक्रमण होता है। चारों तरफ देखना, जिह्वा का चलना रोना, खांसी यह लक्षण होते हैं बलि में पूर्व मछली आदि दें धूप और, लेप में सिंगरफ बच, सफेद सरसों, लहसुन काम में लावें ॥ १४ ॥

चोर्ध्वग्राही महाग्रही । उद्वेजनोर्ध्व नि:श्वास: स्वमुष्टिद्वयखादनम् । रक्तचंदनकुष्टाद्यैधू पयेल्लेपयेच्छिशुम् । कपि रोमनखैर्धूपो ॥१५॥

नव में दिन ऊर्ध्वग्राही ग्रही ग्रहण करती है। शरीर का इधर उधर फेंकना, ऊर्ध्वश्वास, अपनी दोनों मुट्ठियों का खाना, ये लक्षण होते हैं। रक्त चन्दन, कूठ, का लेप धूप दें। बन्दर के रोम और नखो की धूनी दें ॥ १५ ॥

दशामीरोदनीग्रही । तच्चेष्टारोदनं शश्वत्सुगन्धो नीलवर्णता । धूपोनिम्बेन भूतोग्रराजीसर्जरसैर्लिपेत । बलिं वहिर्द्दरेल्लाज कुल्माषकवकोदनम् ॥१६॥ यावत्त्रयोदशाहंस्यादेवंधूपादिका क्रिया ।

दशवें दिन रोदनी ग्रही ग्रहण करती है। रोना, नील वर्णता, बदन में सुगन्ध आना, होता है। नींव पत्र की धूप दें। मोथा, बच, सरसों, राल, से बच्चे को लेप दे। घर के बाहर धान की खील, कुलथी अगस्त पुष्प भात और दूध की बलि दें ॥ १६ ॥

ग्यारह, बारह, तेरहवें दिन भी यही क्रियायें करें ॥ १६ ॥

गृह्णाति मासिकं वत्सं पूतना संकुल ग्रही ।
काकवद्रोदनं श्वासो मूत्रगन्धोऽक्षिमीलनम् ॥
गोमूत्रस्नपनंतस्य गोदन्तेन च धूपनम् ।
पीतवस्त्रं ददेद्रक्तस्रग्गन्धौ तैलदीपकः ॥
त्रिविधं पायसं मद्यं तिलं मासं चतुर्विधम् ।
करञ्जाधो यमदिशिसप्ताहं तैर्बलिं हरेत् ॥ २३ ॥

१ महीने के बालक को संकुली पूतना ग्रहण करती है । इसमें कौवे की तरह रोना, श्वास आंख मीचना, होता है और मूत्र की सी गंध होती है । इस बालक को गौ सूत्र से स्नान करावें और गौ के दांत का धूप दें । बलि के लिये पीला वस्त्र, लाल फूलों की माला, इतर, तैलका दिया, तीन प्रकारका भात,भातखीर,हलुवा,मद्य,तिल, चारों प्रकार के मांस ( नभचर जलचर, बनचर, ग्राम्य ) की करंजवृक्ष के नीचे दक्षिण दिशा में सात दिन तक बलि दें ॥ २३ ॥

द्विमासिकं च मुकुटा वपुः शीतं च शीतलम् ।
छर्दिःस्यान्मुखशोषादि पुष्पगंधांशुकानिच ॥
अपूपमोदनं दीपः कृष्णां नीरादिधूपकम् ॥ २४ ॥

दूसरे महीने मुकटा नामक पूतना बालक को ग्रहण करती है । इसमें बालक का शरीर ठंडा होजाता है, या ठंड मालूम देती है वमन होती है, मुख सूखता है फूलों कीसी गंध कंधों में आती है पूवा या पूड़ी, भात की बलि दें दीपदें काला अगर, सुगन्धवाला की धूप दें ॥ २४ ॥

तृतीयेगोमुखी निद्रा सविएमूत्रप्ररोदनम् ।
यवा: प्रियंगु: पललं कुल्माषं शाकमोदनम् ॥
क्षीरं पूर्वेददंन्मध्येऽहनि धूमश्चसर्पिषा ॥२५॥

तीसरे महीने गो मुखी नामक पूतना ग्रहण करती है। इसमें ज्यादा नींद आती है, मूत्र, पखाना एक साथ होता है बच्चा रोता है। यव, प्रियंगु मान्स, कुल्थीका साग, भातकीबलि पहिलेपहर और दोपहर में दूध की दें और घृत की धूप दें पंचभृंग ( देवताड़, शमी, भांग तालीस, निर्गुण्डी ) के जल से स्नान करावें ॥ २५ ॥

पंचभृङ्गेन तत्स्नानं चतुर्थे पिंगलात्तिहृत् ।
तनु:शीता पूतिगंध: शोष: सम्रियतेध्रुवम् ॥ २६ ॥

चौथे महीने पिङ्गला पूतना ग्रहण करती है। इससे बच्चे का शरीर ठंडा दुर्गन्धित होता है बच्चा सूखता है एसा बच्चा मर जाता है ॥ २६ ॥

पंचमीललनागात्रसाद: स्यान्मुखं शोणितम् ।
अपान: पीतवर्णश्च मत्स्याद्यैर्दक्षिणे वलि: ॥ २७ ॥

पांचमी ललना नामक पूतना पांचवे महीने आक्रमण करती है इसमें शरीर काला, मुखलाल, अपानवायु का बार २ निकलना, पीला रंग होता, है मछली, आदि की दक्षिण दिशा में वलि दें ॥ २७ ॥

षण्मासे पंकजाचेष्टा रोदनं विकृतं स्वर: ।
मत्स्यमांससुराभक्त पुष्पगंधादिभिर्वलि: ॥ २८ ॥

छटे महीने पंकजा पूतना के यह लक्षण होते हैं। बच्चा बुरे स्वर से रोता है इसमें मछली का मांस सुरा, भात, फूल, चंदनादि से वलि दें ॥ २८ ॥

सप्तमेतु निराहारा पूतिगन्धादिदन्तरुक् ।
पिष्टमांससुरामांसै र्बलिः स्यादमुनाष्टमे ॥

सात में महीने निराहारा पूतना के यह लक्षण होते हैं । बच्चे में दुर्गन्ध हो, दांतों में पीड़ा हो तब पीठी, मांस, सुरा की बलि दें ॥२९॥

विस्फोटशोषणाद्यं स्यात्तत्चिकित्सां न कारयेत ॥ २९ ॥

आठवें महीने अमुना पूतना ग्रहण करती है, इसमें फोड़ा सूखा होता है, इसकी चिकित्सा न करें ॥ २९ ॥

नवमेकुम्भकर्ण्यार्त्तौ ज्वरीछर्दतिबालकम् ।
रोदनं माषकुल्माष मद्याद्यैरीश्वरेबलिः ॥ ३० ॥

नवें महीने कुम्भकर्णी पूतना ग्रहण करती है । इसमें ज्वर, वमन रोदन यह लक्षण होते हैं, उरद, कुलथी या रोंसा मद्य से ईश्वर (शिव) को बलि दें ॥ ३० ॥

दशमे तापसी चेष्टा निराहारोऽक्षिमीलनम् ।
घण्टा पताका पिष्टाक्ता सुरामांसबलिः समे ॥ ३१ ॥

दशवें महीने तापसी पूतना लगती है, इसमें बच्चा कुछ भी नहीं खाता और आंखें बंद रखता है, इसमें घंटा, पताका, पिट्ठी, सुरा, मांस की प्रातः सायं बलि दें ॥ ३१ ॥

राक्षस्येकादशी पीड़ा नेत्रादौ न चिकित्सितम् ॥ ३२ ॥

ग्यारहवें महीने राक्षसी पीड़ा होती है । इसमें नेत्रों में पीड़ा होती है, इसकी चिकित्सा न करें ॥ ३२ ॥

चंचला द्वादशे श्वासः त्रासादिकविचेष्टितम् ।
बलिः पूर्वेऽथमध्यान्हे कुल्माषाद्यैस्तिलादिभिः । ३३ ॥

बारहवें महीने चंचला की पीड़ा होती है, इसमें श्वास, डर बेहोशी होती है, इसमें प्रातः और मध्याह्न में कुलथी, तिल की बलि दें ॥ ३३ ॥

यातनातु द्वितीयेऽब्दे पातनं रोदनादिकम् ।
तिलमांसमद्यमांसैर्वलिः स्नानादिपूर्ववत् ॥ ३४ ॥

दूसरे वर्ष यातना नामक पूतना की पीड़ा होती है, इसमें पीड़ा और रोना होता है, इसमें तिल, मांस, उरद की बलि दें और पूर्ववत् स्नानादि करावें ॥ ३४ ॥

तृतीये रोदनी कम्पो रोदनं रक्तमूत्रकम् ।
गुड़ौदनं तिलापूपः प्रतिमा तिल पिष्टजा ॥
तिलस्नानं पंचपत्रैर्धूपो राजफल त्वचा ॥ ३५ ॥

तीसरे वर्ष रोदनी पूतना की पीड़ा, कम्प, रोदन मूत्रकृच्छ्र होता है। इसमें तिल पिष्टी की पुतली बना गुड़, भात, तिल, पूड़ी की बलि दें। पंचपत्र ( आम, जामुन, कैथ, बिजौरा, बेलपत्र ) तिलसे स्नान करावें। और खिरनी के फलों की छाल की धूप दें ॥ ३५ ॥

चतुर्थे चटकाशोफो ज्वरः सर्वाङ्ग सादनम् ।
मत्स्यमांसतिलाद्यैश्च बलिः स्नानं च धूपनम् ॥ ३६ ॥

चौथे वर्ष चटका पूतना की पीड़ा होती है इसमें सूजन, ज्वर, समस्त देह में पीड़ा होती है, मछली का मांस, तिलादि की बलि, स्नान धूपादि पूर्ववत् दें ॥ ३६ ॥

पञ्चालापंचमेऽब्दे तु ज्वरश्वासोऽङ्गसादनम् ।
मांसौदनाद्यैश्च बलिर्मेष शृङ्गेण धूपनम् ॥ ३७ ॥

पलाशोदुम्बराश्वत्थ वटविल्वदलाम्बुधृक् ॥ ३८ ॥

पांचवें वर्ष पंचाला पूतना की पीड़ा होती है इसमें ज्वर, डर, अंगपीड़ा, होती है । मांस, भात की वलि दें, भेड़ के बालों की धूप दें । पलास ( ढांक ), गूगल, पीपल, वट, वेल पत्रों को पानी में डाल स्नान करावें ॥ ३७ । ३८ ॥

षष्टेऽब्दे धावनी शोषो वैरस्यं गात्रसादनम् ।
सप्ताहोभिर्वलिः पूर्वं धूपः स्नानं च भृङ्गकैः ॥ ३९ ॥

छटे वर्ष धावनी पूतना होती है इसमें सूखा, मुख में विरसता, शरीर पीड़ा होती है एक सप्ताह तक पूर्व कही वलि और धूप दें । भमरा के जल से स्नान करावें ॥३९॥

सप्तमेयमुनाच्छर्दिरवचो हास रोदनम् ।
मांसपायस मद्याद्यैर्वलिःस्नानंच धूपनम् ॥ ४० ॥

सातवें वर्ष यमुना पूतना होती हैं इसमें, वमन, मूंकता, कभी हंसना कभीरोना होता है, मांस, खीर, मद्य से वलि दें स्नान और धूप भी दें ॥ ४० ॥

अष्टमे वा जातवेदा निराहारं प्ररोदनम् ।
कृसरापूपदध्याद्यैर्बलिःस्नानं च धूपनम् ॥ ४१ ॥

आठवें वर्ष जातवेदा पूतना होती है इसमें बालक खाता नहीं रोता है, खिचड़ी, पुरी, दही, की बलिदें और स्नान धूप दें॥ ४१ ॥

कालाब्दे नवमे वाह्वोरास्फोटोगजनंभयम् ।
वलिःस्यात्कृसरापूपसक्तुकुलमाषपायसैः ॥ ४२ ॥

नवमें बर्ष में काला नामक पूतना होती है इसमें वाहों का फटना, गर्जना, भय, होताहै, इसमें खिचड़ी, पूडी, सत्तू कुलथी की बलि दें ॥ ४२ ॥

दशमेऽब्दे कलहंसो दाहोऽङ्गकृशता ज्वरः ।
पौलिकापूपदध्यन्नैःपञ्चरात्रं बलिंहरेत् ॥ ४३ ॥

दशमें वर्ष कल हंसी नामक पूतना होती है, इसमें दाह, अंग कृशता, ज्वर, होता है पूरी, पूवा, दधि, की पांचरात्रि बलि दें नोमपत्तों की घूप दें और कूठ का लेप करें ॥ ४३ ॥

निम्बधूपः कुष्टलेपो तथैकादशके ग्रही ।
देवदूती निष्टुर वाग्वलिर्लेपादि पूर्ववत् ॥ ४४ ॥

ग्यारहवे वर्ष देबदूती पूतना का कोप होता है उसमें बच्चा निष्ठुर वाणी बोलता है, वलि, लेप पूर्व की तरह करें ॥ ४४ ॥

वलिकाद्वादशे श्वासो बलिर्लेपादि पूर्णवत् ॥ ४५ ॥

वारहवे वर्ष बलिका पूतना का कोप होता है, इसमें श्वास अधिक होता है बलि आदि पूर्ववत करें ॥ ४५ ॥

त्रयोदशे वायवी च मुखवाह्याङ्गसादनम् ।
रक्तान्नगन्धमाल्याद्यैर्बलिः पञ्चदलैः स्नपेत् ॥ ४५ ॥
राज्ञीनिम्ब दलै धूपो ॥ ४५ ॥

तेरहवें वर्ष बायवी पूतना का कोप होता है मुख, वाहरी, अंगों में पीड़ा होती हैं लाल अन्न मसूरादि, चंदन, माला से वलिदें और पंचपत्रों से स्नान करावें सरसों नीम के पत्तों की धूप दें ॥ ४५ ॥

यक्षिणी च चतुर्दशे । चेष्टाशूलं ज्वरोदाहो मांस ।
मत्स्यादिकैर्बलिः । स्नानादि पूर्ववच्छान्त्यै ॥ ४६ ॥

चौदहवे वर्ष में यक्षिणी पूतना का कोप होता है इसमें शूल, ज्वर, दाह, होता है, मांस, मछली, की बलि दें स्नानादि पूर्व वत करें ॥ ४६ ॥

मुण्ड कान्ति हि पंचके ।
तच्चेष्टासृक्स्रवः शश्वत्कुर्यान्मातृचिकित्सनम् ॥ ४७ ॥

पंद्रहवें वर्ष मुण्डिका नामक पूतनाकी पीडा होती है उसके चिह्न यह है, रक्तस्रावहो, एसा होने पर मातृका पूजन करें ॥ ४७ ॥

वानरी षोडशी भूमौ पतेन्निद्रा सदा ज्वरः ।
पायसाद्यैस्त्रिरात्रं च बलिः स्नानादि पूर्ववत् ॥ ४८ ॥

सोलहवें वर्ष वानरी पूतना का प्रकोप होता है जमीन पर गिरना, सदैव ज्वर रहना हो एसा होने पर खीर की बलि तीन रात्रि दें और पूर्ववत स्नानादि करावें ।

गन्धवती सप्तदशे गात्रोद्वेगः प्ररोदनम् ।
कुल्माषाद्यैर्बलिः स्नानधूपलेपादि पूर्ववत् ॥ ४९ ॥

सत्रहवे वर्ष गन्धवती पूतना का कोप होता है तब शरीर में चंचलता और रोना यह लक्षण होते हैं कुलथी की बलि दें और पूर्ववत स्नान धूप लेप करें ॥ ४८ । ४९ ॥

दिनेशो पूतना नाम वर्षेशा सुकुमारिका ।

ओं नमः सर्वमातृभ्यो बाल पीडा संयागं भुञ्ज २ चुट २ स्फोटय २ स्फुर २ गृह्ण २ आकट्टय २ कट्टय २ एवं सिद्ध रुपो

ज्ञापयति हर २ निर्दोषं कुरु २ बालिकां बालं स्त्रियं पुरुषं वा सर्व ग्रहाणामुपक्रमात्। चामुण्डे नमो देव्यै हुं हूं ह्रीं अपसर दुष्ट ग्रहान् हुं तद्यथागच्छन्तु गृह्यकाः अन्यत्र पन्थानं रुद्रो ज्ञापयति सर्व वालग्रहेषु स्यान्मन्त्रोऽयंसर्व कामिकः ॥ ५० ॥

यह मंत्र सर्व ग्रहों के लिये हैं इसका नाम सर्व कामिक है ॥५०॥

ओं नमों भगवतिचामुण्डे मुञ्च २ वालं बालिकां वा वलिं गृह्ण २ जय २ वस २ सर्वत्र वलिदानेऽयं रक्षाकृत्पठ्यते मनुः ।५१।

यह मंत्र वलिदान देनेका है ॥ ५१ ॥

ब्रह्मा विष्णुःशिवऽस्कन्दो गौरी लक्ष्मीर्गणादयः ।
रक्षन्तु ज्वरदाहात्त मुञ्चन्तु च कुमारकम् ॥ ५१ ॥

प्राथनामंत्रः

अपस्मारादौ ।

पृश्निहिंगुबचाचुक्रशिरीष लशुनामयैः ।
नस्याञ्जनादि कुर्वीत साजमूत्रैर्ग्रहापहैः ॥ ५२ ॥

पृश्निपर्णी, हींग, बच, चूका, सिरस बीज लहसन को बकरी की पैशाव में पीस नस्य एवं अंजन देना सर्व ग्रह हर हैं ॥ ५२ ॥

पाठा पथ्यावचाशिग्रु सिन्धुव्योषैः पृथक् पलैः ।
अजाक्षीराढके पक्वं सर्पिः सर्वग्रहान्हरेत् ॥ ५३ ॥

पाठा, हर्रा, बच, सैंजनाबीज, सेंधानमक, त्रिकुटा, प्रत्येक १-१ पल बकरी का दूध ४ सेरमें एक सेर गौ घृत पकावें यह सर्व ग्रहघ्न है ॥ ५३ ॥

बृश्चिकाली फली कुष्टं लवणानिच शाङ्गकम् ।

अपस्मार विनाशायतज्जलंत्वभिभोजयेत् ॥ ५४ ॥

पुनर्नवा, आमला, कूठ, नमक, आद्रक का रस अपस्मार हर है ॥ ४५ ॥

बिदारी कुशकाशेक्षुकाथजं पापयेत्पयः ।

द्रोणे सयष्टि कूष्माण्डरसे सर्पिश्च संस्कृतम् ॥ ५५ ॥

पञ्चगव्यंघृतं तद्वद्योगं ज्वरहरं शृणु ।

विदारीकंद, कूशमूल, कांसमूल, ईखमूल, के क्वाथ को पिलावें या १६ सेर कुष्माण्ड रस और मोरेठी का कल्कडाल पकाया घृत या पंचगव्य घृत अपस्मार हर हैं ॥ ५५ ॥

ओं भस्मास्त्रायविद्महे एकदंष्ट्रायधीमहि तन्नोज्वरः-प्रचोदयात् ॥ ५६ ॥

यह ज्वर का मंत्र है ॥ ५६ ॥

कृष्णोषणनिशारास्ना द्राक्षातैलं गुडं लिहेत् ।

श्वासवानथवाभार्गी सयष्टिमधुसर्पिषा ॥ ५७ ॥

पाठातिक्ताकणा भार्गीमथवा मधुनालिहेत ।

पीपल, पीपलामूल, हल्दी, रास्ना, दाख, तैल गुड के साथ चाटने से श्वास दूर होती है भारंगी, मोरेठी, मधु घृत से या पाठा, पीपल, कुटकी, भारंगी का चूर्ण मधु से ॥ ५७ ॥

धात्री विश्वसिताकृष्णा मुस्ताखर्जूरमागधी ॥ ५८ ॥

पिवरश्चेतिहिक्काघ्नं तत्त्रयं मधुनालिहेत् ।

आमला, सोंठ, मिश्री । पीपल, मोथा, । छुहारा, पीपल, शालिपर्णी मधु से चटाना यह तीनों य गितोंकरह है ॥ ५८ ॥

कामली जीरमाण्डूकी निशाधात्री रसंपिबेत् ॥ ५६ ॥

कामलारोग वाला जीरा, ब्रह्मी, हल्दी, आमला का रस पीवे ॥ ५६ ॥

व्योषपद्मक त्रिफला विडङ्ग देवदारवः ।
रास्नाचूर्णसमं खण्डैजग्ध्वा कासहरं ध्रुवम् ॥ ६०॥

त्रिकुटा, पद्माख, विडंग, देवदारु, रास्ना का चूर्ण समान शक्कर मिला लेने से कास दूर होती है ॥ ६० ॥

---

## स्त्रीरोगे

फलत्रयकषायेण वराङ्गंक्षालयेद्दशे ।
अश्वगंधायवैःस्त्रीतु निशाकर्पूरकादिना ॥ १ ॥
पिप्पली तण्डुलान्यष्टौ मरिचानिचविंशतिः ।
वृहती रसलेपाच्चवशेस्यान्मरणान्तिकम् ॥ २ ॥

स्त्री त्रिफला के काथ से योनि धोवे और पुरुष असगंध, यव, हल्दी, कपूर या पीपल बीज आठ, मिर्च २०, वृहती ( कटैली ) के रस से पीस लेप करने से स्त्री वश में होती है, यह लिंग लेप है ॥१-२॥

करीर मूल त्रिकटु क्षौद्र लेपस्तथा भवेत् ।
हिमं कपित्थकरसं मागधी मधुकं मधु ।
तेषांलेपः प्रयुक्तस्तुदम्पत्यःस्वस्तिमावहेत ॥ ३ ॥

करील की जड़, त्रिकुटा का चूर्ण मधु से लेप करना भी पूर्वोक्त कार्य करता है । कपूर, कैथ की पत्ती का रस, पीपल, मोरेठी का चूर्ण मधु से लेप करने से दम्पति को आनन्द देता है ॥ ३ ॥

सशर्करा योनि लेपात्कदम्बरसको मधु ।
सहदेवीं महालक्ष्मीः पुत्रजीवी कृताञ्जलिः ।
एतच्चूर्णं शिरः क्षिप्तं लोकस्यवशमुत्तमम् ॥ ४

शकर, कदम्ब रस, मधु का योनि लेप और सहदेवी, दुधी, तुलशी, पुत्रजीवक, लजवन्ती का चूर्ण शिर में डालने से लोक का वश होता है ॥ ४ ॥

त्रिफला चन्दन क्वाथ प्रस्थाद्वि कुडवं पृथक् ।
भृङ्ग हेमरसं दोषा तावती चुम्ब कं मधु ॥
घृतैः पक्वानिशाछाया शुष्का लेप्यातु रञ्जनी ॥ ५

त्रिफला, चंदन क्वाथ, भांगरा, धत्तूर रस १-१ सेर, हल्दी, चुम्बक का कल्क डाल पकाया घृत व्यंगादि दूर करता है, इसी प्रकार शुष्क हल्दी का चूर्ण मलने से भी होता है ॥ ५ ॥

विदारी सोचग्रामाष चूर्णो भूतां सशर्कराम् ।
मथितां यः पिबेत्क्षीरैर्नित्यं स्त्री शतकं व्रजेत् ॥ ६ ॥

विदारीकंद, लहसन, उरद चूर्ण, शकर, दूध में मथ कर पीने से सौ स्त्रियों से रमण की शक्ति पैदा करता है ॥ ६ ॥

गुत्ममाषतिलव्रीहि चूर्णं क्षीर सितान्वितम्
अश्वत्थबंशदर्भाणां मूलं वै क्षौण्णबीश्रियोः ।
मूलंदूर्वाश्वगन्धोत्थं पिबेत्क्षीरैः सुतार्थिनी ॥ ७ ॥

ग्रन्थिपर्णा, उरद, तिल, चावल का चूर्ण दुग्ध शर्करा के साथ। या पीपल, बांस, डाभ की जड़, शतावर, बेलमूल, दूर्वा, असगंध की मूल को पुत्र चाहने वाली दूध से पीवे ॥ ७ ॥

कौन्तीलक्ष्म्योः शिफाधात्री वज्रं लोध्रं वटाङ्कुरम् ।
आज्यक्षीरमृतौपेयं पुत्रार्थं त्रिदिनं स्त्रिया ॥ ८ ॥

रेणुका मूल, स्थल पद्ममूल, आमला, सुगंधवाला, लोध वट के अंकुर ऋतु समय में घृत दुग्ध के साथ तीन दिन पुत्र चाहने वाली स्त्री पीवे ॥ ८ ॥

पुत्रार्थिनी पिबत्क्षीरं श्री मूलं सवटांकुरम् ।
श्री वटांकुर देवीनांरसंनस्येपिबेच्चसा ॥ ९ ॥

पुत्र चाहने वाली वेलमूल, वड़ की दाढ़ी दूध से पीवे और वेल, शिवलिंगी, वट के अंकुर के रस को नस्य से पीवें ॥ ९ ॥

श्रीपद्ममूलमुत्क्षीरमश्वत्थोत्तर मूलयुक् ।
तरलं पयसायुक्तं कार्पासफल पल्लवम् ॥
अपामार्गस्य पुष्पाग्रं नवं समहिषीपयः ।
पुत्रार्थं च द्विषट् श्लोकैर्योगाश्चत्वारईरिताः ॥ १० ॥

वेलमूल, कमलमूल, पीपलकी उत्तरदिशाकी मूल दूधसे, कपासके पत्ते, अपामार्गके फूलका अग्र भाग ताजी भैंस के दूधके साथ पुत्र चाहने वाली पीवे। साढ़े छः श्लोकों में चार पुत्र देने वाले योग कहे गये हैं ॥ १० ॥

शर्करोत्पलपुष्पाक्ष लोध्रचन्दन सारिवाः ।
स्रवमाणेस्त्रियागर्भे दातव्यास्तण्डुलाम्भसा ॥
लाजायष्टिसिताद्राक्षा क्षौद्रसर्पींषि या लिहेत् ॥११॥

शकर, कमलपुष्प, रुद्राक्ष, लोध, चंदन, शारिवा का चूर्ण चावल धोवन से देने पर स्राव होने वाला गर्भ स्थिर होता है। या धान की खील, मोरेठी, मिश्री, दाख, मधु, घृत से चाटे ॥ ११ ॥

अटरुषकलाङ्गल्योः काकमाच्याः शिफापृथक् ।
नाभेरधः समालिप्य प्रसूते प्रमदा सुखम् ॥ १२ ॥

अरूसा, लांगली ( कलिहारी ) काली मकोय की जड़ का प्रथक् प्रथक् नाभि के नीचे लेप करना सुख से प्रसव कराता है ॥ १२ ॥

रक्तं शुक्लं जपापुष्पं रक्तशुक्लस्रुतौ पिबेत् ॥ १३ ॥

रक्त ओढहुल का पुष्प रक्तस्राव को और सफेद गुडहल का फूल सफेद प्रदर को नष्ट करता है ॥ १३ ॥

केशरं बृहतीमूलं गोपीषष्टितृणोत्पलम् ।
साजक्षीरं सतैलं तद्भक्षणं रोमजन्यकृत् ॥
शीर्य्यमाणेषु केशेषु स्थापनं च भवेदिदम् ॥ १४ ॥

नागकेशर, बड़ी कटेली की जड़, शारिवा, साठी चावल की जड़ प्याज, कमल, बकरी का दूध और तेल मिला पीना बालों को पैदा करता है और गिरते हुये बालों को भी स्थापन करता है ॥ १४ ॥

धात्रीभृङ्गरसप्रस्थं तैलं च क्षीरमाढ़कम् ।
यष्ट्य्ंजनपलं तैलं तत्केशाक्षिशिरोहितम् ॥ १५ ॥

आमला, धमरा का रस १-१ सेर, दूध ४ सेर, तिल तैल १ सेर, मोरेठी और रसोत १-१ पल डाल पकालें, यह बालों को, नेत्रों को और शिर के रोगों में हितकर है ॥ १५ ॥

हरिद्राराजवृक्षत्वक् चिंचालवण लोध्रकौ ।
पीताखारी हरेदाशु गवामुदर वृंहणम् ॥ १६ ॥

हल्दी, अमलतास की छाल, इमली छाल, लोध, खारी नमक इनको खिलाने से गायों की उदर वृद्धि हट जाती है ॥ १६ ॥

## गज चिकित्सा

घृततैलाभ्यङ्गयुक्तस्नानं वातविवर्जितम् ।
पाकलेषु च सर्वेषु कर्तव्यमनुवासनम् ॥ १ ॥
स्कन्धेषु च क्रिया कार्या तथा पालकवन्नृपैः ॥ २ ॥

घृत तैल लगवा कर स्नान कराना और हवा का बचाव समस्त हस्ति ज्वर में करें और अनुवासन दें । हाकीकी गरदन के रोगों में भी हस्ति ज्वर की समस्त क्रियायें करें ॥ १–२ ॥

गोमूत्रं पाण्डु रोगेषु रजनीभ्यां घृतं द्विज ।
आनाहे तैलसिक्तस्य निषेकस्तस्यशस्यते ॥ ३ ॥

पाण्डुरोग में गौ मूत्र दें या दोनो हल्दियों के साथ घी दें । आनाह रोग में तैल से पेट सेंके और वस्ति दें ॥ ३ ॥

लवणैः पञ्चभिर्मिश्रा प्रतिपानाय वारुणी ।
विडंगात्रिफला व्योष सैन्धवैः कवलान्कृतान् ॥
मूर्च्छासुभाजयेन्नागं क्षौद्रं तोयं च पाययेत् ॥

या पाचों लवण मिली शराव दें । विडंग, त्रिफला, त्रिकुटा, सेंधा नमल से कवल दें मूर्च्छा रोग में मधु को पानी में मिला पिलावें ॥ ४ ॥

अभ्यङ्गः शिरसः शूले नस्यं चैव प्रशस्यते ॥ ५ ॥

शिर के शूल में तैल लगावे और नस्य दें ॥ ५ ॥

नागानां स्नेहपुटकैः पादरोगानुपक्रमेत् ।
पश्चात्कल्ककषायेण शोधनं च विधीयते ॥ ६ ॥

तैल की पोठली से पाद रोगों की चिकित्सा करें। इसके वाद कल्क और कषाय से शोधन करें ॥ ६ ॥

शिखितित्तिरलावानां पिप्पली मरिचान्वितैः।

रसैः संभोजयेन्नागं वेपथुर्यस्य जायते ॥ ७ ॥

जिस हाथी को कम्प हो उसे मोर, तीतर, लवा, का मांस रस पीपल, मिरच, मिला खिलावें ॥ ७ ॥

बालबिल्वं तथा लोध्रं धातकी सितया सह।

अतीसार विनाशाय पिण्डीं भुञ्जीतकुञ्जरः ॥ ८ ॥

कच्चे वेल का गूदा, लोध, धाय क फूल, मिश्री, का पिण्ड अतीसार नाश के लिये देना चाहिये ॥ ८ ॥

नस्यं करग्रहे देयं घृतं लवण संयुतम्।

मागधी नागराजाजी यवागू मुस्त साधिता ॥ ६ ॥

सूंड की स्तम्भता में घृत और नमक की नस्य दें और पीपल, सोंठ जीरा, मोंथा सेवनी यवागू दें ॥ ६ ॥

उत्कर्णकेतु दातव्या वाराहं च तथारसम् ॥ १० ॥

कान पूंछ और देह की स्तम्भता में वराह मांस रसदें ॥ १० ॥

दशमूलकुलत्थाम्ल काकमाचीविपाचितम्।

तैलंश्रृंखलसंयुक्तं गलग्रहगदापहम् ॥ ११ ॥

दशमूल, कुलथी, अमलवेंत कालीमकोय, ऊंटकटारा से पकाया तैल गलग्रह नाशक है ॥ ११ ॥

अष्टभिर्लवणैः पिष्टैः प्रसन्नापाययेत्घृतम्।

मूत्रभंगेऽथवा बीजं कथितं त्रपुषस्य च ॥ १२ ॥

मूत्र स्तम्भ होने पर आठो नमक मिला मदिरा पिलावे या खीरे के बीजों का क्राथ पिलावे ॥१२॥

त्वग्दोषेषु पिबेन्निम्बं वृष्यं वा कथितं द्विपः।
गवां मूत्रं विडंगानि कृमिकोष्टेषु शस्यते ॥ १३ ॥

चमडी के रोगों में मोम और अडूसा का क्राथ पिलावें। कृमि रोग में विडंग चूर्ण गो मूत्र से दें॥ १३ ॥

शृङ्गवेर कणाद्राक्षा शर्कराभिः शृतंपयः।
क्षतक्षयहरं पानं तथा मांस रसः शुभः॥ १४ ॥

क्षत क्षयरोग में सोंठ, पीपल, दाख शक्कर का पकाया दूध, मांस रस उत्तम है॥ १४ ॥

मुद्गौदनं व्योषयुक्तमरूचौतु प्रशस्यते ॥ १५ ॥

अरुचिरोग में मूंग की दाल, भात त्रिकुटा मिलादेना॥ १५ ॥

त्रिवृद्व्योषाग्निदन्त्यर्क श्यामाक्षीरेभपिप्पली।
एतैर्गुल्महरः स्नेह कृतश्चैव तथा परः॥ १६ ॥

निशोथ, त्रिकुटा, चीता, दन्ती, आक विधारा का दूध, गजपीपल, इनसे सिद्ध किया घृत गुल्म हर है॥ १६ ॥

भेदनद्रावणाभ्यङ्ग स्नेह पानानुवासनैः।
सर्वानेव समुत्पन्नान्विद्रधीन्समुपाहरेत् ॥ १७ ॥

विद्रधि रोग में फोडना, पकाना, मालिश करना, स्नेह पान अनुवसान कराना श्रेष्ठ है॥ १७ ॥

यष्टिकं मुद्गसूपेन शारदेन तथा पिबेत्।
बालबिल्वैस्तथालेपः कंठरोगेषु शस्यते ॥ १८ ॥

कण्ठ के रोगों में शाठी चावल मूंग की दाल दे या काली मूंग खिलावे, वाल वेलका गूदा लेप करें ॥ १८ ॥

विडङ्गेन्द्रयवौहिंगु सरलं रजनीद्वयम् ।

पूर्वान्हे दापयेत्पिण्डान्सर्वं शूलोपशान्तये ॥ १९ ॥

समस्त उदर शूलों के लिये विडंग, इन्द्रजो, हींग, अगर, दोनों हल्दी, का वनाया पिण्ड प्रातः देना चाहिये ॥ १९ ॥

प्रधानभोजने तेषां षष्टिक व्रीहिशालयः ।

मध्यमोयवगोधूमौ शेषादन्तिनि चाधमाः ॥ २० ॥

हाथियों के लिये शाठी, और व्रीहि चांवल उत्तम भोजन है, मध्यम, यव,–गेहूं शेष अधम भोजन हैं ॥ २० ॥

यवश्चैव तथेक्षुर्नागानां वलवर्धनः ।

नागानां यवसं शुष्कं तथाधातु प्रकोपनम् ॥ २१ ॥

हरित जौ और गन्ना हाथियों को वल बढ़ाता है, शुष्क भूसा धातु प्रकोप करता है ॥ २१ ॥

मदक्षीणस्यनागस्य पयः पानं प्रशस्यते ।

दीपनीयैस्तथा द्रव्यैः शृतोमांसरसः शुभः ॥ २२ ॥

जिस हाथी का मद क्षीण हो गया हो उसे दूध पिलावें या दीपन द्रव्यों से पकाया मांस रस दें ।

वायसः कुकुरश्चैव काकोलूकः कुलं हरिः ।

भवेत्क्षौद्रेण संयुक्तः पिंडोयुद्धे महापदि ॥ २३ ॥

युद्ध या बड़ी आपद में कौवा, कुत्ता या कौवा उल्लू । नकुल, वन्दर का मांस मधु मिला दे, इससे मस्ती आती है ॥ २३ ॥

कटुमत्स्यविडंगानि क्षारः कोषातकीपयः ।
हरिद्राचेति धूपोऽयं कुञ्जरस्यजयावहः ॥ २४ ॥

कुटकी, मछली, विडंग, यवक्षार, तरोई, दूध, हल्दी की धूप हाथी को जय दिलाने वाली होती है ॥ २४ ॥

पिप्पलीतण्डुलास्तैलं माध्वीकं माक्षिकं तथा ।
नेत्रयोः परिषेकोऽयं दीपनीयः प्रशस्यते ॥ २५ ॥

पीपल के दाने और तेल, महुआ के फल और मधु का अंजन दृष्टि बढ़ाता है ॥ २५ ॥

पुरीषंचटकायाश्च तथा पारावतस्य च ।
क्षीरवृक्षकरीषाश्च प्रसन्नाचेष्टमञ्जनम् ॥
अनेनाञ्जितनेत्रस्तु करोतिकदनंरणे ॥ २६ ॥

चटक पक्षी की बीट, कपोत बीट, खिरनी के बीज, बनकंडेकी राख शराव के साथ, अंजन देने से हाथी चिंघाड़ने लगता है ॥ २६ ॥

उत्पलानि च नीलानि मुस्तंतगरमेवच ।
तण्डुलोदक पिष्टानि नेत्र निर्वापणं परम् ॥ २७ ॥

नील कमल, मोंथा, तगर, चावल धोवन के साथ अंजन देना नेत्रों को फोड़ देता है ॥ २७ ॥

नखवृद्धौनखच्छेद स्तैलसेकश्चमास्यपि ।
शय्यास्थानं भवेच्चास्य करीषैः पांसुभिस्तथा ॥
शरद निदाघयोः सेकः सर्पिषा च तथेष्यते ॥ २३ ॥

महीने में एक बार नाखून बढ़ जाने पर नाखून कटा देना और

तेल से सेंक करना सोने के लिये उसके थान पर वनकंडे की राख या धूल होना चाहिये, सर्दी और गर्मी में सेक करना चाहिये।

गज-चिकित्साकर सिद्धयोगोनाम सप्तासीत्यधिक द्विशततमोऽध्यायः
श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया
विश्वेश्वरी टीकया सनाथीकृतः समाप्तः २८७

## अश्व चिकित्सा

वृषोनिम्बबृहत्यौ च गुडूची च समाक्षिका।
सिंहा गन्धकरी पिण्डा स्वेदश्च शिरस्तथा॥ १॥

अडूसा, नीम छाल, दोनों कटैली, गुडूची, को मधु से बनाया पिण्ड या अटरूटैया, शल्लकी का पिण्ड, का स्वेद शिर रोग में हितकारी है॥ १॥

हिंगुपुष्करमूलं च नागरं साम्लवेतसम्।
पिप्पलीसैन्धवयुतं शूलघ्नंचोष्णवारिणा॥ २॥

हींग, पुष्करमूल, सोंठ, अमलबेंत, पीपल, सेंधा नमक का चूर्ण उष्ण जल से शूल हर होता है॥ २॥

नागराति विषामुस्ता सानंता बिल्वमालिका।
क्वाथमेषां पिवेद्वाजी सर्वातीसारनाशनम्॥ ३॥

सोंठ, अतीस, मोंथा, अनंतमूल, वेल का गूदा, चंद्रमल्लिका के फूल, का क्वाथ घोड़ों के सभी प्रकार के अतिसार नष्टकरता है॥ ३

प्रियंगुशारिवाभ्याश्च मुक्तमाजं शृतंपयः।
पर्य्याप्तशर्करं पीत्वा श्रमाद्वाजी विमुच्यते॥ ४॥

यदि घोड़ा थक गया हो तो-प्रयंगू, शारिवा, से पकाया दूध ज्यादा शकर मिला देना ॥ ४ ॥

द्रोणिकायां तु दातव्या तैलवस्तितुरंगमे ।
कोष्टजाच शिरा वेध्या तेन तस्यसुखं भवेत् ॥ ५ ॥

घोड़े के द्रोंणिका रोग में तैल की बस्ति दें कोष ( अंडकोष ) की शिरा का वेध करने से उसे सुख होता है ॥ ५ ॥

दाडिमं त्रिफलाव्योषं गुडं च सममाविकम् ।
पिण्डयेतत्प्रदातव्यमश्वानां कासनाशनम् ॥ ६ ॥

घोड़े की खांसी में-अनारदाना, त्रिफला, त्रिकुटा, गुड भेड़ के दूध के साथ देवे ॥ ६ ॥

प्रियंगुलोध्रमधुभि: पिवेद्वृषरसं हयः ।
क्षीरं वा पंचकोलाद्यं कासनाद्धि प्रमुच्यते ॥ ७ ॥

प्रियंगु ( लभेरा ) लोध, मधु से, या अड़ूसा का रस, वा पंच कोल साधित दूध देने से भी खांसी दूर होती है ॥ ७ ॥

प्रस्कन्धेषु च सर्वेषु श्रेय आदौ विशोधनम् ।
आभ्यंगोद्वर्त्तन स्नेहनस्यवर्त्तिक्रमः स्मृतः ॥ ८ ॥

प्रस्कन्ध ( ग्रीवा रोग ) में प्रथम शोधन, तैलमालिश उवटन, स्नेहनस्य, वर्ति को क्रम से करे ॥ ८ ॥

ज्वरितानां तुरंगाणां पयसैव क्रियाक्रमः ॥ ९ ॥

घोड़ों को ज्वर में दूध पिलावें ॥ ९ ॥

लोध्रं करञ्जयोमूलं मातुलुंगाग्निनागरः ।
कुष्टहिंगुवचारास्ना लेपोऽयं शोथनाशनः ॥ १० ॥

लोध, कंज की जड़, विजोरामूल, चित्रक, सोंठ, कूठ, हींग, बच, रास्ना, का लेप शोथ नाश करता है ॥ १० ॥

मंजिष्टा मधुकं द्राक्षा वृहत्यौरक्तचंदनः ।
त्रपुसी वीज मूलानि शृंगाटककशेरुकम् ॥
अजापयः शृतमिदं सुशोतं शर्करान्वितम् ।
पात्वा निरशनो वाजी रक्त मेहात्प्रमुच्यते ॥ ११ ॥

रक्त की पेशाव करने पर घोड़े को मजीठ, मोरेठी, दाख, दोनों कटैली, लाल चन्दन, ककड़ी बीज, और जड़, सिंघाड़ा, कसेरु, बकरी के दूध में मिश्री मिला पिलाना चाहिये ॥ ११ ॥

मन्याहनुनि गालस्थ शिराशोथोगलग्रहः ।
अभ्यंगः कटुतैलेन तत्र तेष्वेव शस्यते ॥ १२ ॥

गलग्रह होने पर मन्या, हनु, गाल की सिरा का स्तम्भ होने पर कटु तैल मर्दन करना उत्तम है ॥ १२ ॥

गलग्रहगदीशोथः प्रायशोगलदेशके ।
प्रत्यक्पुष्पी तथा वन्हिः सैन्धवं सौरसो रसः ।
कृष्णाहिंगुयुतै रेभिः कृत्वानस्यं न सीदति ॥ १३ ॥

गलग्रह शोथ प्रायः गले में होता है इस में अपामार्ग, चित्रक, सेंधा नमक, तुलसी का रस, पीपल, हींग का नस्य देना ॥ १३ ॥

निशेज्योतिष्मती पाठा कृष्णा कुष्टं वचामधु ।
जिह्वास्तम्भे च लेपोऽयं गुडमूत्रयुतो हितः ॥ १४ ॥

जिह्वा स्तम्भ में दोनों हल्दी, मालकांगनी पाठा, पीपल, कूट, बच, महुवा, गुड़, मूत्र के साथ लेप दे ॥ १४ ॥

तिलैर्यष्ट्यारजन्या च निम्बपत्रैश्चयोजिता ।
क्षौद्रेण शोधनीपिंडी सर्पिषा व्रणरोपिणी ॥ १५ ॥

व्रण रोग में तिल, मोरेठी, हल्दी, नींव पत्र, मधु, से शोधन और घृत में मिला लगाने से रोपण करती है ॥ १५ ॥

अभिघातेनखञ्जन्ति येह्यश्वास्तीव्र वेदनाः ।
परिषेक क्रिया तेषां तैलेनाशु रुजापहा ॥ १६ ॥

चोट लगने से लंगडाते हुये घोड़े के लिये, तैल का परिसेक कराना अच्छा है ॥ १६ ॥

दोषकोपाभिघाताभ्यां पक्व भिन्ने व्रणे क्रमः ।
शान्तिमत्स्यांण्ड वृद्धाभ्यां पक्वभिन्नव्रणेक्रमः ॥ १७ ॥

दोष कोप से या चोट से हुये व्रण के लिये ; चाहे वह पका हो या फूटा हो तो शकर और छरीला भर दें ॥ १७ ॥

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षमधूकवट कल्कनैः ।
प्रभूतसलिलः क्वाथः सुखोष्णोव्रणशोधनः ॥ १८ ॥

पीपल, ऊमर, पाकर, महुबा, वट के कल्क को भरने और इन्हीं के क्वाथ से धोना यह व्रण को भरता है ॥ १८ ॥

शताह्वानागरं रास्नामञ्जिष्टाकुष्टसैन्धवैः ।
देवदारुवचायुग्मरजनीरक्तचंदनैः ॥
तैलं सिद्धं कषायेण गुडूच्याः पयसा सह ।
म्रक्षणे वस्तितस्येच योज्यं सर्वत्र लिंगते ॥ १९ ॥

सोयाबीज, सोंठ, रास्ना, मजीठ, कूठ, सेंधा नमक, देवदारु, वच, दोनों हल्दी, रक्त चन्दन, के कल्क तथा गुडूची क्वाथ तथा दुग्ध

से तैल पकावे, इसके मलने, बस्ति और नस्य देने से लिंग नाश दूर होता है ॥ १९ ॥

रक्तस्रावोजलौकाभि र्नेत्रान्ते नेत्ररोगिणः ।
खदिरोदुम्बराश्वत्थकषायेण च साधनम् । २० ॥

नेत्र से रक्त स्राव हो तो जोंक द्वारा रक्त निकलवाये यह जौंक नेत्र के बाहर लगावे, फिर खैर, ऊमर, पीपल के क्वाथ से धोवे ॥ २० ॥

धात्रीदुरालभातिक्ता प्रियंगु कुंकुमैः समैः ।
गुडूच्याश्चकृतः कल्को हितो युक्तावलम्बिने ॥ २१ ॥

अवलम्बी रोग में—आमला, जवासा, कुटकी, प्रियंगू, केशर, गुडूची का कल्क हितकर है ॥ २१ ॥

उत्पाते च शिलेश्माख्ये शुष्कशोफेतथैव च ।
क्षिप्रकारिणिदोषे च सद्योविदलमिष्यते ॥ २२ ॥

उत्पातज ( कर्णपाली ) रोग में तथा शुष्क शोथ में पथरी या स्रवित व्रण, या शीघ्र कारी रोग में चीरा दे देना ॥ २२ ॥

गोशकृन्मञ्जिकाकुष्टरजनीतिलसर्षपैः ।
गवांमूत्रेणपिष्टैश्च मदनंकण्डुनाशनम् ॥ २३ ॥

खुजली नाशक के लिये–गौ का गोवर, मजीठ, कूठ, हल्दी, तिल, सरसों, गौ मूत्र में पीस मर्दन करना ॥ २३ ॥

शीतोमधुयुतः क्वाथो नासिकायां सशर्करः ।
रक्तपित्तहरः पानादश्व कर्णे तथैव च ॥ २४ ॥

नाक या कान से रक्त आने पर–मोरेठो का ठन्डा किया गया क्वाथ शकर मिला डालना चाहिये ॥ २४ ॥

सप्तमे सप्तमेदेयमश्वानां लवणं दिने।
तथाभुक्तवतां देया प्रतिपानेतु वारुणी ॥ २५ ॥

हर सप्ताह घोड़े को लवण दें और भोजन के बाद शराब दें ॥ २५ ॥

जीवनीयैः समधुरै मृद्वीकाशर्करायुतैः।
सपिप्पलीकैः शरदिप्रतिपानं सपद्मकैः ॥ २६ ॥

जीवनीयगण, मोरेठी मुनक्का, शकर, कमल, पीपल, युक्त पानक शरद् ऋतु में दें ॥ २६ ॥

विडंग पिप्पलीधान्यशताह्वालोध्रसैन्धवैः।
सचित्रकैस्तुरंगाणां प्रतिपानं हिमागमे ॥ २७ ॥

हेमन्तु ऋतु में-विढंग, पीपल, धनियां सौंफ, लोध, सेंधानमक, चित्रक, का पानक (शर्बत) दें ॥ २७ ॥

लोध्रं प्रियंगुकामुस्ता पिप्पली विश्वभेषजैः।
सक्षौद्रैः प्रतिपानं स्याद्वसन्ते कफनाशनम् ॥ २८ ॥

बसंत ऋतुमें—लोध, लभेरा, मोंथा, पीपल, सोंठ, मधु का पानक कफ नाशक के लिये देना ॥ २८ ॥

प्रियंगुपिप्पलीलोध्रयष्टयाह्वैः समहौषधैः।
निदाघेसगुड़ादेया मदिरां प्रतिपानके ॥ २६ ॥

ग्रीष्मऋतुमें—लभेरा, पीपल, लोध, मोरेठी, सोंठ, को गुड़ और शराब में मिला दें ॥ २६ ॥

लोध्रकाष्टंसलवणं पिप्पलीविश्वभेषजम्।
भवेत्तैलयुतैरेभिः प्रतिपानं घनागमे ॥ ३० ॥

वर्षाऋतुमें—लोध, नमक, पीपल, सोंठ, तैल मिला देना चाहिये ॥ ३० ॥

निदाघोद्धूतपित्ताये शरत्सुपुष्टशोणिताः ।
प्रावृड् भिन्नपुरीषाश्च पिबेयुर्वाजिनो घृतम् ॥ ३१ ॥

ग्रीष्म ऋतुमें जो ताप से रचित रहते हैं वह शरद में सुपुष्ट और रक्त युक्त होते हैं जो वर्षा में पतली लीद करते हैं उन्हें घृत पिलावें ॥ ३१ ॥

पिबेयुर्वाजिनस्तैलं कफवाय्वधिकास्तुये ।
स्नेहव्यापद्भवो येषां कार्य्यं तेषां विरूक्षणम् ॥ ३२ ॥
त्र्यहं यवागुरूक्षा स्याद्भोजनं तक्र संयुतम् ।

कफ की अधिकता में तैल दें जिन्हें घृतादि की ज्यादती से रोग हों उन्हें रुक्षण कर्म करावें तीन दिन रुक्षयवागू या तक्र युक्त भोजन दें, ॥ ३२ ॥

शरन्निदाघयोः सर्पिस्तैलं शीतवसंतयोः ॥
वर्षासुशिशिरेचैव वस्तौयमर्कामिष्यते ॥ ३३ ॥

शरद और ग्रीष्म में घृत, शीत और बंसत में तैल देना वर्षा और शिशिर ऋतुओं में वस्ति उत्तर वस्ति दें ॥ ३१ ॥

गुर्वभिष्यन्दि भक्तानि व्यायामः स्नानमातपम् ।
वायुवर्जं च वाहस्य स्नेह पीतस्य वर्जितम् ॥ ३४ ॥

जिस घोड़े को स्नेह पान कराया हो उसे गुरु भोजन, अभिष्यन्दि भोजन, व्यायाम, धूप, स्नान, हवा से बचावें ॥ ३४ ॥

स्नानंपानं सकृत्कुर्य्यादश्वानां सलिलागमे ।
अत्यर्थं दुर्दिनेकाले पानमेकं प्रशस्यते ॥ ३५ ॥
युक्तशीतातपेकाले द्विपानं स्नपनं सकृत् ।
ग्रीष्मेत्रिस्नानपानं स्याच्चिरं तस्यावगाहनम् ॥ ३६ ॥

वर्षा ऋतुमें स्नान, पानी एक बार दें, दुर्दिन में कई बार स्नान और एक बार ही पानी दें। शीत और गर्मी के दिनों में दो बार पानी दे और एक बार स्नान करावें। ग्रीष्मऋतु में तीन बार स्नान एवं पानी पिलावें। और देर तक तैरावें ॥ ३५ । ३६ ॥

निस्तुषाणां प्रदातव्या यवानां चतुराढ़की ।
चणकव्रीहिमौद्गानि कलायं वापिदापयेत् ॥ ३७ ॥

विना भूसी के यव १६ सेर, चना, काला धान, मूंग, मटर ८ सेर दें ॥ ३७ ॥

अहोरात्रेणचार्द्रस्या यवसस्य तुलादश ।
अष्टौशुष्कस्यदातव्याश्चतस्रोऽथ बुसस्यवा ॥ ३८ ॥

हराजौ या घास ५० सेर शुष्क घास ४० सेर भूसा २० सेर दें ॥३८॥

दूर्वा पित्तं यवः कासं बुसश्चश्लेष्मसञ्चयम् ।
नाशयत्यर्जुनः श्वासं तथावालो बलाक्षयम् ॥ ३९ ॥

दूब पित्त को, जौ खांसी को, भूसा कफसंचय को, अर्जुन श्वास को, सुगन्धवाला और बला क्षय को नष्ट करती है ॥ ३९ ॥

वातिकाः पैत्तिकाश्चैव श्लेष्मजाः सन्निपातिकाः ।
नरोगाः पीड़यिष्यन्ति दूर्वाहारं तुरंगमम् ॥ ४० ॥

दूब खाने वाले घोड़े को वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज रोग नहीं होते ॥ ४० ॥

द्वौ रज्जुवन्धौ दुष्टानां पक्षयोरुभयोरपि ।

पश्चाद्धनुश्चकर्त्तव्यो दूरकील व्यपाश्रयः ॥ ४१ ॥

दो रस्सी से दोनो तरफ दुष्ट घोड़ों को बांधना और खूंटे से ठोढी को दूर रखें ॥ ४१ ॥

वासेयुस्त्वास्तृते स्थाने कृतधूपनभूमयः ।

पत्रोपन्यस्तयवसाः सप्रदीपाः सुरक्षिताः ॥

कुक्कुवाक्वजकपयो धार्य्याश्चाश्वग्रहेमृगाः ॥ ४२ ॥

घुडसाल अच्छे स्थान में और काफी जगह में हो जहां धूप दी गई हो पत्ते या भूसा बिछा हो, दीयाजलता हो और वह स्थान सुरक्षित रहे मोर या मुर्गा वकरी का दूध मृग सदा पास में रखें ॥ ४२ ॥

---

## गवायुर्वेद

शृंगामयेषु धेनूनां तैलं दद्यात्ससैन्धवम् ।

शृंगवेरवलामांसी कल्क सिद्धं समाक्षिकम् ॥ १ ॥

सींगों के रोग में गायों के, सोंठ, बला, जटामांसी, सेन्धा नमक के कल्क से सिद्ध तैल को मधु मिला लगाना ॥ १ ॥

कर्णशूलेषुसर्वेषु मञ्जिष्ठाहिंगुसैन्धवैः ।

सिद्धं तैलं प्रदातव्यं रसोनेनाथवा पुनः ॥ २ ॥

कर्ण पीड़ा होने पर– मजीठ, हींग सेंधा नमक से सिद्ध तैल या लहसुन रस से सिद्ध तैल कान में डालना ॥ २ ॥

विल्वमूलमपामार्गं धातकी च सपाटला ।

कुटजंदन्तमूलेषु लेपाच्चच्छूलनाशनम् ॥ ३ ॥

दान्तों की पीड़ा में—वेल मूल, अपामार्ग, धाय के फूल पाटला, कुडा छाल का लेप दंत मूल में करें ॥ ३ ॥

दन्तशूलहरै द्रव्यैघृतंरामविपाचितम् ।
मुखरोगहरं ज्ञेयं जिह्वा रोगेषु सैन्धवम् ॥ ४ ॥
शृङ्गवेरं हरिद्रेद्वे त्रिफला च गलग्रहे ।
हृच्छूलेवस्तिशूलेच वात रोगे त्तयेतथा ॥ ५ ॥

दन्त शूल हर द्रव्यों से या ग्वारपाठे से पकाया घृत, मुख रोग हर होता है। जिह्वा रोग में सेन्धा नमक, सोंठ, हल्दी दोनों, त्रिफला, से पकाया घृत, गलग्रह, हृदय शूल, वस्ति शूल बात रोग और क्षय में हितकर है ॥ ४–५ ॥

त्रिफलाघृत मिश्रा च गवां पाने प्रशस्यते ।
अतिसारे हरिद्रंद्वे पाठां चैव प्रदापयेत् ॥ ६ ॥

गौओं को त्रिफला और घी देना सदैव उत्तम है, अतिसार होने पर दोनों हल्दी, पाठा का चूर्ण दें ॥ ६ ॥

सर्वेषुकोष्टरोगेषु तथा शाखागदेषु च ।
शृंगवरं च भार्गी च कासे श्वासे प्रदापयेत् ॥ ७ ॥

समस्त कोष्ट रोगों में और हाथ पैर के रोगों में सोंठ, दें भार्गी श्वास, और खांसी में देना चाहिये ॥ ७ ॥

दातव्याभग्नसंधाने प्रियंगुलवणान्विता ।
तैलं वात हरं पित्ते मधुयष्टीविपाचितम् ॥ ८ ॥
कफे व्योषं च समधु सपुष्टकरजोऽस्त्रजे ।
तैलाज्यं हरितालं च भग्नत्तते शृतं ददेत् ॥ ९ ॥

चोट में प्रियगु और नमक लगावें। वातज रोग में तैल, पित्त में मोरेठी से पकाया घृत, कफ में त्रिकुटा, और मधु, रक्त रोगों में अश्वगंधा चूर्ण दें, भग्न और क्षत में तैल, घृत, हरिताल का मलहम लगावें ॥ ८। ९ ॥

मार्षास्तलाः सगोधूमाः पशुक्षीरं घृतं तथा।
एषा पिण्डी सलवणा वत्सानां पुष्टिदा स्मृता ॥ १० ॥

उरद, तिल, गेहूं, दूध, घृत, नमक का पिण्ड बछड़ों को और बैलों को बल देता है पुष्टि देता है ॥ १० ॥

बलप्रदा बृषाणां स्याद्ग्रहनाशाय धूपकः।
देवदारुवचा मांसी गुग्गुलहिंगुसर्षपाः ॥ ११ ॥
ग्रहादिगदनाशाय एषधूपो गवां हितः।
घण्टाचैव गवां कार्य्या धूपेनानेन धूपिताः ॥ १२ ॥

ग्रहनाश के लिये—देवदारु, बच, जटामांसी, गूगल, हींग, सरसों की धूनी देना और इसी धूनी से धूपित घंटा गले में बांधे ॥ ११। १२

अश्गंधातिलैः शुक्लं तेन गौः क्षीरणी भवेत्।
रसायनं च पिण्याकं मत्तो योधार्यते गृहे ॥ १३ ॥

असगंद, सफेद तिल, देने से गायें ज्यादा दूध देती हैं। खली रसायन का कार्य करती है अतः सदा घर में रखें और इन्हें देता रहे॥ १३

## वृक्षायुर्वेद

धन्वन्तरिरुवाच

वृक्षायुर्वेद माख्यास्ये सक्षश्चोत्तरतः शुभः ।
प्राग्वटो याम्यतस्त्वाम्र आप्येऽश्वत्थः क्रमेणतु ॥
दक्षिणां दिशमुत्पन्नाः समीपे कंटकद्रुमाः ॥ १ ॥

धन्वन्तरि जी कहने लगे अब मैं वृक्षायुर्वेद को कहता हूँ। पाकर उत्तर में शुभ होती है, पूर्व में बट्, दक्षिण में आम, पश्चिम में पीपल शुभ होते हैं। दक्षिण दिशा में और आस पास काटे वाले वृक्षोंको लगावें ॥ १ ॥

उद्यानं गृह वासेस्यात्तिलान्वाप्यथ पुष्पितान् ॥ २ ॥

बाग या घर बनवाने पर प्रथम तिल उस स्थान पर बोये जब उन में फूल आने लगें तब जुतवा कर बाग लगावें ॥ २ ॥

गृह्णीयाद्रोपयेद्वृक्षान् द्विजं चन्द्रं प्रपूज्य च ।
ध्रुवाणि पञ्चवायव्यं हस्तं प्राजेश वैष्णवम् ॥ ३ ॥
नक्षत्राणि तथा मूलं शस्यंते द्रुमरोपणे ।
प्रवेशयेन्नदीवाहान्पुष्करण्यान्तु कारयेत् ॥
हस्तोमघा तथामैत्रमाद्यं पुष्यं स वासवम् ।
जलाशयसमारम्भे वारुणं चोत्तरात्रयम् ॥
संपूज्यवरुणं विष्णुं पर्जन्यं तत्समाचरेत् ॥ ३ ॥

ब्राह्मण और चंद्रमा का पूजन कर वृक्षों को लेकर लगावें, ध्रुव नक्षत्र, पांचो वायव्य, हस्त, प्राजेश वैष्णव, मूल नक्षत्र पेड लगाने में और नाव, कुण्ड बनवाने में उत्तम है। हस्त, मघा अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्टा, शतभिषा, तीनों उत्तरा तलाब बनाने में शुभ हैं। वरुण, विष्णु, मेघ का पूजन कर यह कार्य करें ॥ ३ ॥

अरिष्टाशोकपुन्नाग शिरीषा स प्रियङ्गवः ॥ ४ ॥

अशोकः कदली जम्बूस्तथा बकुलदाडिमाः ।

सायं प्रातस्तुघर्मर्त्तौ शीतकाले दिनान्तरे ॥ ५ ॥

रीठा, अशोक, पुन्नाग, शिरस, लभेरा, अशोक, केला, जामुन, मौलश्री, अनार, को ग्रीष्मऋतु में प्रातः और सायंकाल सींचना चाहिये शीतऋतुमें केवल एक बार दिन में ही सींचना चाहिये ॥ ५ ॥

वर्षारात्रौ भुवः शोषे सेक्तव्या रोपितादुमाः ।

उत्तमा विंशतिहस्ता मध्यमाः षोडशान्तराः ॥ ६ ॥

स्थानात्स्थानान्तरं कार्यं वृक्षाणां द्वादशावरम् ।

विफलाःस्युघनावृक्षाः शस्त्रेणादौ हि शोधनम् ॥ ७ ॥

वर्षाऋतुमें रात्रि में या जब जमीन शुष्क हो तब सींचें । २०-२० हाथ की दूरी पर लगाना उत्तम है और १६-१६ हाथ पर मध्यम और १२-१२ हाथ पर लगाना अधम कहा गया है घने वृक्ष लगानेसे फल नहीं आते शस्त्र से उन्हें शोधन करें ॥ ६ ७ ॥

विडङ्गघृतपङ्काक्तान्सेचयेच्छीतवारिणा ॥ ८ ॥

फल स्थिर न रहने पर विडंग और घृत से पेड़ को लेपित कर शीत जल से सींचें ॥ ८ ॥

फलनाशे कुलत्थैश्च माषैर्मुद्गैर्यवैस्तिलैः ।

घृतशीतपयः सेकः फलपुष्पाय सर्वदा ॥ ९ ॥

कुलथी, उरद, मूंग, यव, तिल, घृत और ठंडा पानी मिला सींचने से खूब फल और पुष्प आते हैं ॥ ९ ॥

आविकाजशकृच्चूर्णं यवचूर्णं तिलानि च ॥
गोमांस मुदकंचैव सप्तरात्रं निधापयेत् ।
उत्सेकः सर्व वृक्षाणां फलपुष्पादि वृद्धिदः ॥ १० ॥

भेड और बकरी की मेंगनी, यव चूर्ण, तिल, गोमांस, और पानी को मिला सात रात्रि रख सींचने से समस्त वृक्षों में फल पुष्प की वृद्धि होती हैं ॥ १० ॥

मत्स्याम्भसातु सेकेन वृद्धिर्भवति शाखिनः ॥ ११ ॥

मछली के मांस रस से सींचना वृक्ष को बढ़ाता हैं ॥ ११ ॥

विडंग तण्डुलोपेतं मात्स्यं मांसं हि दोहदम् ।
सर्वेषामविशेषेण वृक्षाणां रोगमर्दनम् ॥ १२ ॥

विडंग, चांवल, मछली मांस से सींचना । बौर लाता है और समस्त वृक्षों के रोगों को दूर करने वाला है ॥ १२ ॥

---

## शारीरम्

वायुभूताः प्राणिनश्चगर्भंतेप्राप्नुवन्तिहि ।
जीवः प्रविष्टोगर्भन्तु कललेऽप्यत्र तिष्ठति ॥ १ ॥
घनीभूतं द्वितीयेतु तृतीयेऽवयवास्ततः ।
चतुर्थेऽस्थीनि त्वङ् मांसं पञ्चमेरोमसंभवः ॥ २ ॥

वह वायु भूत हुये प्राण ही प्राणियों के गर्भ में प्राप्त होते हैं, जीव गर्भमें प्रविष्ट हो प्रथम मासमें कलल रज शुक्र मिश्रण दूसरे महीनेमें घन पिण्ड, तीसरे महीने उसमें सभी अवयव होते हैं, चौथे महीने चमड़ी और मांस होता है । पाचवें महीने में रोम होते ॥ १।२ ॥

षष्टेचेतोऽथ जीवस्य दुःखं विन्दति सप्तमे ।

जरायुवेष्टितेदेहे मूर्ध्निबद्धाञ्जलिस्तथा ॥ ३ ॥

छटवे महीने चित्त ( हृदय ) बनता है सातवें महीने दुःखों की जानकारी होती है, तब जरांयु से जकड़ा हुवा वह हाथों को जोड़ माथे में लगाता है ॥ ३ ॥

मध्येक्लीवस्तुवामेस्त्रीदक्षिणेपुरुषस्थितः ।
तिष्ठत्युदरभागेतु पृष्ठस्याभिमुखस्तथा ॥ ४ ॥

उदर के मध्य भाग में नपुंसक, वाम भाग में कन्या, दक्षिण भाग में बालक होता है इनका मुंह पीठ की तरफ होता है ॥ ४ ॥

यस्यां तिष्ठत्यसौ योनौतां वेत्ति न संशयः ।
सर्वं च वेत्तिवृत्तान्तमारभ्यनरजन्मनः ॥ ५ ॥

उस समय नर जन्म के सभी वृत्तान्त याद आते हैं । जिस योनि में रहते हैं उसका ही सारा हाल जानते है ॥ ५ ॥

मातुराहारपीतन्तु सप्तमेमास्युपाश्नुते ।
अष्टमेनवमे मासिभृशमुद्विजते तथा ॥ ६ ॥

सातवें महीने में माता का खाना, पीना, वह खाते पीते हैं आठवें और नवें महीने वे बहुत दुःखी होते ॥ ६ ॥

व्यवाये पीड़ामाप्नोति मातुर्व्यायामके तथा ।
व्याधिश्च व्याधितायां स्यान्मुहूर्त्तं शतवर्षवत् ॥ ७ ॥

मैथुन समय में इन्हें पीड़ा होती है और माता के व्यायाम की भी और माता के रोगी होने पर इन्हें रोग की पीड़ा होती है एक महूर्त भी सौ वर्ष के समान समझ पड़ता है ॥ ७ ॥

सन्तप्यते कर्मभिस्तु कुरुतेऽथमनोरथम् ।
गर्भाद्विनिर्गतो ब्रह्मन् मोक्षज्ञानं करिष्यति ॥ ८ ॥

जब वह ऐसे कार्य्यों से दुखी होता है तब वह कहता है कि हे ब्रह्मन् गर्भ से निकल जाने पर मैं मोक्ष ज्ञान करूंगा ॥ ८ ॥

सूतिवातैरधोभूतो निःसरेद्योनियन्त्रतः ।
पीड्यमानो मासमात्रं करस्पर्शेन दुःखितः ॥ ९ ॥

प्रसूत वायु से पीडित किया गर्भ योनि मार्ग से बाहर आता है एक मास तक वह कर स्पर्श (उठाने लिटाने) से दुखी होता है ॥९॥

खशब्दात्क्षुद्रस्रोतांसि देहे श्रोतं विविक्तता ।
श्वासोच्छ्वासौ गतिर्वायो र्वक्त्रसंस्पर्शनंतथा ॥ १० ॥

आकास के शब्द से छोटे २ छेद के स्रोत, कानों के छेद होते हैं। श्वास उच्छ्वास, मुख संस्पर्शन यह वायु की गति है ॥ १० ॥

अग्नेःरूपं दर्शनं स्यादूष्मापक्तिश्च पित्तकम् ।
मेधावर्णबलं छाया तेजः शौर्य्यं शरीरके ॥ ११ ॥

अग्नि से रूपदर्शन, गर्मी, भोजन पाक, पित्त, मेधा, वर्ण, बल, छाया, तेज, शौर्य्य, शरीर में होता है ॥ ११ ॥

जलात्स्वेदं च रसनं देहेवै संप्रजायते ।
क्लेदोवसारसारक्तं शुक्रमूत्रकफादिकम् ॥ १२ ॥

जल से स्वेद, जीभ, क्लेद, वसा, रक्त, रस, शुक्र, मूत्र, कफ, आदि होते हैं ॥ १२ ॥

भूमेः घ्राणं केशनखं गौरवं स्थिरतोऽस्थिनः ।
मातृजानिमृद्वन्यत्रत्वङ्मांसहृदयानिच ॥ १३ ॥
नाभिर्मज्जाशकृन्मेदः क्लेदान्यामाशयानि च ।

पृथ्वी से नाक केश, नख, गुरुता, स्थिरता, हड्डियें होती है ॥१३॥ और मातृज कोमलता, त्वक्, मांस, हृदय, नाभि, मज्जा, पुरीष मेद, क्लेद, आमाशय होते हैं ॥ १४ ॥

पितृजानि शिरस्नायुशुक्रञ्चैवात्मजानि तु ॥ १४ ॥

कामक्रोधौ भयं हर्षो धर्माधर्मात्मतातथा ।

आकृत: स्वरवर्णौ तु मेहनाद्यं तथा च यत् ॥ १५ ॥

पितृज, शिर, स्नायु, शुक्र, होते हैं । आत्मज काम क्रोध, भय, हर्ष, धर्म, अधर्म, रूप, स्वर रंग, मेहन आदि होते है ॥ १५ ॥

तामसानि तथाऽज्ञानं प्रमादालस्यतृट्क्षुधा: ।

मोहमात्सर्य्यं वैगुण्यशोकायासभयानि च ॥ १६ ॥

तामस से—अज्ञान, प्रमाद, आलस, क्षुधा तृषा, मोह, मात्सर्य, विगुणता, शोक, श्रम, भय होते हैं ॥ १६ ॥

कामक्रोधौ तथा शौर्य्यं यज्ञेप्सा बहुभाषिता ।

अहंकार परावज्ञा राजसानि महामुने ॥ १७ ॥

राजस से—काम, क्रोध, शूरता, यज्ञ करने की इच्छा, बहुत भाषण, अहंकार, दूसरे की निन्दा यह गुण होते है ॥ १७ ॥

धर्मेप्सामोक्षकामित्वं पराभक्तिश्चकेशवे ।

दाक्षिण्यं व्यवसायित्वं सात्विकानि विनिर्दिशेत् ॥ १८ ॥

सात्विक गुणसे—धर्म की इच्छा, मोक्ष की इच्छा, ईश्वर में भक्ति व्यवसायित्व, यह होते हैं ॥ १८ ॥

चपल: क्रोधनो भीरुर्वहुभाषी कलिप्रिय: ।

स्वप्नेगगनगश्चैव वहुवातो नरोभवेत् ॥ १९ ॥

वातज प्रकृति में—चपलता, क्रोध, भय, बहुत बोलना, झगड़ा करना, सोते में आकाश में घूमना यह लक्षण होते हैं ॥ १९ ॥

अकालपलितः क्रोधी महाप्राज्ञो रणप्रिय: ।

स्वप्ने च दीप्तिमत्प्रेक्षी वहु पित्तोनरोभवेत् ॥ २० ॥

पित्तज प्रकृति में-असमय में बाल पक जाना, क्रोध, पांडित्य रण प्रियता, स्वप्न में प्रकाश का देखना यह लक्षण होते हैं ॥ २० ॥

स्थिरमित्रः स्थिरोत्साहः स्थिरांगो द्रविणान्वितः ।
स्वप्ने जल सितालोकी बहुश्लेष्मानरोभवेत् ॥ २१ ॥

कफ प्रकृति में-स्थिर मित्रता, स्थिर उत्साह, स्थिराङ्ग, धनवान, स्वप्न में जल एवं सफेद वस्तुओं को देखने वाला होता है ॥ २१ ॥

रसस्तुप्राणिनां देहे जीवनं रुधिरं तथा ।
लेपनं च तथा मांस मेदःस्नेहकरन्तुतत् ॥ २२ ॥

रस ही प्राणियों की देह में जीवन है रक्त है, मांस लेपन करने वाला है, मेद, स्नेह, का करने वाला है ॥ २२ ॥

धारणन्त्वस्थि मज्जास्यात्पूरणं वीर्यवर्धनम् ।
शुक्रवीर्य्यकरं ह्योजः प्राणकृज्जीवसंस्थितिः ॥ २३ ॥

हड्डियां साधारण करने वाली, मज्जा पूरण करने वाली और वीर्य्य को बढ़ाने बाली है, शुक्र बल देता है, ओज प्राण को देने वाला और जीवन की स्थिति को देने वाला है ॥ २३ ॥

ओजः शुक्रात्सारतरमापीतं हृदयोपगम् ।
षडंगं सक्थिनी बाहूमूर्धाजठरमीरितम् ॥ २४ ॥

ओज शुक्र से होने वाला सार है यह पीले रंग का हृदय में रहने वाला हैं ॥ देह ६ भागों में बिभक्त है २ हाथ २ पैर, शिर, और पेट ॥ २४ ॥

षट् त्वचा बाह्यतो यद्वदन्यारुधिरधारिका ।
विलासधारिणी चान्या चतुर्थी कुण्डधारिणी ॥ २५ ॥
पंचमीविद्रधिस्थानं षष्ठी प्राणधरामता ।

चमड़ी ६ होती है । १ बाहरी २ रक्तधारण करने वाली ३ विलास धारणी ४ कुण्डधारिणी ५ विद्रधि स्थान वाली ६ प्राणधारिणी है ।२५।

कलासप्तमीमांसधरा द्वितीया रक्तधारिणी ॥ २६ ॥

यकृत्प्लीहाश्रयाचान्या मेदोधाराऽस्थिधारिणी ।

मज्जाश्लेष्मपुरीषाणां धरापक्वाशयास्थिता ॥

षष्टीपित्तधरा शुक्रधरा शुक्राशयाऽपरा ॥ २७ ॥

कलायें सात हैं १—मांस धरा २—रक्त धरा यह यकृत् प्लीहा में रहती है, ३—मेदोधरा ४—अस्थिधारिणी, ५—पक्वाशय गता है यह मज्जा, कफ, पुरीष को धारण करती है । ६—पित्तधरा ७—शुक्राशय में रहने वाली शुक्रधरा कहलाती है ॥ २६ । २७ ॥

श्रोत्रं त्वक् चक्षुषी जिह्वा घ्राणं धी खञ्च भूतगम् ।

शब्दस्पर्शरूपरसगंधाः खादिषु तद्गुणाः ॥ २८ ॥

कान, चमडी, नेत्र, जिव्हा, नाक, और बुद्धि, आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी तत्वसे क्रम से होते हैं इनके शब्द स्पर्श, रूप, रस, गंध ये गुण होते हैं । यह बुद्धीन्द्रियां हैं ॥ २२ ॥

पायूपस्थौ करौ पादौ वाग्भवेत्कर्मखं तथा ।

उत्सर्गानन्दकादानगीतवागादि कर्मतत् ॥ २९ ॥

गुदा, शिश्न, हाथ, पैर और मुख यह पांच कर्मेन्द्रियां हैं फेकना, आनंद, पकडना, चलना, बोलना इनके कर्म हैं ॥ २९ ॥

पञ्चकर्मेन्द्रियाण्यत्र पञ्चबुद्धीन्द्रियाणि च ।

इन्द्रियार्थाश्चपञ्चैव महाभूता मनोऽधिपाः ॥ ३० ॥

आत्माऽव्यक्तश्चतुर्विंशतत्वानि पुरुषः परः ।

संयुक्तश्च विमुक्तश्च यथामत्स्योदके उभे ॥ ३१ ॥

पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां, और ५ इन्द्रियों के कर्म शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध। पंच महाभूत, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, आत्मा, अव्यक्त ( अहंकार ) और बुद्धि मिल कर २४ तत्व मय यह शरीर होता है। इसका संयोग एवं विभोग मछली और जल के समान होता है ॥३०।३१

अव्यक्तमाश्रितानीह रजः सत्वतमांसि च।

आन्तरः पुरुषोजीवः स परं ब्रह्मकारणम् ॥ ३२ ॥

अव्यक्त के आश्रित रज, सत्व, तम, रहते है। वह आन्तरिक पुरुष जीव कहलाता है वह ब्रह्म से पैदा होता है ३२

स याति परमं स्थानं योवेत्ति पुरुषं परम्।

वह पुरुष उसी परब्रह्म में विलीन होता हैं यह जो जानता है वह परमपद को जाता है ॥ ३३ ॥

सप्ताशयाः स्मृता देहे रुधिरस्यैक आशयः ॥ ३३ ॥

श्लेष्मणश्चामपित्ताभ्यां पक्वाशयस्तु पंचमः।

वायुमूत्राशयः सप्त स्त्रीणां गर्भाशयोऽष्टमः ॥ ३४ ॥

देह में सात आशय होते हैं १ रुधिराशय, २ कफाशय, ३ आमाशय, ४ पित्ताशय, ५ पक्वाशय, ६ पवनाशय, ७ मूत्राशय, मलाशय, स्त्रियों में गर्भाशय एक और आठवां अधिक होता है ॥ ३४ ॥

पित्तात्पक्वाशयोऽग्नेः स्याद्योनिर्विकसिता द्युतौ।

पद्मवद्गर्भाशयः स्यात्तत्र धत्तेसरक्तकम् ॥ ३५ ॥

पित्त से पक्वाशय, वेष्टित रहता है अग्निसे योनि विकसित होती है। प्रकाश से युक्त कमल के आकार का गर्भाशय होता है उसी में शुक्रशोणित, मिल कर गर्भ धारण करते हैं ॥ ३५ ॥

शुक्रं स्वशुक्रतश्चाङ्गं कुन्तलान्यत्र कालतः ।

न्यस्तं शुक्रमतो यानौ नेति गर्भाशयं मुने ॥ ३६ ॥

वही शुक्र अपने बल से अंगों को और बालों को बनाता है, यह काल के वश से योनि में डाला गया शुक्र गर्भाशय में पहुँच जाता है और कभी नहीं पहुँचता है ॥ ३६ ॥

ऋतावपि च योनिश्चेद्वातपित्त कफावृता ।

भवेत्तदा विकाशित्वं नैव तस्यां प्रजायते ॥ ३७ ॥

ऋतु काल में यदि योनि वात, पित्त, कफ से दूषित हो तो और विकाश न होने से गर्भ धारण नहीं होता ॥ ३७ ॥

वुक्कात्पुक्कसकलीहकृतकोष्टांगहृद्व्रणाः

तुण्डकश्चमहाभाग निवद्धान्याशये मतः ॥ ३८ ॥

छाती के नीचे दाहिनी तरफ यकृत् और वांई तरफ प्लीहा वुक्क से पैदा हुई रहती है दोनों के बीच में ऊपर की तरफ हृदय होता है। पित्त का सम्बन्ध आग्न्याशय से रहता है ॥ ३८ ॥

रसस्यपच्यमानस्य साराद्भवति देहिनाम् ।

प्लीहायकृच्च धर्मज्ञ रक्तफेनाच्च फुप्फुसः ॥ ३९ ॥

रस के पकने पर उसके सारभाग से प्लीहा और यकृत् होते हैं। और रक्त फेन से फेफड़े होते हैं।

रक्तं पित्तञ्च भवति तथा तुण्डक संज्ञकः ।

मेदोरक्तप्रसादाच्च बुक्कायाः सम्भवः स्मृतः ॥ ४० ॥

रक्त से ही पित्त होता है इसी पित्तको तुण्डक कहते हैं। मेद और रक्त से वुक्का पैदा होतो है ॥ ४० ॥

रक्तमांसप्रसादाच्च भवन्त्यन्त्राणि देहिनाम् ।

सार्द्धत्रिव्यामसंख्यानि तानि नृणां विनिर्दिशेत् ॥ ४१ ॥

रक्त और मांस के पचाव से आंतें बनती हैं, इनका विस्तार साढ़े तीन बैमा होता है ॥ ४१ ॥

त्रिव्यामानि तथा स्त्रीणां प्राहुर्वेद विदो जनाः ।

रक्तवायुसमायोगात्कामे यस्योद्भवः स्मृतः ॥ ४२ ॥

वेदविद स्त्रियों में आंतों की लम्बाई तीन बैमा बतलाते हैं, रक्त और वायु से इनकी उत्पत्ति होती है ॥ ४२ ॥

कफप्रसादाद्भवति हृदयं पद्मसन्निभम् ।

अधोमुखं तत्सुषिरं यत्रजीवो व्यवस्थितः ॥

चैतन्यानुगता भावा सर्वे तत्र व्यवस्थिताः ॥ ४३ ॥

कफ के प्रसाद से हृदय बनता है यह कमल के समान होता है इसका मुख नीचे की तरफ होता है इसमें छिद्र होते हैं, इसमें ही जीव रहता है, समस्त चेतना ( बुद्धि ) के भाव यहो से पैदा होते हैं ॥४३॥

तस्यव।मे तथाप्लीहा दक्षिणे च तथा यकृत् ।

दक्षिणे च तथा क्लोम पद्मस्यैवं प्रकीतितम् ॥ ४४ ॥

इसी के बाईं तरफ प्लीहा और दाहिनी तरफ यकृत् होता है। कमल के दक्षिण तरफ ही क्लोम होता है ॥ ४४ ॥

स्रोतांसि यानि देहेऽस्मिन् कफरक्तवहानि च ।

तेषां भूतानुमानाच्च भवतीन्द्रिय सम्भवः ॥ ४५ ॥

कफ और रक्त वाही जितने स्रोत देह में हैं उनके और पंच महाभूतों के योग से इन्द्रियायें होती हैं ॥ ४५ ॥

नेत्रयोमण्डलं शुक्लं कफाद्भवति पैतृकम् ।

कृष्णं च मंडलं वातात् तथा भवति मातृकम् ॥ ४६ ॥

नेत्र में जो सफेद मंडल होता है वह कफ से होता है और पितृज कहलाता है। काला मंडल वात से होता है यह मातृज कहलाता है॥ ४६

पित्तात्वङ्मंडलं ज्ञेयं मातापितृसमुद्भवम् ॥ ४७ ॥

पित्त से चमड़ी का मंडल बनता है यह मातृज और पितृज कहलाता है। ॥ ४७ ॥

मांसासृक्कफजा जिह्वा मेदोऽसृक्कफमांसजौ।
वृषणौ दश प्राणस्य ज्ञेयान्यायतनानि तु॥ ४८ ॥
मूर्धाहृन्नाभिकंठाश्च जिह्वाशुक्रञ्च शोणितम्।
गुदं वस्तिञ्च गुल्फश्च कंडराः षोडशेरिताः॥ ४९ ॥

मांस, रक्त और कफ से जिह्वा बनती है मेद, रक्त, कफ, मांस से वृषण बनते हैं। दश प्राणों के स्थान हैं। शिर, हृदय, नाभि, कंठ, जिह्वा, शुक्र, रक्त, गुदा, वस्ति, और गुल्फ ॥ ४९ ॥

द्वे करे द्वे च चरणे चतस्रः पृष्टतो गले।
देहे पादादिशीर्षान्ते जालानिचैव षोडश॥ ५० ॥
मांसस्नायुशिरास्थिन्यः चत्वारश्च पृथक् पृथक्।
मणिबन्धन गुल्फेषु निबद्धानिपरस्परम् ॥ ५० ॥

कण्डरायें सोलह होती हैं। दो–दो हाथों में, दो–दो पैरों में, चार पीठ में, चार गले में। पाद, शिर आदि देह में सोलह जाल होती हैं यह जाल मांस, स्नायु, शिरा, अस्थि से अलग २ चार २ प्रकार के होते हैं मणिबंध और गुल्फ में आपसमें लगे रहते हैं ॥ ५० ॥

षट् कुर्चानि स्मृतानि द्वि हस्तयोः पादयोः पृथक्।
ग्रीवायाञ्च तथा मेढ्रे कथितानि मनीषिभिः॥ ५१ ॥

कूर्च ६ प्रकार के होते हैं हाथों में दो, पैरों में दो, ग्रीवा में एक, मेढ़ में एक होता है एसा मुनियों ने कहा है ॥ ५१ ॥

पृष्टवंशस्योपगताश्चतस्रो मांसरज्जवः।
नवत्यश्चतथा पेश्यस्तासां बन्धनकारिकाः॥ ५२॥

पीठ की हड्डी के दोनों तरफ २-२ मांस रज्जु होते हैं इस प्रकार ४ मांस रज्जु हाते हैं। नब्वे मांस पेशी उनको बांधे हुये हैं॥ ५२॥

सीवन्यश्च तथा सप्त पञ्चमूर्धानमाश्रिताः।
एकैकामेढ़ जिह्वास्था अस्थिषष्टि शतत्रयम्॥ ५३॥

सात सीवने हैं पांच तो सिर में और १-१ लिंग तथा जीभमें है। हड्डियां ३६० होती हैं॥ ५३॥

सूक्ष्मैः सह चतुः षष्टिर्दशना विंशतिर्नखाः।
पाणिपाद शलाकाश्च तासां स्थान चतुष्टयम्॥५४॥

सूक्ष्मादियुक्त ६४ दांतों में, २० नखों में हाथ पैरों के चार स्थान अर्थात् दो हाथ और दो पैर॥ ५४॥

षष्ट्यंगुलीनां द्वेपाष्ण्योर्गुल्फेषु च चतुष्टयम्।
चत्वार्य्यरत्न्योरस्थीनि जंघयोस्तद्वदेव तु॥ ५५॥

हाथ पैरों की अंगुलियों में ६० प्रत्येक अंगुली में ३-३॥ २ ऐडी में १-१। गुल्फ में ४। अरत्नि और जंघा में ४-४॥ ५५॥

द्वे द्वे जानु कपालोरुफलकांश समुद्भवम्।
अक्षस्थानां शकश्रोणिफलके चैवमादिशेत्॥ ५६॥

जानुओं में २-२ उरु, नितंब, कंधे में कपाल संज्ञक हड्डी होती हैं। ग्रीवा में दो अक्षक ( हंसली ) श्रोणिफलक में दो॥ ५६॥

भगेत्वेकं तथा पृष्टे चत्वारिंशच्च पञ्च च।
ग्रीवायां च तथास्थीनि जत्रुकश्चतथा हनुः॥ ५७॥

भग में एक। पीठ में ४०। ग्रीवामें ५। जत्रु एवं हनु में २-२॥५७॥

तन्मूलं द्वे ललाटाक्षि गंडनासांघ्र्यवस्थिता: ।
पशु कास्तालुकै: सार्द्धमर्बुदैश्च द्विसप्तति: ।। ५८ ।।

ललाट, नेत्र, गण्ड, नासा, पाद में पशुका, तालुक, अर्बुद के सहित एक तरफ २०० होती हैं ॥ ५८ ॥

द्वेशखके कपालानि चत्वार्येव शिरस्तथा ।
उर:सप्तदशास्थीनि संधीनां द्वे शते दश ।। ५९ ।।

शंख देश में २ । कपाल में ४ । शिर में ४ । छाती में १७ होती हैं । सन्धियां २१० होती है ॥ ५९ ॥

अष्टिषष्टिस्तुशाखासु षष्टिश्चैकविवर्जिता ।
अन्तरावे त्र्यशीतिश्च स्नायोनव शतानि च ।। ६० ।।

चारों हाथ पैरों में ६८ । कोष्ठ में ५९ ग्रीवा से ऊपर ८३ ॥ स्नायु ९०० होते हैं ॥ ६० ॥

त्रिंशाधिके द्वेशते तु अन्तराधौ तु सप्तति: ।
ऊर्ध्वगा: षट्छतान्येव शाखासुकथितानि तु ।। ६१ ।।

२३० कोष्ट में, ग्रीवा के ऊपर ७० । हाथ पैरों में ६०० होती हैं ॥ ६१

पंच पेशीशतान्येव चत्वारिंशत्तथोर्ध्वगा: ।
चतु: शतन्तु शाखासु अन्तराधौ च षष्टिका ।। ६२ ।।

पांच सौ पेशी हैं । ४० ग्रीवा के ऊपर हैं । ४०० हाथ पैरों में । ग्रीवा के नीचे ६० । होती हैं ॥ ६२ ॥

स्त्रीणां चैकाधिका वैश्याद्विशंतिश्चतुरुत्तरा ।
स्तनयोर्दश योनौच त्रयोदश तथाशये ।। ६३ ।।

स्त्रियों में २९ अधिक होती हैं । स्तनों में १० योनि में १३ । गर्भाशय में४ ॥ ६३ ॥

गर्भस्य च चतस्रः स्युः शिराणाञ्च शरीरणाम् ।
त्रिंशच्छतसहस्राणि तथान्यानि नवैवतु ॥ ६४ ॥
षट् पंचाशत्सहस्राणि रसंदेहे वहन्तितः ।
केदार इव कुल्याश्च क्लेदलेपादिकञ्चयत ॥ ६५ ॥

शिराओं की संख्या शरीर में कोई तीस हजार बतलाते हैं और कोई नौ हजार कोई ५६ छप्पन हजार तक बतलाते हैं । यह देह में रसों का वहन करती हैं जैसे खेत में नाली उसी तरह यह भी क्लेद और लेप करती है ॥ ६४ । ६५ ॥

द्वासप्ततिस्तथा कोटयो लोमानीह महामुने ।
मज्जाया मेदसश्चैव वसायाश्चतथा द्विज ॥ ६६ ॥
मूत्रस्यचैव पित्तस्य श्लेष्मणः शकृतस्तथा ।
रक्तस्य सरसस्यात्र क्रमशोऽञ्जलयो मताः ॥ ६७ ॥
अर्धार्धाभ्याधिकाः सर्वाः पूर्वपूर्वाऽञ्जलिर्मताः ।
अर्धाञ्जलिश्चशुक्रस्य तदर्धश्चतथौजसः ॥ ६८ ॥

शरीर में ७२ करोड रोम होते हैं । मज्जा, मेद, बसा, मूत्र, पित्त, कफ, मल, ( विष्टा ) रक्त, रस, देहमें क्रम से आधी आधी अंजुली अधिक रहते हैं । शुक्र आधी अंजुली, इससे आधा ओज रहता है ॥ ६६ । ६७ ॥

रजस्तुतथास्त्रीणाञ्चतस्रः कथिता बुधैः ।
शरीरं मलदोषादि पिण्डं ज्ञात्वात्मानत्यजेत् ॥ ६९ ॥

स्त्रियों में चार अंजुली रज रहता है शरीर को मल दोषादिका, पिण्ड जानता हुवा आत्मा को छोड़े रहे ॥ ६९ ॥

इतिश्री आग्नेय पुराणोक्त शारीर वर्णनं नाम अष्टासीत्यधिक अध्यायः विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥

# गरुड़ पुराणान्तर्गत आयुर्वेदः

धन्वन्तरिरुवाच

सर्वरोगहरं सिद्धं योग सारं वदाम्यहं ।

शृणु सुश्रुत संक्षेपात्प्राणिनां जीवहेतवे ॥ १ ॥

धन्वन्तरि जी कहने लगे हे सुश्रुत संक्षेप से जीवों के जीवन के लिये समस्त रोगहर सिद्ध योगसार को कहते हैं सुनो ॥ १ ॥

## वायु कोप के कारण

कषायकटुतिक्ताम्लरुक्षाहारादिभोजनात् ।

चिंताव्यवायव्यायाम भयशोक प्रजागरात् ॥ २ ॥

उच्चेर्भाषातिभाराच्च कर्मयोगातिकर्षणात ।

वायुः कुप्यति पर्ज्जन्ये जीर्णान्ने दिनक्षये ॥ ३ ॥

कटु, तिक्त, अम्ल, रुक्ष, कषाय रस वाले आहारों के भोजन से चिन्ता, मैथुन, व्यायाम, भय, शोक और रात्रि जागरण से, ऊंचे स्वर से बोलने, अधिक बोझा उठाने, कार्यों के करने से या योग क्रियाओं के करने से, बादलों के होने पर, भोजन के पचने पर, सायंकाल के समय वायु का कोप होता है ॥ २–३ ॥

## पित्त के कारण

उष्णाम्ललवणक्षारकटुकाजीर्णभोजनात् ।
तीक्ष्णातपाग्निसन्तापमद्यक्रोधनिषेवणात ॥ ४ ॥
विदाहकाले भुक्तस्य मध्याह्ने जलदात्यये ।
ग्रीष्मकालेऽर्द्धरात्रेऽपि पित्तं कुप्यति देहिनः ॥ ५ ॥

उष्ण, अम्ल, लवण, क्षार, कटुरस अहार और अजीर्ण रहने पर भी भोजन करना, तेज धूप, अग्निताप, भय, क्रोध का सेवन, भोजन के विदाह ( द्वितीयावस्था ) में, दोपहर में, शरद ऋतु में, ग्रीष्म ऋतु में, आधी रात्रि में पित्त का कोप होता है ॥ ४-५ ॥

## कफ कोप के कारण

स्वाद्वम्लवणस्निग्धगुरुशीतातिभोजनात् ।
नवान्नपिच्छिलानूप मांसादेः सेवनादपि ॥ ६ ॥
अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखादिभिः ।
कफप्रदोषो भुक्ते च वसन्ते च प्रकुप्यति ॥ ७ ॥

मधुर, खट्टे, नमकीन, चिकने, भारी, ठंडे आहारों के अति भोजन से, नवीन चिपकने अन्नादि, आनूप के मांस सेवन से, व्यायाम करने से दिन के सोने से, शय्या और आसन के गुलगुले होने पर, भोजन करने पर, वसंत ऋतु में कफ का प्रकोप होता है ॥ ६-७ ॥

## वातज रोग के लक्षण

देहपारूष्य संकोच तोद विष्टम्भकादयः ।
तथा च सुप्तता रोमहर्षस्तम्भनशोषणम् ॥ ८ ॥

श्यामत्वमङ्गविश्लेषवलमायासवर्द्धनम् ।

वायोर्लिङ्गानि तै युक्तं रोगं वातात्मकं वदेत् ॥ ६ ॥

शरीर में कड़ापन, सिकुड़न, पीड़ा, मलरोध, सो जाना, रोम हर्ष स्तब्ध होना, सूख जाना, काला पड़ना, थोड़ी सूजन युक्त पीड़ा का होना बल और थकान का बढ़ना यह वात के चिह्न हैं, इन्हीं चिह्नों से युक्त रोग को वातज रोग कहते हैं ॥ ८-९ ॥

## पित्तज रोग के लक्षण

दाहोष्मपादसंक्लेदकोपरागपरिश्रमाः ।

कट्वम्लशववैगन्धस्वेदमूर्च्छातितृड्भ्रमाः ॥ १० ॥

हारिद्रं हरितत्वं च पित्त लिंगान्वितैर्नरः ॥

दाह, उष्णता, पैरों में पसीना आना, क्रोध आना, रक्तता का होना, थकान आना, कटुता, अम्लता, मुर्दे जैसी गंध होना, पसीना आना, मूर्च्छा, अत्यन्त प्यास, भ्रम, हल्दी जैसा रंग, हरा रंग होना पित्त के लक्षण हैं, इन्हीं लक्षणों से युक्त पित्तज रोग जानें ॥ १० ॥

## कफज रोगों के लक्षण

देहेस्निग्धत्व माधुर्य्य चिरकारित्व बन्धनम् ॥ ११ ॥

स्तैमित्यतृप्ति सङ्घात शोथशीतल गौरवम् ।

कण्डूनिद्राभियोगश्च लक्षणं कफ संभवम् ॥ १२ ॥

देह में चिकनापन, मधुरता स्थायीपना, बंधन होना, कपोया जैसा होना, भूंख न होना, कड़ापन होना, शोथ होना, शीतलता होना, भारीपना होना, खुजली होना, निद्रा होना, मिलावट होना यह कफ के लक्षण हैं इन्हीं लक्षणों से युक्त कफज रोग होते हैं ॥ १२ ॥

## द्विदोषज रोगों के लक्षण

हेतुलक्षणसंसर्गात् विद्याद् व्याधिं द्विदोषजम् ।

कारणों और लक्षणों के मेल से द्विदोषज रोग होते हैं ।

## त्रिदोषज रोगों के लक्षण

सर्वहेतु समुत्पन्नं त्रिलिङ्गं सान्निपातिकम् ॥ १३ ॥

तीनों दोषों के कारणों से उत्पन्न रोग तीनों लक्षणों वाले होते हैं वह सन्निपातज कहलाते हैं ॥ १३ ॥

## रोग और आरोग्य का लक्षण

दोषधातु मलाधारो देहिनां देह उच्यते ।

तेषां समत्वमारोग्यं क्षय वृद्धेर्विपर्य्ययः ॥ १४ ॥

दोष, धातु और मल को धारण करने वाली देह होती है इन्हीं दोष, धातु, और मलों को समता आरोग्यता कहलाती है उनके क्षय को और उनको वृद्धि को रोग कहते हैं ॥ १४ ॥

## धातुओं की संख्या

रसासृङ् मांसमेदोऽस्थि मज्जाशुक्राणि धातवः

रस, रक्त, मांस, मेद, हड्डी, मज्जा, शुक्र यह सात धातुवें कहलाती हैं ॥

## मल एवं दोष

वातपित्त कफा दोषा विण्मूत्राद्यामलाःस्मृताः ॥ १५ ॥

वात, पित्त और कफ यह तीन दोष कहलाते हैं । मल, मूत्र, पसीना, नाक, कान, आंख, जिह्वा का मल यह मल है ॥ १५ ॥

## वायु का रूप

वायुः शीतोलघुः सूक्ष्मःस्वरनाशी स्थिरोवली ।

वायु, शीतल, लघु,सूक्ष्म,स्वर नाशक, स्थिर, बलवान होता है।

## पित्त का रूप

पित्तमम्लकटूष्णाञ्चापङ्क्ती रोग कारणम ॥ १६ ॥

पित्त, अम्ल, कटु, गरम, अपाचन, सम्बन्धी रोग का कारण होता है ॥ १६ ॥

## कफ का रूप

मधुरो लवणः स्निग्धो गुरुःश्लेष्माति पिच्छिलः ।

कफ, मधुर, लवण, स्निग्ध, गुरु, पिच्छिल होता है ।

## दोषों के स्थान

गुदश्रोण्याश्रयो वायुः पित्तं पक्वाशयस्थितं ।

कफस्यामाशयस्थानं कण्ठो बामूर्द्धसन्धयः ॥ १७ ॥

वायु का स्थान, गुदा, श्रोणी (कमर) है। पित्त पक्वाशय में रहता है। कफ का प्रधान स्थान आमाशय है, कंठ, शिर, संधियों में भी रहता है ॥ १७ ॥

## वातादि कोप में रसों का प्राधान्य

कटु तिक्तकषायाश्च कोपयन्तिसमीरणम् ।

कट्वम्ललवणाः पित्तं स्वादूष्णलवणाः कफम् ॥ १८ ॥

कटु, तिक्त, कषैले रस वायु को कुपित करते हैं। कटु, अम्ल, लवणरस पित्तको, मधुर, उष्ण, लवण रस कफको कुपित करतेहैं ॥१८॥

## वातादि शामक रस

एत एव विपर्य्यस्ताः शमायैषां प्रयोजिताः ।
भवन्तिरोगिणां शान्त्यै स्वस्थाने सुखहेतवः ॥ १६ ॥

इन्हीं के विपरीत रस उनके नाश को करते हैं । मधुर, अम्ल, लवण रस वातहर है । मधुर, तिक्त, कषाय रस पित्तघ्न हैं । कटु, तिक्त, कषाय रस कफघ्न होते हैं । यह रोगों को शमन करते हैं और उन्हें यथा स्थान ले जातेहैं, जो सुख का कारण होता है अर्थात् दोषों का स्थान में रहना ही सुख कर होता है । दोषों का कोप स्थान से बाहर निकलना ही कहा है ॥ १६ ॥

## रसों के गुण

चक्षुष्यो मधुरो ज्ञेयो रसधातु विवर्धनः ।
अम्लोत्तरो मनोहृद्यं तथादीपनपाचनम् ॥ २० ॥

मधु रस नेत्रों को हितकर और धातुओं की वृद्धि करता है । अम्ल रस और लवण रस मन और हृदय को प्रिय एवं दीपन, पाचन करता है ॥ २० ॥

दीपनो ज्वरतृष्णाघ्नस्तिक्तः शोधनशोषणः ।
पित्तलो लेखनस्तम्भी कषायो ग्राहि शोषणः ॥ २१ ॥

कटुरस, दीपन, ज्वर, तृष्णाहर है । तिक्तरस, शोधन और शोषण कर होता है । कषाय रस पित्त को बढ़ाता है, लेखन, स्तम्भन, संग्राहक और शोषण करने वाला होता है ॥ २१ ॥

## द्रव्य के गुण

रसवीर्यविपाकानामाश्रयं द्रव्यमुत्तमम् ।
रसपाकान्तरस्थापिसर्वद्रव्याश्रयं द्रुतम् ॥ २२ ॥

रस, वीर्य, विपाक द्रव्य में होते हैं । रस पाक के बाद होता है, यह थोड़ी देर ही रहता है, ऐसा द्रव्यों में होता है ॥ २२ ॥

शीतोष्णं लक्षणं वीर्यमथवा शक्तिरिष्यते ।
रसानां द्विविधः पाको मधुरः कटुरेव च ॥ २३ ॥

शीत, उष्ण, लक्षण यह वीर्य अथवा शक्ति कहलाते हैं, छःहों रसों का पाक मधुर और कटु दो प्रकार का ही होता है ॥ २३ ॥

## चिकित्सा के अंग

भिषग्भेषजरोगार्त्त परिचारकसम्पदः ।
चिकित्साङ्गानि चत्वारि विपरीतान्यसिद्धये ॥ २४ ॥

वैद्य, औषधि रोगी, सेवक या धन यह चार चिकित्सा के अंग है, इनमें किसी प्रकार का दोष होना ही असिद्धता करने वाला होता है ॥ २४ ॥

## चिकित्सा के पूर्व विचारणीय कर्म

देशकालवयोवह्निसाम्यं प्रकृतिभेषजम् ।
देहसत्ववलव्याधीन्बुद्धा कमसमाचरेत् ॥ २५ ॥

देश, काल, उम्र, पाचन शक्ति, साम्यासाम्य ( माफिक नामाफिक ) प्रकृति, औषधि, देहसत्व ( कृशता, स्थूलता ) वल, व्याधि वल का विचार करके चिकित्सा करना चाहिये ॥ २५ ॥

## देश विचार

वहूदकनगोऽनूपः कफमारुतकोपवान् ।
जांगलोऽपरशाखी च रक्तपित्तगदोत्तरः ।। २६ ।।
संसृष्टलक्षणोपेतो देशः साधारणः स्मृतः ।

बहुत जल वाले और बहुत पहाड़ों वाले देश आनूप कहलाते हैं, इनमें कफ, वायु के रोग होते हैं । इसके विपरीत जांगल देश होते हैं, इनमें वृक्ष, जल, पहाड़ों का अभाव होता है, प्रायः यह मरु देश होते हैं, इनमें रक्त, पित्त के रोग होते हैं । दोनों देशों के थोड़े २ लक्षणों वाले देश साधारण देश कहलाते हैं ॥ २६ ॥

## वयो विचार

बाल आषोडशान्मध्यः सप्ततेवृद्ध उच्यते ।
कफपित्तानिलःप्रायो यथाक्रममुदीरिताः ।।
क्षाराग्निशस्त्ररहिता क्षीणप्रवयसि क्रियाः ।। २७ ।।

जन्म से सोलह वर्ष तक का बालक । सोलह से ६९ तक का युवा । सत्तर से १०० तक का वृद्ध कहलाता है । इस समय १६ वर्ष तक बालक । १६ से ४० तक युवा । ४० से ७० तक वृद्ध माना जाता है । बालकपन में कफज युवापन में पित्तज, वृद्धावस्था में वातज रोग होते हैं । क्षीणावस्था में क्षार, अग्नि, शस्त्र क्रिया नहीं करनी चाहिये ॥ २७ ॥

## देह विचार

कृशस्यबृंहणं कार्य्यं स्थूलदेहस्य कर्षणम् ।
रक्षणं मध्यकायस्य देहभेदास्त्रयोमताः ।। २८ ।।

देह तीन प्रकार की होती है। १-दुर्बल यहां बृंहण करना। २-स्थूल देह यहां कर्षण करना। ३-मध्य देह इसका रक्षण करना चाहिये ॥ २८ ॥

## बल विचार

स्थैर्य्यं व्यायामसन्तोषैर्वोद्धव्यं यत्नतो बलम्।
अविकारीमहोत्साहो महासाहसिकोनरः ॥ २९ ॥

स्थैर्य्य, कोई रोग न हो, साधारण व्यायाम ( श्रम ) करने में उत्साह, अत्यन्त साहस इनसे बल की परीक्षा करना ॥ २९ ॥

## सात्म्य विचार

पानाहारादयो यस्य विरुद्धा प्रकृतेरपि।
स्वसुखायोपकल्प्यन्ते तत्सात्म्यमिति कथ्यते ॥ ३० ॥

प्रकृति के विरुद्ध भी खान पान जिसको सुख देने वाले हो, वह सात्म्य कहलाते हैं, अन्यथा असात्म्य कहे जाते हैं ॥ ३० ॥

## प्रकृति विचार

गर्भिण्याः श्लैष्मिकैभर्दयैः श्लेष्मिको जायतेनरः।
वातलैः पित्तलैस्तद्वत् समधातुर्हिताशनात् ॥ ३१ ॥

गर्भावस्था में यदि स्त्री कफज भोजन करती रहे तो कफज प्रकृति वाला। वातज द्रव्यों के सेवन से वातज प्रकृति वाला। पित्तज द्रव्यों से पित्तज प्रकृति वाला। हितकर भोजन से समधातु वाला मनुष्य होता है ॥ ३१ ॥

## वातज प्रकृती का लक्षण

कृशोरुक्षोऽल्प केशश्च चलचित्तो नरः स्थितः ।

बहुवाक्यरतः स्वप्ने वात प्रकृति को नरः ॥ ३२ ॥

बात प्रकृती मनुष्य कृश, रूक्ष, अल्प केशों वाला, चंचल चित्त वाला, बहुत बोलने वाला, स्वप्न में आकाश देखने वाला होता है ॥३२

## पित्तज प्रकृती का लक्षण

अकालपलितो गौरः प्रस्वेदी कोपनो बुधः ।

स्वप्नेऽपिदीप्तिमत्प्रेक्षी पित्त प्रकृति रुच्यते ॥ ३३ ॥

बे समय में बाल पक जांय, गोरा रंग हो, स्वेद बहुत आवे, क्रोधी, विद्वान हों, सोने में प्रकाश देखने वाला; पित्त प्रकृति वाला कहलाता है ॥ ३३ ॥

## कफज प्रकृती का लक्षण

स्थिरचित्तः स्वरः सूक्ष्मः प्रसन्नः स्निग्धमूर्धजः ।

स्वप्ने जल शिलालोकी श्लेष्म प्रकृति को नरः ॥३४॥

स्थिर चित्त वाला, सूक्ष्म स्वर वाला, प्रसन्न रहने वाला, चिकने बाल एवं ऊपरी अंग वाला, सोने में जल, शिला, को देखने वाला, कफ प्रकृति वाला कहलाता है ॥ ३४ ॥

## द्वि त्रिदोषज प्रकृति के लक्षण

सम्मिश्रलक्षणैर्ज्ञेयो द्वि. त्रिदोषान्वयो नरः ।

दोषस्येतरसद्भावेऽप्यधिका प्रकृतिः स्मृताः ॥ ३५ ॥

दो दोषों के मेल से द्वि दोषज और तीनों दोषों के मेल से त्रिदोषज प्रकृति होती है. दोषों की समता विषमता से विषम प्रकृति भी होती है ॥ ३५ ॥

## अग्नि का विचार

मंदस्तीक्ष्णोऽथ विषमः समश्चेति चतुर्विधाः ।
कफपित्तानिलाधिक्यात्तत्साम्याज्जाठरोऽनलः ॥ ३६ ॥
समस्य पालनं कार्यं विषमेवातनिग्रहः ।
तीक्ष्णे पित्त प्रतीकारो मन्दे श्लेष्म विशोधनम् ॥३७॥

सम, मंद, तीक्ष्ण और विषम भेदों से चार प्रकारकी पाचकाग्नि होती है। कफ की अधिकता से मन्दाग्नि। पित्त की अधिकता से तीक्ष्णाग्नि। वात की अधिकता से विषमाग्नि। दोषों की समता से साम्याग्नि होती है। समाग्नि का रक्षण करना। विषमाग्नि में वात का शमन। तीक्ष्णाग्नि में पित्त का और मन्दाग्नि में कफ का शोधन करना चाहिये ॥ ३६-३७ ॥

## रोग होने का कारण

प्रभवः सर्व रोगाणामजीर्णं चाग्नि नाशनम् ।
आमाम्लरस विष्टम्भ लक्षणं तच्चतुर्विधम् ॥ ३८ ॥

अग्नि को नाश करने वाला अजीर्ण ही सर्व रोगों का उत्पादक है आमाजीर्ण, अम्लाजीर्ण, रसाजीर्ण, विष्टम्भाजीर्ण यह चार भेद अजीर्ण के होते हैं ॥ ३८ ॥

## अजीर्णों का लक्षण और उपचार

आमाद्विसूचिका चैव हृदालस्यादयस्तथा ।
वचालवण तोयेन छर्दनं तत्र कारयेत् ॥ ॥ ३९ ॥

आमाजीर्ण से ही विसूचिका, हृदय रोग, आलस आदि होते हैं इसमें वच लवण मिले पानी से वमन करादें ॥ ३९ ॥

शुक्राभावो भ्रमो मूर्च्छा तर्षोऽम्लात्संप्रवर्तते ।
अपक्कं तत्रशीताम्बुपानं वातनिषेवणम् ॥ ४० ॥

अम्लाजीर्ण ( विदग्धाजीर्ण ) से शुक्रनाश, भ्रम, मूर्च्छा, प्यास होती है, इसमें शीत जल बिना पकाया हुआ पिलावें और वायु सेवन कराना चाहिये ॥ ४० ॥

गात्रभंगं शिरोजाड्यं भक्तदोषादयोगदान् ।
तस्मिन्स्वापोदिवाकार्य लंघनं च विवर्जनम् ॥ ४१ ॥

रसाजीर्ण में देह पीड़ा, शिर का भारी पन, भोजन की इच्छा न होना, होता है । इसमें केवल दिन में सुलाना चाहिये लंघन देना बर्जित है ॥ ४१ ॥

शूलगुल्मौ च विएमूत्र स्थानविष्टम्भ सूचकौ ।
विधेयं स्वेदनं तत्र पानीयं लवणोदकम् ॥ ४२ ॥

विष्टम्भाजीर्ण में—शूल, गुल्म, मल, मूत्र, का स्तम्भ होता है, इसमें स्वेदन कराना, और लवण का पानी देना ॥ ४२ ॥

आममम्लंच विष्टब्धं कफपित्तानिलैः क्रमात् ।
आलिप्यजठरं प्राज्ञो हिंगुत्र्यूषण सैन्धवैः ॥ ४३ ॥

कफ से आमाजीर्ण, पित्त से अम्लाजीर्ण, वात से विष्टब्धाजीर्ण, होते हैं इनमें हींग, त्रिकुटा, सेंधा नमक का पेट पर लेप करना चाहिये ॥ ४३ ॥

दिवास्वप्नं प्रकुर्वीत सर्वाजीर्ण विनाशनम् ।

दिन का सोना समस्त अजीर्णों को नष्ट कर देता है ।

## अहितान्न से भी रोग होते हैं

अहितान्नैरोगराशिरहितान्नं ततस्त्यजेत् ॥ ४४ ॥

उष्णाम्बु वा नुपानंच माक्षिकैः पाचनं भवेत् ।

अहित ( विरुद्ध ) भोजन से रोग होते हैं इस लिये विरुद्धान्न को छोड़ दें विरुद्ध अन्न उष्ण जल और मधु खाने से पच जाते हैं ॥ ४४ ॥

करीरदधिमत्स्यैश्च प्रायः क्षीरं विरुध्यते ॥ ४५ ॥

करीलफल, दही मछली के साथ खाया हुवा दूध विरुद्ध भोजन हो जाता है ॥ ४५ ॥

इस प्रकार बहुत से विरुद्ध भोजन है जिन्हें देखना हो वह हमारी दीर्घजीवन पुस्तक को देखें ।

## बृहत् पंच मूल

बिल्वः शोणाक गम्भारी पाटला गणकारिका ।

दीपनं कफवातघ्नं पंचमूलमिदं महत् ॥ ४६ ॥

वेल, श्योनाक, खंभारी, पाटला, इरनी, को बृहत् पंच मूल करते हैं यह कफ, वात, को नष्ट करती हैं और दीपन है ॥ ४६ ॥

शालपर्णी पृश्निपर्णी बृहतीद्वय गोक्षुरम ।

वातपित्त हरं वृष्यं कनीयः पंचमूलकम् ॥ ४७ ॥

शालपर्णी, पृश्निपर्णी, दोनों कटैली, और गुखुरू, लघु पंच मूल कहलाते हैं वात, पित्त, हर और वृष्य हैं ॥ ४७ ॥

उभयं दशमूलं स्यात्सन्निपात ज्वरापहम् ।
कासेश्वासे च तन्द्रायां पार्श्वशूले च शस्यते ॥ ४८ ॥

दोनों पंचमूलों को मिलाने से दश मूल बनता है यह सन्निपात ज्वर को, श्वास, खासी, तन्द्रा, पसली के दर्द को नष्ट करने वाला है ॥ ४८ ॥

एतैस्तैलानि सर्पींषि प्रलेपादलकां जयेत् ।

इस से सिद्ध किये गये तैल और घी तथा लेप पागल कुत्ते के विषको और बालों के रोगों को दूर करते हैं ॥ ४९ ॥

## स्नेह साधनम्

क्वाथ्याच्चतुर्गुणं वारि पादस्थं स्याच्चतुर्गुणम् ॥४६॥
स्नेहश्चतत्समं क्षीरं कल्कश्च स्नेहपादकः ।
संवर्तितौषधैः पाको वस्तौपाने भवेत्समः ॥
खरोभ्यंगे मृदुर्नस्ये पाकोऽपिसंप्रकल्पयेत् ॥ ५० ॥

क्वाथ्य द्रव्य से चौगुना पानी लेकर चोथाई रखना क्काथ कहलाता है । ऐसा क्काथ तैल और घृत पाक में स्नेह से चौगुना लें और कल्क स्नेह का चौथाई डालें, दूध आदि स्नेह के बराबर डालना चाहिये, जब क्काथादि जल कर बत्तीसो बनने लगें तब पाक हो गया जाने, ऐसा पाक खाने और वस्ति में लें । मलने में खरपाक, नस्यमें मृदु पाक करना चाहिये ॥ ५० ॥

## असाध्य लक्षणम्

स्थूलदेहेन्द्रियाश्चिन्त्याः प्रकृतिर्यात्वधिष्ठिता ।
आरोग्य मितिज्ञ विद्यादायुरनन्त मुपाचरेत् ॥ ५१ ॥

योगृह्णातीन्द्रियैरर्थान्विपरीतान्सम्रृत्युभाक् ।
भिषङ्मित्रगुरुद्वेषी प्रियारातिश्चयोभवेत् ॥ ५२ ॥
गुल्फजानुललाटंच हनुगण्डस्तथैवच ।
भ्रष्टं स्थानच्युतं यस्य सजहात्याचरादसून् ॥ ५३ ॥
वामाक्षिमज्जनं जिह्वा श्यामानासाविकारिणी ।
कृष्णौस्थानच्युतौ चोष्टौ कृष्णास्यं यस्यतंत्यजेत् ॥ ५४

प्रथम देह में इन्द्रियों को देखें कि वह अपना अपना कार्य्य ठीक करती है यदि कार्य ठीक करतीहो और अपनी प्रकृति में स्थिर हो तो आरोग्यता जाने और आयु वाला जाने आयुष्य वाले का ही इलाज करें ।

जो इन्द्रयों से उनके अर्थों का ग्रहण करते हैं वह आयुष्यमान होते हैं विपरीत गुण ग्रहण करने वाले मृत्यु के मुंह में जाते हैं । जो वैद्य, मित्र, गुरु और प्रियो से द्वेष करने वाले हों जिनके गुल्फ, जानु, ललाट, हनु, गण्ड, नष्ट हो या स्थान से हट गये हों वह जल्द ही जीवन को छोड़ देते हैं ।

वाम नेत्र मुंद गई हो, जीभ काली हो गई हो, नासा में विकार हो गया हो मुंह काला हो गया हो, दोनों होंठ काले हो गये हों या अपने स्थान से हठ गये हों ऐसे रोगियों की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥ ५४ ॥

इतिश्री गारुडे पूर्वखंडे वैद्यक शास्त्रपरिभाषानामाष्ट षष्टिचाधिक शततमोऽध्यायः चिकित्सक चूड़ामणि पं० बिश्वेश्वरदयालु प्रणीतयाविश्वेश्वरी टीकया सनाथीकृतः समाप्तः

## अन्नादि गुणाः ।

धन्वन्तरि रुवाच ।

हिताहित विवेकाय अनुपान विधि ब्रुवे ।
रक्त शालि त्रिदोषघ्नं तृष्णामेदोनिवारकम् ॥ १ ॥

धन्वन्तरि भगवान कहने लगे । हे सुश्रुत हित और अहित के ज्ञान के लिये अनुपान विधि को कहता हूं । लाल चांवल त्रिदोष, तृष्णा मेद को नष्ट करने वाले हैं ॥ १ ॥

महाशालिः परं वृष्यं कलमः श्लेष्म पित्तहा ।
शीतोगुरुस्त्रिदोषघ्नः प्रायशो गौर षष्टिकः ॥ २ ॥

महाशालि वहुत वृष्य होते हैं । कलमीशालि कफ, पित्तघ्न । सफेद साठी, शीतल, गुरु, त्रिदोषघ्न होते हैं ॥ २ ॥

श्यामाकः शोषणो रुक्षो वातलः श्लेष्म पित्तहा ।
तद्वत्प्रियंगुनीवार कोरदूषाः प्रकीर्तिताः ॥ ३ ॥

समा शोषण करने वाला रुक्ष, वातल, कफ, पित्त नाशक है । इसी प्रकार प्रियंगु धान, पसाई और कोदों को जाने ॥ ३ ॥

वहुवारः सकृच्छीतः श्लेष्म पित्तहरोयवः ।
वृष्यः शीतो गुरुः स्वादुर्गोधूमो वात नाशनः ॥ ४ ॥

लहसोड़ा, शीतल है यव, कफ और पित्त नाशक हैं । गेहूं गुरु, शीतल और वात नाशक हैं ॥ ४ ॥

कफ पित्तास्रजिन्मुद्गः कषायो मधुरोलघुः ।
माषो वहुवलो वृष्यः पित्तश्लेष्म हरागुरुः ॥ ५ ॥

मूंग, कफ, पित्त, रक्त नाशक है और मधुरः कषैली, शीघ्रपाकी है। उरद बल्य, वृष्य, पित्त कफ हर है और भारी है ॥ ५ ॥

अवृष्यः श्लेष्मपित्तघ्नो राजमाषोऽनिलार्त्तिनुत्।
कुलत्थः श्वासहिक्काहृत्कफ गुल्म निलापहः ॥ ६ ॥

लोबिया अवृष्य है, कफ, पित्त वात पीड़ा हर है। कुलथी-श्वास, हिचकी, कफ, गुल्म, वात हर है ॥ ६ ॥

रक्तपित्तज्वरोन्माथी शीतोग्राहीमकुष्टकः।
पुंस्त्वासृक्कफपित्तघ्नश्चणको वातलःस्मृतः ॥ ७ ॥

मोठ रक्त पित्त ज्वर हर शीतल और ग्राही है। चना-मरदूमी रक्त कफ पित्त हर है और वात वृद्धि कर है ॥ ७ ॥

मसूरोमधुरः शीतः संग्राही कफपित्तहा।
तद्वत्सर्वंगुणाढ्यश्च कलायश्चाति वातलः ॥ ८ ॥

मसूर-मधुर, शीतल, ग्राही कफ पित्त हर है। मटर मसूर के समान गुणकारी है परन्तु अति वातल हैं ॥ ८ ॥

आढ़की कफपित्तघ्नो शुक्रला च तथास्मृता।
अतसी पित्तला ज्ञेया सिद्धार्थः कफवातजित् ॥ ६ ॥

अरहर कफ पित्त नाशक और वीर्य बर्द्धक है। अलसी पित्त कारक है। सफेद सरसों कफ वात नाशक है ॥ ६ ॥

सक्षारमधुरस्निग्धो बलोष्णपित्त कृत्तिलः।
बलघ्ना रूक्षलाः शीतविविधासस्यजातयः ॥ १० ॥

तिल-क्षारयुक्त, मधुर, स्निग्ध होते हैं, यह बल, उष्णता और पित्त को बढ़ाते हैं। और अनाज रूक्ष, शीतल होते हैं ॥ १० ॥

## पत्रशाक

चित्रकेंगुदिनालीका पिप्पली मधुशिग्रवः।
चव्याचरणनिगुंण्डी तर्कारी कासमर्दिका: ॥ ११ ॥
सबिल्वाः कफपित्तघ्नाः क्रमिघ्ना लघुदीपिकाः।
वर्षाभूमार्कवौ वातकफघ्नौ दोषनाशनौ ॥ १२ ॥

चित्रक, हिंगोट, पटुआं, पीपल, सोठासेंजना, चव्यमूल, निगुंडी इरनी, कसोंदी, बेल के शाक कफ, पित्त, कृमि नाशक लघु और दीपनकारी हैं। पुनर्नवा, घमरा वात कफ नाशक और दोष नाशक कहे गये हैं ॥ ११–१२ ॥

तिक्तरसः स्यादेरण्डः काकमाची त्रिदोषहृत्।
चांगेरी कफवातघ्नी सर्षपः सर्व दोषदम् ॥ १३ ॥

अंड तिक्त रस वाला है, काली मकोइया त्रिदोषनाशक है। तिपतिया कफ वात हर है, सरसों शाक समस्त दोषप्रद है ॥ १३ ॥

तद्वदेव च कौस्सुम्भं राजिका वातपित्तला।
नाड़ी चः कफपित्तघ्नः चञ्चुर्मधुर शीतलः ॥ १४ ॥

इसी प्रकार कुसुम का शाक वात, पित्त कर है। राई का शाक भी वात पित्त कर है। नाड़ी का शाक कफ पित्तहर है। चेंच का शाक मीठा और शीतल होता है ॥ १४ ॥

दोषघ्नं पद्मपत्रञ्च त्रिपुटं वातकृत्परम्।
सत्तारः सर्व दोषघ्नो वास्तूको रोचनः परः ॥ १५ ॥

कमल पत्र शाक दोष हर है, चटरा बहुत वातकारक है। बथुआ क्षारयुक्त, समस्त दोषहर और रोचक होता है ॥ १५ ॥

तण्डुलायो विषहर: पालक्याश्च तथापरे ।
मूलकं दोषकृच्चामं स्विन्नवात कफापहम् ॥ १६ ॥
सर्वदोषहरं हृद्यं कंठ्यं तत्पक्कमिष्यते ।

चौलाई का शाक विष नाशक है, कुछ पालक को भी विषहर मानते हैं । कच्ची मूली दोषों को बढाती है, उबाली हुई वात कफहर है पकाई हुई समस्त दोष हर हृदय और कंठ को गुणकारी होती है ॥१६॥

## फलशाक

कर्कोटकं सवार्त्ताकं पटोलं कारवेल्लकम् ।
कुष्टमेह ज्वर श्वास कासपित्त कफापहम् ॥ १७ ॥

ककोड़ा, बैंगन, परवल, करेला, कुष्ट, मेह, ज्वर, श्वास, कास, पित्त, कफ को नष्ट करने वाले हैं ॥ १७ ॥

सर्वदोषहरं हृद्यं कूष्माण्डं वस्तिशोधनम् ।
कलिंगालाबुनी पित्तनाशिनी वातकारिणी ॥ १८ ॥

कुम्हेड़ा—हृदय को बल देने वाला, वस्तिशोधक और सर्व दोष हर है । कलींदा, लौकी, पित्त नाशक वातप्रद है ॥ १८ ॥

त्रपुषोर्वारुके वातश्लेष्मले पित्तवारणे ।
वृक्षाम्लं कफवातघ्नं जंबीरं कफवातनुत् ॥ १६ ॥

खीरा, ककड़ी, पित्तहर, वातकफ कर हैं । आमड़ा कफवात नाशक है, जंभीरी नीबू कफ वातहर है ॥ १६ ॥

वातघ्नं दाडिमं ग्राहि नागरंग फलं गुरु ।
केशरं मातुलुङ्गं च दीपनं कफवातनुत् ॥ २० ॥

अनार वात हर और संग्राही है। नारंगी गुरु है। जंभीरी की केशर दीपन, वात, कफ, नाशक है ॥ २० ॥

वातपित्तहरोमांसस्त्वक्स्निग्धोष्णानिलापहः।
सरमामलकं वृष्यं मधुरं हृद्यमम्लकृत् ॥ २१ ॥

मांस वात, पित्त हर होते हैं। दालचिनी स्निग्ध, उष्ण, वातहर है। घृत कुमारी, आमला, वृष्य, मधुर, हृद्य और अम्लकारक है ॥२१॥

भुक्तप्ररोचका पुण्या हरीतक्य मृतोपमा।
स्रंसनी कफवातघ्नी ह्यक्षस्तद्वत्त्रिदोषजित् ॥ २२ ॥

हरीतकी अमृत समान गुणकारी रुचिकर है, कफ, वातहर है और रेचक है। वहेरा त्रिदोषहर और हरीतकी के समान गुणकारी है ॥ २२ ॥

वातश्लेष्महरं त्वम्लं स्रंसनं तिन्तिड़ीफलम्।
दोषलं लकुचं स्वादु वकुलं कफवातजित् ॥ २३ ॥

इमली फल, अम्ल, दस्तावर और वात कफहर है। लकुच ( बढ़हर ) दोषों को करता है। वकुल फल कफ वातहर है ॥ २३ ॥

गुल्मवातकफश्वासकासघ्नं वीजपूरकम्।
कपित्थं ग्राहि दोषघ्नं पक्वं गुरु विषापहम् ॥ २४ ॥

विजौरा नीबू, गुल्म, वात, कफ, श्वास, कासहर है। कच्चा कैथ फल ग्राही, दोषहर है, पका हुआ गुरु, विषहर होता है ॥ २४ ॥

कफपित्तकरं वालमापूर्णं पित्तवर्द्धनम्।
पक्वाम्रं वातकृन्मांसशुक्रवर्णवलप्रदम् ॥ २५ ॥

आम का छोटा फल ( कैरी ) कफ, पित्तकर है । कच्चा आम पित्तवर्द्धक है । पका आम, वात, मांस, शुक्र, वर्ण, वल बढ़ाता है ॥२५॥

वातघ्नं कफपित्तघ्नं ग्राहि विष्टम्भिजाम्बवम् ।
तिन्दुकं कफवातघ्नं वदरं वात पित्तहृत् ॥ २६ ॥

जामुन, वात, पित्त, कफ नाशक, ग्राही, विष्टम्भी होती है । तेन्दू फल, वात, कफहर है । वेरफल वात, पित्त नाशक होते हैं ॥ २६ ॥

विष्टम्भिवातलं विल्वं प्रियालं पवनापहम् ।
राजादनफलं मोचं पनसं नारिकेलजम् ॥
शुक्रमांसकराण्याहुः स्वादुस्निग्धगुरूणि च ॥ २८ ॥

वेलफल–मलरोधक, वातकर होता है । चिरोंजी वातहर है । खिरनी, केला, कटहर, नारियल फल–वीर्य्य, मांस वर्द्धक, मधुर, स्निग्ध और भारी होते हैं ॥ २८ ॥

द्राक्षामधुक खर्जूरं कुंकुमं वात रक्तजित् ।
मागधीमधुरा पक्का श्वास पित्तहरा परा ॥ २६ ॥

दाख, महुआ, छुहारा केशर, वात रक्तहर हैं । पीपल पकी हुई मधुर, श्वास और पित्तहर है ॥ २६ ॥

आद्रकं रोचकं वृष्यं दीपनं कफवातहृत् ।
शुण्ठीमरिचपिप्पल्यः कफवात जितो मतः ॥ ३० ॥

अदरख–रोचक, वृष्य और दीपक तथा कफ, वातहर है । सोंठ, मिर्च, पीपल, कफ, वातहर होता है ॥ ३० ॥

अवृष्यं मरिचं विद्या दिति वैद्यक सम्मतम् ।
गुल्मशूल [illegible] ॥ ३१ ॥

काली मरिच कृशता करती है, यह आयुर्वेद का मत है, परन्तु गुल्म, शूल, विवंध को हटा देती है। हींग वात,कफ नाशक है ॥ ३१ ॥

यवानीधान्यकाजाज्यः वातश्लेष्मनुदः परम्।

चक्षुष्यं सैन्धवं वृष्यं त्रिदोष शमनं स्मृतम् ॥ ३२ ॥

अजवायन, धनिया, जीरा, वात, कफनाशक है। सेंधानमक नेत्रों को हितकर, वृष्य एवं त्रिदोषहर है ॥ ३२ ॥

सौवर्चलं विबन्धघ्नमुष्णं हृच्छूल नाशनम्।

उष्णं शूलहरं तीक्ष्णं विडंगं वात नाशनम् ॥ ३३ ॥

काला नमक विवंधहर, उष्ण, हृदयशूलहर है। विडंग उष्ण, शूलहर, तीक्ष्ण वात नाशक है ॥ ३३ ॥

रोमकं वातलं स्वादु रोचनं क्लेदनं गुरु।

हृत्पांडु गलरोगघ्नं यवक्षारोऽग्निदीपनः ॥ ३४ ॥

रोमक ( सांभर लवण ) वातल, रोचक, क्लेदक, भारी एवं स्वादु होता है। यवक्षार हृदय राग, पांडु वाले के रोगों को नष्ट करता है और दीपन होता है ॥ ३४ ॥

दहनो दीपनस्तीक्ष्णः सर्जिक्षारो विदारणः।

सज्जीखार-दाहक, दीपन, तीक्ष्ण और फाड़ने वाला होता है।

## जल वर्ग

दोषघ्नं नाभसं वारि लघुहृद्यं विषापहम्।

नादेयं वातलं रुक्षं सारसं मधुरं लघु ॥ ३५ ॥

वर्षा का पानी दोषनाशक, लघुपाकी, हृद्य, विष नाशक होता है। नदी का पानी वातल, रुक्ष होता है। प्राकृतिक तालाब का पानी मीठा और शीघ्रपाकी होता है ॥ ३५ ॥

वातश्लेष्महरं वाप्यं तड़ागं वातलं स्मृतम् ।
रौच्यमग्निकरं रुक्षं कफघ्नं लघुनैर्झरम् ॥ ३६ ॥

बावड़ी का जल वात, कफहर होता है, तालाब का पानी वात-कारक है, झरना का पानी रुक्ष, कफनाशक, रुचिकर, अग्निवर्द्धक, शीघ्र पाकी होता है ॥ ३६ ॥

दीपनं पित्तलं कौपमौद्भिदम् पित्तनाशनम् ॥ ३७ ॥

कुंवे का पानी–पित्तवर्द्धक और दीपन है । झील एवं गड्ढों का पानी पित्तनाशक है ॥ ३७ ॥

दिवाकरकिरणैर्जुष्टं रात्रौचैवेन्दुरश्मिभिः ।
सर्वदोषविनिर्मुक्तं तत्तुल्यं गगनाम्बुना ॥ ३८ ॥

जिस पानी पर दिन भर सूर्य की किरणें पड़ी हों और रात्रि भर चंद्र किरणें पड़ी हों, वह सब दोषों से रहित वर्षा के जल के समान गुणकारी होता है ॥ ३८ ॥

उष्णं वारि ज्वरश्वासमेदोऽनिलकफापहम् ।
शृतं शीतंत्रिदोषघ्नमुषितं तच्चदोषलम् ॥ ३९ ॥

गरम पानी–ज्वर, श्वास, मेद, वात, कफहर है । गरम किया ठंडा पानी त्रिदोषहर होता है, वही बासी होने पर दोषों को कुपित करता है ॥ ३९ ॥

## क्षीर वर्ग

गौक्षीरं वात पित्तघ्नं स्निग्धं गुरु रसायनम् ।
गव्याद्गुरुतरं स्निग्धं माहिषं वह्निनाशनम् ॥ ४० ॥

गौ का दुग्ध–वात, पित्त नाशक, स्निग्ध और भारी एवं रसायन होता है। भैंस का दूध गौदुग्ध से भारी, चिकना, अग्नि नाशक होता है ॥ ४० ॥

छागं रक्तातिसारघ्नं कासश्वासकफापहम् ।
चक्षुष्यं जीवनं स्त्रीणां रक्तपित्ते च नावनम् ॥ ४१ ॥

बकरी का दूध–रक्तातिसार, कास, श्वास, कफनाशक है। स्त्रियों का दूध–नेत्रों को हितकर, जीवनप्रद, रक्त पित्त में नस्य देने में उपकारी होता है ॥ ४१ ॥

परं वातहरं वृष्यं पित्तश्लेष्मकरं दधिः ।
दोषघ्नं मन्थजातन्तु मस्तुस्रोतोविशोधनम् ॥ ४२ ॥

दही वातघ्न, वृष्य, पित्त, कफ करने वाला है। घृतयुक्त मट्ठा दोष हर है, मट्ठे का पानी स्रोतों को शोधन करता है ॥ ४२ ॥

ग्रहण्यर्शोऽर्दितार्त्तिघ्नं नवनीतं नवोद्धृतं ।
विकाराश्च किलाटाद्या गुरवः कुष्टहेतवः ॥ ४३ ॥

ताजी मक्खन ग्रहणी, अर्श, अर्दित को नष्ट करता है। दूध को फाड़ कर बनाये गये सभी भेद भारी और कुष्ट को करने वाले होते हैं ॥ ४३ ॥

परं ग्रहणी शोथाशः पाड्वतीसार गुल्मनुत् ।
त्रिदोष शमनं तक्रं कथितं पूर्व सूरिभिः ॥ ४४ ॥

चौथाई पानी युक्त मट्ठा ग्रहणी, शोथ, अर्श, पांडु, अतीसार, गुल्म और त्रिदोषहर होता है, ऐसा पुराने ऋषियों ने कहा है ॥ ४४ ॥

वृष्यं च मधुरं सर्पिर्वातपित्तकफापहम्।
गव्यं मेध्यंच चक्षुष्यं संस्काराच्च त्रिदोषजित्। ४५ ॥

गौ घृत मधुर, वात, पित्त, कफहर है, बुद्धि वर्द्धक, नेत्र हितकर है। संस्कार से त्रिदोषहर भी हो जाता है ॥ ४५ ॥

अपस्मारगदोन्मादमूर्च्छाघ्नं संस्कृतं घृतम्।
अजादीनांच सर्पीषि विद्याद्गोक्षीरसद्गुणैः ॥ ४६ ॥

मृगी, उन्माद, मूर्च्छा को संस्कारित घृत खो देता है। बकरी आदि के घृत गोदुग्ध के समान गुणकारी जाने ॥ ४६ ॥

कफवात हरं मूत्रं सर्वकृमि विषापहम्।
पाण्डुत्वोदर कुष्टार्शः शोथगुल्म प्रमेहनुत् ॥ ४७ ॥

मूत्र-कफ, वात, कृमि विषहर होते हैं। पांडु, उदर रोग, कुष्ट, अर्श, शोथ, गुल्म प्रमेह नाशक होते हैं

वातश्लेष्महरं वल्यं तैलं केश्यं तिलोद्भवम्।

तिल का तैल-वात, कफ हर, वलदेने वाला, केशों को हितकर होता है ॥ ४७ ॥

सार्षपं कृमिपाण्डुघ्नं कफमेदोनिलापहम्।
क्षौमं तैलमचक्षुष्यं पित्तहृद्वातनाशनम् ॥ ४८ ॥

सरसों का तैल-कृमि, पांडु, कफ, मेद, वात को नष्ट करता है। अलसी का तैल-वात, पित्त नाशक और नेत्रों के लिये दूषित है ४८

अक्षजं कफपित्तघ्नं केश्यं त्वक् श्रोत्रतर्पणम् ॥ ४९ ॥

बहेरे का तैल-कफ, पित्त नाशक, चमड़ी, कानों को तथा बालों को हितकारी है ॥ ४९ ॥

त्रिदोषघ्नं मधुप्रोक्तं वातलं च प्रकीर्तितम्।
हिक्काश्वासकृमिच्छर्दि मेहतृष्णाविषापहम् ॥ ५० ॥

शहद–त्रिदोष, हिचकी, श्वास, कृमि, वमन, प्रमेह, प्यास, विष नाशक और बात को बढ़ाने वाला है ॥ ५० ॥

इक्षवो रक्तपित्तघ्ना वल्यावृष्याः कफप्रदाः।
फाणितं पित्तलं तीव्रं सुरामत्स्यण्डिकालघु ॥ ५१ ॥

गन्ना–रक्त, पित्त हर और बल देने वाला वृष्य एवं कफप्रद हैं। राव–पित्त वर्द्धक है, सुरा ( लदोई से बनी मदिरा ) बहुत तीव्र होती है। सिउरा के दाने शीघ्रपाकी होते हैं ॥ ५१ ॥

खण्डं वृष्यं तथा स्निग्धं स्वाद्वसृक्पित्त वातजित्।
वातपित्त हरोरूक्षो वातघ्नः कफकृद्गुडः ॥
सपित्तघ्नः परः पथ्यः पुराणोऽसृक् प्रसादनः ॥ ५२ ॥

खांड–वृष्य, स्निग्ध, स्वादु है, रक्त पित्त वात नाशक है। गुड़ बात, पित्त नाशक, रूक्ष, वात नाशक, कफ कर है। पुराना गुड़ पित्त नाशक और रक्त को साफ करने वाला है ॥ ५२ ॥

रक्तपित्तहरा वृष्या सस्नेहा गुड़शर्करा।
सर्वपित्तकरं मध्यमम्लत्वात् कफवातजित ॥ ५३ ॥

गुड़ की शकर–रक्त पित्त हर वृष्य एवं सस्नेह युक्त होती है। मद्य खट्टी होने से पित्तकर होती है कफ वात हर भी है ॥ ५३ ॥

रक्तपित्तकरास्तीक्ष्णास्तथा सौवीरजातयः।
पाचनोदीपनः पथ्यो मंडः स्याद् भ्रष्ट तंडुलः ॥५४॥

सिर्का–रक्त पित्त करने वाले तीक्ष्ण होते हैं। भुने चावलोंका मांड़ पाचन और दीपन तथा पथ्य है, ॥ ५४ ॥

वातानुलोमनीलध्वी पेयावस्तिविशोधिनी।

सतक्रदाड़िमव्योषा सगुडा मधुपिप्पली ॥ ५५ ॥

हन्तार्यं सुकृतापेया कासश्वास प्रवाहिकाः ॥

पेया वात को अनुलोमन करने वाली और वस्ति को शोधन करने वाली है। वही पेया यदि मट्ठा, अनार, त्रिकुटा युक्त हो या गुड़ एवं मधु, पीपल, युक्त हो तो कास, श्वास प्रवाहिका को नष्ट कर देती है ॥ ५५ ॥

पायसः कफकृद्बल्यः कृशरा वातनाशिनी ॥ ५६ ॥

खीर–कफकारी, बलबर्द्धक होती है। खिचड़ी वात नाशक होती है ॥ ५६ ॥

सुधौतः प्रस्नुतः स्निग्धः सुखोष्ण लघुरोचनः।

कंदमूलफलोलेहः साधितो बृंहणो गुरुः ॥ ५७ ॥

कंदमूल और फलों को धोकर और कूटकर निचोड़ा हुआ रस स्निग्ध और सुखोष्ण करके देने से वहुत वृंहण करता है शीघ्र पाकी तथा रोचक होता है ॥ ५७ ॥

ईषदुष्णसेवनाच्च लघुः सूपः सुसाधितः।

स्विन्नं निष्पीडितं शाकं हितं स्नेहादिसंस्कृतम् ॥ ५८ ॥

दाल यदि कुछ गरम खाई जाय तो शीघ्रपाकी होती है। शाकों को उबाल कर निचोड़ डाले, फिर स्नेहादि से संस्कृत कर वनाया गया यह रस हितकारी होता है ॥ ५८ ॥

दाड़िमामलकैर्यूषोवह्निकृद्वात पित्तहा ।
श्वासकासप्रतिश्यायकफघ्नो मूलकैः श्रृतः ॥ ५९ ॥

अनार और आमले का यूष अग्नि बढ़ाता है, वात, पित्त नाशक है। मूली का यूष श्वास, कास, प्रतिश्याय और कफ नाशक है ॥ ५९ ॥

यव कोल कुलत्थानां यूषः कंठ्योऽनिलापहः ।
मुद्गामलकजो ग्राही श्लेष्मपित्त विनाशनः ॥ ६० ॥

जौ, बेर, कुलथी से बना यूष कंठ को हितकारी है और वातहर है। मूंग, आमला से बना यूष, ग्राही, कफ, पित्त नाशक है ॥ ६० ॥

सगुडं दधिवातघ्नं सक्तवो रुक्षवातलाः ।
घृतपूर्णोऽग्निकारी स्याद् वृष्या गुर्वी च शष्कुली ॥६१॥

गुड के साथ दही वात नाशक होता है। सक्तू रूक्ष और वातल होते हैं। पूड़ी घृत से बनी वृष्य, भारी, अग्नि बढाने वाली होती है ॥ ६१ ॥

बृंहणाः सामिषा भक्ष्यपिष्टका गुरवः स्मृताः ।
तैलसिद्धाश्चदृष्टिघ्नास्तोयस्विन्नाश्च दुर्जराः ॥ ६२ ॥

पिट्ठी के बने बड़े मांस के साथ बृंहण और गुरु होते हैं। तैल में बने दृष्टिनाशक होते हैं, पानी में उबाले फरा कठिनता से पचने वाले होते हैं ॥ ६२ ॥

अत्युष्णा मंडकापथ्याः शीतला गुरवो मताः ।
अनुपानं च पानीयं श्रमतृष्णादिनाशनम् ॥ ६३ ॥

मंडक अति गरम खाना पथ्य कर है, यह शीतल भारी होते हैं। पानी अनुपान कहलाता है, यह श्रम, तृष्णा नाशक है ॥ ६३ ॥

अन्नपानादिना रक्षा कृतस्याद्रोगवर्जितः ।

अन्न पान से रक्षा किया हुआ ही रोग रहित होता है ।

अनुष्णः शिखिकंठाभो विषश्चैव विवर्णकृत् ॥ ६४ ॥

गंधस्पर्शरसास्तीव्रा भोक्तुश्च स्यान्मनोऽव्यथा ।

आघ्राणे चाक्षिरोगः स्यादसाध्यश्च भिषग्वरैः ॥ ६५ ॥

वेपथु जृम्भणाद्यं स्याद्विषस्यैतत्तुलक्षणम् ॥ ६५ ॥

विष मिले पदार्थ ठंडे होने पर मोर की गरदन के रंग वाले एवं विवर्ण रूप के हो जाते हैं । गंध, स्पर्श, रस में तीव्र होते हैं, खाने पर मन में व्यथा होती है । सूंघने पर नेत्र रोग होते हैं, जो वैद्यों से असाध्य होते हैं । कंप, जंभाई आदि आना विष के लक्षण हैं ॥ ६५ ॥

अनुपानादि विधि कथनं नामैकोनसप्तत्यधिक शततमोऽध्यायः

श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि कृत्या विश्वेश्वरी टीकया

समलंकृतः समाप्तः ॥

॥१६९॥

धन्वन्तरिरुवाच

ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वन्द्वसंघातागन्तुजः स्मृतः ॥ १ ॥

धन्वन्तरि जी कहने लगे—ज्वर वातज, पित्तज, कफज, वात पित्तज, कफ पित्तज, वात कफज, सन्निपातज, आगन्तुज भेद से आठ प्रकार के होते हैं ॥ १ ॥

मुस्तपर्पटकोशीर चन्दनोदीच्यनागरैः ।

शृत शीतं जलं दद्यात्पिपासाज्वरशान्तये ॥ २ ॥

मोंथा, पित्तपापरा, खस, रक्तचंदन, सुगंधवाला, सोंठ का क्वाथ षडंग कहलाता है, यह ज्वर और प्यास के लिये प्रथम सब ज्वरों में देना ॥ २ ॥

नागरं देवकाष्टंच धान्याकं वृहतीद्वयम् ।

दद्यात्पाचनकं पूर्वं ज्वरिताय ज्वरापहम् ।। ३ ।।

सोंठ, देवदारु, धनियां, फलकटैया, भटकटैया का क्वाथ पाचन है, इसे ज्वर रोगी को प्रथम देना ॥ ३ ॥

आरग्वधाभयामुस्तातिक्ताग्रन्थिकनिर्मितः ।

कषायः पाचनः सामेसशूलेच ज्वरेहितः ।। ३ ।।

अमलतास का गूदा, हर्रा, मोंथा, कुटकी, पीपलामूल, का क्वाथ पाचन कहलाता है आम ज्वर और शूल युक्त ज्वर में हितकर है ।। ३ ।।

मधूकसार सिन्धूत्थ वचोषणकणाः समाः ।

श्लक्ष्णंपिष्ट्वाम्भसानस्यं कुर्य्यात्संज्ञाप्रबोधनम् ।। ४ ।।

महुवा का सार ( छाल ) सेंधा नमक, बच, मिर्च, पीपल,का महीन चूर्ण पानी में घाल नस्य देने से मूर्च्छादूर हो बोधहोता है ।। ४ ।

त्रिवृद्विशाला त्रिफला कटुकारग्वधैःकृतः ।

सक्षारोभेदनः क्वाथः पेयः सर्व ज्वरापहः ।। ५ ।।

निशोथ, इन्द्रायण, का गूदा, त्रिफला, कुटकी, अमलतास का गूदा, का क्वाथ, यवक्षार मिला देने से सब प्रकार केज्वर दूर होते है ॥५

महौषधामृतामुस्तचन्दनोशीरधान्यकैः ।

क्वाथ स्तृतीयकं हन्ति शर्करामधुयोजितः ।। ६ ।।

सोंठ, गुर्च, मोंथा, लाल चन्दन, खस, धनियां का क्वाथ शकर मधु मिला देने से तीसरे दिन का ज्वर दूर होता है ।। ६ ।।

अपामार्ग जटाकट्यां लोहितैः सप्ततन्तुभिः ।

वद्ध्वावारे रवेनूनं ज्वरं हन्ति तृतीयकम् ।। ७ ॥

अपामार्ग की जड़ लाल धागे के सात धागों में बांध कर कमर में इतवार के दिन बांधने से तृतीयक ज्वर दूर होता है ॥ ७ ॥

गंगाया उत्तरे कूले अपुत्रस्तापसो मृतः।
तस्मैतिलोदकं दद्यान्मुच्यत्यैकाहिको ज्वरः ॥ ८ ॥

गंगा के उत्तर किनारे पर पुत्र हीन कोई तपस्वी मर गया था उसको तिल युक्त जल दान करने से भी एकाहिकज्वर दूर होता है ॥ ८ ॥

गुडूच्याः क्वाथ कल्काभ्यां त्रिफलात्रासकस्यच।
मृद्वीकाया बलायाश्च सिद्धाःस्नेहा ज्वरच्छिदः॥ ९ ॥

गुडूची के क्वाथ और कल्क से या त्रिफला वाले अडूसे के तथा मुनक्का या वला के क्वाथ कल्क से सिद्ध तैल यह चारो तैल ज्वर हर होते हैं ॥ ९ ॥

धात्री शिवाकणावह्निक्वाथः सर्वज्वरान्तकः।

आमला, हर्रा, पीपल, चित्रक, का क्वाथ समस्त ज्वर नाशक है।

ज्वरातिसार हरणमौषधं प्रवक्ष्यम्यथ ॥ १० ॥

अब ज्वरातिसार नाशक औषधियों को कहते हैं ॥ १० ॥

पृश्निपर्णी बलाविल्व नागरोत्पल धान्यकैः।
पाठेन्द्रयवभूनिम्ब मुस्तपर्पटकैः शृताः॥
जयन्त्यामतीसारं सज्वरं समहौषधाः ॥ ११ ॥

पृश्निपर्णी, बला, बेलगूदा, सोंठ, कमलपुष्प, धनियां का क्वाथ या पाठा, इन्द्रजौ, चिरायता, मोंथा, पित्तपापरा का क्वाथ, सोंठ युक्त ज्वर आमातिसार को नष्ट करने वाले हैं। यह पृथक् २ बताये गये हैं ॥ ११ ॥

नागरातिविषामुस्त भूनिम्बा मृतवत्सकैः।
सर्वज्वरहरः क्वाथः सर्वातीसार नाशनः ॥ १२ ॥

सोंठ, अतीस, नागरमोंथा, चिरायता, गुर्च, कुड़ा छाल का क्वाथ समस्त अतीसारों का नाशक है ॥ १२ ॥

मुस्तपर्पटकादिव्य श्रृंगवेर श्रृतं पयः।
शालिपर्णी पृश्निपर्णी वृहती कंटकारिका ॥ १३ ॥
बलाश्वदंष्ट्रा बिल्वादि पाठानागर धान्यकम्।
एतदाहार संयोगे हितं सर्वातिसारिणाम् ॥ १४ ॥

मोंथा, पित्तपापरा, सुगन्धवाला, आर्द्रक से पकाया दुग्ध। शालिपर्णी, पृश्निपर्णी भटकटैया, फलकटैया, बला, गुखुरु, बेल का गूदा, पाठा, सोंठ, धनियां को आहार के साथ पका देना भी अतिसार हर होता है ॥ १४ ॥

बिल्वचूतास्थिकाथश्च खंडमध्वतिसारनुत्।
अतिसारेहितातद्वत्कुटजत्वक् कणायुता ॥ १५ ॥

बेल का गूदा, आम की गुठली का क्वाथ शकर, मधु के साथ या कुड़ा छाल, पीपल का चूर्ण मधु शर्करा के साथ देना अतिसार नाशक है ॥ १५ ॥

वत्सकातिविषाविश्वकणा कंदकषायकः।
प्रयुक्तश्चामशूलाढ्ये ह्यतीसारे सशोणिते ॥ १६ ॥

कुड़ाछाल, अतीस, सोंठ, पीपल, कमलकंद, क्वाथ रक्त आनेवाले आम, और शूल युक्त अतीसार को नष्ट करता है ॥ १६ ॥

चिकित्साथ ग्रहण्यास्तु ग्रहणी आग्निनाशिनी।

अब ग्रहिणी की चिकित्सा कहता हूँ। पाचकाग्नि को नष्ट करने वाली ग्रहणी कही जाती है।

चित्रककाथकल्काभ्यां ग्रहणीघ्नं श्टतंहविः।
गुल्मशोथोदरप्लीहशूलार्शोघ्नं प्रदीपनम् ॥ १७ ॥

चित्रक के काथ और कल्क से सिद्ध किया घृत ग्रहणी, गुल्म, शोथ, प्लीहा, उदररोग, शूल, अर्श, को नष्ट करता और अग्नि दीप्त करता है ॥ १७ ॥

सौवर्चलं सैन्धवं चविडंगौद्भिदमेवच ।
सामुद्रेणसमं पञ्चलवणान्यत्रयोजयेत ॥ १८ ॥

काला, सेंधा, विड, साँभर, समुद्र, नमक, पांच लवण कहे जाते हैं इनका उपयोग ग्रहणी में करना चाहिये ॥ १८ ॥

## अर्श रोग

भेषजं शस्त्रक्षाराग्न्यस्त्रिधा वै चार्शसां हितम् ।
विद्धितक्षार्शसोघ्नंतु यद्धितक्रंनवोद्धृतम् ॥ १९ ॥

अर्श रोग नाश के लिये शस्त्र, क्षार, अग्नि, यही तीन औषधियां है परन्तु नवीनतक्र भी अर्श नाशक है ॥ १९ ॥

गुडूचीं पिप्पलीयुक्तामभया घृतभर्जितां ।
त्रिवृदर्शोविनाशाय भक्षयेदम्ललोणिकाम् ॥ २० ॥

अर्श नष्ट करने के लिये गुडूची, पीपल, का चूर्ण घृत में भुनी हरीतकी, निशोथ का चूर्ण खावे, चूका पालक का शाक खाना चाहिये ॥ २० ॥

तिलेक्षुरससंयोगश्चाशः कुष्ट विनाशनः ।
पंच कोलं समरिचं सत्र्यूषणमथाग्निकृत ॥ २१ ॥

तिल, गन्ने के रस के साथ खाना अर्श कुष्ट हर होता है । पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिरच, का चूर्ण अथवा सोंठ, मिर्च पीपल, का चूर्ण खाने से अग्नि दीप्ति होती है ॥ २१ ॥

हरीतकीभक्ष्यमाणा नागरेणगुडेन वा ।
सैन्धवोपहिता वापिसाततयेनाग्निदीपिनी ॥ २२ ॥

हरीत की चूर्ण सोंठ या गुड़ से या सेंधे नमक के साथ खाना सदा अग्नि को दीप्ति करती है अर्श में अग्नि दीपन ही प्रधान चिकित्सा है ॥ २२ ॥

## पाण्डु रोग

फलत्रिकामृतावासात्तिक्ताभूनिम्बनिम्बजः ।
क्वाथः क्षौद्रयुतो हन्यात्पाण्डुरोगं सकामलम् ॥ २३ ॥

त्रिफला, गुडूची, अडूसा, कुटकी, चिरायता, नीम छाल का काथ मधु मिला पीने से कामला और पाण्डु रोग नष्ट होते हैं ॥ २३ ॥

त्रिवृच्च त्रिफलाश्यामा पिप्पली शर्करामधु ।
मोदकः सन्निपातान्तो रक्त पित्त ज्वरापहः॥२४॥ रक्तपित्ते

निशोथ, त्रिफला, दूर्वाघास, पीपल, शकर, मधु, के साथ बनाये गये मोदक सन्निपात, रक्त पित्त, ज्वर को दूर कर देते हैं ।

वासायां विद्यमानाया माशायां जीवितस्यच ।
रक्त पित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदति ॥ २५ ॥

अडूसा के रहने पर उसके प्रयोग से रक्त पित्त वाले क्षय वाले, कास वाले कैसे मर सकते है वासा इन में उत्कृष्ट है ॥ २५ ॥

आटरुषकमृद्वीका पथ्या क्वाथः सशर्करः ।
क्षौद्राढ्यः कासनिःश्वास रक्त पित्त निवर्हणः ॥ २६ ॥

अडूसा, दाख, हर्रा, का क्वाथ शक्कर मधु के साथ देने से रक्तपित्त श्वास, कास, को नष्ट कर देता ॥ २६ ॥

वासारसः खण्ड मधुयुतःपीतोऽथरक्तजित् ।

सल्लकी वदरी जम्बु प्रियालाम्राजु<sup></sup>र्नं धवः ॥ २६ ॥

पीतं क्षीरं च मध्वाढ्यं पृथक् शोणित वारणम् ॥ २७ ॥

अडूसेका रस, शकर, मधुमिला पीनेसे रक्त पित्त दूर हो जाता है। शाल, वेर, जामुन, चिरोंजी, आम, अर्जुन, धव, के पत्तों का रस, अलग २ दूध मधु के साथ पीने से रक्त रोध करता है ॥ २७ ॥

समूलफलपत्राया निर्गुण्ड्याः स्वरसैर्घृतम् । क्षये

सिद्धं पीत्वा क्षयक्षीणो निर्व्याधिर्भातिदेववत् ॥ २८ ॥

संभालू के पंचाग से साधित घृत क्षय क्षीण के लिये सिद्ध है इसे पीने से देवताओं की तरह रोग रहित हो जाता है ॥ २९ ॥

हरीतकी कणा शुण्ठी मरिचं गुड संयुतम् । कासे

कासघ्नो मोदकः प्रोक्तस्तृष्णारोचक नाशनः ॥ २९ ॥

हर्रा, पीपल, सोंठ, मिर्च, चूर्ण को दूने गुड में मिला मोदक (वटी) तयार करें यह कास हर है और तृष्णा, अरुचि नाशक है ॥२९

कंटकारि गुडूचीभ्यां पृथक् त्रिंशत्पलेरसे ।

प्रस्थं सिद्धं घृतं स्याच्च कासनुद्वह्निदीपनम् ॥ ३० ॥

फल कटैया और गुडूची का रस ३०-३० पल ले एक सेर घृत पकावें यह घृत कास हर और अग्नि दीपक होता है ॥ ३० ॥

कृष्णा धात्री सिताशुण्ठी हिक्काघ्नी मधुसंयुता । हिक्काहरं

हिक्काश्वासीपिवेद्भार्गीसविश्वामुष्णवारिणा॥३१॥श्वासे

पीपल, आमला, शकर, सोंठ का चूर्ण मधु के साथ हिक्का नाशक है। सोंठ, भार्गी का चूर्ण गरम जल से पीना हिक्का और श्वास को नष्ट कर देता है ॥ ३१ ॥

तैलाक्तं स्वरभेदेवा खादिरं धारयेन्मुखे। स्वरभेदे
पथ्यां पिप्पलिकायुक्तां संयुक्तां नागरेण वा ॥ ३२ ॥

स्वरभेद में तैल के साथ खैर का मुंह में रखना या हर्रा,पीपल या हर्रा, सोंठ का रखना हितकर है ॥ ३२ ॥

विडंग, त्रिफला चूर्णं छर्दिहन्मधुनासह।
आम्रजम्बूकषायं वापिवेन्माक्षिक संयुतम् ॥ ३३ ॥ वमने

बिडंग, त्रिफला का चूर्ण मधु से वमन हर है। आम, जामुन छाल का क्वाथ मधु मिला पीना भी वमन नाशक है ॥ ३३ ॥

छर्दि सर्वां प्रणुदति तृष्णाश्चैवापकर्षति। मूर्च्छायाम्
त्रिफला भ्रम मूर्च्छाहृत्पीता सा मधुनापिबा ॥ ३४ ॥

त्रिफला मधु के साथ चाटने से सब प्रकारकी वमन, तृष्णा, भ्रम मूर्च्छा को नष्ठ कर देता है ॥ ३४ ॥

पंचगव्यंहितं पानादपस्मार ग्रहादिनुत्। अपस्मारे
कूष्माण्डक रसो वाज्यं सयष्टिकं तदर्थकृत् ॥ ३५ ॥

गौदुग्ध, दही, मूत्र, गोबर रस, घृत, पंच गव्य कहलाता है इस के पीने से तथा कुम्हेड़े का रस या मोरेठी चूर्ण घृत से खाना यह तीनों योग अपस्मार ग्रह पीड़ा को नष्ट कर देते हैं ॥ ३५ ॥

ब्राह्मी रस, वचाकुष्टशंखपुष्पी भिरेवच।
पुराणं सेव्यमुन्माद ग्रहापस्मारनुद्घृतम् ॥ ३६ ॥

ब्राह्मी रस, वच, कूठ, शंखपुष्पी का चूर्ण पुराने घृत ( १० वर्ष प्राचीन ) से खाना, अपस्मार, उन्माद, ग्रह पीड़ा नाशक हैं ॥ ३६ ॥

अश्वागंधाकषाये च कल्के क्षीरे चतुर्गुणे।
घृतपकंतु वातघ्नं वृष्यं मांसाय पुत्रकृत ॥ ३७ ॥ वृष्ये

असगंध के कल्क और कषाय से और चौगुने दुग्ध से पकाया घृत वात हर, वृष्य, मांस बर्द्धक और पुत्र प्रद होता है ॥ ३७ ॥

नीलीमुण्डीरिका चूर्णं मधु सर्पि समन्वितम । वातरक्ते
छिन्ना क्वाथंपिवन्हन्ति बात रक्तं सुदुस्तरम् ॥ ३८ ॥

नील, मुण्डी का चूर्ण, मधु, घृत से चाट ऊपर से गुडूची क्वाथ का पीना कठिन बात रक्त को नष्ट कर देता है ॥ ३८ ॥

सगुडा पंचपथ्याश्च कुष्टार्शो वात सादना: ।
गुडूची स्वरसंकल्कं चूर्णवा क्वाथ मेववा ॥ ३६ ॥

गुड के साथ पांच हरीतकी का चूर्ण कुष्ट, अर्श बात नाशक है इसी तरह गुडूची रस चूर्ण क्वाथ का सेवन ॥ ३६ ॥

वातरक्तांतक कालागुडूची क्वाथ कल्कत: ।
कुष्टवृणादिशमनं श्रृतमाज्यं सुदुग्धकम् ॥ ४० ॥

मजीठ और गुडुची क्वाथ तथा कल्क से चौगुने दूध के साथ पकाया मजीठ का घृत दुग्ध के साथ कुष्ट वातरक्त एवं व्रणों को नष्ट करता है ॥ ४० ॥

त्रिफलागुग्गुलुर्वातरक्तमूर्च्छापहारकः । उरुस्तम्भे
उरुस्तम्भविनाशाय गोमूत्रेण च गुग्गुलुः ॥ ४१ ॥

त्रिफला, गूगल वातरक्त, मूर्च्छाहर है । गोमूत्र से गूगल का सेवन उरुस्तम्भ नाशक है ॥ ४१ ॥

शुण्ठीगोक्षुरकक्काथः सामवातत्तिशूलनुत् । आमवाते
सोंठ, गुखुरू का क्काथ आमवात की पीड़ा नाशक है ।

दशमूल मृतैरण्डरास्नानागरदारुभिः ।
क्काथोहन्तिमहाशोथं मरीचगुडसंयुतः ॥ शोथे

कासघ्नो मोदकः प्रोक्तस्तृष्णारोचकनाशनः॥४३॥अरोचके

दशमूल, गुडूची, रास्ना, सोंठ, देवदारु का क्वाथ शोथहर है। मिर्च की गुड़ युक्त गोली कास, तृष्णा, अरुचि नाशक है ॥ ४३ ॥

कृष्णाधात्रीसिताशुण्ठीमरीचसैन्धवान्वितः ।

क्वाथ एरंडतैलेन सामं हन्त्यनिलं गुरुम् ॥४४॥ आमहरम्

पीपल, आमला, वच, सोंठ, मिर्च सेंधानमक का क्वाथ एरंड तैल मिला देने से आम वातहर है ॥ ४४ ॥

बलापुनर्नवैरण्डबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।

सहिंगुलवणं पीतं वातशूलविमर्दनम् ॥ ४५ ॥ वातशूले

बला, पुनर्नवा, एरंड, दोनों कंटकारी, गुखुरू का क्वाथ, हींग और लवण के प्रक्षेप के साथ वात शूलहर है ॥ ४५ ॥

त्रिफलानिम्बयष्टीक कटुकारग्वधैःशृतम् ।

पाययेन्मधुनामिश्रं दाहशूलोपशान्तये ॥ ४६ ॥ दाहशूले

त्रिफला, निम्ब छाल, मोरेठी, कुटकी, अमलतास का गूदा का क्वाथ मधु मिला पीने से दाह, शूल नष्ट होता है ॥ ४६ ॥

त्रिफलायः सयष्टीकाः परिणामार्त्तिनाशनाः ।

गोमूत्रशुद्धमंडूरं त्रिफलाचूर्णसंयुतम्॥४७॥ परिणामशूले

विलिहन्मधुसर्पिभ्यां शूलंहान्त त्रिदोषजम्॥४८॥त्रिदोषशूले

त्रिफला, लोह, मोरेठी परिणाम शूलहर है। गोमूत्रमें शुद्ध मंडूर, त्रिफला चूर्ण, मधु, घृत से लेना त्रिदोषज शूल को नष्ट कर देता है ॥ ४७–४८ ॥

त्रिवृत्कृष्णाहरीतक्यो द्विचतुष्पञ्चभागिकाः। मलबन्धे
गुटिकागुडतुल्यास्ता विड्विबन्धगदापहाः॥ ४६ ॥

निशोथ २ भाग, पीपल ४ भाग, हर्रा ५ भाग का चूर्ण बराबर गुड़ मिला गोली बना कर देना मलबन्ध नाशक है ॥ ४६ ॥

हरीतकीयवक्षारपिप्पलीत्रिवृतस्तथा। उदावर्त्ते
घृतैश्चूर्णमिदं पेयमुदावर्त्त विनाशनम् ॥ ५० ॥

हर्रा, यवक्षार, पीपल, निशोथ का चूर्ण घृत के साथ खाना उदावर्त नाशक है ॥ ५० ॥

त्रिवृद्धरीकतकीश्यामाः स्नुहीक्षीरेणभाविताः। आनाहे
बटिकामूत्रपीतास्ताः श्रेष्टाचानाहभेदिका ॥ ५१ ॥

निशोथ, हर्रा, नील, स्नुहीक्षीर से भावित कर गोली बना मूत्र के साथ देने से आनाह नष्ट हो जाता है ॥ ५१ ॥

त्र्यूषणत्रिफलाधान्यविडंगचव्यचित्रकैः। वातगुल्मे
कल्ककृतैघृतं सिद्धं संस्कारं वातगुल्मनुत् ॥ ५२ ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, धनियां, विडंग, चव्य, चित्रक के कल्क से साधित घृत वातगुल्महर होता है ॥ ५२ ॥

मूलं नागर मानीतं सक्षीरं हृदयातिनुत्। हृदयशूले
सौवर्चलंवदर्द्धन्तु शिवानांघृतं पिवेत् ॥ ५३ ॥

नारंगी की जड़ का चूर्ण दूध के साथ पीना या हरड़ का चूर्ण, आधा भाग काला नमक मिला घृत के साथ पीना हृदय शूल को नष्ट करता है ॥ ५३ ॥

कणापाषाणभेदैर्वा शिलाजतुक चूर्णकम् । मूत्रकृच्छ्रे
तुण्डुर्लाभिगुडेनापि मूत्रकृच्छ्रीति जीवति ॥ ५४ ॥

पीपल, पाषाणभेद, शिलाजीत का चूर्ण चौराई के रस और गुड़ से लेने पर मूत्रकृच्छ्र आराम होता है ॥ ५४ ॥

अमृतानागरीधात्री वाजिगन्धात्रिकण्टकाम् । मूत्रकृच्छ्रे
प्रपिवेद्वातरोगार्त्तः सशूलो मूत्रकृच्छ्रवान् ॥ ५५ ॥

गुड़ूची, सेहुँडपत्र, आमला, असगंध, गुखुरू का क्वाथ, वात रोग और शूलयुक्त मूत्रकृच्छ्र को नष्ट कर देता है ॥ ५५ ॥

सितातुल्यो यवक्षारः सर्वकृच्छ्रनिवारणः ।
निदिग्धिकारसोवापिसक्षौद्रः कृच्छ्रनाशनः ॥ ५६ ॥

मिश्री और यवक्षार समभाग का चूर्ण या कटैली का स्वरस मधु मिला पीने से मूत्र कृच्छ्र दूर होते हैं ॥ ५६ ॥

लवणं त्रिफलाकल्कैर्मूत्राघातहरंस्मृतम् । मूत्राघाते
मूत्रे विरुद्धे कर्पूर चूर्णं लिंगे प्रवेशयेत् ॥ ५७ ॥

नमक और त्रिफला चूर्ण मूत्रघात नाशक हैं । कर्पूर लिंग में प्रवेश करने से भी वंद मूत्र खुलता है ॥ ५७ ॥

क्वाथश्चशिग्रुमूलोत्थः कदुष्णोऽश्मनिपातनः । अश्मरीरोगे

सेंजने की जड़ का क्वाथ कुछ गरम २ पीने से पथरी निकल जाती हैं

सर्वमेहहरोधात्र्यरसः क्षौद्रनिशायुतः ।
त्रिफलादारु दार्व्यष्ट क्वाथःक्षौद्रेणमेहहा ॥ ५८ ॥ प्रमेहे

आमले का रस हल्दी और शहद मिलालेने से या त्रिफला, देवदारु, दारुहल्दी, का क्वाथ मधु मिला लेने से सब तरह के प्रमेह नष्ट होजाते हैं ॥ ५८ ॥

अस्वप्नं च व्यवायं च व्यायामश्चिन्तनानिच । स्थौल्यकरं
स्थौल्यमिच्छन्परित्यक्तं क्रमेणाभिप्रवर्द्धयेत् ।। ५९ ।।

जागरण, मैथुन, परिश्रम, चिन्ता, को छोड़ देने से मनुष्य मोटा बन जाता है । यह क्रम से एक दूसरे को बढ़ाते हैं ॥ ५९ ॥

यव श्यामाकभोजी स्यादस्थौल्यकृन्मधुवारिणा ।कृशताकरं
उष्णमन्नं समण्डं वा पिबन्कृशतनुर्भवेत् ।। ६० ।।

जौ, शमा खाने से और मधु मिला पानी पीने से या उष्ण अन्न मांड़ के साथ लेने से स्थूलता नष्ट होजाती हैं ॥ ६० ॥

सचव्य जीरकं व्योषा हिंगुसौबर्चलामलाः ।
मधुनासक्तवः पीता मेदोघ्ना सर्वदीपनाः ॥ ६१ ॥

चव्य, जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, हींग, काला नमक, आमला का चूर्ण मधु के जल में सत्तुओं को घोल उपरोक्त चूर्ण मिला पीने से मेद वृद्धि दूर होकर अग्नि दीपन होती है ॥ ६१ ॥

चतुर्गुणे जले मूत्रे द्विगुणे चित्रकाणि[1] च । उदर रोगे
कल्कैः सिद्धघृत प्रस्थं सक्षीरं जठरी पिबेत् ।। ६२ ।।

चित्रकाणि (चित्रक, दोनों एरण्ड, अग्निमन्थ, शूरण, मुचकुन्द) या चित्रक, कूठके कल्क क्वाथ और चौगुना दुग्ध डाल पकाया घृत देने से उदर रोग नष्ट हो जाता है ॥ ६२ ॥

क्रमबृद्ध्यादशाहानि दशपैप्पिलकम् दिनम् । प्लीहोदरे
वर्द्धयेत्पयसा सार्द्धं तथैवापनयेत्पुनः ॥ ६३ ॥

---

१—चित्रकोत्पले ऐसा भी कहीं २ पाठ है ।

क्षीरषष्टकभोजीस्यादेवं कृष्णासहस्रकम् ।
बृंहणं मुद्गमायुष्यं स्रीहोदर विनाशनम् ॥ ६४ ॥

क्रमवृद्धि से दश दिन तक १-१ पीपल बढ़ा दूध से लेने से और घटाने से २० दिन में १२० पीपलें हो जाती हैं इस प्रकार १० बार घटाने बढ़ाने से १००० पीपलें पेट में पहुँच जाती हैं इस प्रयोग के समय दूध साठी चावल ही खावें या मूंग की दाल ही लेंने से बृंहण होता है और प्लीहोदर नष्ट हो जाता है ॥ ६३-६४ ॥

पुनर्नवा काथकल्कैः सिद्धं शोथहरं घृतम् ।
गवां मूत्रेण संसेव्यं पिप्पली वा पयोन्विताः ॥ शोथरोगे
गुडेनवाभयां तुल्यां विश्व वा शोथरोगिणा ॥ ६५ ॥

पुनर्नवा क्काथ और कल्क से सिद्ध घृत शोथ नाशक है । पीपल गौमूत्र से या दुग्ध से सेवन करना, गुड़, हर्रा, गुड़, सोंठ का सेवन भी शोथ रोग नाशक है ॥ ६५ ॥

तैलमेरण्डजं पीत्वा बलासिद्धं पयोऽन्वितम् । अन्त्रवृद्धौ
आध्मानशूलोपचिता मन्त्रवृद्धिजयेन्नरः ॥ ६६ ॥

बला क्काथ कल्क से सिद्ध अंड का तैल दूध के साथ पीने से आध्मान, शूल संयुक्त अंत्र वृद्धि दूर होती है ॥ ६६ ॥

भ्रष्टोरुवक तैलेन कल्कः पथ्यासमुद्भवः । अंडवृद्धौ
कृष्णासैन्धवसंयुक्तो वृद्धिरोग हरः परः ॥ ६७ ॥

हर्रा चूर्ण अंड तैल में भुना हुआ, पीपल, सेंधा नमक मिला लेने से अंड बृद्धि दूर करता है ॥ ६७ ॥

निगुण्डीमूलनस्येन गंडमाला विनश्यति। कंठमालायाम्
स्नुहीगंडीरिकास्वेदो नाशयेदर्बुदानि च ॥ ६८ ॥ अर्बुदे

संभालू मूल रस के नस्य से गंडमाला दूर होती है। स्नुही, रक्त कचनार के स्वेद से अर्बुद नष्ट होते हैं ॥ ६८ ॥

हस्तिकर्णपलाशस्य गलगंड तु लेपतः।
धत्तूरैरंडनिगुण्डीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः ॥
प्रलेपः श्लीपदं हन्ति चिरोत्थमतिदारुणम् ॥६९॥ श्लीपदे

हस्तिकर्ण पलाश के लेप से गलगंड नष्ट होता है। धत्तूरमूल, अंडमूल, संभालूमूल, पुनर्नवा, सेंजनामूल, सरसों के लेप से पुराना और बढा हुआ श्लीपद ( फीलपांव ) रोग दूर हो जाता है ॥ ६९ ॥

शोभाञ्जनकसिन्धुत्थहिंगु विद्रधि नाशनम ॥७०॥ विद्रधौ

सेंजना छाल, नमक, हींग के लेप से विद्रधि दूर होती है ॥ ७० ॥

शरपुंखामधुयुक्ता स्यात् सर्वव्रणरोपिणी। व्रणे
निम्बपत्रस्य वा लेपः श्वयथुघ्नो व्रणरोपणः ॥ ७१ ॥

शरफोंका चूर्ण मधुयुक्त सब व्रणों का रोपन करता है। इसी प्रकार नींव पत्रों का लेप शोथ को दूर कर व्रण भरता है ॥ ७१ ॥

त्रिफलाखदिरो दार्वी न्यग्रोधो व्रणशोधनः।

त्रिफला, खैर, दारुहल्दी, वटांकुर व्रण शोधन करते हैं।

सद्यः क्षतं व्रणं वैद्यः सशूलं परिषेचयेत्।
यष्टीमधुक युक्तेन किञ्चिदुष्णेन सर्पिषा ॥७२॥ सद्यःक्षते

हाली क्षत और व्रणों को जिनमें शूल होता हो उन्हें मोरेठी चूर्ण और घृत मिला गरम २ सेंक दें ॥ ७२ ॥

बुद्ध्वागन्तुव्रणान्वैद्योघृत क्षौद्रसमन्विताम् ।आगन्तुजव्रणे
शीतां क्रियां प्रयुञ्जीत पित्तरक्तोष्मनाशिनीम् ॥ ७३ ॥

आगन्तु व्रणों में वैद्य शीत क्रियायें जो पित्त और रक्त की उष्मा को हरण करने वाली हों करें और घृत, मधु भरें ॥ ७३ ॥

क्वाथो वंशत्वगेरण्डाश्वदंष्ट्रावनिदाकृतः । कोष्ठस्थरक्ते
सहिंगुसैन्धवः पीतः कोष्टस्थंस्रावयेदसृक् ॥ ७४ ॥

वांस की छाल, एरंड बीज, गुखुरू, खैर छाल का क्वाथ, हींग, सैंधानमक डाल पीने से पेट में जमा रक्त निकल जाता है ॥ ७४ ॥

यवकोलकुलत्थानां निःस्नेहेन रसेन वा ।
भुंजीतान्नं यवाग्वा वा पिवेत्सैंधवसंयुतम् ॥ ७५ ॥

जौ, वेर, कुलथो का यूष या यवागू, बिना घृत के सैंधानमक मिला पिलाना ॥ ७५ ॥

करञ्जारिष्टनिगुण्डीरसो हन्याद्व्रणक्रमीन् ॥ ७६ ॥
व्रणक्रमिहरम्

करंज छाल, नीम छाल, निगुण्डी छाल के क्वाथ से धोने से घाव के कीड़े नष्ट हो जाते हैं ॥ ७६ ॥

त्रिफला चूर्ण संयुक्तो गुग्गुलर्वटकीकृतः ।
निर्यन्त्रणो विवन्धघ्नो व्रणशोधनरोपणः ॥७७॥ विवंधे

त्रिफला चूर्ण के समान गूगल मिला गोली बना खाना विवंध हर होता है, स्तम्भन नाश करता है और व्रणो को शोधन व रोपण करता है ॥ ७७ ॥

दूर्वास्वरससिद्धं वा तैलं कम्पिल्लकेन वा ।
दार्वीत्वचश्चकल्केन प्रधानं व्रणरोपणम् ॥७८॥ व्रणरोपणे

कबीला, दारुहल्दी छाल कल्क, दूर्वा रस से सिद्ध तैल व्रण रोपण में प्रधान होता है ॥ ७८ ॥

इतिश्री गारुड़े महापुराणे सप्तत्यधिक शततमोऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥

---

धन्वन्तरि रुवाच ।

नाड़ी व्रणादि रोगाणां चिकित्सां श्रृणु सुश्रुत । नाड़ीव्रणे
नाड़ी शस्त्रेण संपाट्य नाड़ीनां व्रणवत्क्रिया ॥ १ ॥

धन्वन्तरि जी कहने लगे । हे सुश्रुत नाड़ी व्रण की चिकित्सा सुनो । शस्त्र से नाड़ी को चीड़ व्रण की चिकित्सा करें ॥ १ ॥

गुग्गुलु त्रिफला व्योषैः समांशैराज्ययोजितैः ।
नाड़ी दुष्ट व्रणं शूलं भगंदरमथोजयेत् ॥ २ ॥ भगंदरे

गूगल, त्रिफला, त्रिकुटा समान भाग लें घृत में पिलावे यह गूगल, नाड़ी व्रण, दुष्ट, व्रण शूल, और भगन्दर को नष्ट कर देता है ।२

निगुण्डी रस तस्तैलं नाड़ी दुष्ट व्रणापहम ।
हितं पामामयानांतु पानाभ्यञ्जननावनैः ॥ ३ ॥

निगुण्डी रस से पकाया तैल नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण, नाशक होता है पामा (खुजली हर है) पान मर्दन नस्य से ॥ ३ ॥

गुग्गुल त्रिफला कृष्णा त्रिपंचैकांशयोजिता ।
गुटिकाशोथगुल्मार्शोभगंदरवतांहिता ॥ ४ ॥

गूगल, त्रिफला, पीपल, को तीन पांच, एक भाग ले गोली बनाले यह शोथ, गुल्म, अर्श भगंदर, के लिये उत्तम है ॥ ४ ॥

ध्वजमध्ये शिरा वेधे विशुद्धि रुपदंशके । उपदंशे
पाकोरक्ष्यः प्रयत्नेन शिश्नक्षयकरोहिसः ॥ ५ ॥

उपदंश में लिंग मध्य की शिरा वेध करने से शुद्धि होती है पाक न होने दे यह लिंग नाश कर देता है ॥ ५ ॥

पटोल निम्ब त्रिफला गुडूची काथ मापिबेत् ।
सगुग्गुलं सखदिर मुपदंशो विनश्यति ॥ ६ ॥

परवर पत्र, निम्ब छाल, त्रिफला, गुडूची, का काथ, गूगल, खदिर का प्रक्षेप दे पीने से उपदंश नष्ट होता है ॥ ७ ॥

दहेत्कटाहे त्रिफलां सामर्सीं मधुसंयुतां ।
उपदंशे प्रलेपोऽयं सद्योरोपयते व्रणम् ॥ ७ ॥

त्रिफला को कड़ाहीमें जला कर राख करलें इसे पीस मधु मिला उपदंश व्रणों पर लेप करने से व्रण जल्द भर जाते हैं ॥ ७

त्रिफला निम्ब भूनिम्ब करञ्ज खदिरादिभिः ।
कल्कैः काथै घृतं पकमुपदंशहरं परम् ॥ ८ ॥

त्रिफका, नींबछाल, चिरायता, कंजाछाल, खदिरछाल के कल्क क्काथ से पकाया घृत उपदंशहर होता है ॥ ८ ॥

आदौ भग्नं विदित्वा तु सेचयेच्छीतलाम्बुना । भग्ने
पंकैरालेपनं कुर्य्याद्बन्धनंच कुशान्वितम् ॥ ९ ॥

प्रथम भग्न स्थान को देख कर ठंडे जल से सेचन करें मिट्टी का लेप कर कुशों से बांध दे ॥ ९ ॥

माषं मासं तथा सर्पिः क्षीरं यूषं सतीनजः ।

बृंहणं चान्नपानं स्यात्प्रदेयं भग्न रोगिणे ॥ १० ॥ भग्ने

भग्न रोगी को उरद, मांस, दूध, घृत, मटर का यूष बल कारक अन्न पान देना चाहिये ॥ १० ॥

रसोन मधुना साज्यसिताकल्क समश्नुता ।

छिन्नभिन्नच्युतास्थीनां संधानमचिराद्भवेत् ॥ ११ ॥

लहसुन मधु घृत मिश्री से खाने पर टूटी, फटी, उतरी हड्डी शीघ्र जुड़ जाती है ॥ ११ ॥

अश्वत्थ त्रिफलाव्योषाः सर्वेरेभिःसमीकृतैः ॥

तुल्यो गुग्गुलुना योऽयोभग्नसंधिप्रसाधकृत ॥ १२ ॥

पीपल छाल, त्रिफला, त्रिकुटा के समान गूगल मिला खिलाने से भग्न जुड़ जाता है ॥ १२ ॥

सर्वं कुष्टेसु वमनं रेचनं रक्त मोक्षणम् ।

वचावासापटोलानां निम्बस्य फलिनीत्वचः ॥१३॥ कुष्टे

कषायोमधुना पीतो वातहृन्मदनान्वितः ।

विरेचनं प्रयोक्तव्यं त्रिवृत्कर्णफलत्रिकैः ॥ १४ ॥

समस्त कुष्ट रोगों में वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण दें। बच, अडूसा, परवलपत्र, नीब, कटुतुम्बी, दालचीनी का क्वाथ, मैनफल, मधुमिला देने से वमन लाता है। विरेचन के लिये निशोथ, दालचीनी, त्रिफला का क्वाथ देना चाहिये ॥ १४ ॥

मनः शिलामरीचैस्तु तैलं कुष्टविनाशनम् ।
सर्वकुष्टे विलेपोऽयं शिवापञ्चगुडौदनम् ।। १५ ।।

मनसिल, मिर्च का तैल कुष्टहर है। समस्त कुष्टों में इसे लगावें। हर्रा ५ खाकर गुड़, भात खाना ॥ १५ ॥

करंजैडगजैः कुष्टं गोमूत्रेण प्रलेपतः ।
कर वीरोद्वतंनं च तैलाक्तस्य च कुष्टहृत् ।। १६ ।।

करंज मींग, चकवड़ बीज, गोमूत्र में पीस लेप करना, कनेर का उबटन, तैल लगाना कुष्टहर होता है ॥ १६ ॥

हरिद्रामलकं रास्ना गुडूच्येडगजस्तथा ।
आरग्वधः करंजश्च लेपः कुष्टहरः परः ।। १७ ।।

हल्दी, आमला, रास्ना, गुडूची, चकवड बीज, अमलतासपत्र, करंज मींग का लेप कुष्ट नाशक है ॥ १७ ॥

मनः शिला विडंगानि वागुजी सर्षपास्तथा ।
करञ्जैमू त्रपिष्टोऽयं लेपः कुष्टहरोऽकवत् ।। १८ ।।

मनसिल, विडंग, वाकुची; सरसों, करंजमींग को गोमूत्र में पीस लेप करना सूर्यके समान गुड़कारी है। सूर्य धूपमें उष्ण जलकर के स्नान से भी कुष्ट दूर होता है। सूर्य का सम्बन्ध कुष्टहर है, अत सूर्य्योपासेनादि कुष्टहर है ॥ १८ ॥

विडंगैडगजाकुष्टनिशासिन्धूत्थ सर्षपैः ।
मूत्राम्लपिष्टो लेपोऽयं दद्रूकुष्टविनाशनः ।। १६ ।। दद्रौ

विडंग, चकवड, कूठ, हल्दी, सेंधानमक, सरसों को गोमूत्र या कांजी में लेप करने से दाद, कुष्ट नष्ट होते हैं ॥ १६ ॥

प्रपुन्नाटसुबीजानि धात्रीसर्जरसः स्नुही ।

सौवीर पिष्टं दद्रूणांमेतदुद्वर्तनं परम् ॥ २० ॥

पमार के बीज, आमला, राल, सेंहुड़ के पत्ते सिरके में पीस लगाने से दाद दूर हो जाता है ॥ २० ॥

आरग्वधस्यपत्राणि आरनालेन पेषयेत् ।

दद्रूकिटिभकुष्टानि हन्तिसिध्मान मेवच ॥ २१ ॥

अमलतास के पत्तों को कांजीमें पीस लेप करने से दाद, उकौता, बमरफ दूर होते है ॥ २१ ॥

उष्णा पीता वागुजी च कुष्टजित्क्षीर भोजनः ।

तिलाज्यत्रिफला क्षौद्र व्योषभल्लातशर्कराः ॥

वृष्या सप्तसमामेध्याः कुष्टहा कामचारिणः ॥ २२ ॥

गरम २ बाकुची का क्वाथ पीना और केवल दुग्धाहार पर रहने से कुष्ट नष्ट हो जाता है । तिल, घृत, मधु, त्रिफला, त्रिकुटा, भिलावा मींग, शकर ये सातों समान भाग ले सेवन करने से कुष्ट नष्ट होता है, यह वृष्य, मेध्य, कामवर्द्धक भी है ॥ २२ ॥

विडङ्गत्रिफलाकृष्णाचूर्णं लीढं समाक्षिकम् ।

हन्तिकुष्टकृमिमेहनाड़ीव्रणभगन्दरान् ॥ २३ ॥

विडंग, त्रिफला, नील का चूर्ण मधु से खाने से कुष्ट, कृमि, प्रमेह, नाड़ीव्रण, भगंदर दूर होते हैं ॥ २३ ॥

यः खादेदभयारिष्टमरिष्टामलकीनिशाः ।

सजयेत्सर्वकुष्टानि मासादूर्ध्वं न संशयः ॥ २४ ॥

जो मनुष्य हर्रा, नीमपत्र, रीठा के पत्र, आमला, हल्दी को खाता है, वह एक मास में कुष्ट से छुटकारा पा जाता है ॥ २४ ॥

दह्यमानायुतः कुम्भे मूलगो खदिरांकुरः ।
साक्षधात्रीरसः क्षौद्र हन्यात्कुष्टं रसायनम् ॥ २५ ॥

जड़ में पैदा हुये खदिर वृक्ष के दस हजार अंकुरों को घड़े में भर जला दें, इस राख को बहेड़ा और आमलारस, मधु में मिला रखें, यह रसायन है और कुष्ट नाश करती है ॥ २५ ॥

धात्रीखदिरयोः क्वाथं पीत्वा वाकुचिसंयुतम् ।
शंखेन्दुधवलंकुष्टं हन्तितूर्ण न संशयः ॥२६॥ श्वेतकुष्टे

कत्था, आमला का क्वाथ वाकुची चूर्ण एक माशा डाल पीने से श्वेत कुष्ट निःसंदेह नष्ट हो जाता है ॥ २६ ॥

पीत्वाभल्लातकं तैलं मासाद् व्याधिंजयेन्नरः ।
सेवितं खादिरं वारि पानाद्यैः कुष्टजिद्भवत् ॥ २७ ॥

भिलावे का तैल पीने से और कत्थे का पानी पीने, नहाने आदि से एक मास में कुष्ट नष्ट हो जाता है ॥ २७ ॥

भावितं मलपूक्वाथैः सोमराजीफलंवहुः ।
कर्षं भक्षेदलवणोह्यक्षफल्गुश्रृतं पिवेत् ॥
हन्तिश्वित्रसमसाध्यं च लेपेयोऽप्यापराजिता ॥ २८ ॥

कठूमर के क्वाथ से २१ बार भावित किया हुआ वाकुची का चूर्ण १ तोला खावें और पीने आदि में वहेड़ा, कठूमर छाल का पकाया पानी पीवें, नमक न खावें, चट्टों पर नील कोयल का लेप करने से असाध्य श्वेत कुष्ट भी नष्ट हो जाता है ॥ २८ ॥

वासा शुद्धा च त्रिफला पटोलंचकरंजकम् ॥ २६ ॥
निम्बाशनं कृष्णवेत्रं क्राथकल्केनयद्घृतम् ॥
वज्रकंतद्भवेत्कुष्टं शतवर्षाणिजीवति ॥ ३० ॥

अडूसा, इन्द्रयव, त्रिफला, परवल पत्र, करंज पत्र, नीमपत्र, विजैसारपत्र, रसौत, वेंत केपत्ते इनके क्राथ कल्क से सिद्ध घृत, कुष्टहर होता है। इसको खाने वाला सौ वर्ष जीवित रहता है ॥ ३० ॥

स्वरसेन च दूर्वायाः पचेत्तैलंचतुर्गुणम् ।
कच्छूविचर्चिकापामा अभ्यङ्गादेवनश्यति ॥ ३१ ॥

चौगुना दूर्वास्वरस ले कर तैल पकालें यह तैल मलने से कच्छू पामा, विचर्चिका दूर होती हैं ॥ ३१ ॥

द्रुमत्वगर्क कुष्टानि लवणानिचमूत्रकम् ।
गंभारिका चित्रकैस्तैस्तैलं कुष्टव्रणादिनुत ॥३२॥

अमलतास छाल, आक, कूठ, पांचो नमक, आठो मूत्र, गंभारी-छाल, चित्रकछाल, के कल्क को डाल पकाया तैल व्रण और कुष्ट को नष्ट कर देता है ॥ ३२ ॥

## अम्ल पित्त चिकित्सा

धात्रीनिम्बफलं तद्वद्गोमूत्रेण च चित्रकम् ।
वासामृता पर्पटिका निम्बभूनिम्बमार्कवैः ॥
त्रिफला कुलत्थकैः काथः सक्षौद्राम्लपित्तहा ॥ ३३ ॥

आमला, नीम के फल, चित्रक का चूर्ण गोमूत्र से या अडूसा, गुर्च, पित्तपापड़ा नींमछाल, चिरायता, भमरा, त्रिफला, कुलथी का क्राथ मधु मिला देना अम्लपित्त नाशक होता है ॥ ३३ ॥

फलत्रिकं पटोलं च तिक्ताक्काथः सितायुतः ।

पीतोयष्टीमधुयुक्तो ज्वरच्छद्यम्लपित्तजित् ॥ ३४ ॥

त्रिफला, परवर, कुटकी, का क्वाथ मोरेठी चूर्ण, शकर, मधु मिला देने से ज्वर, वमन, अम्लपित्त दूर होते हैं ॥ ३४ ॥

वासाघृतं तिक्तघृतं पिप्पलीघृत मेव च ।

अम्लपित्ते प्रयोक्तव्यं गुड़कूष्माण्डकंतथा ॥ ३५ ॥

वासाघृत, तिक्तघृत, पिप्पलीघृत, गुडकूष्माण्ड, अम्लपित्त में प्रयोग करें ॥ ३५ ॥

पिप्पली मधुसंयुक्ता अम्लपित्त विनाशिनी ।

श्लेष्माग्निमान्द्यनुत्पथ्या पिप्पली गुड़मोदकः॥३६॥अग्निमांद्ये

शहद के साथ पीपलअम्लपित्त नाशक है । हर्रा, पीपल, का दूने गुड़ के साथ बनाया मोदक देना कफ, अग्नि मांद्य हर होता है ॥ ३६ ॥

पिष्ट्वाजाजीं सधन्याकां घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।

कफपित्तारुचिहरं मंदानलवमिं हरेत् ॥ ३७ ॥ वमने

धनियां, कालाजीरा, पीसकर एक सेर घृत पकालें यह कफ, पित्त, अरुचि, मंदाग्नि, वमन, नाशक है ॥ ३७ ॥

पिप्पल्यमृतभूनिम्ब वासकारिष्ट पर्पटैः । विस्फोटे

खदिरारिष्टकैः क्वाथो विस्फोटातिज्वरापहः ॥ ३८ ॥

पीपल, गुडूची, चिरायता, अडूसा, रीठा पित्तपापरा, खदिर-छाल, नींमछाल, का क्वाथ फोड़ा युक्त ज्वर नाशक है ॥ ३८ ॥

त्रिफलारस संयुक्तं सर्पिस्त्रिवृतयासह । विसर्पे

प्रयोक्तव्यं विरेकार्थं विसर्पज्वर शान्तये ॥ ३९ ॥

त्रिफला क्वाथ घृत, निशोथ चूर्ण के साथ विरेचन देने के लिये दें यह विसर्प युक्त ज्वर नष्टकरता है ॥ ३९ ॥

खदिरा त्रिफलारिष्ट पटोलामृतवासकैः। मसूरिकायाम्

क्वाथोऽष्टकाख्यो जयति रोमांतिकमसूरिकाम् ॥ ४० ॥

खदिर, त्रिफला, नींमछाल, पटोल, गुर्च, अडूसा, यह खदिराष्टक क्वाथ रोमान्ति का माता ( चेचक ) नाशक हैं ॥ ४० ॥

कुष्टविसप विस्फोट कण्डूवादीनां विघातकः।

लशुनानांतु चूर्णस्य घर्षोमशक नाशनः ॥ ४१ ॥

कुष्ट, विषर्प फोड़ा, कंडू, मसा को नष्ट करने के लिये लहसुन का मर्दन उत्तम हैं ॥ ४१ ॥

चर्मकीलं जतुमणिं मशकांस्तिलकालकान्। चर्मकीलादौ

उत्कृत्यशस्त्रेण दहेत्क्षाराग्निभ्यामशेषतः ॥ ४२ ॥

चर्मकील, जतुमणि ( लालमंडल ) मसा, तिल इनको शस्त्र से काटकर अग्नि या क्षार से जला देना चाहिये ॥ ४२ ॥

पटोलनीलीलेपः स्याज्जालगर्दभरोगनुत्। जालगर्दभे

परवर मूल, नीलमूल का लेप जालगर्दभ ( एक प्रकार की सूजन जो विसर्प के समान चलती है इसमें ज्वर होता है ) नष्ट होता है ॥

गुञ्जाफलैःश्रृतं तैलं भृङ्गराजरसेनतु। दारुणरोगे

कण्डुदारुणहृत्कुष्टवातव्याधिविनाशनम् ॥ ४३ ॥

लालगुञ्जा का कल्क और भृंगराज रस से पकाया तैल, खुजली युक्त शिर के फयांस को व कुष्ट, वात रोग को नष्ट करता है ॥ ४३ ॥

×आम्रास्थिमज्जात्रिफला ×नीलाक्षो भृङ्गराजकम्।

जीर्णोपक्वेलोहचूर्णं काञ्जिकं कृष्णकेशकृत ॥ ४४ ॥

केशकृष्णीकरणम्

---

केचित्स्थले ×अर्कास्थि ×नीलाक्षा

आम की गुठली, त्रिफला, नील सत्व, बहेड़ा, घमरा, लोहचूर्ण कांजी के साथ पीस पकावें, लेप करने से बाल काले होते हैं ॥ ४४ ॥

क्षीरात्सशर्करररसाद्विप्रस्था मधुकात्पले ।
तैलस्यकुडवं पक्वं तन्नस्यं पलितापहम् ॥ ४१ ॥

गौ का दूध, शकर का रस १-१ सेर, मोरेठी १ पल, तिल तेल ऽ॥ पका नस्य लेने से सफेद बाल काले हो जाते है ॥ ४५ ॥

मुखरोगेतु त्रिफलागण्डूषपरिधारणम् । मुखपाके

मुख पाक में त्रिफला क्वाथ का गण्डूष धारण करना हितकर है ।

गृहधूम यवक्षारपाठव्योषरसाञ्जनम् ।
तेजांदं त्रिफलालोध्रं चित्रकं चेति चूर्णितम् ॥ दन्तरोगे
सक्षौद्रंधारयेद्वक्रे ग्रीवादन्तास्यरोगनुत् ॥ ४७ ॥

घर का धुवां यवक्षार, पाठा, त्रिकुटा, रसोत, तेजवलबीज, त्रिफला, लोध, चित्रक चूर्ण की मधु से गोली बना मुख में रखना, मुख ग्रीवा, दन्त रोगों को नष्ट करती है ॥ ४७ ॥

पटोल निम्बजाम्बाम्र मालतीनवपल्लवा । पंचपल्लवम्
पंचमपल्लवकः श्रेष्टः कषायोमुखधावने ॥ ४८ ॥

पटोल, नींब, जामुन, आम, मालती की कोंपल पंच पल्लव कहलाते हैं, यह मुख धोने के लिये उत्तम हैं ॥ ४८ ॥

लशुनाद्रकशिग्रूणां पारुल्या मूलकस्य च । कर्णरोगे
रुदन्त्याश्च रसः श्रेष्टः कदुष्णः कर्ण पूरणे ॥ ४६ ॥

लहसन, अदरख, सेंजना, पाटला, मूली तथा रुद्रवन्ती का रस प्रत्येक गरम कर कान में डालने से दर्द बन्द करता है ॥ ४६ ॥

तीव्रशूलोत्तरे कर्णे सशब्दे क्लेदवाहिनि ।
बस्तमूत्रं क्षिपेत्कोष्णं सैन्धवेनावचूर्णितम् ॥ ५० ॥

तीव्रशूल वाले शब्द होने वाले या पीव बहने वाले कान में बकरे का मूत्र, सेंधानमक मिला गर्म कर डालें ॥ ५० ॥

जातीपत्ररसे तैलं पक्वं पूतिकर्णजित् ।
शुण्ठी तैलं सार्षपं च कोष्णं स्यात्कर्णशूलनुत् ॥ ५१ ॥

चमेली पत्र रस से सोंठ कल्क डाल पकाया सरसों का तेल गरम कर डालने से कर्णशूल दूर होता है ॥ ५१ ॥

पंचमूलीशृतंक्षीरं स्याच्चित्रकहरीतकी ।
सर्पिगु डषडंगश्च यूषः पीनसशान्तये ॥ ५२ ॥ पीनसे

पंचमूल साधित दुग्ध, चित्रकहरीतकी, षडंग यूष, गुड़, घृत युक्त पीनस नष्ट करते हैं ॥ ५२ ॥

अक्षिकुक्षिभवारोगा प्रतिश्यायव्रणज्वराः । प्रतिश्याये
पंचैते पंचरात्रेण प्रशमं यांति लंघनात् ॥ ५३ ॥

नेत्र रोग, पेट के रोग, प्रतिश्याय, व्रण, ज्वर यह पांचो पांच दिन रात्रि के लंघन से नष्ट हो जाते हैं ॥ ५३ ॥

धात्रीरसानां च दृशः कोपं हरति पूरणात् ।
सक्षौद्रः सैन्धवो वाऽपि शिग्रुदार्वी रसाञ्जनम् ॥ ५४ ॥ नेत्ररोगे

आमलों का रस या सेंजनारस, दारुहल्दी, रसोत, सेंधानमक, मधु के साथ आंख आने को दूर कर देते हैं ॥ ५४ ॥

हरिद्रादारु सिन्धूत्थपथ्याञ्जनसगैरिकैः ।
पिष्टैर्दत्तोवहिर्लेपो नेत्रव्याधि निवारकः ॥ ५५ ॥

हल्दी, दारुहल्दी, सेंधा नमक, हर्रा, रसोत, गेरु, को पीस पानी में मिला गरम कर आंख के बाहर किया लेप नेत्र रोग हर है ॥ ५५ ॥

घृतभ्रष्टाभयालेपात्त्रिफला क्षीर संयुता ।
शुण्ठी निम्बदलैः पिष्टैः सुखोष्णैः स्वल्प सैन्धवैः ॥५६॥
धार्य्यश्चक्षुषि संक्षेपाच्छोथकण्डूरुजापहः ।

घृत में भुनी हरड का लेप या त्रिफला का दुग्ध युक्त लेप, सोंठ नीबपत्र का लेप थोड़ा सेंधा नमक मिला गरम २ लगाने से नेत्र, शूल, खुजली, सूजन दूर हो जाते हैं ॥ ५६ ॥

अभयाक्षामृतं चैकद्वि चतुर्भागिकं युतम् ।
मध्वाज्यलीढं क्वाथो वा सर्व नेत्र रुगर्दनम् ॥ ५७ ॥

हर्रा, बहेड़ा, आमला, १–२–४ भाग मिला मधु, घृत से खाना और क्वाथ से धोना सर्व नेत्र रोग हर है ॥ ५७ ॥

चंदन, त्रिफला, पूग पलाशतरुमूलकैः ।
जल पिष्टैरियं वर्त्तीरशेषतिमिरापहा ॥ ५८ ॥ तिमिरे

चन्दन, त्रिफला, सुपारी, ढांक मूल, जल से पीस वर्त्ती बना लगाने से तिमिर दूर होता है ॥ ५८ ॥

दध्नाति घृष्टं मरिचं रात्र्यान्ध्यापहमञ्जनम् । रात्र्यन्धे

दही में मिर्च घिस कर लगाने से रतोंधी अच्छी होती है । ५८

त्रिफला क्वाथ कल्काभ्यां सपयस्कं श्रृतं घृतं ।
तिमिराण्यचिराद्धन्त्यापीतमेतन्निशामुखे ॥ ५६ ॥

त्रिफला, क्वाथ, व कल्क से और गोदुग्ध से साधित घृत रात्रि में खाने से तिमिर नष्ट करता है ॥ ५९ ॥

पिप्पली त्रिफला द्राक्षा लोह चूर्णं ससैन्धवम् ।
भृङ्गराज रसैर्घृष्टं गुडिकाञ्जनमिष्यते ॥ ६० ॥
आन्ध्यं सतिमिरं काचं हन्त्यन्यान्नेत्ररोगकान्॥६१॥काचे

पीपल, त्रिफला, दाख, लोह चूर्ण, सेंधा नमक, भंगरे के रस में घोट गोली बना लगाने से अंधता, तिमिर, काच ( मोतिया ) और अन्य सभी नेत्र रोगों को यह दूर करता है ॥ ६१ ॥

त्रिकटु त्रिफला नक्त सैन्धवं च मनःशिलाः ।
रुचकं शंखनाभिश्च जाती पुष्पाणि निम्बकम् ॥ ६२॥
रसाञ्जनं भृंगराजं घृतं मधुपयस्तथा ।
एतत्पिष्टा च वटिका सर्व नेत्र रुगर्दिनी ॥ ६३ ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, हल्दी, सेंधा नमक, मनसिल, काला नमक शंखनाभि, चमेली पुष्प, नीम फल, रसोंत भंगरा, को पीस घृत, मधु वा दुग्ध में पीस गोली बना लगाने से समस्त नेत्र रोगदूर होते हैं ॥६३

दग्धमेरंडकं मूलं लेपात्कांजिकपेषितम् । शिरोरोगे
शिरोऽर्त्तिनाशयत्याशु पुष्पं वा मुचुकुन्दजम् ॥ ६४ ॥

पोदीना, एरण्ड मूल, कांजी में पीस लेप करने से या मुचुकुन्द के फूलों का लेप करने से शिर पीड़ा दूर होती है ॥ ६४ ॥

शतमूल्यैरंडमूल चक्रा व्याघ्रीपलैःश्रृतम् ।
तैल नस्यमरुत् श्लेष्मतिमिरोध्वंगदापहम् ॥ ६५ ॥

शतावरी, एरण्डमूल, सुदर्शन मूल, कटैली मूल जटामांसी से बनाये तैल के नस्य से बात, कफ, तिमिर, शिर रोग दूर होते हैं ॥ ६५ ।

नावनं सगुडं विश्वं पिप्पली वा ससैन्धवाः ।
भुजस्तम्भादि रोगेषु सर्वेषूर्ध्वगदेषु च ॥ ६६ ॥ भुजस्तम्भे

गुड़, सोंठ, पीपल, सेंधा नमक का नस्य भुजस्तम्भ, और समस्त शिर के रोगों को नष्ट कर देता है ॥ ६६ ॥

सूर्य्यावर्त्ते विधातव्यं नस्यकर्मादिभेषजम्
दशमूलीकषायंतुसर्पिः सैन्धवसंयुतम् ॥
नस्यमंगविभेदघ्नं सूर्य्यावर्त्त शिरोऽतिनुत्॥६७॥सूर्य्यावर्त्ते

सुर्य्यावर्त्त रोग में नस्य कर्म करें दश मूल क्वाथ में पकाया घृत सेंधा नमक मिला नस्य देने से सूर्य्यावर्त्त अग पीड़ा शिर पीड़ा दूर होती है ॥ ६७ ॥

दध्नासौवर्चलाजाजी मधूकं नीलमुत्पलम् ।
पिवेत्क्षौद्रयुतं नारी वातासृग्दरपीड़िता ॥ ६८ ॥ प्रदरे

सेंधानमक, जीरा, मोरेठी, नील कमल चूर्ण दही के साथ मधु मिला पीने से वातज प्रदर दूर होता है ॥ ६८ ॥

वासकस्वरसं पैत्ते गुडूच्यारसमेववा ।
जलेनामलकीवीजं कल्कं वा ससिता मधु ॥ ६९ ॥
आमलक्या मधुरसं मूलंकार्पासमेववा ।
पाण्डुप्रदरशान्त्यर्थं पिवेत्तण्डुलवारिणा ॥ ७० ॥

पित्तज प्रदर में अडूसे का रस या गुडूची स्वरस या आमले के बीज पानी में पीस मधु, मिश्री मिला लेना । आमला, मोरेठी, कपास मूल चांवल धोवन से पीने पर पांडु रोग और प्रदर नष्ट होता है ॥७०॥

तण्डुलीयकमूलंतु सक्षौद्रं सरसाञ्जनम् ।
तण्डुलोदकसंपीतं सर्वांश्चासृग्दराञ्जयेत् ॥ ७१ ॥

चौलाई की जड़, रसोत चावल धोवन के साथ पीस छान मधु मिला पीने से सब प्रकार के प्रदर शान्त होते हैं ॥ ७१ ॥

कुशमूलं तण्डुलाद्भिः पीतं चासृग्दरं जयेत् ॥

कुशकी जड़ चावल धोवन में पीस पीने से रक्तज प्रदर नष्ट होता है ।

गरुड़पुराणोक्त रोगचिकित्सायां सप्तत्यधिक शततमोऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चुड़ामणि पं॰ विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥

---

धन्वन्तरिरुवाच

स्त्रीरोगादिचिकित्सां च वक्ष्ये सुश्रुत तच्छृणु ।
योनिव्यापत्सु भूयिष्टं शस्यते कर्मवातजित्॥ ॥ योनिरोगे

धन्वन्तरि जी कहने लगे—स्त्री रोगों की चिकित्सा कहते हैं—हे सुश्रुत सुनो योनि व्यापत रोगों में वातघ्न कर्म करें ॥ १ ॥

वचोपकुञ्चिकाजातीकृष्णावासकसैन्धवम् ।
अजमोदा यवक्षारं चित्रक शर्करान्वितम् ॥ २ ॥
पिष्ट्वालोड्य जलाद्यैश्च खादयेद्घृतभर्जितम् ।
योनिपार्श्वार्त्तिहृद्रोगगुल्मार्शो विनिवर्त्तयेत् ॥ ३ ॥

वच कलौंजी, जावित्री, पीपल, अडूसा, सेंधानमक, अजवायन, यवक्षार, चीतामूल शकर के साथ ।

पानी या दूध में घोल घृत से भून देने से योनि, पसली की पीड़ा, हृदय रोग, गुल्म, अर्श दूर होते हैं, यह हरीरा की तरह का बना कर दिया जाता है ॥ ३ ॥

वदरीपत्रसंलेपाद्योनिर्भिन्ना प्रशाम्यति ।
लोध्रतुम्बीफलालेपाद्योनेर्दाढ्यं करोति च ॥ ४ ॥

बेर के पत्तों के लेप से विदीर्ण योनि ठीक हो जाती है । लोध और तुम्बीफल ( तोमी का गूदा ) के लेप से योनि संकुचित हो जाती है ॥ ४ ॥

पंचपल्लवपिष्ट्वाह्व मालतीकुसुमैर्घृतम् ।
रविपक्वमसृग्धारं योनिगन्धविनाशनम् ॥ ५ ॥

पंच पल्लव, बबूल पत्र, मालती पुष्प के कल्क से ताम्र पात्र में रविवार के दिन पकाया घृत योनि से वहने वाले रक्त को और योनि दुर्गन्ध को बन्द करता है ॥ ५ ॥

सकाञ्जिकं जपापुष्पं पुष्पंज्योतिष्मतीदलं ।
दूर्वापिष्टं च संप्राश्य चित्रकं शर्करान्वितम् ॥ ६ ॥
धान्यञ्जनाभयाचूर्णं तोयपीतं रजोहरेत् ।

कांजी के साथ गुडहल के फूल या मालकंगुनी के पत्र या दूर्वा कल्क वा चित्रकमूल चूर्ण शर्कर युक्त या आमला, रसोत, हर्रा का चूर्ण जल से पीने से रज नष्ट होता है ॥ ६ ॥

सुदुग्धा लक्ष्मणा पीता नस्याद्वा पुत्रदा ऋतौ ॥ ७ ॥

दूध के साथ लक्ष्मणा पीने से या नस्य लेने से ऋतु समय में पुत्र पैदा होता है ॥ ७ ॥

दुग्धस्याढ्काढकं चाज्यमश्वगंधा च पुत्रदा ।
वन्ध्यापुत्रं लभेत्पीत्वा घृतेन त्र्यूषकेशरम् ॥ ८ ॥

दो सेर दूध घृत, असगंध मिला पीना पुत्रप्रद है । घृत के साथ त्रिकुटा, नागकेशर पीने से वन्ध्या भी पुत्र पाती है ॥ ८ ॥

कुशकासोरुबूकाणां मूलैर्गोक्षुरकस्य च ।
शृतं दुग्धं सितायुक्तं गर्भिण्याः शूलनुत्परम् ॥ ६ ॥

कुशमूल, काश, एरण्डमूल, गुखुरूमूल से पकाया दुग्ध मिश्री मिला पिलाने से गर्भिणी का शूल दूर होता है ॥ ६ ॥

पाठालांगलि सिंहास्य मयूरकुटजैः पृथक् ।
नाभिवस्तिभगालेपात्सुख नारीप्रसूयते ॥ १० ॥

पाठा, करियारी या ( गुलावांस ) अडूसा, अपामार्ग, कुटज मूलका नाभि भग पर किया लेप शीघ्र प्रसव कर होता है ॥ १० ॥

सूतायाहृच्छिरोवस्तिशूलमक्कल्लसंज्ञितम् ।
यवक्षारं पिवेत्तत्र मस्तुकोष्णोदकेन वा ॥ ११ ॥

प्रसूतास्त्री के हृदय, शिर, वस्ति शूल एवं मक्कल्लशूल में यवक्षार को गरम पानी या मस्तु के साथ देना उत्तम है ॥ ११ ॥

दशमूलीकृतः क्काथः साज्यः सूतिरुजापहः ।

दशमूल का क्काथ घृत मिला देने से सूति का रोग नष्ट होते हैं ।

शालितण्डुल चूर्णंतु सदुग्धं दुग्धकृद्भवेत् ॥ १२ ॥

शालि चांवलों का चूर्ण दुग्ध से देने पर दूध वढाता है ॥ १२ ॥

विदारीकंदस्वरसं मूलं कार्पासजं तथा।

धात्रीस्तन्यविशुद्ध्यर्थं मुद्गयूषरसाशिनी ॥ १३ ॥

विदारीकंन्द का रस या कपासमूलरस, पीने से और केवल मूंग यूष खाने से धाय का दुग्ध शुद्ध होजाता है ॥ १३ ॥

कुष्टवचाभया ब्राह्मी मधुरा चौद्र सर्पिषा।

वर्णायुः कान्तिजननं लेह्यंबालस्यदापयेत्॥१४॥ बालरोग

कूठ, वच, हर्रा, ब्रह्मी, शतावरी का चूर्ण मधुघृत से बालक को चटाना, वर्ण, आयु, कान्ति बढाता है ॥ १४ ॥

स्तन्याभावे पयश्छागं गव्यं वातद्गुणं पिबेत्।

माता के दूध न होने पर बकरी या गाय का दूध पिलाना चाहिये।

स्वेदनं नाभि शोफार्त्ते मृदास्यादग्नितप्तया ॥ १५ ॥

बच्चे की नाभि पर सूजन होजाने पर अग्नि से गरम की हुई मिट्टी से स्वेदन कराना चाहिये ॥ १५ ॥

लेहो मुस्तविष याश्च वामकासज्वरेपिवेत्।

नागरमोंथा, अतीस, को मधु से चटाना बच्चों के वमन, कास, ज्वर नाशक है।

मुस्तशुण्ठी विषाविल्व कुटजैरतिसारहृत् ॥ १६ ॥

मोंथा, सोंठ, अतीस, वेल का गूदा, कुढाछाल का चूर्ण बच्चों के अतिसार को दूर करदेता है ॥ १६ ॥

मधुव्योषं मातुलुङ्गं हिक्काच्छर्दि निवारणम्।

मधु, त्रिकुटा, विजौरे का रस बच्चों को हिचकी, वमन को दूर कर देता है।

कुष्टेन्द्रयवसिद्धार्थो निशादूर्वा च कुष्टजित् ॥ १७ ॥

कूठ, इंद्रजो, सफेदसरसों, हल्दी, दूव का उबटन कुष्ट हर होता है ॥ १७ ॥

महामुण्डीतिक्तोदीच्य क्वथैः स्नानं ग्रहापहम् ।
सप्तच्छदामयनिशा चन्दनैश्चानुलेपनम् ॥ १८ ।
शंखाब्जबीजरुद्राक्ष बचालोहादि धारणम् ।

गोरखमुंडी, सुगंधवाला के क्वाथ से नहलाना, सतोना, कूठ, हल्दी, रक्त, चदन, का लेप करना, शख, कमल बीज, रुद्राक्ष, वच, लोह का पहिराना ग्रहादि से रक्षा करता हैं ॥ १८ ॥

ओं कं टं गं गं वैनतेयायनमः । ओं ह्रों ह्रां हः ।
मन्त्रेण शान्तिर्बालानां मार्जनाद्बलिदानतः ॥

उपरोक्त मंत्र से मार्जन करने तथा बलिदान देने से बालक की ग्रहों से रक्षा होती है ।

ओं ह्रीं बालग्रहाद्बलिं गृह्णीत बालं मुञ्चतु स्वाहा ॥
यह बलिदान का मन्त्र है ॥ १९ ॥

तण्डुलाद्भिः शिरीषस्यमूलं पीतं विषापहम् । सर्पविषे
तण्डुलाद्भिश्चवर्षाभ्वाः शुक्लायाः सर्प दंशनुत ॥ २० ॥

चावल धोवन के पानी से सिरस मूल पीने से विष दूर होता है । चावल धोवन से सफेद पुनर्नवा मूल पीने से सर्प दंश दूर होता है ॥ २० ॥

दध्याज्यं तण्डुलीयं च गृहधूमोनिशातथा ।
पिष्टं पानंतथा चौद्रं सिन्धूत्थस्य विषान्तकम् ॥ २१ ॥

दही, घृत, चोलाई की जड़, घर का धुंआं, हल्दी, नमक, मधु का पीना विष नाशक है ॥ २१ ॥

अंकोठ मूलनिष्काथः साज्यःपीतो विषान्तकः ।

अकोडा मूल का क्वाथ घृत मिला पीने से विष नष्ट कर देता है ।

यज्जराव्याधि विध्वंसिभेषजंतद्रसायनम् ॥ २२॥ रसायनम्

जो औषधि बुढ़ापे को और रोगों को नष्ट कर दे वह रसायन कही जाती है । २२ ॥

सिन्धूत्थ शर्कराशुण्ठी कणामधुगुडैःक्रमात् ।
वर्षादिष्वभया सेव्या रसायन गुणैषिणा ॥ २३ ॥

वर्षा ऋतु में हरड़ को नमक के साथ, भादों क्वार में शकर के साथ कातिक अगहन में सोंठ के साथ, पूष माघ में, पीपल के साथ फागुन चैत में मधु के साथ, वैषाख, ज्येष्ठ में, गुड़ के साथ खानी चाहिये ॥ २३ ॥

प्रातश्चाभयामेकां प्रभुङ्क्ते द्वे विभीतके ।
भुक्त्वामध्वाज्य धात्रीणां चतुष्कं शतवर्षकृत् ॥ २४ ॥

प्रातःकाल एक हर्रा, भोजन से प्रथम दो बहेड़े भोजन के बाद चार आमले खाने से सौ बर्ष की आयु होती है ॥ २४ ॥

पीताश्वगंधापयसा घृतेनाशेषरोगहृत् ।
मण्डूकपर्ण्याः स्वरसो विदार्य्याश्चामृतोपमः ॥ २५ ॥
तिलधात्रीभृङ्गराजौ जग्ध्वा वर्षशतीभवेत् ।

घृत, दुग्ध, के साथ असगंध चूर्ण पीने से, या ब्रह्मी रस, बिदारीकंद रस, पीने से या तिल, आमला घमरा का चूर्ण खाने से समस्त रोगों को नष्ट कर सौ वर्ष तक जिलाता है ॥ २५ ॥

त्रिकटु त्रिफला वन्हि गुडूची च शतावरी ।
विडंगलोहचूर्णं तु मधुना सह रोगनुत् ॥ २६ ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक, गुडूची, शतावरी, बिडंग, लोहभस्म मधु के साथ सेवन करने से सभी रोग नष्ट हो जाते हैं ।

त्रिफला च कणा शुण्ठी गुडूची च शतावरी ।
विडंगभृङ्गराजादि भावितं सर्व रोगनुत् ॥ २७ ॥

त्रिफला, पीपल, सोंठ, गुडूची, शतावर, विडंग, का चूर्ण भृंगराज रस से भवित कर खाना सर्व रोग हर होता है ॥ २७ ॥

चूर्णविदार्य्या मध्वाज्यं लीढ़ा दशस्त्रियो व्रजेत् ॥ २८ ॥

बिदारीकन्द का चूर्ण मधु घृत से खाने वाला दश स्त्री के साथ रमण करने वाला होता है ॥ २८ ॥

घृतं शतावरी कल्कैः क्षीरैः दशगुणैः पचेत् ।
शर्करापिप्पलीक्षौद्र युक्तंजारकं विदुः ॥ २९ ॥

शतावरी कल्क से एक सेर घृत १० सेर दुग्ध डाल पकावे यह घृत शकर, पीपल चूर्ण, मधु, के साथ चाटने से बहु स्त्री गामी मनुष्य को बना देता है ॥ २९ ॥

प्रतिमर्षोऽवपीडश्च नस्यं प्रवपनं तथा ।
शिरोविरेचनं चेति पञ्चकर्म च कथ्यते॥३०॥शिरोविरेचनम्

प्रति मर्ष नस्य ( इसमें नाक में डाला तैलादि मुख तक पहुंचता है ) अवपीड ( तीक्ष्णद्रव्यों को मल कर दिया गया रस ) नस्य शुष्क द्रव्य सुंघाना, प्रधमन इसे ही प्रधमन कहते हैं पुनगी के द्वारा मुख वायु से ऊपर दवा पहुंचाना शिरोविरेचन, पिप्पली, विडंग आदि द्रव्यों का नस्य । यह शिर के पांच कर्म हैं ॥ ३० ॥

मासैर्द्विसंख्यैर्माघाद्यैः क्रमात्षड्ऋतवः स्मृताः । ऋतुवर्णनम्

अग्निसेवामधुक्षीर विकृतीः परिषेवयेत् ॥ ३१ ॥

माघ से प्रत्येक दो दो महीने की एक २ ऋतु होती है, इस प्रकार शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त छः ऋतुयें होती हैं। इनमें अग्नि सेवा, मधु दुग्ध विकृत का सेवन हितकर है ॥ ३१ ॥

स्त्रीयुक्तः शिशिरे तद्वद्वसन्ते न दिवास्वपेत् ।

त्यजेद्वर्षासु स्वप्नादीञ्छरदिन्दोश्चरश्मयः ॥ ३२ ॥

पथ्यानि शालयो मुद्गा वर्षाम्भः कथित पयः ।

शिशिर और वसन्त में स्त्री सेवन करें, परन्तु दिन में नहीं सोना चाहिये । वर्षा ऋतु में भी दिन में न सोवें, शरद ऋतु में चांदनी सेवन न करें ॥ ३२ ॥ इसमें शालि चावल, मूंग, वर्षा का जल, वर्षा में पकाया जल पथ्य है ।

निम्बातसीकुसुम्भानां शिग्रुसर्षपयोस्तथा । तैलगुणाः

ज्योतिष्मती मूलकानां तैलानि च हरन्ति हि ॥ ३३ ॥

कृमिकुष्ठप्रमेहांश्च वातश्लेष्मशिरोरुजः ॥ ३४ ॥

निबोली, अलसी, कुसुम, सेंजना बीज, सरसों, मालकंगुनी, मूली के बीज का तैल कृमि कुष्ट, प्रमेह, वात कफ, शिरोरोग नाशक हैं ॥ ३४ ॥

दाड़िमामलकीकोलकरमर्द पियालकम् ।
जम्बीरं नागरंगं च आम्रातक कपित्थकम् ॥
पित्तलान्यनिलघ्नानि कफोत्क्लेदकराणि च॥३५॥फलगुणाः

अनार, आमला, बेर करौंदा, चिरौंजी, जंभीरी नीबू नारंगी, आमला, कैथ, पित्तवर्धक, वायुनाशक, कफ और उत्क्लेद ( वमनेच्छा ) को करते हैं ॥ ३५ ॥

जलं जीमूतकेक्ष्वाकु कुटजाकृतवेधनम् । वमनकरम्
धामार्गवश्च संयोज्या सर्वथा वमनेष्वमी: ॥ ३७ ॥

जलवेंत, पीतदेवदाली, कटुतुम्बी, कुटज, श्वेतदेवदाली, कड़ुवातोरई, मदनफल, इन्द्रजौ, वच, यह वमनार्थ लेने चाहिये ॥ ३७ ॥

पूर्वाह्णे वमनायैत मदनेन्द्रयवौ वचा ।
वातोल्बणेषु दोषेषु भोजयित्वाथवामयेत्॥३८॥वमनकालः

वमन प्रातःकाल कराना चाहिये, वात प्रधान दोषों में भोजन कराके वमन देना चाहिये ॥ ३८ ॥

मृदुकोष्टश्च पित्तेन खरो वातकफाश्रयात् ।
मध्यमः समदोषे स्यात्त्रिवृत्तिके विरेचनम् ॥३६॥ रेचनम्

पित्त से मृदु कोष्ट होता है, वात कफ से खर कोष्ट, समान दोषों से समकोष्ट होता है । निशोथ और कुटकी विरेचक हैं ॥ ३६ ॥

शर्करामधुसंयुक्तं सैन्धवं नागरं त्रिवृत ।
हरीतकी विडंगानि गोमूत्रेण रेचनम् ॥
एरंडतैलं त्रिफला काथश्च द्विगुणस्तथा ॥ ४० ॥

सेंधानमक, सोंठ, निशोथ, शकर, मधु से चाटना। हर्रा, विडंग चूर्ण गोमूत्र में लेने से विरेचन होता है। एरंड तैल से दूना त्रिफला क्राथ पीने से भी दस्त आते हैं ॥ ४० ॥

वंशादिनेत्रं कुर्वीत षडष्टद्वादशां गुलम्। वस्तिविधानम्
कर्कन्धूफलवच्छिद्रं वस्तिरुत्तर शायिने ॥ ४१ ॥
निरुहदानेऽपि विधिरयमेवमुदीरितः।
अर्द्धत्रिषट्पलेमात्रा लघुमध्योत्तमः क्रमात् ॥ ४२ ॥

गाय की वस्ति को साफ करके वांस की नली छः, आठ, बारह अंगुल की लगावें, इसमें जंगली वेर के समान छेद हो, एक से छः वर्ष वाले के लिये छः अंगुल वाली, छः से बारह वर्ष वाले के लिये ८ अंगुल वाली और बारह से २० वर्ष वाले के लिये १२ अंगुल वाली नली लगाना चाहिये, वस्ति लगाते समय रोगी को चित्त लिटाना चाहिये यही विधान निरुह देने का भी है। आधा पल, तीन पल, छः पल की मात्रा लघु, मध्य, उत्तम क्रम से कही जाती है ॥ ४२ ॥

पथ्याक्षधात्र्या एकद्विचतुर्भागा रुगर्दनाः। सर्वरोगहरम्
शतावर्य्यमृताभृङ्गसिन्दुवारादि भाविता ॥ ४३ ॥

हर्रा १ भाग, विभीतक २ भाग, आमला ४ भाग, शतावरी, गुडूची, घमरा, संभालू रस से भावित किया गया समस्त रोग हर होता है ॥ ४३ ॥

इति श्री गारुडेमहापुराणे स्त्रीरोग चिकित्सादिकथनं नामद्विसप्तत्युत्तर शततमोऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि प० विश्वेश्वरदयालु द्विवेदिविरचितया विश्वेश्वरीटीकया सनाथीकृतः समाप्तः

धन्वन्तरिरुवाच

द्रव्याणिमधुरादीनि वक्ष्येरोगहराण्यहम् ।
शालिषष्टिक गोधूमक्षीरं घृत रसोमधु ।
मज्जाशृङ्गाटकयवक शेरुवारुगोक्षुरम् ॥
गम्भारी पौष्करं बीजं द्राक्षाखजूरकं वला ।
नारिकेलेक्ष्वात्मगुप्ता विदारीच पियालकम् ॥
मधूकंताल कुष्माण्डं मुख्योऽयं मधुरोगण:॥३॥मधुरगण:

धन्वन्तरि जी कहने लगे । रोगों को हरण करने वाले मधुरादि-द्रव्यों को अब मैं कहता हूं ।

शालिहेमन्त में होनेवाला, साठीधान, गेहूं, दुग्ध घृत, रस, मांस रस, मधु, मज्जा, सिंघाडा, यव, कशेरु, ककडी, गुखुरू, गंभारी, कमल-गट्टा, दाख, छुहारा, वला नारियल, ईख, कौंचबीज, विदारीकंद, चिरोंजी ( पारोली फलमींग ) मोरेठी, ताडफल, कुष्माण्ड, यह मधुर गण कहलाता है ॥ ३ ॥

मूर्च्छादाहप्रशमनः षडिन्द्रिय प्रसादनः ।
कृमि कृत्कफकृच्चैव एकोऽत्यर्थं निषेवितः ॥ ४ ॥
श्वासकासास्यमाधुर्य्य स्वर घातार्बुदानिच ।
गलगण्डश्लीपदानि गुडलेपादिकारयेत् ॥ ५ ॥

यह मूर्च्छादाह नाशक छः इन्द्रियों को प्रसन्न करने वाला, कृमि और कफ वढाने वाला, होता है यदि इसी रस का विशेष सेवन किया जाय तो श्वास, खांसी, मुखकीमधुरता स्वरनाश. अर्बुद, गलगण्ड श्लीपद, मूत्रादिमें गुड आने लगता है ॥ ४ । ५ ॥

दाडिमामलकाम्रं च कपित्थकरमर्दकौ ।
मातुलुङ्गाम्रातकं च बदरं तिन्तडीफलम् ॥६॥ अम्लवर्ग
दधितक्रं काञ्जिकं च लकुचं चाम्लवेतसं ।
अम्लो लावणः शुण्ठीयुक्तो जारणः पाचनः रसः ॥७॥
क्लेदनो वातकृद्वृष्यो विदाही चानुलोमनः ।
अम्लोऽत्यर्थं सेव्यमानः कुर्याद्वै दन्तहर्षकम् ॥८॥
शरीरस्यच शैथिल्यं स्वरकण्ठास्यहृद्दहेत् ।
छिन्नभिन्न व्रणादीन पाचयेत्वाग्निभावितः ॥९॥

अनार, आमला, कैथ, करौंदा, बिजोरा, आमडा, बेर, इमली फल, दही, मट्टा, कांजी, बडहर, अमलबेंत, यह अम्लवर्ग कहलाता है। यह अम्लरस सोंठ, और लवण के साथ जारण, पाचन करता हैं। यह रस क्लेदन, बातकर, वृष्य, विदाही, अनुलोमक होता है। अत्यधिक सेवन से दन्त हर्ष कर देता है। शरीर की शिथिलता, स्वर, कंठ, मुख, हृदय, में जलन करता है। अग्निमें पकाया हुआ छिन्न, भिन्न, व्रणो को पकाता है ॥ ६ । ७ । ८ । ९ ॥

लवणानि यवक्षारसर्जिकादिश्च लावणः । लवणवर्गः
शोधनः पाचनः क्लेदी विश्लेषसर्पणादि कृत् ॥ १० ॥
मार्गरोधी मार्दवकृत्ल एकः परिषेवितः ।
गात्रकण्डूकोष्ठशोथ वैवर्ण्यं जनयेद्रसः ॥
रक्तवातं पित्तरक्तं पुंस्त्वेन्द्रिय रुजादिकम् ॥ ११ ॥

पांचों नमक सज्जीखार, यवक्षार, लवणवर्ग, कहलाते है। यह शोधन, पाचन, क्लेदकारने वाले वातरोग बढाने वाले, बिसर्पादि

बढाते हैं। मार्गशोधक, मृदुताकर होता है। यही एक रस अधिक सेवन करने से देह में खुजली, मंडलशोथ, विवर्णता पैदा करता है और वातरक्त, रक्तपित्त, और जननेंद्रिय के रोगों को बढाता है ॥ १०।११ ॥

व्याष शग्रुमूलकं देवदारु च कुष्ठकम्।
लशुन बल्गुजीफलं मुस्तागुग्गुललांगली ॥१२॥ कटुवर्गः
कटुको दीपनः शोधी कुष्ठ कण्डू कफान्तकृत्।
स्थौल्यालस्यक्रमिहरः शुक्रमेदो विरोधिनः ॥ १० ॥
एषोऽत्यर्थं सेव्यमानः भ्रमदाहादि कृद्भवेत् ॥ १२ ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंजना, मूली, देवदारु, कूठ, लहसन, बाकुची, मोंथा, गूगल, गुलावांस, कटुवर्ग, कहलाता है। यह दीपक, शोधक, कुष्ठ, खुजली, कफ, स्थूलता, आलस, क्रमि, शुक्र, मेद, नाशक होता है। एक यही रस अधिक सेवन करने से भ्रम, दाह, को पैदा कर देता है ॥ १३ ॥

कृतमालः करीराणि हरिद्रेन्द्र यवास्तथा।
स्वादुकंटक वेत्राणि बृहतीद्वयशंखिनी ॥१४॥ तिक्तवर्गः
गुडूची च द्रवन्ती च त्रिवृन्मण्डूकपर्ण्यपि।
कारवल्ल वार्त्ताकु करवीरक वासकाः ॥ १५ ॥
रोहिणी शंख पूर्णा च कर्कोटो वैजयन्तिका।
जातीबारुणकं निम्बो ज्योतिष्मती पुनर्नवा ॥ १६ ॥
तिक्तोरसश्छेदनः स्याद्रोचनी दीपनस्तथा।
शोधनो ज्वर तृष्णाघ्नोमूर्च्छा कण्ठार्त्तिकादिजित ॥ १७

विण्मूत्रक्लेदसंशोषी ह्यत्यर्थसच सेवित:।
हनुस्तम्भाक्षेपकार्त्ति शिर:शूलव्रणादिकृत ॥ १८॥

अमलतास, करील, हल्दी, इन्द्रयव, विककत ( वईंच ) वेंत, दोनों कटैलो, शंखिनो ( सीता सरसों ) गुडूची, द्रवन्ती ( दन्ती ) निशोथ, ब्राह्मी, करेला बेंगन, करवीर, अडूसा, कुटकी, शंख चूर्ण, ककोड़ा, जैतिया, चमेली, वरुण, नींव, माल कंगुनी, पुनर्नवा, तिक्तवर्ग कहलाता है ॥ १७ ॥

तिक्त रस, छेदन, रोचन, दीपन, शोधन, करता है, ज्वर, तृष्णा कंठरोग नाशक है, मूत्र मल, क्लेद, राजयक्ष्मा, करता है। इसका अधिक सेवन, हनुस्तम्भ, आक्षेप, शिरपीड़ा, व्रणादिकों को करता है ॥ १८ ॥

त्रिफला सल्लकी जम्बु आम्रातक वटादिकम्। कषायवर्ग
तिन्दुकं वकुलं शालं पालंकी मुद्गचिल्लकम् ॥ १९ ॥
कषायो ग्राहको रोपी स्तम्भन क्लेद शोषणः।
एकोऽत्यर्थं सेव्यमानो हृदयेचार्थपीडकः।
मुख शोष ज्वराध्मान मन्यास्तम्भादिकारकः ॥ २० ॥

हर्रा, वहेड़ा, आमला, शालई ( शिलारस इससे ही बनता है ) जामुन, केला फल, वट, तेन्दू, मौलश्री, शाल, पालक, मूंग, रक्त बथुआ या चीड़ यह कषाय वर्ग कहलाता है। यह ग्राहक, रोपक, स्तम्भक, क्लेद कर और शोषण करने वाला है। अकेला अधिक सेवन से, हृदय पीड़ा मुख शोष, ज्वर, आध्मान, मन्यास्तम्भ रोगों को पैदा करता है ॥ २० ॥

हरिद्राकुष्ट लवणं मेष श्रृंगिवलाद्वयम् ।
कच्छुरासल्लकी पाठा पुननवा शतावरी ॥
अग्निमन्थो ब्रह्मदंडी श्वदंष्टैरण्डके तथा । वातहरगणः
यव कोलकुलत्थादि कर्पासी दशमूलकम् ॥ २१ ॥
प्रथक् समस्तो वातान्तो वहुपित्तहरस्तथा ॥ २२ ॥

हल्दी, कूठ, लवण, मेढासिंगी, दोनों बला, कोंच बीज, सल्ल की पाठा, पुनर्नवा, शतावर, अग्निमंथ ( इरनी ) ब्रह्मदण्डी, गुखुरू, एरंड, यव, बेर, कुलथी, कपास मींग, दशमूल, यह प्रथक् २ और समष्टिरूप में वात हर गण कहा जाता है यह बातहर है और पित्तहर आगे कहते हैं ॥ २२ ॥

शतावरी विदारी च वालकोशीर चंदनं ।
दूर्वा वटः पिप्पली च वदरी सल्लकीतथा ॥ पित्तहरवर्ग
कदलीचोत्पलं पद्ममुदुम्वर पटोलकम् ॥ २३ ॥

शतावर, विदारीकंद, सुगंधवाला, खस, श्वेत चंदन, दूर्वा, वट, पीपल, वेर, सल्लकी, केला, कमल, पद्माख, ऊमर, परवर यह पित्तहर वर्ग कहलाता है ॥ २३ ॥

अथश्लेष्महरो वर्गो हरिद्रागुडकुष्टकम् । कफहरवर्ग
शणपुष्पी च जाती च व्योषारग्वधलांगली ॥ २४ ॥

हल्दी, गुड़, कूठ, शणपुष्पी, जावित्री, सोंठ, मिर्च, पीपल, अमलतास, गुलावांसमूल कफहर वर्ग कहलाता है ॥ २४ ॥

सर्पिस्तैलवसामज्जाः स्नेहेषुप्रवरम्मतम् ॥२५॥ स्नेहवर्ग

स्नेहों में घृत, तैल, वसा, मज्जा उत्कृष्ट माने जाते हैं ॥ २५ ॥

तथाधीस्मृति मेधाग्निकांक्षिणां शस्यते घृतं ।

केवलं पैत्तिके सर्पिर्वातिके लवणान्वितम् ॥

देयं बहुकफे वापि व्योषक्षार समायुतम् ॥२६॥ घृतगुणाः

बुद्धि, स्मृति, मेधा, अग्नि की इच्छा वालों के लिये घृत सेवन कहा गया है। पित्तज रोगों में केवल घृत, वातज रोगों में लवण के साथ घृत देना और कफज रोगों में त्रिकुटा, यवक्षारादि मिला घृत देना ॥ २६ ॥

ग्रंथिनाड़ीकृमिश्लेष्म मेदोमारुतरोगिषु ।

तैलं लाघवदार्ढ्यार्थक्रूरकोष्टेषुदेहिषु ॥

वातातपाम्बुभारस्त्रीव्यायामक्षीणधातुषु ।

रुक्षक्लेशक्षयात्यग्निवातावृतपथेषु च ॥

तथादहने शिराजाले योनिकर्म शिरोरुजि॥२६॥ तैलगुणाः

ग्रन्थि, नाड़ी व्रण, कृमि, कफ, मेद, वात रोग, लघुता दृढ़ता के लिये, हवा, धूप, पानी, भार, स्त्री व्यायाम, धातु से क्षीण हुये पुरुषों के लिये, रूक्ष, क्लेश, क्षय अत्यग्नि, वात से रुद्ध मार्ग वाले रोगों में, जलाने में, शिराजालगत रोगों में, योनि रोगों में, शिर पीड़ा में तैल का उपयोग उत्तम कहा गया है ॥ २६ ॥

उत्तमस्यपलंमात्रा त्रिभिश्चाक्षैश्चमध्यमे । मात्रामानम्

जघन्यस्य पलार्द्धन स्नेहक्वाथौषधेषु च ॥ ३० ॥

स्नेहादि की एक पल मात्रा उत्तम, तीन तोला की मध्यम और २ तोला की साधारण एवं हीन मात्रा कहलाती है, यही मात्रा क्वाथादि में भी समझना चाहिये ॥ ३० ॥

जलमुष्णं घृतेदेयं पृथक् तैलेषु शस्यते ।
स्नेहे पित्ते तु तृष्णायां पिबेदुष्णोदकं नरः ॥ ३१ ॥

घृत पान के बाद गर्म जल देना चाहिये, तैल में ठंडा जल दें स्नेह पीनेके बाद पित्त रोग, तृष्णामें गरम जल देना चाहिये ॥३१॥

वातानुलोमंदीप्ताग्ने र्वर्च्चः स्निग्धस्य तन्मतम् ।

यह गर्म जल वात को अनुलोमन करता है, अग्नि को दीप्त करता है और मल को स्निग्ध पतला करता है ॥

रुक्षस्यस्नेहनं कार्यमाभस्निग्धस्यरुक्षणम् ।
श्यामाककोरदूषान्नतक्र पिण्याकसक्तुभिः ॥ ३२ ॥

रुक्ष को स्नेहन करें और अति स्निग्ध को शमा, कोदों, तक्र, खली, सत्तुओं से रूक्षण करावें ॥ ३२ ॥

वातश्लेष्मणि वाते वा कफे वा स्वेद इष्यते ।
नस्वेदयेदतिस्थूलरुक्ष दुर्बल मूर्च्छतान् ॥ ३३ ॥

वात-कफज, वातज व कफज रोगों में स्वेद करावें । अतिस्थूल, रुक्ष, दुर्बल, मूर्च्छा रोग वालों को स्वेद नहीं देना चाहिये ॥ ३३ ॥

गरुड़पुराणोक्त योगसारादि वर्णनं नाम त्रिसहस्युत्तर शततमोऽध्यायः
श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं॰ विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया
विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥



धन्वन्तरिरुवाच

घृततैलादिवक्ष्यामि शृणु सुश्रुत रोगनुत् । ब्राह्मीघृत

शंखपुष्पी वचासोमा ब्राह्मी ब्रह्म सुवर्चला ॥ १ ॥

अभया च गुडूची च अटरुषक वाकुची ।

एतैरक्षसमैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ २ ॥

कंटकार्य्यारसप्रस्थंक्षीरप्रस्थसमन्वितम् ।

एतद्ब्राह्मीघृतंनाम श्रुतिमेधाकरं परम् ॥ ३ ॥

धन्वन्तरि भगवान कहने लगे हे सुश्रुत रोगों को नाश करने वाले घृत, तैलों को कहता हूं सुनो—

शंखपुष्पी, वच, कैफरा, ब्रह्मी, श्वेत फूल का हुरहुर, हर्रा, गुडूची अडूसा, वाकुची २-२ तोला ले एक सेर घृत पकाना, कंटकारी रस १ सेर, गौदुग्ध १ सेर डाल पकाना यह ब्राह्मी घृत कहलाता है, यह बुद्धि मेधा करने वाला है ॥ १-३ ॥

त्रिफलाचित्रकवलानिगुण्डीनिम्ववासकाः। त्रिफलादिघृतम्

पुनर्नवागुडूची च वृहती च शतावरी ॥

एतैर्घृतं यथालाभं सर्वरोग विमर्दनम् ॥ ४ ॥

त्रिफला, चित्रक, वला, संभालू, नीव छाल, अडूसा, पुनर्नवा, गुडूची, भटकटैया, शतावर इनका कल्क और क्वाथ डाल घृत बनालें यह त्रिफलादि घृत सर्व रोगहर है ॥ ४ ॥

वलाशतकषायेतु तैलस्यार्द्धाढकं पचेत् । वलातैलम्

कल्कैर्मधूकमञ्जिष्टा चन्दनोत्पलपद्मकैः ॥ ५ ॥

सूदमैला पिप्पली कुष्टत्वगेलागुरुकेशरैः।
गन्धाश्वजीवनीयैश्च क्षीराढकसमाश्रितम् ॥ ६ ॥
एतन्मृद्वग्निनापक्कं स्थापयेद्राजने शुभे।
सर्ववात विकारांस्तु सर्वधात्वन्तराश्रयान् ॥
तैलमेतत्प्रशमयेद्बलाख्यं राजवल्लभम् ॥ ७ ॥

बला १०० पल लेकर क्काथ बनावे और तेल २ सेर डालें, मोरेठी, मजीठ, चंदन, कमलपुष्प, पद्माख, छोटी इलायची, पीपल, कूठ, दालचीनी, बड़ी इलायची, अगरु, नागकेशर, असगंध, जीवनीयगण का कल्क, दूध ४ सेर डाल मृदु अग्नि से तेल पका चांदी के पात्र में रखें, समस्त धातुगत विकारों को यह बला तेल नाश करता है, यह राजाओं के योग्य है ॥ ५-७ ॥

शतावरीरसप्रस्थं क्षीरप्रस्थं तथैव च। नारायण तैलम्
शतपुष्पं देवदारु मांसीशैलेयकं बला ॥ ८ ॥
चंदनं तगरं कुष्टं मनःशिला ज्योतिष्मती।
एतैः कर्षसमैः कल्कैः घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ९ ॥
कुब्जवामनपंगूनां बधिरव्यंग कुष्टिनाम्।
वायुनाभग्नगात्राणां ये च सीदन्तिमैथुने ॥ १० ॥
जराजर्जरगात्राणां चाश्मान मुखशोषिणाम्।
त्वग्गताश्चापि ये वाता शिरास्नायुगताश्चये ॥ ११ ॥
सर्वांस्तान् नाशयत्याशु तैलं रोगकुलान्तकम्।
नारायण मिदं तैलं विष्णु नोक्तं रुगर्दनम् ॥ १२ ॥

शतावरी रस १ सेर, गौदुग्ध १ सेर, सोवा, देवदारु, जटामांसी, छरीला, बला, चंदन, तगर, कूठ, मनसिल, मालकंगुनी १-१ तोला का कल्क घृत १ सेर पकाले, यह घृत कुब्जता, वामनता, पंगुता, वधिरता, व्यंगता, कुष्ट, शिरास्नायु चमड़ी के वात, बुढ़ापे की जीर्णता, आध्मान, मुखशोष रोगों को तथा वायु से भग्न देह वालों के लिये मैथुनाति से नष्ट पुरुषों के लिये यह तेल उत्तम है और समस्त रोग नाशक है, यह नारायण तेल विष्णु जी का कहा हुआ है ॥ ८-१२ ॥

पृथक्तैलं घृतं कुर्यात्समस्तै रौषधैः पृथक् । सर्वरोगघ्नम्
शतावर्या गुडूच्या वा चित्रकैः रोचनान्वितैः ॥
निगुण्ड्या वा प्रसारः स्यात्कण्टकार्यारसादिभिः ।
वर्षाभूवालयावापि वासकैश्च फलत्रिकैः ॥
ब्रह्म्याचैरण्डकेनापि भृंगराजेन कुष्टिना ।
मुसल्यादशमूलेन खदिरेण वटादिभिः ॥
वटिका मोदको वापि चूर्णं स्यात् सर्वरोगनुत् ।
घृतेन मधुनावापि अद्भिः खंडगुड़ादिभिः ॥
लवणैः कटुकैर्युक्तं यथा लाभं च रोगनुत् ॥ १७ ॥

शतावर, गुडुची, चित्रक, गोरोचन, निगुंडी से पकाये घृत या तैल प्रसारण कराने वाले होते हैं।

कंटकारी, पुनर्नवा, हल्दी, अडूसा, त्रिफला, ब्रह्मी, एरंडमूल, भंगरा, कूठ, मूसल, दशमूल, खदिर, वटजटा, से बनाया, वटी, वा मोदक या चूर्ण, घृत, मधु, जल, गुड, शक्कर, लवण, कटुवर्ग के साथ देने से सर्व

रोग हर होता है। यह समस्त और एक २ भी गुणकारी है जितने द्रव्य मिलें संग्रह कर कार्य में लाने चाहिये ॥ १७ ॥

चित्रकार्कत्रिवृद्वापि यवानी हयमारकम्।
सुधां च वालां गणिकां सप्तपर्णं सुवर्चिकाम्[1] ॥
ज्योतिष्मतीश्च संभृत्य तैलधीरो विपाचयेत्। निष्यन्दनतैलम्
एतन्निष्यन्दनं तैलं भृशदद्याद् भगंदरे ॥ १६ ॥
शोधनं रोपणं चैव सवर्णकरं परम्।
चित्रकाद्यं महा तैलं सर्व रोग प्रभंजनम् ॥ २० ॥

चित्रक, अर्कमूल, निशोथ, अजवाइन, कनेलमूल, सेंहुडमूल, घीकुमारी, थुहीपुष्प घृचमूल, सप्तपर्ण सज्जीखार, मालकंगुनी, का कल्क डाल तैल पकाले यह निष्यन्दन तैल भगन्दर रोग नाशक है ॥ १६ ॥

यह शोधन रोपण और सवर्ण करने वाला सर्व रोग नाशकहै यह चित्रकाद्य तैल भी कहलाता है ॥ २० ॥

अजमोदं ससिन्दूरं हरितालं निशाद्वयम्। अजमोदादितैल
क्षारद्वयं फेनयुतमाद्रकसर लोद्भवम्[2] ॥
इन्द्रवारुण्यपामार्ग कदलैः स्यन्दनैः[3] समम्।
एभिः सर्षपजं तैलमजामूत्रैश्च[4] योजितम् ॥

---

१—वचां लांगलिकां हरितालं सुवर्चिकाम्। योग रत्ना करे धिकम् दृश्यते ॥ सुश्रुतेतु वचां लांगलिकीं सप्तपर्णां सुवर्चिकाम् इत्येवम्

५
मृद्वग्निनापचेदेतद्गव्ये क्षीरेणसंयुतम् ।
अजमोदादिकं तैलं गण्डमालां व्यपोहति ।
विदग्धंस्तु पचेत्पक्वं चैव विशोधयेत् ।
रोपणं मृदुभावं च तैलेनानेन कारयेत् ॥ २४ ॥

अजमोद, सेन्दुर, हरताल, दोनों हल्दी, दोनोंक्षार, समुद्रफेन, आद्रक, सरल ( राल ) इन्द्रायण, अपामार्ग, कदलीकंद, तेन्दुकमूल, का समान कल्क ले सरसों का तैल पकाना यह तैल गण्डमाला को नाश करता है । यह विना पकी गांठों को पकाता है, पके हुये गांठों को शोधन करता है, रोपण और मृदुता के लिये इसे काम में लाना चाहिये ॥ २४ ॥

इति श्रीगरुडे महापुराणे ब्राह्मीघृतादि वर्णनंनाम चतुःसप्तत्युत्तर शततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूडामणि पं० विश्वेश्वरदयालुप्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया सनाथी कृतः समाप्तः ॥ १७४ ॥

---

२—साधकं ३ लीकन्दकैः। ४ अजामूत्राष्टकैः। ५ स्नुग्यर्कक्षीरसंयुतम् इति योगरत्नाकरे विशेषः। साधकं दमनकम् । दोनामरुवा इतिलोके ।



रुद्र उवाच ।

एवं धन्वन्तरिर्विष्णुः सुश्रुतादीनुवाचह ।
हरिःपुनर्हरायाह नानायोगान्रुगर्दनान् ॥ १ ॥

शंकर जो कहने लगे । जिस तरह प्रथम विष्णुने शंकर से अनेक रोग नाशक योगों को कहा था उसी प्रकार सुश्रुतादिकों से धन्वन्तरि भगवान ने कहा ।

हरि उवाच ।

सर्वज्वरेषु प्रथमं कार्य्यं शंकरलंघनं । ज्वरे
कथितोदकपानं च तथानिर्वात सेवनम् ॥ २ ॥
अग्निस्वेदाज्ज्वरास्त्वेवं नाशमायान्ति हीश्वर ।

भगवान कहने लगे । हे शंकर प्रथम सब ज्वरों में लंघन करा ना और गर्म पानी पिलाना तथा वात रहित स्थान में रखना और अग्नि से स्वेद देना चाहिये इस प्रकार समस्त ज्वर नष्ट हो जाते हैं ॥२॥

वात ज्वरहरः काथो गुडूच्यामुस्तकेनच ।
दुरालभैश्चैव घृतं पित्त ज्वरहरः शृणु ॥ ३ ॥

गुडुची, मोथा, जवासा का क्काथ घृत युक्त वात ज्वर हर है । पित्त ज्वर हर क्काथ को सुनो ॥ ३ ॥

शुण्ठी पर्पटमुस्तैश्च वालकोशीर चंदनैः ।
साज्यः काथः श्लेष्मजंतु सशुण्ठि सदुरालभः ।
सवालकः सर्वज्वरं सशुण्ठी सपर्पटः ।
किराततिक्तकैर्नारी गुडूची शुण्ठि मुस्तकैः ॥
पित्तज्वरहरः स्याच्च शृण्वन्यं योगमुत्तमम् ॥ ६ ॥

सोंठ, पित्त पापड़ा, मोंथा, सुगन्धवाला, खस, चन्दन का क्वाथ घृत युक्त पित्त ज्वर नाशक होता है। सोंठ, जवासा मूल, सुगंधवाला का क्वाथ कफज्वर हर होता है। सोंठ, पित्तपापरा का क्वाथ सर्व ज्वरहर होता है। चिरायता, प्रियङ्गु, गुडूची, सोंठ, मोथा का क्वाथ पित्त ज्वरहर होता है। अब और योगों को सुनों ॥ ६ ॥

बालकोशीर पाठाभिः कण्टकारिकमुस्तकैः।
ज्वरनुच्चकृतः काथस्तथावै सुरदारुणा ॥ ७ ॥
धान्यकनिम्बमुस्तानां समधुः सतु शंकर।
पटोलपत्रयुक्तस्तु गुडूची त्रिफला युतः ॥ ८ ॥
पीतोऽखिलज्वरहरः क्षुधाकृद्वातनुन्त्वदम् ॥

सुगंधवाला, खस, पाठा, कटैली, मोंथा, का क्वाथ ज्वरहर होता है। देवदारु, धनियां, नीम छाल, मोंथा, का क्वाथ शक्कर मिला पीने से या परवल पत्र, गुडूची, त्रिफला का क्वाथ समस्त ज्वर नाशक, भूख बढ़ाने वाला वात नष्ट करने वाला है ॥ ८। ९ ॥

हरीतकीपिप्पलीनामामलीचित्रकोद्भवम्।
चूर्णं ज्वरं च कथितं धन्याकोशीर पपटैः ॥ १० ॥
आमलक्य गुडूच्या च मधुयुक्तं स चंदनम्।
समस्तज्वरनुच्चस्यात्सन्निपात हरं शृणु ॥ ११ ॥

हर्रा, पीपल, आमला, चित्रक का चूर्ण, धनियां, खस, पित्त-पापड़ा, आमला, गुडूची, लाल चन्दन, का क्वाथ मधु मिला लेने से समस्त ज्वरों को नष्ट कर देता है। अब आगे सन्निपात हरण करने वाली औषधियों को सुनो ॥ ११ ॥

हरिद्रानिम्ब त्रिफला मुस्तकैर्देवदारुणा ।
कषायकटुरोहिण्या सपटोलं सपत्रकम् ॥
त्रिदोषज्वरनुच्च स्यात् पीतंतु कथितं जलम् ॥ १२ ॥

हल्दी, नीमछाल, त्रिफला, मोथा, देवदारु, कुटकी, परवल पत्र का क्वाथ त्रिदोष ज्वर हरण करता है ॥ १२ ॥

कण्टकार्यानागरस्य गुडूच्या पुष्करेण च ।
जग्ध्वानागवलाचूर्णं श्वासकासादिनुद्भवेत् ॥ १३ ॥

नागवला, का चूर्ण फांक कर कटैली, सोंठ, गुडूची, पुष्कर मूल का क्वाथ, पीने से श्वास, कास, दूर होता है ॥ १३ ॥

कफवातज्वरेदेयं जलमुष्णं पिपासिते ।

कफज, वातज, या कफ वातज ज्वर में प्यास लगने पर गरम पानी ही देना चाहिये ।

विश्वपपटकोशीरमुस्तचंदन साधितम् ।
दद्यात्सुशीतलं वारि तृट्छर्दि ज्वरदाहनुत् ॥ १५ ॥

सोंठ, पित्तपापरा, खस, मोंथा, लालचदन, से पकायाजल, तृषा, वमन, ज्वर, दाह हरण करने वाला होता है । यह षडंग क्वाथ ही है, परन्तु एक सुगन्धवाला की कमी है ॥ १३ ॥

बिल्वादि पंचमूलस्य क्वाथः स्याद्वातिके ज्वरे ।
पाचनं पिप्पलीमूलं गुडूची विश्वभेषजम् ॥
वातज्वरे त्वयं क्वाथो दत्तः शान्तिकरः परः ॥ १६ ॥

बेल, श्योनाक, खंभारी, पाटला, अरनी का क्वाथ बिल्वपंचमूल कहलाता है, यह वात ज्वर में पाचन कहा गया है । पीपलामूल, गुडूची सोंठ का क्वाथ वातज्वर नाशक होता है ॥ १६ ॥

पित्तज्वरघ्नः समधुः क्राथः पर्पट निम्बयोः ।

पित्तपापड़ा, नींव छाल का क्राथ मधु मिला पीने से पित्तज्वर नाश होता है ।

विधानेक्रियमाणेऽपि यस्यसंज्ञा न जायते ।
पादयोस्तुललाटे वा दहेल्लोहशलाकया ॥ १७ ॥

उपायकरने पर भी यदि होश न आवे तो पैरों में या ललाट में लोह शलाका से दाग देना चाहिये ॥ १७ ॥

तिक्तापाठा पर्पटाश्च विशाला त्रिफला त्रिवृत् ।
सक्षीरोभेदनः क्राथः सर्वज्वर विशोधनः ॥ १८ ॥

कुटकी, पाठा, पित्तपापरा, इन्द्रायण का गूदा, त्रिफला, निशोथ का दूध में पकाया क्राथ समस्त ज्वर नाशक होता है ॥ १८ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे ज्वरहरनानायोगादि वर्णनं नाम
पञ्चसप्तत्युत्तर शततमोऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूडामणि
पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया
॥ समलंकृतः समाप्तः ॥



भगवान उवाच

सप्तरात्रात्प्रजायन्ते खल्वाटस्यकचाः शुभाः । खल्वाटहरः
दग्धहस्तिदन्तलेपात्क्षाजक्षीररसाञ्जनात् ॥ १ ॥

श्री भगवान कहने लगे—हाथी दान्त की भस्म, रसोत बकरी के दूध के साथ लेप करने से सात दिन में गंजे के शिर में भी बाल उग आते हैं ॥ १ ॥

भृङ्गराजरसेनैव चतुर्भागेन साधितम् । केशवर्द्धकः
केशवृद्धिकरं तैलं गुञ्जाचूर्णान्वितेन च ॥ २ ॥

गुञ्जा चूर्ण का कल्क और चौगुना घमरे का स्वरस डाल पकाया तेल बालों को बढ़ाने वाला होता है ॥ २ ॥

एलामांसी कुष्ठमुरा युक्तमभ्यंगतः शिवा । इन्द्रलुप्तहरः
गुञ्जाफलं समादेयं लेपनं चेन्द्रलुप्तनुत् ॥ ३ ॥

इलायची, जटामांसी, कूठ, मूर्वा के लेप से तथा गुञ्जा फल के लेप से इन्द्रलुप्त रोग नाश होता है ॥ ३ ॥

आम्रास्थिचूर्णलेपाद्वै केशाः सूक्ष्मा भवन्ति च। अरुणहरः
करंजामलकैलाल लाक्षालेपोऽरुणापहः ॥ ४ ॥

आम की गुठली की मींग के लेप से बाल थोड़े होते हैं । कंज, आमला, इलायची, हरताल, लाख के लेप से अरुण नामक कुष्ट नष्ट होता है ॥ ४ ॥

आम्रास्थिमज्जामलकलेपात्केशाभवन्ति वै ।
वद्ध मूला घना दीर्घाः स्युर्नोत्पतन्ति च ॥ ५ ॥

आम्र मीग, आमला के लेप से बाल खूब घने, लम्बे, काले, चिकने होते हैं और झड़ते नहीं ॥ ५ ॥

विडंग गंधपाषाण साधितं तैल मुत्तमम् । यूकाहरः
सचतुगु णगोमूत्रं मनसः शिलमेव वा ॥ ६ ॥
शिरोऽभ्यंगाच्छिरोजन्ययूकालिख्याः क्षयं नयेत् ॥

विडंग, गंधक, मनसिल का कल्क चौगुना गोमूत्र डाल पकाया तेल शिर में मलने से जुंवा, लीखें नाश होती हैं ॥ ६ ॥

नवदग्धं शंखचूर्णं घृष्टसीसकलेपितं । कृष्ण केशकरणम्
कचाः श्लक्ष्णा महाकृष्णा भवन्ति वृषभध्वज ।। ७ ॥

हे शिव ! शंखभस्म सीसा चूर्ण के साथ पीस लेप करने से बाल काले हो जाते हैं ॥ ७ ॥

भृङ्गराजं लोहचूर्णं त्रिफला बीज पूरकम् ।
नीली च कर वीरं च गुड मेतैः समं शृतम् ॥ ८ ॥
पलितानीह कृष्णानि कुर्यात्लेपान्महौषधम् ॥ ६ ॥

भमरा, लोह चूर्ण, त्रिफला, बिजोरा नीबू रस, नील, कनैर, गुड़ का क्वाथ बना लेप करने से सफेद बाल काले हो जाते हैं ॥ ६ ॥

आम्रास्थिमज्जात्रिफला नीली च भृंगराजकम् ।
जीर्णं पक्वं लोह चूर्ण काञ्जिकं कृष्णकेशकृत् ॥ १० ॥

आम की गुठली, त्रिफला, नील, भमरा, पुराना लोह चूर्ण, कांजी में पीस लेप करने से बाल काले हो जाते है ॥ १० ॥

चक्रमर्दक बीजानि कुष्ठमेरण्डमूलकम्। शिरोरोगहरः
अत्यम्लकांजिकेपिष्टा लेपान्मस्तिकरोगनुत् ॥ ११ ॥

चकवड ( पंवार ) बीज, कूठ, एरण्ड मूल, खट्टी कांजी में पीस लेप करने से शिर पीड़ा दूर होती है ॥ ११ ॥

सैन्धवंच वचाहिंगु कुष्टं नागेश्वरं तथा। कर्णशूल हरम्
शतपुष्पा देवदारु एभिस्तैलंतुसाधितम् ॥ १२ ॥
गो पुरीषरसेनैव चतुर्भागेन संयुतम्।
तत्कर्ण भरणादुग्रकर्ण शूलं क्षयं नयेत् ॥ १३ ॥

सेंधा नमक, बच, हींग, कूठ, नागकेशर, सोंफ, देवदारु के कल्क से और चौगुने गौ के गोबर के रस से सिद्ध किया गया तैल कान में डालने से कान का दर्द दूर हो जाता है ॥ १२।१३ ॥

मेषमूत्र सेन्धवाभ्यां कर्णयोर्भरणाच्छिव।
कर्णयोःपूतिनाशः स्यात्कृमिस्रावादिकस्यच ॥ १४ ॥

भेड़ का मूत्र, सेंधा नमक, कान में डालने से कान का बहना, कान का पीव, कृमि नाश कर देता है ॥ १४ ॥

मालतीपुष्पदलयो रसेनभरणात्तथा।
गोजलेनैवपूरेण पूयस्रावोविनश्यति ॥ १५ ।कर्णस्रावहरम्

मालती पुष्प रस और पत्र रस के डालने से या गौमूत्र डालने से कान का पीव बहना बन्द हो जाता है ॥ १५ ॥

कुष्टमाषमरीचानि तगरं मधुपिप्पली।
अपामार्गोऽश्वगंधा च बृहती सितसर्षपाः ॥ १६ ॥

यवास्तिला: सैन्धवं च पादकोद्वर्तनं शुभम् । लिंगवृद्धौ
लिंग वाहुस्तनानां च कर्णयोवृद्धिकृद्भवेत् ॥ १७ ॥

कूठ उरद, मिर्च, तगर, मधु, पीपल, अपामार्ग, असगंध, फल कटैया, सफेद सरसों, यव, तिल, समभाग सेंधा चौथाई भाग नमक, का वनाया उबटन करने से लिंग, वाहु, स्तन, कान की वृद्धि करता है ॥ १७॥

कटुतैलं भल्लातकं वृहती फल दाडिमम् ।
वल्कलै:साधितैर्लिप्तं लिंगंतेन विवर्धते ॥ १८ ॥

भिलावा भटकटैया फल, अनार छाल से सिद्ध किया गया कडुवा तैल लिंग की वृद्धि करता है ॥ १८ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे केशोत्पत्यादिवर्णनं नाम षट्सप्तत्युत्तर शततमोऽध्याय: श्री मच्चिकित्सक चूडामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतयाविश्वेश्वरी टीकया सनाथीकृत: समाप्त: ॥

हरि रुवाच ।

शोभाञ्जनपत्र रसं मधु युक्तंहि चक्षुषो: । नेत्ररोगे
भरणाद्रोगहरणं भवेन्नास्त्यत्र संशय: ॥ १ ॥

भगवान कहने लगे । सेंजना पत्र रस मधु युक्त आंख में डालने से आंख के रोग दूर होते हैं इसमें संशय नहीं ॥ १ ॥

अशीति तिलापुष्पाणि जात्याश्च कुसुमानिष ।
वषानिम्बामला शुंठी पिप्पलीतण्डुलीयकम् ॥ २ ॥

छाया शुष्कां वटीं कुर्यात्पिष्ट्वातंडुल वारिणा ।
मधुना सहसा चाद्यणोरंजनात्तिमिरादनुत् ॥ ३ ॥

तिल पुष्प अस्सी, चमेली फूल ८०, हल्दी, नींमपत्र, आमला पत्र, सोंठ, पीपल, चौलाई मूल, पीस कर गोली बना लें और छाया में सुखाकर चावल धोवन और शहद में घिस कर आंखों में लगाने से तिमिरादि आंखों के रोग दूर होते हैं ॥ ३ ॥

विभीतकास्थिमज्जा तु शंखनाभिर्मनः शिला ।
निम्बपत्रमरीचानि अजामूत्रेण पेषयेत् ॥ ४ ॥
पुष्पं रात्र्यन्धतां हन्ति तिमिरं पटलंतथा ॥ ५ ॥

बहेडा की मींग, शंखनाभि, मनसिल, निम्बपत्र, मिर्च, बकरी के मूत्र में पीस गोली बना ले इसके लगाने से फूली, रात्रि में न दिखाई देना, तिमिर, पटल रोग नष्ट होते है ॥ ५ ॥

चतुर्भागानि शंखस्य तदर्द्धेन मनःशिला ।
सैन्धवं च तदर्द्धेन श्वेतत्पिष्ट्वोदकेनतु ॥ ५ ॥
छायाशुष्कां तु वटिकां कृत्वा नयनमंजयेत् ।
तिमिरं पटलं हन्ति पिच्चिटं च महौषधम् ॥ ६ ॥

शंख ४ भाग, मनसिल २ भाग, सेंधानमक १ भाग पानी से पीस गोली बना छाया में सुखाकर आंख में लगाने से तिमिर, पटल, पिच्चिट ( नेत्र मल ) रोग नष्ट होता है, यह महौषधि है ॥ ६ ॥

त्रिकटु त्रिफलां चैव करंजस्य फलानि च ।
सैन्धवं रजनीद्वे च भृंगराजरसेन हि ॥ ७ ॥

पिष्ट्वातदंजनादेव तिमिरादि विनाशनम् ॥ ८ ॥

त्रिकुटा, त्रिफला, करंजफल, सेंधानमक, दोनों हल्दी, घमरे के रस से पीस कर गोली बनालें, इसको घिस कर लगाने से तिमिरादि नष्ट हो जाते ॥ ८ ॥

आटरूषकमूलं तु कांजिकापिष्टमेव तु ।
तेनाक्षिभूमिलेपाच्च चक्षुः शूलं विनश्यति ॥ ९ ॥

अडूसे की जड़ कांजी में पीस पलकों पर लेप करने से आंख का दर्द नष्ट हो जाता है ॥ ९ ॥

सतक्रं वदरीमूलं पीतं वाक्षिव्यथां हरेत् ।

मट्ठे के साथ वेरमूल पीने से आंख की पीड़ा नष्ट हो जाती है ।

सैन्धवं कटुतैलं च अपामार्गस्यमूलकम् ।
क्षीरकांजिकसंघृष्टं ताम्रपात्रे तु तेन च ॥ १० ॥
अञ्जनात्पिच्चिटस्यैव नाशोभवति शंकर ! ॥ ११ ॥

सेंधानमक कडुआ तेल, अपामार्ग की जड़, दूध और कांजी के साथ तामे के पात्र में घिस लगाने से आंखों का मैल ( कीचड़ आना ) नष्ट हो जाता है ॥ ११ ॥

विल्वकनीलिकामूलं पिष्टमभ्यञ्जनेन च ।
अनेनाञ्जितमात्रेण नश्यन्ति तिमिराणि हि ॥ १२ ॥

वेलमूल, नीलमूल का बनाया सुर्मा लगाने से तिमिर रोग नष्ट हो जाता है ॥ १२ ॥

कटुकं ( पिप्पली ) तगरं चैव हरिद्रामलकं वचा ।
खदिरं पिष्ट्वातु तस्य अञ्जनान्नेत्ररोगनुत् ॥ १३ ॥

मिच, तगर, हल्दी, आमला, वच, खदिर का बनाया सुर्मा लगाने से समस्त नेत्र रोग दूर हो जाते हैं ॥ १४ ॥

नीरपूर्णमुखोधौति बृहन्मानेन योऽक्षिणी ।
प्रभाते नेत्ररोगैश्च नित्यं सर्वैः प्रमुच्यते ॥ १५ ॥

जो मनुष्य हमेशा प्रातः सोते से उठ कर मुख में पानी भर कर उसी पानी से आखों को धोता है वह सब नेत्र रोगों से छूट जाता है ॥ १५ ॥

शुक्लैरण्डस्यमूलेन पत्रेणापि प्रसाधितम् ।
छागदुग्धसेकमौष्णयाच्चक्षुषोर्वातशूलनुत् ॥ १६ ॥

सफेद अंड की जड़ या पत्तों से पकाये बकरी के दूध के गरम सेंक से आंखों का वात शूल नष्ट हो जाता है ॥ १६ ॥

चंदनं सैन्धवं बृद्धपालाशश्च हरीतकी ।
पटलं कुसुमं नालीं वक्रिकां हरतेऽञ्जनम् ॥ १७ ॥

रक्त चंदन, सेंधानमक, प्राचीन ढाक मूल, हर्रा का अंजन आंख के पटल, फूली, नालिका और तिरछापन को दूर करता है ॥ १७ ॥

गुञ्जामूलं छाग मूत्रेघृष्टं तिमिरनुच्च तत् ।

घुंघुची की जड़ बकरी के मूत्र में घिस कर लगाने से तिमिर रोग दूर हो जाता है ।

रौप्यताम्रसुवर्णानां हस्तघृष्टशलाकया ।
घृष्टमुद्वर्त्तनं रुद्र कामलाव्याधि नाशनम् ॥१८॥ कामलारोगे

चांदी, तांबा, सोना की बनी सलाई को हाथ पर घिस कर आंख में लगाने से कामला रोग दूर हो जाता है ॥ १८ ॥

घोषाफलमपाघ्रातं पीतकामलनाशनम् ।

देवदाली फल का रस नाक में डालने से पीत कामला नष्ट हो जाता है ।

दूर्वादाड़िमपुष्पं तु अलक्तकहरीतकी ।

नासाशत्र।तरक्तनुन्नस्याद्वै स्वरसेन हि ॥२०॥ नासार्शसि

दूर्वा, अनारपुष्प, लाख, हर्रा, का स्वरस नाक में डालने से नाक के मस्से, और वातरक्त कां नष्ट करदेते हैं ॥ २० ॥

आपिष्ट्वाजांगली मूलं तद्रसेनवृषभध्वजः ।

नस्यादाराद्विनश्येत नाशार्शोनीललोहित ? ॥ २१ ॥

कोंच की जड़ के रसके नस्य से और पीतल या सन्तरे के मूल के रस की नस्य से नाक के मस्से नष्ट हो जाते हैं ॥ २१ ॥

गव्यं घृतं सर्जरसं रुद्र धन्याक सैन्धवम् ।

धत्तूरकं गैरिकं च एतैः साधित सिक्थकम् ॥ २२ ॥

सतैलं व्रणनुत्स्याच्च स्फुटितोद्घटिताधरे । ओष्टरोगे

गौ का घृत, राल, धनियां, सेंधानमक, धत्तूरपत्र, गेरु, मोम से पकाया तैल ओठों का फटना और ओष्ट के व्रण को नष्ट कर देता है ॥ २२ ॥

जातीपत्रं चचवित्वा विधृतं मुखरोगनुत् ॥२३॥ मुखरोगे

चमेली के पत्तों को चवा कर मुंह में रखने से मुख रोग नष्ट हो जाते हैं ॥ २३ ॥

भल्लात्केसरबीजस्यदन्ताःस्युश्चलिताः स्थिराः :

मूष्टकं कुष्टमेला च यष्टिकं मधुवालकम् ॥ २४ ॥

धन्याकमेतद्दनान्मुखदुर्गन्धनुद्धर ।

वकुल ( मौलश्री ) बीज के चबाने से दांत दृढ होजाते हैं। पीत सरसों, कूठ, इलाइची, मोरेठी, शहद, सुगंधवाला, धनियां, इनके खाने से मुंह की दुर्गन्ध दूर हो जाती हैं ॥ २४ ॥

कषायं कटुकं वापि तिक्तशाकस्य भक्षणात्।
तैलयुक्तस्यनित्यं स्यान्मुखदुर्गन्धताक्षयः ॥
दन्तव्रणानि सर्वाणि क्षयं गच्छन्त्यनेनतु ॥ २६ ॥

कषाय रस वाले, कटुरस वाले, तिक्त रस वाले शाकों को तैल के साथ खाने से मुंख की दूर्गन्धि, दन्त घाव, नष्ट होजाते हैं ॥ २६ ॥

काञ्जिकस्य सतैलस्य गण्डूषकवलास्थितिः ।
ताम्बूलचूर्णदग्धस्य मुखस्यव्याधिनुच्छित्र ? ॥२७॥

पान पर लगे चूने से मुंह जल जाने पर कांजी और तैल को मिला कुल्ले करने से मुख रोग दूर होता है ॥ २७ ॥

परित्यक्तश्लेष्मणश्च शुण्ठीचर्वणतो यथा ।
मातुलुंगदलान्येलायष्टीमधु च पिप्पली ॥
जातीपत्रमथैषांच चूर्णंलीढ्वा तथा कृतम् ॥ २८ ॥

सोंठ, का चूर्ण या विजौरानीबू के पत्ते, मोरेठो, पोपल, जावित्री के चूर्ण से कफ थूकना दूर होता है ॥ २८ ॥

शेफालिकजटायाश्च चर्वणंगल शुण्ठिनुत् ॥ २६ ॥

निगुंण्डी मूल का चबाना गलशुण्डि रोग नाशक होता है ॥ २६ ॥

नासाशिरारक्त कर्षान्नश्येच्छुंकर जिह्विका।

नाक की शिरा से रक्त मोक्षण करने से उपजिह्वि का रोग नष्ट होता है।

रसः शिरीषबीजानां हरिद्रायाश्चतुर्गुणः।

तेनपक्केनमूतेश नस्यं मस्तकरोगनुत् ॥ ३० ॥

गलरोगाविनश्यन्ति नस्यमात्रेण तत्क्षणात् ॥ ३१ ॥

शिरीष बीज, और हल्दी के चतुर्गुण रस से पकाये तैल के नस्य से शिरो रोग, गल रोग शीघ्र दूर होजाते हैं ॥ ३१ ॥

दन्तकीटविनाशः स्याद्गुञ्जामूलस्यचर्वणात्।

काकजंघास्नुहीनीली कषायो मधुयाजितः।

दन्ताक्रान्तान्दंतजांश्च कृमीन्नाशयते शिव ३२ ॥

गूंजामूल के चबाने से दन्त के कीडे नष्ट होजाते है। काकजंघा सेंहुडमूल, नीलमूल, का क्वाथ मधु से युक्त गण्डूष करने से भी दन्त के कीडे नष्ट हो जाते हैं ॥ ३२ ॥

घृतं कर्कट पादेन दुग्धोन्मिश्रेण साधितम्। दंतकटकटहरं

तेनचाभ्यंगितादंताः कुर्युः कटकटान्नहि ॥ ३३ ॥

लिप्त्वा कर्कट पादेन केवलेनाथवा शिव ॥ ३४ ॥

कॅकडा, के पेरों का कल्क और दुग्ध डाल पकाया तैल दांतों पर लगाने से दांत कटकटाना जो कि प्रायः सोते में लोग करते हैं। कॅकडा के पैरों को पीस कर लगाना भी यही कार्य करता है ॥ ३४ ॥

त्रिसप्ताहं वा पिष्टानि ज्योतिष्मत्या फलानि हि।

शुक्राभयामज्जतेनादन्तस्थां कफजं रुनुत् ॥ ३५ ॥दंतरोगे

मालकंगुनी के फलों को पानी में पीस २१ दिन लगाने से या सफेद वच, हर्रा की मींग मलने से दान्तों का मैल दूर होता है ॥३५॥

लोध्रकंकुममञ्जिष्टा लोहकालेयकानिच ।
यवतंडुल मेतेंश्च यष्टीमधुसमन्वितैः ॥३६॥ मुखसौंदर्ये
वारिपिष्टैर्वक्त्रलेपः स्त्रीणां शोभनवक्त्रकृत् ।

लोध, केशर, मजीठ, अगर, दारुहल्दी, जौ, चामर, मोरेठी, इनको पानी में पीस मुंह पर लगाने से स्त्रियों का मुंह सुन्दर बनाता है ॥ ३६ ॥

द्विभागंछागदुग्धेन तैलप्रस्थंतु साधितम्
रक्तचदनमंजिष्ठा लाक्षाणां कर्षकेण वा ॥ ३७ ॥
यष्टीमधुकुंकुमाभ्यां सप्ताहान्मुखकान्तिकृत् ॥ ३८ ॥

लालचंदन, मजीठ, लाख, मोरेठी, केशर, १-१ तो० लें बकरी का दूध दो सेर डाल १सेरतैल पकाले यह एक सप्ताह में मुंह को कान्ति युक्त करता है ॥ ३८ ॥

शुण्ठीपिप्पलिचूर्णंतु गुडूची कंटकारिका ।
एभिश्चक्वथितं वारिपीतं चाग्नं करोतिवै ॥३९॥ वातशूले
वातशूलं क्षयंचैव करोतिप्रथमेश्वर ।

सोंठ, पीपल काचूर्ण, गुडूची, कटैलो का क्वाथ, अग्नि को प्रदीप्त करता है और वातशूल नाशक भी है ॥ ३९ ॥

करंजपर्पटोशीरं बृहती कटु रोहिणी ।
गोक्षुरं कथितंत्वेभिर्वारिपीतं श्रमापहम् ॥

दाहं पित्तं ज्वरं शोषं मूर्च्छाञ्चैव व्यपनयेत् ॥ ४१ ॥ दाहे

करंज कहीं कर्कट ( काकडासिंगी ) खस, बडीकटेली, कुटकी, गुखुरु, इनका क्वाथ पीने से श्रम, दाह, पित्त, ज्वर, शोष, मूर्च्छा नष्ट होतो है ॥ ४१ ॥

मध्वाज्यपिप्पलीचूर्णं कथितं क्षीरसंयुतम् ।

पीतंहृद्रोगकासस्य विषमज्वर नुद्भवेत् ॥ ४२ ॥ हृद्रोगे

शहद, घृत, पीपलचूर्ण को दूध में डाल पका कर पिलाने से हृदय रोग, खांसी, विषमज्वर, नष्ट करता है ॥ ४२ ॥

क्वाथौषधीनां सर्वासां कर्षार्द्धं ग्राह्यमेवच । क्वाथमात्रा

वर्षाऽनुरूपतो ज्ञेयो विशेषो वृषभध्वज ॥ ४३ ॥

क्वाथ की औषधि आधाकर्ष १ तो० लेना यह उम्र आदिको देख कर देना ॥ ४३ ॥

दुग्धं पीतं तु संयुक्तं गोपुरीष रसेन च । विषमज्वरे

विषमज्वर नुत्स्याच्च काकजंघा रसस्तथा ॥ ४४ ॥

गौ के गोबर का रस, दूध में मिला पीने से विषम ज्वर नष्ट होजाता है इसी प्रकार कांकजंघा रस दूध के साथ काम करता है ॥ ४४ ॥

सशुण्ठकथितं क्षीरमजाया ज्वरनुद्भवेत् । ॥ ४५ ॥

सोंठ के द्वारा पकाया बकरी का दूध ज्वर नाशक होता है ॥४५॥

यष्टीमधुकमुस्तं च सैन्धवं बृहती फलम्

एतैर्नस्यप्रदानाच्च निद्रास्यात्पुरुषस्य च ॥ ४६ ॥

मोंरेठी, मोंथा, सेंधानमक, कंटकारी के फल, इनका नस्य देने से नींद आती है ॥ ४५ ॥

मरीचमध्वश्वलालानस्यान्निद्राभवेच्छिव ।
मूलंतु काकजंघाया निद्राकृत्स्याच्छिरस्थितम् ॥ ४६ ॥

मिर्च, मधु, घोड़े की लार का नस्य देने से भी नींद आती है। काकजंघा मूल शिर पर रखने से भी नींद आती हैं ॥ ४६ ॥

सिद्धतैलं कांजिकेन तथासर्जरसेन च ।
शीतोदकसमायुक्तं लेपात्सन्तापनाशनम् ॥ दाहे
शोणितज्वरदाहेभ्यो जातसंतापनुत्तथा ॥ ४८ ॥

कांजी और राल से पकाया तैल ठंडे पानी में मथ लगाने से रक्त या ज्वर से पैदा दाह नष्ट होता है ॥ ४८ ॥

शूकशैवालमन्थाश्च शुण्ठीपाषाणभेदकम् । वातरोगे
शोभाञ्जनं गोक्षुरं वा वरुणच्छल्लमेव च ॥ ४६ ॥
शोभाञ्जनस्य मूलं च एतैः क्वथितवारि च ।
दत्वाहिङ्गुयवक्षारं पीतं वात विनाशनम् ॥ ५० ॥

यव, सिवार, इरणी का या सोंठ, पाषाणभेद, सेंजनाछाल, गुखुरू का या वरुण छाल या सेंजनामूल का क्वाथ हींग, यवक्षार डाल पिलाने से वात नष्ट हो जाता है ॥ ४६-५० ॥

पिप्पली पिप्पलीमूलं तथाभल्लातकं शिव । वातशूले
वार्य्येतैः क्वथितं पीतं वात शूलापहारकृत् ॥ ५१ ॥

पीपल, पीपलामूल, भिलावा का क्वाथ हे शिव ! वात और शूल को नष्ट कर देता है ॥ ५१ ॥

अश्वगंधामूलकाभ्यां सिद्धा वल्मीकमृत्तिका । उरुस्तम्भे
एतया मर्दनाद्रुद्र ऊरुस्तम्भः प्रशाम्यति ॥ ५२ ॥

असगंध, मूली, राई, बांबी की मिट्टी इनके मर्दन से हे शिव ऊरुस्तम्भ नष्ट हो जाता है ॥ ५२ ॥

बृहतीकस्य वै मूलं संपिष्टमुदकेन च । संघातवाते
पीतं संघातवातस्य विपाटनकृद्भवेत् ॥ ५३ ॥

बड़ी कटेली की जड़ पानी से पीने से जमा हुआ कफ, वात दूर जाता है ॥ ५३ ॥

पीतं तक्रेण मूलं च आर्द्रस्य तगरस्य च । झिंझिणीवाते
हरेत् झिंझिणीवातं वै वृत्रमिन्द्राशनिर्यथा ॥ ५४ ॥

अदरख या तगरमूल तक्र से पीने से झिंझिनी वात दूर हो जाती है ॥ ५५ ॥

अस्थिसंहारकं मेकेन भक्तेनसह खादितं । अस्थिभंगे
पीतं मांसरसेनापि वातनुच्चास्थिभंगनुत् ॥ ५५ ॥
घृत लिप्तं सशुष्कं च छागीक्षीरेण संयुतम् ।पाददारीहरः
तल्लेपात्पाददारीणां सक्षयो नात्र संशयः ।५६ ॥

अकेली हड़जोड़ भोजन के साथ पका कर खाने से या मांस रस के साथ लेने से वात का नाश होता है और टूटी हड्डी जुड़ जाती है। वही सुखाई हुई हड़जोड़ घृत और बकरी के दूध के साथ लेप करने से पैरों की बिवाई दूर हो जाती है, इसमें संदेह नहीं ॥ ५५-५६ ॥

मध्वाज्यसैन्धवं सिक्थं गुडगैरिकगुग्गुलैः ।
सर्जरसस्फुटितं कोमलापार्श्वलेपनात् ॥ ५७ ॥

मधु, घृत, सेंधानमक मोंम, गुड़, गेरू, गूगल, राल का लेप हाथ, पैरों के फटने में, पसलियों को नर्म करने में उपकारी है ॥ ५७ ॥

कटुतैलेन लिप्तो वै विधूमाग्नौ प्रतापितः । पादस्फुटौ
मृत्तिकाखादितः पादः समः स्याद् वृषभध्वज ॥ ५८ ॥

कड़वे तैल को खूब लगाकर बिना धुंवे वाली आग से पैर को सेंक देने से मिट्टी के लग जाने से फटे हुये पैर ठीक हो जाते हैं ॥ ५८ ॥

सर्जरसाः सिक्थकं च जीरकं च हरीतकी । अग्निदग्धे
उत्साधितघृताभ्यङ्गो ह्यग्निदग्धव्यथापनुत् ॥ ५९ ॥

राल, मोंम, जीरा, हरीतकी से पकाया घृत अग्नि से जल जाने पर लाभ देता है ॥ ५९ ॥

तिलतैलं चाग्निदग्धं यवभस्मसमन्वितम् ।
अग्निदग्धंव्रणं नश्येद्बहुशः कृतलेपतः ॥ ६० ॥

अग्नि द्वारा तिल तैल में जलाये जौ दोनों का मलहम बना लगाने से अग्नि से जले घाव भर जाते हैं ॥ ६० ॥

नवनीतं माहिषं च दग्धपिष्टतिलानि च । हृदयशूले
सभल्लाकंव्रणं नश्येद्धृतशूलं नस्यलेपनात् ॥ ६१ ॥

भैंस के नैनी (मक्खन) में जलाकर पीसे गये तिल का मलहम मिलावे से पैदा हुये घाव को और हृदय शूल को नस्य एवं लेप से दूर कर देते हैं ॥ ६१ ॥

कर्पूरगव्यसर्पिर्भ्यां प्रहारः पूरितो हर । शस्त्राघाते
शस्त्रोद्भवः सवद्धश्च शुक्लवस्त्रेण शंकर ॥
पाकं न वेदनां चैव संस्पृशेद्वृषभध्वज ॥ ६२ ॥

कपूर और गौका घी शस्त्र प्रहार से हुये व्रण में भर सफेद कपड़े से बांध देने से हे शिव ! पाक, दर्द नहीं होता है ॥ ६२ ॥

आम्रमूलरसेनैव शस्त्रघातः प्रपूरितः ।
ढौकते शस्त्रघाताभ्यां निर्व्रणो घृतपूरितः ॥ ६३ ॥

आम की जड़ के रस को शस्त्रघात में भरने से और घृत लगा बांधने से व्रण नष्ट हो जाता है ॥ ६३ ॥

शरपुंखा लज्जालुकापाठा चैषां तु मूलकम् ।
जलपिष्टं तस्यलेपाच्छस्त्रघातः प्रशाम्यति ॥ ६४ ॥

शरपोंखा, लजवंती, पाठा इनकी जड़ को जल से पीस लेप करने से शस्त्र का व्रण नष्ट हो जाता है ॥ ६४ ॥

मूलं च काकजंघायास्त्रिरात्रेणैव शोषितः ।
पाकपूतिं वेदनांच हन्तिवै रोहितो व्रणः ॥ ६५ ॥

काकजंघा की जड़ तीन दिन पीस कर लगाने से पकना, और दर्द को दूर कर घाव को भर देता है ॥ ६५ ॥

सजलंतिलतैलं च अपामार्गस्यमूलकम् । आघाते
तत्सेकदानान्नश्येच्च प्रहारोद्भववेदना ॥ ६६ ॥

पानी युक्त तिल का तैल और अपामार्ग की जड़ का सेंक करने से चोट की पीड़ा नष्ट हो जाती है ॥ ६६ ॥

अभयां सैंधवं शुण्ठीमेतत्पिष्ट्वोदकेन तु । अजीर्णे
भक्षयित्वाह्यजीर्णस्य नाशोभवति शंकर ? ॥ ६७ ॥

हर्रा, सेंधानमक, सोंठ, को पानी में पीस खाने से हे शिव अजीर्ण का नाश हो जाता है ॥ ६७ ॥

कटिबद्धं निम्बमूलमक्षि शूलहरं भवत्। अक्षिरोगे
शणमूलं सताम्बूलं दग्धमान्द्रियकस्यहृत् ॥६८॥
इन्द्रियदग्धे

नींब की जड़ कमर में बांधने से नेत्र की पीड़ा दूर होती है। शन की जड़ और पान, जली हुई इद्रिय को ठीक कर देती हैं ॥ ६८ ॥

अन्नस्विन्नहरिद्रा च श्वेतसर्षपमूलकम्।
बीजानि मातुलुंगस्य एषामुद्वर्तनं समं॥
सप्तरात्रप्रयोगेण शुभदेहकरं भवेत् ॥ ६६ ॥ देहकान्तिकरं

अन्न के साथ उबाली हुई हरिद्रा, सफेद सरसों की जड़, बिजौरे नीबू के बीज, इनका दोनों समय किया गया उबटन, सात दिन में देह को सुन्दर बना देता है ॥ ६६ ॥

श्वेतापराजिता पत्रं निम्बपत्ररसेनतु। प्रेतहरम्
नस्यदानाड्डाकिनीनां मातॄणां ब्रह्मरक्षसाम्॥
मोक्षःस्यान्मधु सारेण नस्याच्च वृषभध्वज ? ॥ ७० ॥

सफेद कोयल के पत्ते, नीब पत्र रस से पीस मधु मिला नस्य देने से, डाकिनी, मातृ का ब्रह्मराक्षस छूट जाते हैं ॥ ७० ॥

मूलं श्वेतजयन्त्याश्च पुष्यर्क्षेतु समाहृतम्। वश्ये
श्वेतापराजितार्कस्य चित्रकस्यच मूलकम्॥
कृत्वातु वटिकां नारी तिलकेन वशीभवेत् ॥ ७१ ॥
औंठठठ इति सर्ववश्यप्रयोगेषुप्रयुक्तः सर्वकार्यकृत् ॥

पुष्य नक्षत्रमें लाई हुई सफेद जयन्ती, सफेद अपराजिता, सफेद आक, चित्रक की जड़ को पीस तिलक करने से स्त्री वशमें होती है ॥७१॥
यह मंत्र समस्त वश्य प्रयोगों में काम देता है ॥

पिप्पली लोह चूर्णंतु शुण्ठी चामलकानिच। वृष्ये
समानिरुद्र जानीयात् सैंधवं मधु शर्करा ॥
उदुम्बर प्रमाणेन सप्ताहं भक्षणात समम्।
पुमांश्चबलवान् सस्याज्जीवेद्वर्षशतद्वयम् ॥ ७२ ॥

पीपल, लोह भस्म, सोंठ, आमला, सेंधा नमक, मधु, शकर समान भाग ले एक २ तोला दिन में दोनों समय खाने से सात दिन में ही मनुष्य बलवानहो जाता है, और वह दो सौ वर्षतक जीता है ॥७२॥

भावितं ऋक्षदुग्धेन मत्स्यस्य रोहितस्य च।
मांसं तत्साधितं तैलं तदाभ्यङ्गाच्च रोगनुत् ॥ ७३ ॥

रीछ के दूध से भवित किया रोहित मछली का मांस उससे सिद्ध किया हुआ तैल मर्दन से ही सब रोग हर होता है ॥ ७३ ॥

हस्तेलांगलिकाकन्दं गृहीतं तेन लेपितम्।
शरीरंयेन सपुमान्वृद्धेदर्पं व्यपोहति ॥ ७४ ॥

हस्त नक्षत्र में लाई हुई करियारी की जड़ का लेप शरीर पर करने से वृद्धता दूर होती है।

चन्दनोदकनस्य तु रोमोत्थानं भवेत्पुनः॥ रोमोत्थाने

चंदन के पानी का नस्य बाल पैदा करता है ॥ ७४ ॥

सुदर्शनाया मूलंतु पुष्यर्क्षेतु समाहृतम्। सर्पदूरीकरणम्
निक्षिप्तं गृहमध्येतु भुजंगा वर्जयन्ति तत् ॥ ७५ ॥

पुष्य नक्षत्र में लाई हुई सुदर्शन की जड़ घर में रखने से सांप घर को छोड़ चले जाते हैं ॥ ७५ ॥

अर्कमूलेन रविणा अथाग्निज्वलिताशिव ।
युक्ता सिद्धार्थतैलेन वर्तिर्मार्गाहिनाशिनी ॥ ७६ ॥

सफेद सरसों का तेल और आक की जड़, इरहुर से बनी वर्ती, आक के अंगारों पर जलाने से भी सांप नहीं आते ॥ ७६ ॥

मार्जारपललं विष्टा हरितालं च भावितम् । मूषकहरणम्
छागमूत्रेणतल्लिप्तो मूषिको मूषकान् हरेत् ॥ ७७ ॥
मुक्तोहि मन्दिरे रुद्र नात्रकार्य्या विचारणा ॥

बिल्ली का मांस, बिल्ली की विष्टा, हरिताल, बकरी के मूत्र में पीस चूहे को पकड़ लेप कर छोड़ देने से मूसे भाग जाते हैं ॥ ७७ ॥

त्रिफलार्जुनपुष्पाणि भल्लातक शिरीषकम् । मशकहरणम्
लाक्षासजरसश्चैव विडंगश्चैव गुग्गुलुः ॥
एतैर्धूपो मक्षिकाणां मशकाणां विनाशनः ॥ ७८ ॥

केतकी, अर्जुन के फूल, भिलावे के फूल, शिरस के फूल, लाख, राल, विडंग, गूगल की धूनी देने से मक्खी और मसों का नाश हो जाता है ॥ ७८ ॥

इति श्रीगारुडे महापुराणे नेत्राञ्जनादिनिरूपणं नाम सप्तसप्तत्युत्तरशततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूडामणि पं० विश्वेश्वरदयालुप्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया सनाथी कृतः समाप्तः ॥ १७७ ॥



खंजरीटस्य मांसंतु मधुना सह पेषयेत् ।   वशीकरणम्
ऋतुकाले योनिलेपात् पुरुषो दासतामियात् ॥ १ ॥

खंजन पक्षी का मांस मधु से पीस ऋतु समय के बाद योनि लेप करने से स्त्री पुरुष को वश कर लेती है ॥ १ ॥

श्वेतापराजितामूलं पिष्टं रोचनयासह ।
यः पश्येत्तिलकेनैव वशीकुर्य्यान्नृपालये ॥ २ ॥

सफेद अपराजिता की जड़ गोरोचन के साथ पीस तिलक करने से राजद्वार को वश करता है ॥ २ ॥

आरण्यस्य विडालस्य गृहीत्वारुधिरं शुभम् ।
करञ्जतैले तद्धाव्यं रुद्राग्नौ कज्जलं ततः ॥
पातयेत्पद्मपत्रेण ह्यदृश्यः स्यात्तदञ्जनात् ॥ ३ ॥

जंगली बिल्ली का रुधिर कज के तैल में डाल अग्नि में पकावें, जब वह काजल के समान हो जाय, तब कमल के पत्ते से निकाल कर अंजन करने से अदृश्य हो जाता है ॥ ३ ॥

ओं नमः खडगवज्रपाणये महायक्षसेनापतये स्वाहा । ओं रुद्र ह्रां ह्रीं वर शक्ता त्वारताविद्या । ओं मातरः स्तम्भय स्वाहा । सहस्र परिजप्यात्तु विद्येयं चौर वारिणी ॥ ४ ॥   चौरवारणम्

यह चोरों को रोकने को विद्या है, एक सहस्र जपने से सिद्ध होती है ॥ ४ ॥

महासुगंधिकामूलं शुक्रं स्तम्भयेत्कटौ स्थितम् । शुक्रस्तम्भे
ब्रह्मदंडीशिखावक्त्रे क्षिप्ता शुक्रस्यस्तम्भनम् ॥ ५ ॥

नाकुलीकंद शाक की जड़ कमर में बांधने से वीर्य स्तम्भ होता है, ब्रह्मदंडी मूल मुखमें रखने से भी शुक्रस्तम्भ होता है ॥ ५ ॥

दुरालभावचाकुष्टं कुंकुभं च शतावरी।
तिलतैलेनसंयुक्तं योनिलेपाद्वशीन्नरः॥ ६॥
निम्बकाष्टस्यधूपेन धूपयित्वा भगं वधूः।
सुभगास्यात्साति रुद्र पतिर्दासो भविष्यति॥ ७॥ वश्ये

यवासा, वच, कूठ केशर, शतावर, तिल तैल में मिला भग लेप से मनुष्य वश में होता है। इसी प्रकार नींव के काठ से भग को धूपित करने से होता है॥ ६–७॥

माहिषं नवनीतं च कुष्टं च मधुयष्टिका।
सौभाग्यं भगलेपात्स्यात् पतिर्दासो भवेत्तथा॥ ८॥

भैंस का मक्खन, कूठ, मोरेठी का योनि लेप पुरुष वशीकर होता है॥ ८॥

मधुयष्टिश्चगोक्षीरं तथा च कंटकारिका। गर्भधारणे
एतानिसमभागानि पिबेदुष्णेनवारिणा॥
चतुर्भागावशेषेण गर्भसंभवमुत्तमम्॥ ९॥

मोरेठी, गुखुरू, कंटकारी समान भाग ले गर्मकर चौथाई रहे गर्म पानी से पीने से गर्भ रहता है॥ ९॥

मातुलुंगस्यबीजानि क्षीरेणसहभावयेत्।
तत्पीत्वालभते गर्भं नात्रकार्य्या विचारणा॥ १०॥
मातुलुंगस्यबीजानि मूलान्येरण्डकस्य च।
घृतेनसहसंयोज्य पाययेत्पुत्रकांक्षिणीम्॥ ११॥

बिजौरे के बीजों को गौदुग्ध से भावना दे गौदुग्ध से पीने से गर्भ होता है। बिजौरा बीज, एरंडमूल घृत के साथ देने से भी गर्भ रह जाता है॥ १०–११॥

अश्वगंधाघृतंदुग्धं कथितं पुत्रकारकम् ।

असगंध घृत दुग्ध के साथ पीना भी पुत्र देने वाला है ।

पलाशस्यतु बीजानि क्षौद्रेणसह पेषयेत् ।

रजस्वला तु पीतास्यात्पुष्पगर्भाववर्जिता ॥ १२ ॥

ढांक बीज मधु के साथ पीस ऋतु के बाद पीने से रजोरोध और गर्भरोध हो जाता है ॥ १२ ॥

इतिश्रीगरुडपुराणोक्त योगसारादिवर्णनं नाम अष्टसप्तत्युत्तर शततमोऽध्यायः

श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया

विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥



हरिरुवाच

हरितालं यवक्षारं पत्रांगं रक्तचंदनं । रक्तदन्तकरणे

जातिहिंगुलकं लाक्षां पक्त्वा दन्तान्प्रलेपयेत् ॥ १ ॥

हरीतकीकषायेण मृष्ट्वा दन्तान्प्रलेपयेत् ।

दन्ताः स्युर्लोहिताः पुंसः श्वेता रुद्र न संशयः ॥ २ ॥

हरताल, यवक्षार, पतंग लालचंदन, चमेली पुष्प, हिंगुल, लाख को हर्र के क्वाथ से पीस दान्तों पर मलने से दान्त लाल हो जाते हैं, हे शिव इसमें संशय नहीं ॥ १-२ ॥

मूलकं स्विद्य मन्दाग्नौ रसंतस्य प्रपूरयेत् ।

कर्णयोः पूरणात्तेन कर्णस्रावो बिनश्यति ॥ ३ । कर्णस्रावे

मूली को आग पर सेंक उसका रस कान में डालने से कान का बहना बंद हो जाता है ॥ ३ ॥

अर्क पत्रं गृहीत्वातु मन्दाग्नौ तापयेच्छनैः ।
निष्पीड्यपूरयेत्कर्णौ कर्णशूलं विनश्यति ॥ ४ ॥

आक का पत्ता ले अग्नि पर गर्म कर उसको मल कर अर्क निकाल कान में डालने से कर्णशूल नष्ट हो जाता है ॥ ४ ॥

प्रियंगुमधुकाचैव धातक्युत्पलपंक्तिभिः ।
मंजिष्टालोध्रलाक्षाभिः कपित्थस्वरसेन च ॥
पचेत्तैलं तथा स्त्रीणां नश्येत्क्लेदः प्रपूरणात् ॥ ५ ॥

प्रियंगु ( गोंदनी फल ) मोरेठी, धाय के फूल, कमलपुष्प, मजीठ लोध, लाख का कल्क बना कैथ रस से तैल पका लगाने से योनि का कान का क्लेद ( सफेद पानी वहना ) दूर हो जाता है ॥ ५ ॥

शुष्कमूलकशुण्ठीनां क्षारो हिंगुमहौषधम् ।
शतपुष्पा वचाकुष्टं दारुशिग्रुरसाञ्जनम् ॥ ६ ॥
सौवर्चलं यवक्षारं तथासर्जक सैन्धवम् ।
तथा ग्रंथिविडं मुस्तं [1]मधुयुक्तं चतुर्गुणम् ॥ ७ ॥
मातुलुंग रसस्तद्वत्कदल्याश्चरसो हितैः ।
पक्वतैलं हरेदाशु स्रावादींश्च न संशयः ॥ ८ ॥

सूखीमूली, सोंठ का क्षार, हींग, सोंठ, पीपरामूल, विडनमक, मोंथा, मोरेठी का कल्क, बिजौरा रस, केला रस, तैल से चौगुना

---

१ क्वचित् मधुसुक्तञ्च ।
तद्यथा—जम्बीरस्यफलरसं पिप्पली मूलसंयुतम् ।
मधुभाण्डेविनिक्षिप्य धान्यराशौ निधापयेत् ॥
त्र्यहेण तज्जातरसं मधुसुक्तमुदाहृतम् ॥ शार्ङ्ग०

डाल तैल पकालें, इसके लगाने से स्रावादि नष्ट हो जाते हैं इसका फाहा रखना चाहिये ॥ ६-८ ॥

कर्णयोः कृमिनाशः स्यात्कटुतैलस्यपूरणात् ।

कड़वा तैल कान में डालने से कृमि नष्ट हो जाते हैं ।

हरिद्रा निम्बपत्राणि पिप्पल्यो मरिचानि च ।
विडंगभद्रं मुस्तंच सप्तमविश्वभेषजम् ॥ ९ ॥
गोमूत्रेण च पिष्ट्वैव कृत्वा च वटिकां हर ।
अजीर्णहृद्भवेच्चैकं द्वयं विसूचिकापहम् ॥ १० ॥
पटलं मधुनाहन्ति गोमूत्रेण तथांन्धताम् ।
एषाच शंकरीवर्तिः सर्वनेत्रामयापहा ॥ ११ ॥

हल्दी, नींबपत्र, पीपल, मिर्च, विडंग, नागरमोंथा, सोंठ को गोमूत्र से पीस गोली बनाले, १ गोली अजीर्ण नाशक होती है और दो से विसूचिका दूर हो जाती है ॥ १० ॥

मधु से पटल और गोमूत्र से अंधता या अर्बुद नष्ट करने वाली यह शंकरीवर्ति सब नेत्र रोगों को नष्ट कर देती है ॥ ११ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे वश्यादियोग वर्णनं नाम एकोनाशीत्यधिक शततमोऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूडामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥



हरिरुवाच

बचामांसी च विल्वं च तगरं पद्म केशरम् ।

नागपुष्पं प्रियंगु च समभागानि चूर्णयेत् ॥

अनेनधूपितोमर्त्यः कामवद्विचरेन्महीम् ॥ १ ॥ वश्ये

बच, जटामांसी, वेलगूदा, तगर, कमलपुष्प, केशर, नागकेशर, प्रियंगु का धूप देनेसे कामके समान मनुष्यभूमिपरनिर्बाध घूमता है ॥१॥

कर्पूरं देवदारुञ्च मधुनासहयोजयेत् ।

लिंगलेपाच्चतेनैव वशीकुर्य्यात्स्त्रियं किल ॥ २ ॥

कपूर, देवदारु को पीस मधु में मिला किया लिंग लेप स्त्री वशी कर होता है ॥ २ ॥

सैन्धवंकृष्णलवणं सौवीरं मत्स्यपित्तकम् ।

मधुसर्पिःसितायुक्तं स्त्रीणांतद्भगलेपनात् ॥

यः पुमान् मैथुनं गच्छेन्नान्यां नारीं गमिष्यति ॥३॥

सेंधानमक, कालानमक, सुर्मा, मछली पित्त, मधु, घृत मिश्री युक्त भग पर लेप करने वाली स्त्री से मैथुन कर पुरुष अन्य स्त्री को नहीं चाहता ॥ ३ ॥

शंखपुष्पी बचमांसी सोमराजी च फल्गुकम् ।

माहिषं नवनीतञ्च त्वेकीकृत्यभिषग्वर ? ॥ ४ ॥

समूलानि सपत्राणि क्षीरेणाज्येन पेषयेत् ।

गुटिकां शोधितां कृत्वा नारीयोन्यां प्रवेशयेत् ॥ ५ ॥

दशवारं प्रसूतापि पुनः कन्या भविष्यति ॥ ६ ॥

शंख पुष्पी बच, जटामांसी, बाकुची, कठूमर, को भैस की नैनी में मिला कर गोली वनाले या दूध घृत में पीस गोली बना योनि में रखने से दश बार की प्रसूता स्त्री भी कन्या के समान भग वाली हो जाती है ॥ ६ ॥

सर्षपाश्चवचाचैव मदनस्य फलानि च ।
मार्जारविष्टाधत्तूरं स्त्रीकेशेन समान्वितम् ॥
चातुर्थिक हरोधूपो डाकिनी ज्वर नाशकः ॥८॥ चातुर्थिके

सरसों, बच, मैनफल, बिल्ली की विष्टा, धत्तूर फल, स्त्री के बाल की धूप से चौथे दिन आने वाला ज्वर दूर होता है ॥ ८ ॥

अर्जुनस्य च पुष्पाणि भल्लातक विडंग के ।
वालाचैव सजरसं सौवीर सर्षपास्तथा ॥६.। मशकहरणे
सर्पयूकामक्षिकाणां धूमोमशकनाशनः ॥

अर्जुन पुष्प, भिलावा, विडंग, सुगंधवाला, राल, कालासुर्मा, सरसों की धूप सांप, मक्खी, मशक नाशक है ॥ ६ । १० ॥

भूतलायाश्च चूर्णेन स्तम्भः स्याद्योनिपूरणात् ।
तेनलेपनतो योनौ भगस्तम्भस्तु जायते ॥ १२ ॥भगस्तम्भे

केचुवा, का चूर्ण भग में रखने से भगस्तम्भ होता है ॥ १२ ॥

इति श्री गारुडेमहापुराणे वश्यादि कथनं नाम अशीत्यधिक शततमोऽध्यायः
श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि प० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया
विश्वेश्वरीटीकया सनाथीकृतः समाप्तः



हरिरुवाच

ताम्बूलं घृतं चौद्रं लवणं ताम्रभाजने।

तथा पयः समायुक्तं चक्षुःशूल हरं परम् ॥ १ ॥ नेत्ररोगे

भगवान कहने लगे। पान, घृत, मधु, नमक, दूध, के साथ ताम्रपात्र, में घिस लगाने से नेत्र शूल दूर होता है ॥ १ ॥

हरीतकी वचाकुष्टं व्योषं हिंगु मनः शिला।

कासे श्वासे च हिक्कायां लिह्यात्चौद्रं घृतलु तम् ॥२॥कासे

हर्रा, वच, कूठ, त्रिकुटा, हींग, मनसिल का चूर्ण, घृत, मधु, से चाटने से हिक्का श्वास, खांसी दूर होता है ॥ २ ॥

पिप्पली त्रिफला चूर्णं मधुनालेहयेन्नरः।

नश्यते पीनसः कासः श्वासश्चवलवत्तरः ॥ ३ ॥ श्वासे

पीपल, त्रिफलाचूर्ण, मधु, के साथ चाटने से वलवान पीनस, श्वास, कास दूर होते हैं ॥ ३ ॥

समूल चित्रकं भस्म पिप्पली चूर्णकं लिहेत्।

श्वासं कासं च हिक्काञ्च मधुमिश्र बृषध्वज? ॥४॥हिक्काहरं

समूलचित्रक भस्म, पीपलचूर्ण, युक्त मधुसे चाटने पर हिक्का, श्वास, कास, का नष्ट कर देती है ॥ ४ ॥

नीलोत्पलं शर्करा च मधुकं पद्मकं समम्।

तण्डुलोदकसंमिश्रं प्रशमेद्रक्त विक्रिया ॥ ५ ॥ रक्तरोधे

नीलकमल, शकर, मोरेठी, पद्माख, चांवल, धोवन में मिला देने से रक्त वंद होता है ॥ ५ ॥

शुण्ठी च शर्करा चैव तथा चौद्रेणसंयुता। स्वरकरणे

कोकिलस्वर एव स्याद्गुटिका भुक्तिमात्रतः ॥ ६ ॥

सोंठ, शकर मधुसे चाटने से कोकिल के समान स्वर हो जाता है ॥ ६ ॥

हरितालं शंखचूर्णं कदलीदलभस्मना ।
एतद्द्रव्येणचोद्वर्त्य लोमशातनुमुत्तमम् ॥ ७ ॥
लवणंहरितालञ्च तुम्बिन्याश्च फलानि च ।
लाक्षारस समायुक्तं लोमशातनमुत्तमम् ॥८॥ लोमशातन
सुधाच हरितालञ्च शंखभस्म मनः शिला ।
सैन्धवेन सहैकत्र छागमूत्रेण पेषयेत् ॥ ९ ॥
तत्क्षणोद्वर्त्तनादेव लोमशातनमुत्तमम् ॥ १० ॥

हरिताल, शंख भस्म केले के पत्तों की भस्म पानी मिला उवटन करने से । या लवण, हरिताल, कटुतुम्बीफल, लाख रस, से लगाना । या चूना, हरताल, शंखभस्म, मनसिल, सेंधानमक वकरी के मूत्र से पीस लगाना यह तीनों योग वालों को उड़ादेने वाले हैं ॥ १० ॥

शंखमामलकं पत्रं धातक्याः कुसुमानि च ।
पिष्ट्वातत्पयसासार्द्धं सप्ताहं धारयेन्मुखे ॥११॥ दन्तश्वैत्ये
स्निग्धाः श्वेताश्च दन्ताश्च भवन्ति विमलप्रभाः ॥१२॥

शंख, आमला पत्र, धाय के फूल दूध से पीस मुंह में रखने से सात दिन में दान्तों को सफेद साफ कर देते हैं ॥ १२ ॥

शरद्ग्रीष्मबसन्तेषु प्रायशोदधिगर्हितम् । दधिभक्षणे
हेमन्तेशिशरेचैव वर्षासुदधिशस्यते ॥ १ ॥

शरद ( क्वार, कातिक ) ग्रीष्म ( जेठ, अषाढ ) बसंत ( चेत, वैषाख ) में दही नहीं खाना । हेमन्त (माह, फागुन) शिशिर ( अगहन, पूष ) वर्षा ( सावन, भादों ) में दही खाना चाहिये ॥ १ ॥

भुक्तेतु शर्करापीता नवनीतेन बुद्धिकृत्। भोजने
गुडस्यतु पुराणस्य पलमेकन्तु भक्षयेत्।
स्त्रीसहस्रञ्च संगच्छेत्पुमान्वलयुतो हर ?॥ २॥

भोजन के बाद मक्खन के साथ शकर खाना बुद्धि बढाता है। इसी प्रकार भोजन के बाद पुराना गुड़ एक पल खाने से हजारों स्त्रियों से रमण करता हुवा वलवान ही रहता है॥ २॥

कुष्टंसुचूर्णितं कृत्वा घृतमाक्षिक संयुतम्। वलीपलिते
भक्षयेत्स्वप्नवेलायां वलीपलितनाशनम् ॥ ३॥

कुष्ट का चूर्ण घृत, मधु, से सोते समय पर खाने से वलीपलित नाशकर देता है यह वृद्धों के लिये उत्तम है॥ ३॥

अतसीमाषगोधूमचूर्णं कृत्वातु पिप्पली।
घृतेन लेपयेद्गात्रमेभिः सार्द्धं विचक्षणः।
कन्दर्पसदृशोमर्त्यो नित्यं भवति शंकर ?॥ ४॥

अलसी, उरद, गेहूं का आटा, पीपल, घृत, में मिला नित्य लेप करने से काम के समान शरीर सुन्दर हो जाता है॥ ४॥

यवास्तिलाश्वगंधा च मुशली सरला गुडम्।
एभिश्च गुटिकांजग्ध्वा तरुणोवलवान्भवेत्॥ ५॥

यव, तिल, असगंध, मूसली, इलाइची की गुड से वनी गोली खाने से जवान और वलवान हो जाता है॥ ५॥

हिंगुसौवर्चलं शुण्ठी पीत्वातु कथितोदकैः।
परिणामाख्यशूलंच अजीर्णंचैव नश्यति ॥६॥परिणामशूले

हींग, कालानमक, सोंठ, गरम जल से पीने पर परिणामशूल, और अजीर्ण, नष्ट करता है ॥ ६ ॥

धातकीं सोमराजीञ्च क्षीरेणसहपेषयेत् ।
दुर्वलश्चभवेत्स्थूलो नात्रकार्याविचारणा ॥ ७ ॥ स्थौल्ये

धायफूल, बाकुची, दूध के साथ पीस खाने व लगाने से दुर्वल भी मोटा होजाता है इसमें संदेह नहीं ॥ ७ ॥

शर्करामधुसंयुक्त नवनीतं वलीलिहेत् । क्षये
क्षीराशी च क्षयीपुष्टिं मेधाश्चैवातुलां व्रजेत् ॥ ८ ॥
कुलीरचूर्णं सक्षीरं पीतं च क्षयरोगनुत् ॥ ९ ॥

शकर, मधु, नवनीत, का खाना और केवल दूध पर रहने से क्षयरोगी पुष्टि, और अतुल मेधा प्राप्त करता है। कैंकड़ा मांस चूर्ण दूध के साथ पीना भी क्षयरोग को नष्ट कर देता है ॥ ८ । ९ ॥

भल्लातकं विडंगञ्च यवक्षारं च सैन्धवम् । लोमशातने
मनः शिला शंखचूर्णं तैल पक्वं तथैव च ॥
लोमानि शातयत्येव नात्रकार्य्याविचारणा ॥ १ ॥

भिलावा, विडंग, यवक्षार, सेंधानमक, मनसिल, द्वारा पकाया तैल लोमशातक होता है ॥ १० ॥

यष्टिमधुपलैकेन पक्वमुष्णोदकं पिवेत् ।
विष्टम्भिकाञ्च हृत्शूलं हरत्येवमहेश्वर ! ॥ १॥ हृच्छूले

मोरेठी का चूर्ण १ पल से पकाया जल गर्म २ पीने से विष्टम्भिका और हृदयशूल नष्ट कर देता है ॥ १ ॥

ओं हूं जः । मन्त्रोऽयं हरते रुद्र सर्व वृश्चिकजं विषम् ॥ १२ ॥

ओं हूं जः यह मंत्र बिच्छू विष नष्ट कर देने वाला है ॥ १२ ॥

पिप्पलीनवनीतं च शृंगवेरं च सैन्धवम् ।

मरिचं दधि कुष्टं च नस्येपाने विषं हरेत् ॥१३॥विषहरम्

पीपल, मक्खन, सोंठ, सेंधानमक, मिरच, दही, कूठ का नस्य और खाना विषहर होता है ॥ १३ ॥

त्रिफलार्द्रककुष्टं च चंदनं घृतसंयुतम् ।

एतत्पानाच्च लेपाच्च विषनाशो भवेत् शिव ॥ १४ ॥

त्रिफला, अदरख, कूठ, चन्दन घृतके साथ खाने और लेप से विष नाश होता है ॥ १४ ॥

पारावतस्य चाक्षीणि हरितालं मनःशिला ।

एतद्योगाद्विषं हन्ति वैनतेय इवोरगान् ॥ १५ ॥

कबूतर की आंख हरताल, मनसिल का लेप विष नाशक होता है, जैसे गरुड़ सर्पों को ।

सेन्धवं त्र्यूषणं चैव दधिमध्वाज्यसंयुतम् ।

वृश्चिकस्यविषं हन्ति लेपोऽयं वृषभध्वज ! ॥ १६ ॥

सेंधानमक, त्रिकुटा, दही, मधु, घृत के साथ किया गया लेप बिच्छू की वेदना को दूर कर देता है ॥ १६ ॥

ब्रह्मदण्डीतिलान्क्वाथ्य चूर्णं त्रिकुटं पिवेत् । ऋतुरोधे

नाशयेदुदरगुल्मानि निरुद्धरक्तमेव च ॥ १७ ॥

ब्रह्मदंडी और तिल का क्वाथ कर त्रिकुटा चूर्ण के साथ लेने से गुल्म और जमा हुआ रक्त निकल जाता है ॥ १७ ॥

पीत्वाक्षीरं क्षौद्रयुतं नाशयेदसृजः स्रुतिम् । रक्तप्रदर

दूध में मधु मिला पीने से रक्तप्रदर नष्ट होता है ।

आटरूषक मूलेन भगं नाभिं च लेपयेत् । सुखप्रसवे
सुखं प्रसूयते नारी नात्र कार्य्याविचारणा ॥ १८ ॥

अड़ूसे की जड़ का लेप योनि और नाभि पर करने से स्त्री सुख से प्रसव करती है ॥ १८ ॥

शर्करांमधुसंयुक्तां पीत्वा तण्डुलवारिणा । रक्तातिसारे
रक्तातिसारशमनं भवतीतिवृषभध्वज ॥ १९ ॥

शकर, मधु को चावल धोवे पानी में मिला पीने से रक्तातिसार नष्ट हो जाता है ॥ १९ ॥

इति श्रीगारुडे महापुराणे नेत्राञ्जनादिनिरूपणं नाम द्व्यासीत्यधिकशततमो
ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूडामणि पं०विश्वेश्वरदयालुप्रणीतया
विश्वेश्वरी टीकया सनाथी कृतः समाप्तः ॥ १८२ ॥

---

हरिरुवाच

मरिचं शृङ्गवेरं च कुटजत्वचमेव च । ग्रहणीरोगे
पानाच्चग्रहणी नश्येच्छशांङ्काङ्कितशेखर ! ॥ १ ॥

भगवान कहने लगे—मरिच, सोंठ, कुडा छाल के पीने से ग्रहणी नष्ट हो जाती है ॥ १ ॥

पिप्पली पिप्पलीमूलं मरिचं तगरं वचा । अतिसारे
देवदारुरसं पाठा क्षीरेण सह पेषयेत् ॥
अनेनैवप्रयोगेण ह्यतिसारो विनश्यति ॥ २ ॥

पीपर, पीपरामूल, मिर्च, तगर, वच, देवदारु, पाठा, दूध के साथ पीस पीने से अतिसार नष्ट हो जाता है ॥ २ ॥

मरीचतिलपुष्पाभ्यांमञ्जनं कामलापहम् । कामलारोगे

मिर्च, तिलके फूलों के अंजन करने से आंख की पीतता कामला नष्ट हो जाती है ।

हरीतकी समगुडा मधुना सह योजिता । विरेचने
विरेचनकरी रुद्र ! भवतीति न संशयः ॥ ४ ॥

हे शिव हर्रा का चूर्ण समान गुड़ और मधु से लेने से दस्त लाता है, इसमें संशय नहीं ॥ ४ ॥

त्रिफला चित्रकं चित्रं तथा कटुकरोहिणी । उरुस्तम्भे
उरुस्तम्भहरं ह्येतदुत्तमन्तु विरेचनम् ॥ ५ ॥

त्रिफला, चित्रक, एरंडवीज, कुटकी यह उरुस्तम्भहर और विरेचन करने वाले हैं ॥ ५ ॥

हरीतकीशृंगवेरं देवदारु च चंदनम् ।
क्वाथयेच्छागदुग्धेन अपामार्गस्यमूलकम् ॥
उरुस्तम्भंजयन्त्या वा सप्तरात्रेण नाशयेत् ॥ ६ ॥

हर्रा, सोंठ, देवदारु, लालचंदन, अपामार्ग की जड़, जयंतीमूल का दुग्ध में पकाया क्वाथ सात दिन पीनेसे उरुस्तम्भ नष्ट करता है ॥६॥

अनन्ताशृङ्गवेरस्य सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ।
गुग्गुलं गुडतुल्यंच गुटिकामुपयुज्य च ।
वायुः स्नायुगतं चैव अग्निमांद्य च नाशयेत् ॥७॥ स्नायुवाते

इरनीमूल छाल, सोंठ का चूर्ण, गूगल, गुड़ समान भाग ले बताई हुई गोलियां स्नायुगत वायु को और अग्निमांद्य को दूर कर देती है ॥ ७ ॥

शंखपुष्पीं तु पुष्येण समुद्धृत्य सपत्रकाम् ।
समूलाच्छागदुग्धेन अपस्मार हरं पिबेत ॥ ८ ॥

जड़ और पत्तों से युक्त पुष्य नक्षत्र में लाई हुई शंखपुष्पी का चूर्ण बकरी के दूध के साथ लेने से अपस्मार (मिरगी) दूर हो जाती है॥८

अश्वगंधाभयेचैव उदकेन सम पिबेत् ।
रक्तपित्तं विनश्येत्तु नात्र कार्या विचारणा ॥ ९ ॥रक्तपित्ते

असगंध, कचनार छाल, (हरीतकी) का चूर्ण पानी के साथ पीने से रक्त पित्त नष्ट हो जाता है, इसमें संदेह नहीं ॥ ९ ॥

हरीतकीकुष्टचूर्णं कृत्वा आस्यं च पूरयेत् ।
शीतं पीत्वाथ पानीयं सर्वच्छर्दि निवारणम् ॥१०॥ वमने

हरीतकी, कूठ का चूर्ण मुंह में रख ठंडा पानी पीने से सब प्रकार के वमन दूर हो जाते हैं ॥ १० ॥

गुडूची पद्मकारिष्ट धान्याकं रक्त चंदनं । ज्वरे
पित्तश्लेष्मज्वरच्छर्दिदाह तृष्णाघ्नमग्निकृत् ॥ ११ ॥

गुडूची, पद्माख, नींब छाल, धनियां, रक्त चंदन, क्वाथ, पित्त कफ ज्वर, वमन, दाह, तृष्णा, को नष्ट कर अग्नि बढ़ाता है ॥ ११ ॥

ओं हुँ नमः इति । श्रोत्रबद्धा शंखपुष्पीज्वरंमंत्रेणवैहरेत् ॥

ओं हुं नमः इस मंत्र से शंखपुष्पी मूल कान में बांधने से ज्वर दूर हो जाता है ॥

ओं जाम्भनी स्तम्भिनी मोहय सर्वव्याधीन्मे ठठः सर्व व्याधीन्मे वज्रेण फट्इति ॥ १२ ॥

पुष्पमष्टशतं जप्त्वा हस्तेदत्वा नखस्पृशेत् । चातुर्थिकज्वरे
चातुर्थिको ज्वरो रुद्र अन्येचैव ज्वरास्तथा ॥ १३ ॥

उपरोक्त मंत्र से १०८ वार अभिमंत्रित किया हुवा फूल हाथ में दें नखों को छू देने से चातुर्थिक ज्वर और अन्य ज्वर छूट जाते है ॥ १३

जम्बूफलं हरिद्रा च सर्पस्यैवतु कंचुकम् ।
सर्व ज्वराणांधूपोऽयं हरश्चातुर्थिकस्य च ॥ १४ ॥

जामुनके फल, हल्दी, सांप की केंचुली की धूप सर्व ज्वर नाशक है विशेष कर चोथे दिन आने वाले ज्वर को दूर करती है ॥ १ ॥

करवीरं भृङ्गपत्रं लवणं कुष्ठ ककटे ।
चतुर्गुणेन मूत्रेण पचेत्तैलं हरेच्चतत ॥
पामां विचर्चिकां कुष्टमभ्यङ्गाद्धि व्रणानि वै ॥१५॥ कुष्टे

कनैर के पत्ते, घमरा, नमक, कूठ, ककोड़ाकन्द का कल्क चौगुना गौमूत्र डाल पका लगाने से पामा, विचर्चिका, कुष्ठ, व्रण, नष्ट हो जाते हैं ॥ १५ ॥

पिप्पली मधुपानाच्च तथा मधुर भोजनात् ।
प्लीहाविनश्यते रुद्र तथा सूरण भोजनात् ॥१६॥ प्लीह हरं

पीपल मधु, के साथ खाने से और मीठा भोजन करने से हे शिव प्लीहा नष्ट हो जाती है इसी प्रकार जमीकन्द खाने भी होता है ॥

पिप्पलीश्च हरिद्राश्च गोमूत्रेण समन्वितम् ।
प्रक्षिपेच्चगुदद्वारे अर्शांसि विनिवारयेत् ॥ १७ ॥

पीपल, हल्दी का चूर्ण गोमूत्र से लगाने से बबासीर के मस्से गिर जाते हैं ॥ १७ ॥

अजादुग्धमार्द्रकञ्च पीतं प्लीहादि नाशनम् ॥ प्लीहरोगे

बकरी का दूध अदरख के साथ पीने से प्लीहा नष्ट हो जाती है ॥

सैन्धवञ्च विडङ्गानि सोमराजी तु सर्षपाः ।
रजनीद्वे विषञ्चैव गोमूत्रेणपेषयेत् ॥
कुष्टनाशश्चतल्लेपात् निम्बपत्रादिनातथा ॥ १६ ॥ कुष्टे

सेंधा नमक, विडंग, बाकुची, सरसों, दोनों हल्दी, सिंघिया, को गोमूत्र में पीस लेप करने से कुष्ट नाश होता है । इसी प्रकार नींब का तैल पत्तों का लेप भी कुष्ट नष्ट करता है ॥ १६ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे कुष्टादिरोग विनाशको नाम त्रयोशीत्यधिक शततमोऽध्यायःश्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि प० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरीटीकया सनाथीकृतः समाप्तः



हरिरुवाच ।

रजनी कदलीक्षार लेपः सिध्मविनाशनः । सिध्मे

भगवान कहने लगे, हल्दी, और केले के क्षार का लेप सिध्म (सेंहुंवा) नाश करता है ॥

कुष्टस्यभागमेकं तु पथ्याभागद्वयंतथा ।
उष्णोदकेन संपीय कटिशूल विनाशनम् ॥ १ ॥ कटिशूले

कूठ १ भाग, हरीतकी २ भाग का चूर्ण गर्म जल से लेने से कमर की पीड़ा दूर हो जाती हैं ॥ १ ॥

अभयानवनीतञ्च शर्करापिप्पलीयुतं।
पानादर्शोहरं स्याच्च नात्र कार्य्या विचारणा ॥ २ ॥

हर्रा, पीपल, शकर, मक्खन के साथ खाना अर्श को नष्ट कर देता है इसमें संदेह नहीं ॥ २ ॥

आटरुषकपत्रेण घृतं मृद्वग्निनापचेत्।
चूर्णं कृत्वातु लेपोयं अर्श रोगहरःपरः ॥ ३ ॥ अर्शसि

अडूसे के पत्तों के रस से पकाया हुवा घृत खाना और अडूसे के पत्तों का चूर्ण इसी घृत में मिला लगाना अर्श रोग दूर करता है ॥३

गुग्गुलुत्रिफला युक्तं पीत्वा नश्येद्भगंदरम्॥ भगंदरे

गूगल त्रिफला की बनी गोली भगंदर नष्ट कर देती है।

अजाजी शृङ्गवेरं च तथा मण्डं विपाचयेत्।
लवणेनतु संयुक्तं मूत्रकृच्छ्र विनाशनम् ॥
यवक्षारं शर्करा च मूत्रकृच्छ्र विनाशकृत् ॥५॥ मूत्रकृच्छ्रे

सफेद जीरा, सोंठ, नमक मिला मांड पीने से मूत्र कृच्छ्र दूर होता है। इसी तरह शकर, यवक्षार, का चूर्ण मूत्र कृच्छ्र दूर कर देता है ॥ ५ ॥

तिल तैले यवान्दग्ध्वा मर्षींकृत्वातु लेपयेत्।
तेनैवसहतैलेन अग्निदग्धः सुखी भवेत् ॥ ६ ॥अग्निदग्धे

तिल के तेल में यवों को जला उसी में घोट लगाने से आग से जला स्थान ठीक हो जाता है ॥ ६ ॥

लज्जालोः शरपुंखाया लेपः साज्योऽग्निनाशनः।

नमो भगवत ठठ छिन्धि छिन्धि ज्वलनं प्रज्वलितं-
नाशय नाशय हुँ फट् ॥ ८ ॥

लजवंती, शरफोंका का लेप घृत के साथ उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर लगाना अग्नि दाह नाशक होता हैं ॥ ८ ॥

करेवद्धं तु निगुण्ड्या मूलं ज्वरहरंद्रुतम् ॥ ज्वरे

निगुण्डी ( संभालू ) की जड़ हाथ में बांधने से ज्वर दूर हो जाते हैं ।

मूलं च श्वेतगुञ्जायाः कृत्वा तत्सप्तखण्डकम् ।
हस्तेवध्वानाशयेच्च अर्शांस्येव न संशयः ॥ ६ ॥ अर्शसि

सफेद घुंघुची की जड़ ला उसके सात टुकड़े कर हाथ में बांधने से अर्श नष्ट हो जाता है ॥ ६ ॥

विष्णुक्रान्ताजमूत्रेण चौरव्याघ्रादिरक्षणम् । चौरादिवारणे
ब्रह्मदण्डयास्तुमूलानि सर्वकर्माणिकारयेत् ॥ १० ॥

विष्णुक्रान्तामूल बकरे के पेशाब से शरीर पर मलने से चोर और सिंह का भय नहीं रहता । ब्रह्मदडी की जड़ भी यही सब काम करती है ॥ १० ॥

त्रिफलायास्तुचूर्णंहि साज्यं कुष्ठविनाशनम् ॥ ११ ॥कुष्ठे

त्रिफला चूर्ण घृत से खाने से कुष्ट दूर हो जाता है ॥ ११ ॥

आज्यं पुनर्नवा विल्वैः पिप्पलीभिश्चसाधितं ।
हरेद्धिक्कां श्वासकासौ पीतं स्त्रीणांच गर्भकृत् ॥ १२ ॥गर्भप्रदं

पुनर्नवा, वेलगूदा, पीपल से सिद्ध घृत पीने से हिक्का, श्वास, कास नष्ट करता है और स्त्रियों को गर्भ देने वाला है ॥ १२ ॥

भक्षेद्वानरीवीजं पयसाज्येन पाचितम् ।
घृतशर्करयायुक्तं शुक्रः स्यादक्षयस्ततः ॥ १३ ॥ शुक्रप्रदं

कौंच के बीज, दूध, घृत में पका घृत शकर के साथ खाने से अक्षय वीर्य्य करते हैं ॥ १३ ॥

विडंगं मधुकं पाठां मांसीसर्जरसं तथा ।
हरिद्रां त्रिफलां चैवमपामार्गं मनःशिलाम् ॥ १४ ॥
उदुम्बरं धातकीश्च तिलतैलेन पेषयेत् ।
योनिलिंगं च म्रक्षेत स्त्रीपुंसोः स्यात्प्रियं मिथः ॥१५॥वश्ये
नमस्ते ईश वरदाय आकर्षिणि विकर्षिणि मुग्धे स्वाहा इति॥

विडंग, मोरेठी, पाठा, जटामांसी, राल, हल्दी, त्रिफला, अपामार्ग मनशिल, ऊमर, धायफूल तिल तेल में पीस कर तेल पाक करलें, यह तेल नमस्ते इस मन्त्र से अभिमंत्रित कर योनि लिंग पर लगा मैथुन करने से आनन्द देता है ॥ १५ ॥

पुनर्नवामृतादूर्वा कनकंचेन्द्रवारुणी ।
वीजेनैषां जातिकाया रसेन रसमर्दनम् ॥१६॥ पारदमारण
मूषायां मध्यग कृत्वा रसमारणमीरितम् ।
मध्वाज्यसहितंदुग्धं वलीपलित नाशनम् ॥ १७ ॥

पुनर्नवा, तुलसी या शिवलिंगी वीज, दूब, धतूर वीज, इंद्रायण के वीज के साथ चमेली के रस से मर्दित पारद को मिट्टी शराव में रख कंडों की आंच देने से भस्म होती है । इसको मधु, घृत युक्त दूध से खाने से वलीपलित नाश होता है ॥ १७ ॥

मध्वाज्यंगुडताम्रञ्च कारवेल्लरसस्तथा ।
दहनाच्चभवेद्रौप्यं सुवर्णकरणं शृणु ॥१८॥ रौप्यकरणम्

मधु, घृत, गुड़, तामा, करेला का रस सबको मिला जलाने से चांदी बनती है ॥ १८ ॥

पीतं धत्तूरपुष्पंच सीसकंचपलं मतम् । हैमकरणम्
लांगलिकाया: शाखाच स्वर्णञ्चदहनाद्भवेत् ॥ १९ ॥

पीले धतूरे के फूल, सीसा, करियारी की शाखा १-१ पल लेकर जला देने से स्वर्ण हो जाता है ॥ १९ ॥

धत्तूर बीजतैलेन दीपप्रज्वलनाद्धर ।
समाधावुपविष्टन्तु गगनस्थो न पश्यति ॥ २० ॥ समाधौ

धतूरे के बीजों का तैल दीप में जलाने से समाधि लग जाती है और उसे आकाशचारी भी नहीं देखता॥ २० ॥

कुम्भीरकस्यनेत्राणि हृदयं कच्छपस्यच ।
मूषिकस्यवसास्थीनि शिशुमार वसातथा ॥
एतान्येकत्र संलेपाज्जलेतिष्टेद्यथागृहे ॥ २१ ॥ जलप्रवेशे

कुंभीर जलजन्तु के नेत्र, कछुवा का हृदय, चूहे की वसा और हड्डी, शिशुमार की वसा इन सबको मिला लेप करने से जल में आनन्द से रह सकता है ॥ २१ ॥

लोहचूर्णं तक्रपीतं पाण्डुरोगहरं भवेत् ॥ २२ ॥पांडुरोगे

लोह भस्म मट्ठे से पीने से पांडु रोग दूर होता है ॥ २२ ॥

तण्डुलीयकगोक्षुरमूलं पीतं पयोन्वितम् ।
कमलादिहरंपीतं मुखरोगहरं तथा ॥ २३ ॥ मुखरोगे

चौराई की जड़, गुखुरू की जड़ दूध से पीने से कामला रोग और मुख रोग दूर हो जाता है ॥ २३ ॥

जातीमूलं तक्रपीतं कोलमूलं त्वजीर्णनुत् ॥२४॥ अजीर्णे
सतक्रं कुशमूलं वा मर्कटी मूलमेववा ।

चमेली मूल मट्ठे से पीना मुखरोग नाशक है। बेर की जड़ मट्ठे से पीना अजीर्ण रोग दूर करता है, इसी प्रकार मट्ठे के साथ कुशकी जड़ या कौंच की जड़ अजीर्ण नाशक है ॥ २४ ॥

कांजिकेन च वाकुच्या मूलं वैदन्त रोगनुत्॥ दन्तरोगे

कांजी के साथ वाकुची की जड़ लेने से दन्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

तथेन्द्रवारुणी मूलं वारिपीतं विषादिहृत ।
सुरभिकामूल पानाद्वातन्नाशोभवेच्छिव ॥ २५ ॥ विषहरं

इन्द्रायण की जड़ पानी के साथ पीने से विष नष्ट होता है इसी प्रकार केले की जड़ का रस भी विषहर है ॥ २५ ॥

शिरोरोगहरं लेपाद्गुञ्जाचूर्णं सकांजिकम् ॥२६॥शिरोरोगे

गुञ्जा चूर्ण का लेप कांजी के साथ शिर पीड़ा को नष्ट कर देता है ॥ २६ ॥

बलाचातिवला यष्टी शर्करा मधु संयुता । गर्भप्रदम्
वन्ध्या गर्भकरी पीता नात्रकार्या विचारणा ॥ २७ ॥

बला, अतिबला, मोरेठी, शकर, मधु के साथ खाने से वन्ध्या को भी गर्भ देता है इसमें सन्देह नहीं ॥ २७ ॥

श्वेतापराजिता मूलं पिप्पलीशुण्ठिकायुतम् ।
परिपिष्टं शिरोलेपाच्छिरः शूलविनाशनम् ॥२८॥शिरःशूले

सफेद विष्णुक्रान्ता की जड़, पीपल, सोंठ का लेप शिर पर लगाने से शिरोरोग दूर करता है ॥ २८ ॥

निर्गुण्डिकाशिखां पीत्वा गण्डमालां विनाशयेत् ॥२९॥
गंडमालायां

संभालू की जड़ पानीसे पीने से गण्डमाला नाश होती है ॥२९

केतकीपत्रजं क्षारं गुडेन सह भक्षयेत्। सीहायां
तक्रेण शरपुंखां वा पीत्वा सीहां विनाशयेत् ॥३०॥

केतकी ( केवड़े ) के पत्तों का क्षार गुड़ के साथ खाने से या शरपुंखा मट्ठे के साथ पीने से प्लीहा नष्ट होती है ॥ ३० ॥

मातुलुङ्गस्यनिर्यासं गुडाज्येन समन्वितम्।
वातपित्तज शूलानि हन्तिवैपानयोगतः ॥ ३१ ॥ शूले

बिजौरे का स्वरस, गुड़, घृत के साथ पीने से वात, पित्त से पैदा पेट का दर्द दूर हो जाता है ॥ ३१ ॥

शुण्ठीसौवर्चलं हिंगु पीतं हृदयरोगनुत् ॥३२॥ हृदयरोगे

सोंठ, काला नमक, हींग भुनी खाने से हृदय रोग दूर हो जाता है ॥ ३२ ॥

सैन्धवञ्च महादेव पारावत मलं मधु।
एभिर्लिप्तेतुलिंगेवै कामिनीवशकृद्भवेत् ॥ ३३ ॥ वश्ये

सेंधा नमक, कबूतर की बीट, शहद का लिंग लेप स्त्री वशकारक होता है ॥ ३३ ॥

पुष्पाणिपंचरक्तानि गृहीत्वा यानिकानि च।
तत्तुल्यञ्च प्रियगुञ्च पेषयेदेकयोगतः।

अनेन लिप्तलिंगस्य कामिनीवशतामियात् ॥ ३४ ॥वश्ये

पांच लाल फूल जिसके भी मिलें ले ले उनके बराबर लभेरे के बीज पीस लेप करने से स्त्री वश में होती है ॥ ३४ ॥

हयगन्धा च मञ्जिष्टा मालती कुसुमानि च ।

श्वेतसर्षप एतैश्च लिप्तलिंगः स्त्रियाः प्रियः ॥ ३५ ॥

असगंध, मजीठ, मालती पुष्प, सफेद सरसों का लेप भी स्त्री वश कारक होता है ॥ ३६ ॥

मूलंतु काकजंघाया दुग्धपीतन्तु शोषनुत् ॥३७॥शोषहरम्

काकजंघा मूल दूध के साथ पीने से क्षय रोग दूर हो जाता है॥३७

अश्वगन्धानागबलागुडमाषनिशेवणः ।

रूपं भवेद्यथा तद्वन्नवयौवन चारिणाम् ॥ ३८ ॥

असगंध, नागबला, गुड़, उरद का सेवन करने वाला जवानों के समान हो जाता है ॥ ३८ ॥

लौहचूर्णसमायुक्तं त्रिफलाचूर्णमेव वा ।

मधुनासेवतरुद्र परिणामाख्यशूलनुत्॥२०॥परिणामशूले

लोहभस्म के सहित त्रिफला का चूर्ण मधु के साथ सेवन करने से परिणाम शूल नाश करता है॥ २० ॥

कथितोदकपानन्तु शम्बूकक्षारकं तथा ।

मृगशृंगाग्निदग्धं गव्याज्येन समन्वितम् ॥

पीतं हृत्पृष्ठशूलानां भवेन्नाशकरं शिव ॥२१॥ पृष्टशूले

गर्म पानी पीने से शम्बूकक्षार या मृगशृंगभस्म गौ घृत के साथ खाने से हृदय, पीठ के शूल नष्ट हो जाते हैं ॥ २१ ॥

हिंगुसौवर्चलं शुण्ठी वृषभध्वज महौषधम् ।
एभिस्तु कथितं वारि पीतं वै सर्वशूलनुत् ॥२२॥ सर्वशूले

हींग, काला नमक, सोंठ का क्वाथ समस्त शूलों को नष्ट कर देता है ॥ २२ ॥

अपामार्गस्य वैमूलं सामुद्रलवणान्वितम् ।
आस्वादितमजीर्णस्य शूलस्य स्याद्धि मर्दनम् ॥ २३ ॥

अपामार्ग ( लटजोरा ) की जड़ समुद्र नमक का चूर्ण खाने से अजीर्ण और शूल नष्ट कर देता है ॥ २३ ॥

वटरोहाङ्कुरो रुद्र तण्डुलोदकघर्षितः ।
पीतः सतक्रोऽतीसारं क्षयं नयति शंकर ॥२४॥ अतिसारे

वड़ की डाढी चांवल धोवन के साथ पीसें और मट्ठा मिला पीने से हे शंकर अतिसार नष्ट होता है ॥ २४ ॥

अङ्कोटमूलं कर्षार्धं पिष्टं तंडुलवारिणा ।
सर्वातीसारग्रहणीं पीतं हरति भूतप । २५ ॥ ग्रहण्याम्

अकोडा की जड़ १ तोला को चावल धोवन से पीस पीने से हे शंकर अतिसार और ग्रहणी को नष्ट कर देता है ॥ २५ ॥

मरीचशुण्ठिकुटजत्वक् चूर्णं च गुडान्वितम् ।
क्रमात्तद्विगुणं पीतं ग्रहणीव्याधिनाशनम् ॥ २६ ॥

मिर्च, सोंठ, कुडा की छाल, गुड़ क्रम से एक से दूसरा दूना मिला लेने से ग्रहणी रोग नष्ट हो जाता है ॥ २६ ॥

श्वेतापराजितामूलं हरिद्रासिक्थतण्डुलाः ।
अपामार्गत्रिकटुकमेषाक्षवटिका शिव । विसूचिकायाम्

विषूचिकामहाव्याधिं हरत्येव न संशयः ॥ २७ ॥

श्वेत अपराजिता मूल, हल्दी, नील के बीज, अपामार्ग, त्रिकुटा की बनाई वटी, विसूचिका को नष्ट कर देती है ॥ २७ ॥

त्रिफलागुरु भूनेश शिलाजतु हरीतकी ।
एकैकमेषां चूर्णन्तु मधुना च विमिश्रितम् ॥
पीतं सर्वप्रमेहन्तु क्षयं नयति शंकर ॥ २८ ॥ प्रमेहे

त्रिफला, अगर, तुलसी के बीज, शिलाजीत, हर्रा, यह एक एक मधु के साथ लेने से सर्व प्रमेहों को नष्ट करने वाले हैं ॥ २८ ॥

अर्कक्षीरं प्रस्थमेकं तिलतैलतथैवच ।
मनः शिलामरीचानां सिन्दूरस्यपलंपलम् ॥ २९ ॥
चूर्णं कृत्वा ताम्रपात्रे त्वातपैः शोषयेत्ततः । नाड़ीव्रणे

आक का दूध १ सेर, तिल तेल १ सेर मनसिल, मिर्च, सिन्दूर प्रत्येक १-१ पल ले ताम्र पात्र में रख धूप में ४० दिन रखने से अर्श रोग हर, नाड़ी व्रण रोग हर होता है ॥ २९ ॥

पीतं स्नुहीगतं दुग्धं सैन्धवं शूलनुद्भवेत ॥ ३० ॥ शूले

सेंहुड का दुग्ध सेन्धा नमक मिला खाने से शूल नष्ट कर देता है ॥ ३० ॥

त्रिकुटु त्रिफलानक्तं तिलतैलं तथैवच । नेत्ररोगे
मनःशिला निम्बपत्रं जाती पुष्पमजापयः ॥ ३१ ॥
दन्मूत्रं शंखनाभिश्च चंदनं घषयेत्ततः ।
एभिश्चवर्तिकां कृत्वात्वक्षिणी चाञ्जयेत्ततः ॥ ३२ ॥
नश्यते पटलं काचं पुष्पश्चतिमिरादिकम् ॥ ३२ ॥

त्रिकुटा, त्रिफला हल्दी, तिल तैल मनशिल, नीवपत्र, चमेली पुष्प, बकरी का दूध, बकरी का मूत्र शंखनाभि, चंदन को पीस वत्ती बना लें इनको आंख में घिस कर लगाने से पटल, काच, (मोतियाबिंदु) फूला, तिमिर दूर हो जाते हैं ॥ ३२ ॥

विभीतकस्य वैचूर्णं समधुश्वासनाशनम् ॥ ३३ ॥ श्वासे

बहेड़े का चूर्ण मधु के साथ लेने से श्वास दूर हो जाता है ॥३३

पिप्पली त्रिफला चूर्णं मधुसैन्धव संयुतम् ।
सव रोगज्वरश्वासशोषपीनसहृद्भवेत् ॥ ३४ ॥ पीनसे

पीपल, त्रिफला, सेंधानमक का चूर्ण मधु के साथ लेने से समस्त रोग ज्वर, श्वास, शोष, पीनस को दूर कर देता है ॥ ३४ ॥

देवदारोश्चवैचूर्णं अजामूत्रेण भावयेत् ।
एकविंशतिवारं वै त्वक्षिणी तेन चाञ्जयेत् ॥
रात्र्यन्धता पटलता नश्योन्नत्तोमता तथा ॥ ३५ ॥ पद्मशाते

देवदारु का कपड़छन चूर्ण कर बकरी के मूत्र की इक्कीस भावना दे गोली बनालें, इसको घिस कर लगाने से रतौंध, पटल, परबार रोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ३५ ॥

पिप्पली केतकं रुद्र हरिद्रामलकं वचा ।
सर्वाक्षिरोगा नश्येयुः सत्तीराञ्जनात्ततः ॥ ३६ ॥

पीपल, केवड़ामूल, हल्दी आमला वच को महीन पीस बकरी के दूध में गोली बना लगाने से आंख के सब रोग दूर हो जाते हैं ॥३६॥

काकजंघाशिग्रुमूले मुखेन विधृते शिव ।

चर्वितत्वादन्त कीटानां विनाशो हि भवेद्धर ॥३७॥ दन्तकीटे

काकजंघामूल, सेंजनामूल मुख में रखने से और चबाने से दंत कीट नष्ट हो जाते हैं ॥ ३७ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे योगसार वर्णनं नाम पंचाशीत्यधिक शततमो ऽध्याय: श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालुप्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥



हरिरुवाच

पीत: सारो गुडूच्याश्च मधुना च प्रमेहनुत् । प्रमेहे
पीतं गोहालिकामूलं तिलदध्याज्यसंयुतम् ॥ १ ॥
निरुद्धमूत्रं कथितं विवर्त्तयतिशंकर ! मूत्ररोधे
तथा हिक्कां हरेत्पीतं सौवर्चलयुतं च वै ॥ २ ॥ हिक्कायाम्

भगवान कहने लगे—गुडूची सत्व मधु से लेने से प्रमेह नष्ट करता है ॥ १ ॥

वटपत्री पाषाणभेद की जड़ का क्वाथ, तिल, दही, घृत मिला देने से रुका हुआ मूत्र खुलकर उतरता है । केवल पाषाणभेद का क्वाथ काला नमक मिला पीने से हिचकी दूर हो जाती है ॥ २ ॥

गोरक्षकर्कटीमूलं पिष्टं शीतोदकेन च ।
पीतं दिनत्रयेणैव नाशयेद्दुद्रशर्कराम् ॥ ३ ॥ शर्करायाम्

इन्द्रायणमूल ठंडे जल में पीस तीन दिन पीने से शर्करा नष्ट हो जाती है ॥ ३ ॥

पिष्ट्वावै मालतीमूलं ग्रीष्मकाले समाहितम् ।
साधितं छागदुग्धेन पीतं शर्करयान्वितम् ।
हरेन्मूत्रनिरोधश्च हरद्वै पांडुशर्कराम ॥ ४ ॥

ग्रीष्म ऋतु में लाई हुई मालती की जड़ बकरी के दूध में पका शक्कर मिला पीने से मूत्ररोध दूर होता है और पांडु रोग व शर्करा मिट जाती है ॥ ४ ॥

द्विजयष्ट्याश्चवैमूलं पिष्टं तंडुलवारिणा ।
गंडमालांहरेल्लेपादसाध्यं गलगंडकम् ॥ ५ ॥ गलगण्डे

भारंगीमूल चांवल धोवन में पीस लेप करने से कंठमाला और असाध्य गलगंड दूर हो जाते हैं ॥ ५ ॥

रसाञ्जनं हरीतक्याश्चूर्णं तेनैव गुण्डनात् ।
नाशयेत्पुरुषोऽव्याधीन्नात्र कार्य्या विचारणा ॥ ६ ॥ उपदंशे

रसोत, हर्रा के लेप से लिंग रोग दूर हो जाते हैं, यह प्रायः उपदंशादि रोग नाशक हैं ॥ ६ ॥

करवीरमूललेपाद्वै लेपात्पूगफलस्यवै ।
पुंव्याधिर्नश्यतेरुद्र योगमन्यं वदाम्यहम् ॥ ७ ॥

कनेरमूल के लेप से या सुपारी घिसकर लगाने से भी उपदंश रोग, शूक रोग दूर होते हैं ॥ ७ ॥

दन्तीमूलं हरिद्रा च चित्रकं तस्य लेपनात् ।
भगन्दर विनाशः स्यादन्यं योगं वदाम्यहम् ॥ ८ ॥ भगंदरे

दन्तीमूल, हल्दी, चित्रक के लेप से भगन्दर दूर हो जाता है। इसका दूसरा योग भी कहता हूं सुनो ॥ ८ ॥

जलौकाऽङ्गधरक्तं च भगंदरमुमापते ।

जोंक के पेट का रक्त भी लगाना भगंदर दूर कर देता है ।

त्रिफला जल घृष्टं च मार्जारास्थिविलेपितम् !
ततो न प्रस्रवेद्रक्तं नात्रकार्या विचारणा ॥ ९ ॥

त्रिफला के जल से घिसी हुई बिल्ली की हड्डी के लेप से भगन्दर से आने वाला रक्त रुक जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ९ ॥

हरिद्राऽनेकवारं च स्नुही क्षीरेण भाविता । अर्शांसि
वटिकाऽर्शोविनाशाय तल्लेपाद्वृषभध्वज ॥ १० ॥
घोषाफलं सैन्धवञ्च पिष्ट्वाचाऽर्शो हरं परम् ।

सेंहुँड के दुग्ध में २१ वार भावित किया हुआ हल्दी का चूर्ण गोली बना लगाने से बवासीर के मस्से दूर कर देती है इसी प्रकार देवदाली फल का चूर्ण सेंधा नमक मिला लगाने से भी अर्श के मस्से गिर जाते हैं ॥ १० ॥

गव्याज्यं साधितं पीतं पलाश क्षारवारिणा ।
त्रिगुणेन त्रिकटुकं अर्शांसि क्षपयेच्छिव ॥ ११ ॥

त्रिकुटा का कल्क और पलाशभस्म १ सेर चार सेर पानी में डाल जल निथार ले यह जल ३ सेर डाल १ सेर पकाया गौघृत १-१ तो० खाने से अर्श दूर हो जाता है ॥ ११ ॥

विल्वस्य च फलं दग्धं रक्तार्शः प्रविनाशनम् । रक्तार्शांसि
जग्ध्वाकृष्ण तिलानेव नवनीतयुतानि च ॥ १२ ॥

बेल फल की भस्म रक्तार्श नष्ट करती है । इसी प्रकार काले तिल मक्खन के साथ खाने से भी रक्तार्श नष्ट हो जाता है ॥ १२ ॥

शुण्ठ्या च कथितं वारि पीत चाग्नं करोति वं ।
हरीतकी सैन्धवञ्च चित्रकं रुद्र पिप्पली ॥ १३ ॥ क्षुधावृद्धौ
चूर्णमुष्णोदकेनैषां पीतं चाति क्षुधाकरम् ।
आज्यं सूकर मासंवै पीतं चाति क्षुधाकरम् ॥ १४ ॥

सोंठ का क्वाथ पीने से । हर्रा, सेंधानमक, चित्रक, पीपल का चूर्ण गरम जल से पीने से खूब भूख बढ़ती है । घृत के साथ सूकर का मांस खाने से खूब भूख बढाता है ॥

शुण्ठीचूर्ण यवक्षार युक्तं तुल्य गुडान्वितम् ।
अग्निवृद्धिं करोत्येव प्रत्यूषे वृषभध्वज ॥ १५ ॥

सोंठ, यवक्षार का चूर्ण, समान गुड़ मिला प्रातः खाने से अग्नि वृद्धि करता है ॥ १५ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे अग्निवृद्धिकरयोगो नाम षष्टाशीत्यधिकशततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि प०विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरीटीकया सनाथीकृतः समाप्तः



हस्तिकर्ण पलाशस्य पत्राणि चूर्णयेद्धर । पलाशयोगः
सर्वरोग विनिर्मुक्तं चूर्णं पलशतं शिव ॥ १ ॥

हस्तिकर्ण पलाश के पत्तों का चूर्ण सौ पल खा लेने से सब रोगों से मनुष्य छूट जाता है ॥ १ ॥

सक्षीरं भक्षितं कुर्यात्सप्ताहेन वृषभध्वज ।
नरं श्रुतिधरं रुद्र मृगेन्द्रगतिविक्रमम् ॥ २ ॥

पद्मराग प्रतीकाशं युक्तं दशशतायुषा।
षोडशाब्द कृतिरुद्र सततं रुद्रभंजनात् ॥ ३ ॥

हे शंकर ! यदि यह चूर्ण दूध के साथ खाया जाय तो सात दिन में हा वेद को धारण करने वाला सिंह के समान बलवान हो जाता है पद्मराग के समान रंग हो जाता है और एक हजार वर्ष की उम्र हो जाती है। मनुष्य सोलह वर्ष की उम्र के समान हो जाता है यदि केवल दूध पर ही रहा जाय ॥ ३ ॥

मधुसर्पिस्समायुक्तं दुग्धमायुष्करं भवेत्।
तज्जग्धं मधुनासार्द्धं दशवर्षसहस्रिणम् ॥ ४ ॥
कुर्यान्नरं श्रुतिधरं प्रमदाजनवल्लभम्।
दध्नानित्यं भक्षितन्तु वज्रदेह कर भवेत ॥ ५ ॥
केशराजिसमायुक्तं नरं वर्ष सहस्रिणम्।
तद्वत्कांजिकसंयुक्तं नरं कुर्याच्च भक्षितम् ॥ ६ ॥
शतवर्षं दिव्यदेहं वलीपलितवर्जितम् ॥

मधु घृत के साथ यह चूर्ण ले दूध का पीना आयु वर्द्धन करता है। केवल मधु के साथ चूर्ण ले दूध पीने से दशहजार वर्ष की आयु हो जाती है और मनुष्य वेद कंठस्थ करने वाला, स्त्रियों का प्यारा हो जाता है। दही के साथ चूर्ण खाने से वज्र देह करता है। भंगरे के साथ लेने से हजार वर्ष की उम्र करता है कांजी के साथ लेने से सौ वर्ष की आयु करता है और वलीपलित से रहित कर दिव्य देह बनाता है ॥ ६ ॥

अन्धंत्रिफलया क्षौद्रं चक्षुष्मन्तं करोतिवै। त्रिफलाप्रयोगः
अन्धपश्येत्तुचूर्णस्य साज्यस्यैवतुभक्षणात् ॥ ७ ॥

त्रिफला मधु के साथ खाने से नेत्र रोग हर है। घृत के साथ त्रिफला खाने से अन्धा भी देखने लगता है ॥ ७ ॥

महिषी क्षीरसंयुक्तस्तल्लेपःकृष्णकेशकृत् ।
खल्वाटस्य चवैकेशा भवन्ति वृषभध्वज ॥८॥
तैल युक्तेन चूर्णेन वलीपलितनाशनम् ।
तदुद्वर्त्तनमात्रेण सर्वरोगः प्रमुच्यते ॥ ९ ॥

भैंस के दूध के साथ त्रिफला का लेप करने से बाल काले हो जाते हैं। और खल्वाट के शिर में भी बाल आ जाते हैं ॥ ८ ॥

तैल के साथ त्रिफला चूर्ण खाने से बली पलित नाश हो जाता हैं। इसके उवटन से सर्व रोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ९ ॥

तच्चूर्णं छागक्षीरेण दृष्टिःस्यान्मासतोऽञ्जनात् । १० ॥

त्रिफला चूर्ण बकरी के दूध के साथ एक महीने लगाने से नेत्रों में दृष्टि पैदा कर देती है ॥ १० ॥

पलाशभ्यतुवीजानिश्रावणेनिस्तुषाणिच। पलाशबीजप्रयोग
गृहीत्वानवनीतेन तेषां चूर्णं च भक्षयेत् ॥ ११ ॥
कर्षार्द्धमेकं सेवेत् नत्वा नित्यं हरि प्रभुम् ।
पुराणषाष्टधान्यस्य पथ्यामम्बुपिवन्हर । १२ ॥
जीवेद्वर्षसहस्राणि वलीपलित वर्जितः ॥ १२ ॥

ढांक के बीज सावन में लेकर उनका छिलका हटा चूर्ण कर मक्खन के साथ एक तोला या आधा तोला लें नित्य भगवान का स्मरण करके केवल पथ्य में पुराने साठी के चावलों का मांड लेने से बली पलित से रहित हो हजार वर्ष की उम्र होती है ॥ १३ ॥

भृङ्गराजस्यवै मूलं पुष्यर्क्षेतु समाहृतम् । भृङ्गराजप्रयोगः
विधायतस्यचूर्णं वै ससौवीरञ्चभक्षयेत् ॥ १३ ॥
मासमात्र प्रयोगेण वली पलितवर्जितः ।
शतानि पंचजीवेच्चनरो नागवलोभवेत् ॥ १४ ॥
भवेच्छ्रुतिधरो रुद्र पुष्यर्क्षेचैवभक्षणात् ॥ १४ ॥

पुष्य नक्षत्र में भमरे की जड़ लाकर उसका चूर्ण बना लें और एक महीने तक नित्य सौवीर (यव साधित कांजी) के साथ लेने से वली पलित से रहित हो ५०० वर्ष तक हाथी के समान बलवान होकर जीता है। यदि पुष्य नक्षत्र से ही इसका सेवन किया जाय तो मनुष्य श्रुतिधर ( वेदकंठस्थ करने वाला ) हो जाता है ॥ १४ ॥

इति श्रीगारुडे महापुराणे नेत्राञ्जनादिनिरूपणंनाम सप्तासीत्यधिकशततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूडामणि पं० विश्वेश्वरदयालुप्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया सनाथी कृतः समाप्तः ॥ १८७ ॥

---

हरिरुवाच ।

निर्व्रणःस्यात्पूयहीनो प्रहारो घृत पूरणात् । प्रहारहरम्

भगवान कहने लगे चोट पर घृत भरने से मवाद नहीं पड़ता न व्रण ( घाव ) ही बढता है ।

अपामार्गस्यवैमूलं हस्ताभ्यांच विमर्दितम् ।
तद्रसेन प्रहारस्य रक्त स्रावो न पूरणात् ॥ १ ॥

अपामार्ग, की जड़ को हाथों से मल उसका रस चोट के घाव पर लगाने से रक्त बंद हो जाता है ॥ १ ॥

रुद्र लांगलिका मूलं चेक्षुदर्भस्तथैवच। शल्यहरम्
तेन व्रण मुखांलिप्त शल्यं निस्सरति व्रणात् ॥ २ ॥

हेशंकर कांटा निकाल ने के लिये करियारी की जड़ ईख की जड़ डाभ की जड़ का लेप करने से कांटा (शल्य) निकलजाता है॥ २ ॥

बालमूलं मेषशृङ्गी मूलं वा वारिघर्षितम्। नाड़ीव्रणे
तेनलिप्त चिरं जातं व्रणं नाडया: प्रशाम्यति ॥ ३ ॥

छोटी नरम मूली, मेढा सिंगी मूल पानी से पीस लेप करने से पुराना नाडीव्रण दूर हो जाता है ॥ ३ ॥

जग्धं माहिषदध्ना च युक्तं कोद्रवभक्तकम्।
हिङ्गुमूलस्यवै चूर्णं दत्तं नाड़ी व्रणापहम् ॥ ४ ॥

कोदों का भात दही से खाने और हींग की जड़ का चूर्ण लगाने से नाड़ी व्रण ( नासूर ) नष्ट करता है ॥ ४ ॥

ब्रह्मयष्टिफलं पिष्टं वारिणातेन लेपितम्।
तेनघृष्टं रक्तदोष: प्रणश्यति न संशय: ॥ ५ ॥ रक्तदोषे

भारंगी फल पानी में पीस लेप करने से रक्त दोष नष्ट हो जाता है ॥ ५ ॥

यवभस्म विडंगञ्च गंधपाषाणमेवच।
शुण्ठिरेषाञ्चैव चूर्णं भावितं रुधिरेण वै ॥ ६ ॥
कृकलासस्य तल्लिप्तं विद्रधिं नाशयेच्छिव ॥ ६ ॥ विद्रधौ

यवभस्म, विडंग गंधक, सोंठ का चूर्ण कँटूरा या छिपकली के रक्त से भावना देकर लेप करने से विद्रधि नष्ट होती है ॥ ६ ॥

सौभाञ्जनस्य बीजानि त्वतसीमसिना सह ।
गौर सर्षपयुक्तानि सर्वाण्येतानि शंकर ॥ ७ ॥
पिष्टान्यनम्लतक्रेण ग्रंथिकं नाशयेद्धि वै ॥ ८ ॥ ग्रन्थौ

सैंजना बीज, अलसी भस्म, सफेद सरसों इन्हें मधुर मट्ठे में पीस लेप करने से गांठ को बैठा देती है ॥ ८ ॥

श्वेतापराजितामूलं पिष्टं तंडुलवारिणा ।
तेननस्यप्रदानात्स्याद्भूतवृन्दस्य विद्रवः ॥ ९ ॥ भूतहरम्

सफेद अपराजिता की जड़ चांवल धोवन में पीस नस्य देने से भूतों के वृन्द भाग जाते हैं ॥ ९ ॥

अगस्त्यपुष्पनस्यं वै समरीचं तु शूलहृत् । शूले

अगस्त के फूल, मिर्च का चूर्ण बना नस्य देने से शिर का शूल दूर होता है ।

भुजंगचर्म वै हिंगु निम्बपत्रं तथा यवाः ।
गौर सर्षप एभिः स्याल्लेपो भूतहरः शिव ॥ १० ॥ भूतहरम्

सांप की केंचुली, हींग, नीम के पत्ते, जौ, सफेद सरसों का लेप भूत नाशक होता है ॥ १० ॥

गोरोचना मरीचानि पिप्पली सैन्धवं मधु ।
अञ्जनं कृतमेभिः स्याद्ग्रहभूतहरं शिव ॥ ११ ॥

गोरोचन, मिर्च, पीपल, सेंधानमक, मधु का अंजन करने से ग्रह और भूत दूर होते हैं ॥ ११ ॥

गुग्गुलूलूकपुच्छाभ्यां धूपोग्रहहरोभवेत् ।

चातुर्थिकज्वरैर्मुक्तो कृष्णवस्त्रावगुण्डितः ॥ १२ ॥

गूगल, उल्लू पक्षी की पूंछ की धूप ग्रह हर होती है। काले वस्त्र में बांध धारण करने से चौथिया ज्वर छूट जाता है ॥ १२ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे योगसारादिवर्णनं नाम अष्टाशीत्यधिक शततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूडामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥

---

हरिरुवाच

श्वेतापराजितापुष्परसेनाक्ष्णोश्चपूरणे ।

पटलंनाशमायाति नात्रकार्य्या विचारणा ॥ १ ॥ पटले

भगवान कहने लगे-सफेद कोयल के फूल का रस आंख में डालने से पटल रोग नष्ट हो जाता है, इसमें संदेह नहीं ॥ १ ॥

मूलंगोक्षुरकस्यैव चर्वित्वा नीललोहित ।

दन्तकीटव्यथा नश्येत्सुरासुर विमर्दन ॥ २ ॥ दन्तकीटे

हे शिव गुखुरू की जड़ चबाने से दांत के कीड़ों का दर्द मिट जाता है ॥ २ ॥

नारीपुष्यदिनेपीत्वा गोक्षीरेणोपवासतः।

श्वेतार्कस्यतु वै मूलं तस्यास्तद्गुल्मशूलनुत् ॥ ३ ॥गुल्मे

पुष्य नक्षत्र में उपवास कर गौदुग्ध से सफेद आक की जड़ पीने से स्त्री गुल्म, शूल से छूट जाती है ॥ ३ ॥

श्वेतार्क पुष्पं विधिना गृहीतं पूर्वं मन्त्रितम् ।
ऋतुशुद्धा च ललना कटौवद्धा प्रसूयते ॥४॥ ऋतुस्रावे

विधि पूर्वक अभिमंत्रित कर लाये हुये श्वेत आक के फूलों को जो स्त्री कमर में बांध लेती है, वह शुद्ध ऋतुज स्राव करती है ॥ ४ ॥

हस्तवद्धं पलाशस्य अपामार्गस्य वा हर ।
मूलं सर्वज्वरहरं भूतप्रेतादिनुद्भवेत् ॥ ५ ॥ ज्वरहरम्

अपामार्ग या ढांक की जड़ हाथ में बांधने से सब प्रकार के ज्वर और भूत, प्रेत नष्ट हो जाते हैं ॥ ५ ॥

पीतं वृश्चिकमूलञ्च प्रातः पर्युषिताम्बुना । पुनर्नवाप्रयोग
सार्द्धं विनाशयेद्दाहज्वरञ्च परमेश्वर ! ॥ ६ ॥

सफेद पुनर्नवा मूल वासी पानी के साथ प्रातः पीने से दाह, ज्वर हे शिव नष्ट हो जाते हैं ॥ ६ ॥

शिखायाञ्चैवतद्वद्धं भवेदैकाहिकादिनुत् ।
पीतं पर्युषिताद्भिश्च भवेत्सर्वं विषापहृत् ॥ ७ ॥ विषे

पुनर्नवा मूल शिखा में बांधने से एकाहिकादि ज्वर दूर होते हैं । वासे पानी से पीने से विषादि नष्ट होते हैं ॥ ७ ॥

यस्मैलज्जालुकामूलं दीयते चस्वरेतसा । लज्जालुप्रयोगः
सार्द्धं सवैरं सयाति पुमान्स्त्री वा न संशयः ॥ ८ ॥

अपने वीर्य्य के साथ दी हुई लज्जालू की जड़ जिसे दी जाती है, उस स्त्री पुरुष के साथ वैर हो जाता है ॥ ८ ॥

पिष्ट्वागव्यघृतेनैव पाठामूलं पिवेत्तुयः । पाठामूलयोगः
सर्वविषं विनश्येच्च नात्रकार्या विचारणा ॥ ९ ॥

पाठा की जड़ गौ घृत के साथ पीस पीने से सब प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं ॥ ९ ॥

मूलं पर्युषितोदेन शिरीषस्य यथा तथा। शिरीषयोगः

शिरसमूल वासी पानी से देने से भी सब विष दूर होते हैं।

रक्तचित्रकमूलस्य रसस्यभरणाद्धर। कामलारोगे
कर्णयोः कामलाव्याधिनाशः स्यान्नात्रसंशयः ॥ १० ॥
रक्तचित्रकयोगः

लाल चित्रकमूल रस कान में भरने से कामला रोग नष्ट हो जाता है, इससे संदेह नहीं ॥ १० ॥

श्वेतकोकिलाक्षमूलं छागीक्षीरेण संयुतम्। कोकिलाक्षयोगः
त्रिसप्ताहेन वै पीतं क्षयरोगं क्षयं नयेत् ॥ ११ ॥

सफेद तालमखाने की जड़ बकरी के दूध के साथ पीने से क्षय रोग नष्ट हो जाता है ॥ ११ ॥

नारिकेलस्य वै पुष्पं छागक्षीरेण संयुतम्। नारिकेलयोगः
पिवेच्च त्रिविधस्तस्य रक्तवातो विनश्यति ॥ १२ ॥

नारियल के फूल बकरी के दूध के साथ पीने से तीनों प्रकार का वात रक्त दूर हो जाता है ॥ १२ ॥

कुर्य्यात्सुदर्शनामूलं माल्येन सुसमाहृतम्। सुदर्शनयोगः
कंठवद्धं त्र्याहिकादिग्रहभूत विनाशनम् ॥ १३ ॥

सुदर्शन की जड़ की माला पहिनने से तृतीयक, एकतरा, ग्रह, भूत बाधा नष्ट हो जाती है ॥ १३ ॥

पुष्पं धवलगुञ्जाया गृहीतं मूलमेवच। श्वेतगुञ्जायोगः
मुखेतु निहितं रुद्र हरेन्नाना विषं वहु ॥ १४ ॥

सफेद गुञ्जा के फूल या जड़ मुख में रखने से सब प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं ॥ १४ ॥

हस्तेवद्धं काण्डयुक्त कण्ठेवद्धं ग्रहादिहृत्।
कृष्णायान्तु चतुर्दश्यां कटिवद्धं समाहृतम् ॥
सिंहादिश्वापदाद्भीतं हरेच्चनील लोहित ॥ १५ ॥

सफेद गुञ्जा की बेल के टुकड़े हाथ या कंठ में बांधने से ग्रहादि दूर होते हैं। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को इसकी जड़ लाकर कमरमें बांधने से सिंहादि पशुओं का डर नहीं रहता ॥ १५ ॥

विष्णुक्रान्तामूलमीश कर्णेवद्धन्तुधारयेत्। विष्णुक्रांतायोग
पट्ट सूत्रेण भूतेश मकरादिभयं नवै ॥ १६ ॥

रेशम के धागे में बंधी हुई विष्णुक्रान्ता की जड़ कान में बांधने से मकरादि जलीय जन्तुओं का भय नहीं रहता ॥ १६

अपराजिताया मूलञ्च गोमूत्रेणसमन्वितम्।
पीतञ्चाशु हरत्येव गंडमालां न संशयः ॥ १ ॥

अपराजिता मूल को गोमूत्र में पीसकर पीने से कंठमाला नष्ट हो जाती है इसमें संदेह नहीं ॥ १ ॥

अथेन्द्रवारुणीमूलं विधिना पीतमीश्वर ! इन्द्रायणप्रयोगः
जिंगिण्यैरण्डकं रुद्र शूकशिम्ब्या समन्वितम् ॥
शीतोदकेनतत्रस्यं वाहुग्रीवा व्यथा हरेत् ॥ २ ॥

हे शिव ! इन्द्रायण की जड़ पीने से, काली सेंमल का गोंद एरण्डमूल, कोंच की जड़ को शीतल जल में पीस नस्य लेने से बाहु, ग्रीवा का स्तम्भ दूर हो जाता है ॥ २ ॥

माहिषं नवनीतञ्च अश्वगंधा च पिप्पली ।
वचाकुष्टद्वयं लेपोलिंगस्रोतस्तनार्त्तिहृत् ॥ ३ ॥ लिंगवृद्धौ

भैंस का मक्खन, असगंध, पीपल, वच कूठ कड़वा, कूठ मीठा का लेप कान, लिंग के रोगों को दूर करता है, अर्थात् बढ़ाता है ॥ ३ ॥

कुष्टनागबलाचूर्णं नवनीत समन्वितम् ।
तल्लेपोयुवतीनांच कुर्य्याद्वृत्तोजकौ शुभौ॥४॥ स्तनवृद्धौ

कूठ, नागवला का चूर्ण मक्खन में मिला कुचों पर लेप करने से उनमें कठोरता आजाती है ॥ ४ ॥

इन्द्रवारुणिकामूलं यस्यनाम्ना सुदूरतः । प्लीहाहरम्
निःक्षिप्यते समुत्पाट्य तस्यप्लीहा विनश्यति ॥ ५ ॥

इन्द्रायण की जड़ जिसके नाम को लेकर उखाड़ फेंक दी जाती है, उसकी प्लीहा नष्ट हो जाती है, यह प्रयोग दूर से भी किया जाता है ॥ ५ ॥

पुनर्नवायाः शुक्लाया मूलं तण्डुलवारिणा । विद्रधौ
पीतं विद्रधिनुत्स्याच नात्रकार्य्या विचारणा ॥ ६ ॥

सफेद पुनर्नवा की जड़ चावल धोवन के साथ पीस पीने से, विद्रधि का नाश हो जाता है, इसमें संदेह नहीं ॥ ६ ॥

कदलीदलक्षारन्तु पानीयेनप्रसाधितम् । उदररोगे
तस्यादनाद्विनश्यन्ति उदरव्याधयोऽखिलाः ॥ ७ ॥

केले के पत्तों का बनाया हुआ क्षार पानी के साथ पिलाने से समस्त उदर रोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ७ ॥

कदल्यामूलमादाय गुडाज्येन समन्वितम्। उदरस्थकृमिहरम्
अग्निनासाधितं जग्धमुदरस्थक्रमीन्हरेत् ॥ ८ ॥

केले की जड़ पीस कर गुड़, घृत मिला पका कर खिलाने से पेट के कीड़े गिर जाते हैं ॥ ८ ॥

नित्यं निम्बदलानाञ्च चूर्णमामलकस्य च। कुष्टे
प्रत्यूषेभक्षयेच्चैव तस्यकुष्टं विनश्यति ॥ ९ ॥

सदा प्रातःकाल नींव के पत्तों का चूर्ण, समान आमला चूर्ण मिला खाने से कुष्ट नष्ट हो जाता है ॥ ९ ॥

हरीतकीविडंगञ्च हरिद्रा सितसर्षपाः।
सोमराजस्यमूलानि करञ्जस्य च सैन्धवम्।
गोमूत्रपिष्टान्येतानि कुष्टरोगहराणि वै ॥ १० ॥

हर्रा, विढंग, हल्दी, सफेद सरसों, वाकुची की जड़, कंज, सेंधानमक गोमूत्र में पीस लेप करने से कुष्ट नष्ट हो जाता है ॥ १० ॥

एकश्चत्रिफलाभागस्तथाभागद्वयं शिव !।
सोमराजस्यवीजानां जग्धंपथ्येन दद्रुनुत् ॥ ११ ॥ दद्रौ

एक भाग त्रिफला और दो भाग वाकुची वीज पथ्य से खाने से दाद नष्ट हो जाती है ॥ ११ ॥

अम्लतक्रं सगोमूत्रं कथितं लवणान्वितम्।
कांस्यघृष्टं खरं लेपात् कुष्टदद्रु विनाशनम् ॥ १२ ॥

खट्टा मट्ठा, गोमूत्र, नमक डाल पकावें, गाढा होने पर उतार कर कांसे के पात्र से घिसे, फिर दाद पर गाढा लेप करने से दाद, कुष्ट नष्ट हो जाती है ॥ १२ ॥

हरिद्राहरितालञ्च दूर्वागोसूत्रसैन्धवम् ।
अयं लेपो हन्ति दद्रू पामानं च गरं तथा ॥१३॥ पामाहरम्

हल्दी, हरताल, दूव, गोमूत्र, सेंधानमक का लेप दाद, पामा, विष को नष्ट कर देता है ॥ १३ ॥

सोमराजस्य वीजानि नवनीतयुतानि च ।
मधुना स्वादितानिस्युः शुक्लकुष्टहराणि वै । श्वेतकुष्टे
तक्रान्नपानतोरुद्र नात्रकार्याविचारणा ॥ १४ ॥

वाकुची वीज, मधु, मक्खन से खावें और मट्ठे के साथ अन्न खाने से श्वेत कुष्ट नष्ट हो जाता है, इसमें संदेह नहीं ॥ १४ ॥

श्वेतापराजितामूलं वर्त्तितं चास्य वारिणा ।
तल्लेपो रुद्रमासेन शुक्लकुष्ट विनाशनः ॥ १५ ॥

सफेद अपराजिता की जड़ मुख में डाल चबाकर या उसीके रस से पीस एकमास लेपकरने से सफेद कुष्ट का नाश हो जाता है ॥ १५ ॥

माहिषं नवनीतञ्च सिन्दूरं समरीचकम् ।
पामाविलेपनान्नश्येद्दुनोमा वृषभध्वज ॥ १६ ॥ अर्शांसि

भैंस का मक्खन, सेंदुर, मिर्च के लेप से पामा, अर्श नष्ट हो जाता है ॥ १६ ॥

विशुष्कगाम्भारिकामूलं तक्र क्षीरेण संयुतम् ।
भक्षितं शीतपित्तस्यविनाशकरमीश्वर ॥ १७ ॥ शीतपित्ते

सूखी खंभारी की जड़ दूध में पका पीने से हे शिव शीत पित्त का नाश हो जाता है ॥ १७ ॥

मूलकस्यतु बीजानि अपामार्ग रसेनवै ! सिध्महरम्
पिष्टानि तेन लेपेन सिध्मकं रुद्र नश्यति ॥ १८ ॥

मूली के बीज अपामर्ग रस से पीस लेप करने से सेंहुआ नष्ट हो जाता है ॥ १८ ॥

कदली क्षार संयुक्त हरिद्रा सिध्मनाशापहा ।
रम्भापामार्गयोः क्षार एरण्डेन विमिश्रितः ।
तदभ्यङ्गान्महादेव ! सद्यः सिध्मविनश्यति ॥ १९ ॥

केले के पत्तों की राख और हल्दी, का लेप सेंहुआ नष्ट करता है। केला और अपामार्ग की राख का लेप शीघ्र बनरफ को नष्ट करता है ॥ १९ ॥

कूष्माण्डनालक्षारश्च सगोमूत्रश्च तत्वतः ।

कुम्हेड़े की लता की राख गोमूत्र के साथ मलने से भी सिध्म नष्ट हो जाता है ॥ २० ॥

जलपिष्टा हरिद्रा च सिद्धामन्दानलेन च ॥ २० ॥
माहिषेण पुरीषेण वेष्टितावृषभध्वज । सौन्दर्यकरम्
अस्या उद्वर्त्तनं कुर्यादंगसौष्टवमीश्वर ॥ २१ ॥

भैस के गोबर में रख मध्याग्नि में पकाई हल्दी को पानी में पीस उबटन करने से शरीर सुन्दर हो जाता है ॥ २१ ॥

तिलसर्षपसंयुक्तं हरिद्राद्वयकुष्टकम् । गात्रदुर्गन्धहरं
तेनार्चितदेहः स्याद् गन्धः सुरभिः पुमान् ॥ २२ ॥

तिल, सरसों, हल्दी, आमाहल्दी, कूठ, का उबटन करने से शरीर की दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ २२ ॥

मनोहरश्चानुदिनं दूर्वाणां काकजंघाया: ।
अर्जुनस्य तु पुष्पाणि जम्बूपत्रयुतानि च ॥ ३१ ॥
सलोध्राणि च तल्लेपो देहदुर्गन्धतां हरेत् ।

दूर्वा, काकजंघा, अर्जुनपुष्प, जामुन के पत्ते, लोध का किया गया उबटन भी देह की दुर्गन्ध नष्ट करता है ॥ २३ ॥

युक्तं लोध्रभवैर्नीरैश्चूर्णन्तु कनकस्य च। ग्रीष्मप्रवाधिकायां
तेनोद्वर्त्तित देहस्य नस्याद्ग्रीष्मप्रवाधिका ॥ २४ ॥

लोध क्काथ से धतूरे के पंचांग का चूर्ण पीस उबटन करने से ग्रीष्मऋतु की फुन्सियां ( इन्होरी ) दूर होती हैं ॥ २४ ॥

दुग्धेनोषसिसेकश्च धर्मदोषश्च नश्यति ।

प्रात: काल दूध का लेप करने से लू लगजाना आदि धूपके दोष नष्ट हो जाते हैं ॥

काकजंघोद्वर्तनन्तु ह्यङ्गरागकरं भवेत् ॥ २५ ॥

काकजंघा का उबटन शरीर को रंग देने वाला होता है अर्थात सुन्दरता बढ़ाता है ॥ २५ ॥

मधुयष्टी शर्करा च वासकस्यरसो मधु । रक्तपित्ते
एतत्पीतं रक्तपित्तकामला पांडुरोगनुत ॥ २६ ॥

मोरेठी, शकर, अडूसे का रस, मधु मिला पीने से रक्तपित्त, कामला, पांडुरोग को नष्ट कर देता है ॥ २६ ॥

रक्तपित्तंहरेत्पीतो वासकस्य रसोमधु।

अडूसे का रस मधु मिला पीने से रक्तपित्त दूर होता है।

प्रातः काले तोयपानात्पीनसं दारुणं हरेत् ॥२७॥ पीनसे

प्रातः काल ठंडा पानी पीने से कठिन पीनस भी दूर हो जाती है२७

विभीतकस्यवैचूर्णं पिप्पल्याः सैन्धवस्य च।

पीतं सकाञ्जिकं हन्ति स्वरभेदं महेश्वर ? ॥२८॥स्वरभंगे

हे शंकर ! बहेड़ा, पीपल, सेंधानमक का चूर्ण कांजी के साथ पीने से स्वर भेद ( गला बैठना ) को नष्ट कर देता है ॥ २८ ॥

चूर्णमामलकं सेव्यं पीतं गव्यपयोन्वितम्।

मनः शिला बलामूलं कोलपर्णश्चगुग्गुलः ॥ २९ ॥

आमले का चूर्ण गौदुग्ध के साथ खाना और मनःसिल, बला मूल, वेर के पत्ते गूगल का खाना भी स्वरभेद हर है ॥ २९ ॥

जातिपत्रं कोलपत्रं तथा चैव मनः शिला। कासेधूमपानः

एभिश्चैवकृतावर्ति वंदर्य्यग्नौ महेश्वर ॥

धूमपाने कासहरं नात्रकार्या विचारणा ॥ ३० ॥

चमेली पत्र, वेरपत्र, मनसिल की गोली वेर की लकड़ियों पर रख धूमपान करने से खांसी दूर हो जाती है ॥ ३० ॥

त्रिफला पिप्पली चूर्णं भक्षितं मधुनायुतम्। पिपासाज्वरे

भोजनादौ हि समधुपिपासा ज्वरितं हरेत् ॥ ३१ ॥

त्रिफला, पीपल का चूर्ण भोजन के प्रथम खाने से प्यास ज्वर दूर होता है ॥ ३१ ॥

बिल्वमूलञ्चसमधु गुडूची कथितं जलम् ।
पीतहरेच्चत्रिविधं छर्दि नैवात्र संशयः ॥ ३२ ॥ वमने

बेल की जड़ का काथ मधु युक्त पीने से भी प्यास ज्वर दूर होता है । गुडूची काथ से मधु पीने से तीनों तरह की वमन दूर होती है ॥ ३२ ॥

पीता दूर्वाच्छर्दिनुत्स्यात्पिष्टा तण्डुलवारिणा ॥ ३३ ॥

दूब चावल धोवन में पीस पीने से वमनबन्द हो जाती है ३३॥

इति श्री गारुडे महापुराणे वमनादि वर्णनं नाम नवत्यधिक शततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि प० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया सनाथीकृतः समाप्तः



हरि रुवाच

पुनर्नवाया मूलञ्च श्वेतंपुष्ये समाहृतम् । सर्पवारणम्
वारिपीतं तस्यपार्श्वे भवनेषु न पन्नगाः ॥ १ ॥

भगवान कहने लगे । श्वेतपुनर्नवा को पुष्य नक्षत्र में लाकर पानी में पीस पीने से एक वर्ष तक सांप उसके तथा मकान के पास मकान में रखने से नहीं आते ॥ १ ॥

तार्क्ष्यमूर्त्ति वहेद्यावै भल्लूकदंत निर्मिताम् ।
सपन्नगैन दृश्येत यावज्जीवं बृषध्वज ॥ २॥

भालू के दान्त की बनी हुई गरुडमूर्ति को पहिन ने से हे शिव उसे सांप उसके जीवन भर नहीं देखते ॥ २ ॥

पिवेच्छाल्मलीमूलं यः पुष्यर्क्षेरुद्रवारिणा ।
तस्मिन्नपास्तदशनानागाः स्युर्नात्रसंशयः ॥ ३ ॥

पुष्य नक्षत्र में सेमल की जड़ पीने वाले को सांप नही काटते ॥ ३ ॥

पुष्येलज्जालुकामूले हस्तबद्धेतु पन्नगान् ।
गृह्णीयाल्लेपतो वापि नात्रकार्या विचारणा ॥ ४ ॥

पुष्य नक्षत्र में लजवंती मूल हाथोंमें लेप करके या हाथों में बाध कर सांप पकड़ सक्ते हो वह काटेगा नहीं ॥ ४ ॥

पुष्येश्वेतार्क मूलं तु पीतं शीतेन वारिणा ।
नश्येत्तुदंशक विषं करवीरादिजं विषम् ॥ ५ ॥

पुष्य नक्षत्र में सफेद आक की जड़ ठंडे जल में पीस पीने से कनेर और दश के विष नष्ट हो जाते हैं ॥ ५ ॥

महाकालस्यवैमूलं पिष्टंतत्काञ्जिकेन वै ।
वोड्राणां डुण्डुभानां च तल्लेपोहरते विषम् ॥६॥सर्पविषे

लाल इन्द्रायण ( कोंहर ) की जड़ कांजी में पीस लेप करने से बोड़, डुण्डुभ जाति के सर्पों का विष दूर हो जाता है ॥ ६ ॥

तण्डुलीयकमूलंतु पिष्टं तण्डुल वारिणा ।
घृतेन सहपीतन्तु हरेत्सर्वविषाणि च ॥ ७ ॥

चौलाई की जड़ चावल धोवन के साथ पीस घृत मिला पिलाने से सब प्रकार के विष दूर हो जाते हैं ॥ ७ ॥

नीलीलज्जालुकामूलं पिष्टं तण्डुलवारिणा ।
पीतं तद्दंशकविषं नश्येदेकेनवोभयोः ॥ ८ ॥

नील, लजवन्ती की जड़ चावल धोवन में पीस पीने से दंश विष ( विच्छू आदि ) दूर होते हैं एक से और दोनों से भी ॥ ८ ॥

कूष्माण्डस्यस्वरसः सगुडः सहशर्करः ।
पीतः सदुग्धोहन्याच्च दंशकस्य विषं च वै ॥ ६ ॥

कुम्हेड़े का रस गुड़ युक्त या शक्कर के सहित दूध मिला पीने से दंशक विष दूर होता है ॥ ६ ॥

तथाकोद्रवमूलस्य मोहस्य हर एव च । कोद्रवादिविषे
यष्टीमधुसमायुक्ता तथा पीता च शर्करा ॥ १० ॥
सदुग्धा च त्रिरात्रेण मूषकानां विषं हरेत् ।
चुलुकत्रयपानाच्च वारिणः शीतलस्य वै ॥११॥ मूषकविषे

कोदों की जड़ या धत्तूर विषमें मोरेठी, शकर,दूध मिला तीनदिन पीने सेदूर होता है तथा चूहों का विष भी दूर होता है। ठंडे पानी के चिल्लू पीने से भी चूहों का विष दूर हो जाता है ॥ १०।११ ॥

चुलूकत्रयपानाच्च वारिणा शीतलस्यवै । ताम्बूलदग्धे
ताम्बूलदग्धमुखस्य लालास्रावो विनश्यति ॥ ११ ॥

ठंडे पानी के तीन चिल्लू पीने से पान खाने से जले हुये मुंह की लार वहनी बंद हो जाती है ॥ ११ ॥

घृतंसशर्करं पीत्वा मद्यपानमदो न वै ॥१२॥ मद्यपानमदे

शकर मिला घृत खाने से शराव का नशा दूर हो जाता है ॥ १२ ॥

कृष्णांकोलस्य मूलेन पीतं सुक्वथितं जलम् । गरे
ततोनश्येद्गरविषं त्रिरात्रेणमहेश्वर ॥ १३ ॥

काले अकोड़े की जड़ का क्वाथ तीन दिन पीने से गर (संयोगी) विष दूर हो जाते हैं, ॥ १३ ॥

उष्णं गव्यघृतं चैव सैन्धवेनसमन्वितम् । वृश्चिकदंशे नाशयेत्तन्महादेव वेदनां वृश्चिकोद्भवाम् ॥ १४ ॥

सेंधानमक और गौ घृत गरम कर लगाने से विच्छू की पीड़ा दूर हो जाती है ॥ १४ ॥

कुसुम्भं कुंकुमञ्चैव हरितालं मनः शिला । मानुषविषे करञ्जं पिषितं चैव ह्यर्कमूलञ्चशंकर ॥ १५ ॥
विषंनृणां विनश्येत्तु एतेषां भक्षणाच्छिव ।

कुसुम फूल, केशर, हरताल, मनसिल, करञ्ज बीज, आक की जड़ पीस खाने से मनुष्यों का विष दूर होता है ॥ १५ ॥

दीपतैलप्रदानाच्च दंशैराकीटजैः शिव । खजूरविषे खजूरकविषं नश्येत्तदा वै नात्र संशयः ॥ १६ ॥

कनखजूरे के विष में दिये का तेल लगाने से नष्ट हो जाता है ॥ १६ ॥

दंशस्थानं वृश्चिकस्य शुण्ठी तगर संयुता ।
नश्येन्मधुमक्षिकाया एतेषां लेपतो विषम् ।मधुमक्षिकादंशे शतपुष्पा सैन्धवं च साज्यं वा तेन लेपयेत् ॥ १७ ॥

विच्छू के काटे हुये स्थान पर सोंठ, तगर का लेप लगाने से वेदना शान्त हो जाता है । मधुमक्खी के विष पर सोंफ, सेंधानक, घृत के साथ लगाना चाहिये ॥ १७ ॥

शिरीषस्यतु बीजं वै सिद्धक्षीरेण घर्षितम् । कुक्कुरविषे
तल्लेपेन महादेव नश्येत्कुक्कुरजं विषम् ॥ १८ ॥

कुत्ते के विष में सिरस के बीजों को गर्म दुग्ध में घिस लगाना चाहिये ॥ १८ ॥

ज्वलिताग्निर्वारिसेको तथा दर्दुरजं विषम् ।१९॥ दर्दुरविषे

मेंढक के विष में दीप्ताग्नि का या गरम जल का सेंक करने से नष्ट हो जाता है ॥ १९ ॥

धत्तूरकरसोन्मिश्रं क्षीराज्यगुडपानतः ।
शूनां विषं विनश्येत्तु शशांकितशेखर ॥२०॥ कुक्कुरविषे

धतूरे के पत्तों का रस दूध, घृत, गुड़ मिला पिलाने से कुत्ते का विष नष्ट हो जाता है । कहीं २ घ पाठ है उसका अर्थ बिना गुड़ का दूध होता है ॥ २० ॥

वटनिम्बशमीनाञ्च वल्कलं क्वथितं जलम् ।
तत्सेकान्मुखदंतानां नश्येद्वै विषवेदना ॥ २१ ॥ दन्तविषे

बड़, नींव, छेंकुर की छाल के क्वाथ से सेंक करने से मुख और दांत का विष नष्ट हो जाता है ॥ २१ ॥

लेपनाद्देवदारोश्च गैरिकस्य च लेपनात् ।
नागेश्वरो हरिद्रे द्वे तथा मांजिष्ठा हर ॥
एभिर्लेपाद्विनश्येत्तु लूताविषमुमापते ॥२२॥ लूताविषे

देवदारु, गेरु, नागकेशर, दोनों हल्दी और मजीठ के लेप से मकड़ी का विष दूर हो जाता है ॥ २२ ॥

करञ्जस्यतु वीजानि वरुणच्छद मेवच ।
तिलाश्च सर्पपा हन्युर्विषं वै नात्र संशयः ॥ २३ ॥

कंजा के वीज, वरुणा की छाल, तिल, सरसों का लेप भी लूता विष को नष्ट कर देता है इसमें संदेह नहीं ॥ २३ ॥

घृतं कुमारीपत्रं वै दत्तं सलवणं हर ।
तुरंगमशरीराणां कण्डूर्नश्येद्दशाहतः ॥ २४ ॥ अश्वकण्डौ

कुमारी ( घीकुवार ) का पत्ता, नमक, घृत मिला लेप करने से घोड़े की देह की खुजली मिट जाती है ॥ २४ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे योगसार वर्णनं नाम पंचाशीत्यधिक शततमोऽध्यायः श्रीनखिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालुप्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥

---

हरिरुवाच

चित्रकस्याष्टभागाश्च शूरणस्यच षोडश । चित्रकमोदकः
शुण्ठ्या भागाश्चत्वारो मरिचानां द्वयंतथा ॥ १ ॥
त्रितयं पिप्पलीमूलं विडङ्गानां चतुष्टयम् ।
अष्टौ मुशलिकाभा स्त्रिफलायाश्चतुष्टयम् ॥ २ ॥
द्विगुणेन गुडेनैषां मोदकानिह कारयेत् ।
मन्दाग्निमजीर्णांह पाण्डुरोगश्च कामलाम् ।
आतसारांश्च मदाग्निं सोहाश्चैव निवारयेत् ॥ ३ ॥

चित्रक ८ भाग, जिमीकंद १६ भाग, सोंठ ४ भाग, मिर्च २ भाग, पीपलामूल ३ भाग, विडंग १२ भाग, मूसली ८ भाग, त्रिफला

४ भाग सबसे दूना गुड़ पाक कर मोदक बनाले, इनके खाने से अजीर्ण, पांडु रोग, कामला, अतिसार, मंदाग्नि, प्लीहा नष्ट होती है ॥ ३ ॥

विल्वाग्नि मंथःश्योणाकपाटलापारिभद्रकम् । नारायणतैलम्
प्रसारण्यश्वगंधा च वृहती कण्टकारिका ॥ ४ ॥
वलाचातिवला रास्ना श्वदंष्ट्रा च पुनर्नवा ।
एरंडः शारिवा पर्णी गुडूची कपिकच्छुका ॥ ५ ॥
एषां दशपलान्भागान् क्वाथयेत्सलिलेऽर्मणे ।
तेनपादावशेषेण तैलपात्रं विपाचयेत् । ६ ॥
आजंवा यदि वा गव्यं क्षीरंदत्वाचतुर्गुणम् ।
शतावरी, रसंचैव तैल तुल्यं प्रदापयेत् ॥ ७ ॥
द्रव्याण्यानि पेष्याणि तानि वक्ष्यामितच्छृणु ।
शतपुष्पा देवदारुर्बला पर्णी वचागुरु ॥ ८ ॥
कुष्ठमांसी सैन्धवञ्च पलमेकं पुनर्नवा ।
पानेनस्येतथाभ्यङ्गे तैलमेतत्प्रदापयेत् ॥ ९ ॥
हृच्छूलं पार्श्वशूलञ्च गण्डमालाञ्च नाशयेत् ।
अपस्मारं वातरक्तं वपुष्मांश्च पुमान्भवेत् ॥ १० ॥
गर्भमश्वतरीं विद्यात्किं पुनर्मानुषीहर ।
अश्वानां वातभग्नानां कुञ्जराणां नृणांतथा ॥ ?१ ॥
तैलमेतत्प्रयोक्तव्यं सर्वं वात विकारिणाम् ॥ ११

बेल, इरनी, श्योनाक, पाटला, पारिभद्र, प्रसारिणी, असगंध, भट कटैया, फल कटैया, बला, अतिबला, रासना, गुखरू, पुनर्नवा,

एरंड, शारिवा, शालिपर्णी, पृष्टपर्णी, गुडूची, कोंच, प्रत्येक १०-१० पल पानी ३२ सेर में पका चौथाई रख छान लें तैल ४ सेर डालें शतावरी रस ४ सेर दें कल्क में सोया, देवदारु, वला, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी वच अगर, कूठ, जटामांसी, सेंधा नमक, पुनर्नवा १-१ पल डाल पकावे यह तैल, पान नस्य मर्दन में काम आता है हृदय शूल, पार्श्वशूल, कंठमाला, मृगी, वात रक्त को नष्ट कर शरीर को पुष्ट करता है खिच्चरी भी गर्भ धारण करती है। फिर स्त्रियों का क्या कहना है वात पीड़ित, हाथी, घोड़ा मनुष्य में भी इसे प्रयोग करना चाहिये ॥ ११ ॥

हिङ्गुतुम्बुरुशुण्ठीभिः सिद्धं तैलन्तुसार्षपम् ।
एतद्धि पूरणं श्रेष्ठं कर्णशूलापहंपरम् ॥१२॥ हिग्वादितैलं

हींग, तुम्बुरुवीज सोंठ से पकाया सरसों का तैल कान में डालने से कर्ण शूल नष्ट हो जाता है ॥ १२ ॥

शुष्क मूल क शुण्ठीनां क्षारो हिंगुलनागरम् । क्षारतैलम्
तक्रं वतु गुणंदद्यात्तैलमेत द्विपाचयेत् ॥ १३ ॥
वाधिर्य्यं कर्णशूलञ्च पूयस्रावं च कर्णयोः ।
क्रिमयश्चविनश्यन्ति तैलस्यास्य प्रपूरणात् ॥ १४ ॥

सूखी मूली, सोंठ का क्षार, ईंगुर, मोंथा का कल्क डाल मट्ठा चौगुना डाल कर पकाया तैल वधिरता, कान दर्द, पीप वहना, कान के कीड़ों को नष्ट करता है ॥ १४ ॥

शुष्कमूलकशुण्ठीनां क्षारोहिंगुलनागरम् । क्षारतैलम्
शतपुष्पावचा कुष्टं दारुशिग्रुरसाञ्जनम् ॥ १५ ॥
सौवर्चलं यवक्षार सामुद्रं सैन्धवं तथा ।

ग्रंथिकं विडमुस्तञ्च मधुशुक्तं चतुर्गुणम् ॥ १६ ॥
मातुलुङ्गरसश्चैव कदलीरस एव च ।
तैलमेभिर्विपक्तव्यं कर्णशूलापहं परम् ॥ १७ ॥
बाधिर्यं कर्णनादश्च पूयस्रावश्च दारुणम् ।
पूरणादस्य तैलस्य क्रिमयः कर्णयोर्हर ॥ १८ ॥
सद्यो विनाशमायान्ति शशाङ्ककृतशेखर ।
क्षार तैलमिदं श्रेष्ट मुखदन्तमलापहम् ॥ १९ ॥

सूखी मूली, सोंठ का क्षार, सिंगरफ, सोंठ, सौंफ, बच, कूठ, देवदारु, सहजना, रसोत, काला नमक, यवक्षार, समुद्र, सैंधव, विड नमक, पीपलामूल, नागर मोथा, मधु शुक्त चोगुना विजौरा रस, केले का रस डाल तैल पका डालने से कर्णशूल, बधिरता, कर्णनाद, पीपबहना, कृमिहोना नष्ट होता है इस तैल का नाम क्षार तैल है हे शिव। यह मुंह दांत के मल को भी नष्ट करता है × मधु शुक्त बनाने का विधान—जम्बारी नीबू का रस १ सेर मधु ऽ। पीपल चूर्ण ऽ— इनको मिट्टी के वर्तन में भर कर एक मास बाद निकालें यही मधु शुक्त है। शार्ङ्गधर में पीपलामूल पीपल के स्थान में हैं और तीन दिन में तयार करने का विधान है।

चन्दनं कुंकुमं मांसी कर्पूरं जातिपत्रिका । चंदनादितैलम्
जातीकङ्कोल पूगानां लवंगस्य फलानि च ॥ २० ॥

---

×जम्बीराणां फलरसः प्रस्थैकः कुडवोन्मितम् ।
माक्षिकंतत्रदातव्यं पलैका पिप्पली स्मृता ॥
एकदेकी कृतं सर्वं मृद्भाण्डे च निधापयेत् । शार्ङ्ग०

अगरुणि च कस्तूरी कुष्टं तगर पादिका ।
गोरोचना प्रियंगुश्च वलाचैव तथा नखी ॥ २१ ॥
सरलं सप्तपर्णं च लाक्षाचामलकी तथा ।
तथातु पद्मकं चैव ह्येतैस्तैलं प्रसाधयेत् ॥ २२ ॥
प्रस्वेदमलदुर्गन्धकण्डूकुष्टहरं परम् ।
गच्छतिस्त्रीशतं रुद्र ? वन्ध्यापि लभते सुतम् ॥ २३ ॥

चंदन, केशर, जटामांसी कपूर, जावित्री, चमेली पुष्प, कंकोल, सुपारी, लौंग, अगरु, कस्तूरी, कुष्ट, तगर, गोरोचन, प्रियंगु, वला, नखी सरल, सप्तपर्णा, लाख, आमला, कमल पुष्प १-१ पलसे तैल सिद्ध करें इसके लगाने से पसीने की दुर्गन्धि खुजली, कुष्ट नष्ट होते हैं वन्ध्यापुत्र प्राप्त करती है और पुरुष सो स्त्रियों से रमण कर सक्ता है॥२३

यवानी चित्रकं धान्यं त्र्यूषणं जीरकं तथा । यवानीतैलम्
सौवचलं विडंगञ्च पिप्पलीमूलराजिकम् ॥ २४ ॥
एभिः पचेद्घृतप्रस्थं जलप्रस्थाष्टसंयुतम् ।
तथाऽर्शोगुल्मश्वयथुं हन्तिवन्हि करोति वै ॥ २५ ॥

अजवाइन, चित्रक, धनियां, त्रिकुटा, जीरा, काला नमक, विडंग, पीपला मूल, राई एक सेर घृत आठ सेर पानी डाल पकावें यह घृत अर्श, गुल्म, शोथ, को नष्ट कर अग्नि को दीप्त करता है ॥ २५ ॥

मरिचं त्रिवृतं कुष्टं हरितालं मनःशिला । मिरच्यादितैलम्
देवदारुहरिद्रेद्वेकुष्टमांसी च चन्दनम् ॥ २६ ॥
विशालाकरवीरञ्च अर्कक्षीरं शकृद्रसः ।
एषाञ्चकार्षिको भागो विषस्यार्द्धपलं भवत् ॥ २७ ॥

प्रस्थं कटुकतैलस्य गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत् ।
मृत्पात्रे लोहपात्रे वा शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥ २८ ॥
पामा विचर्चिका चैव दद्रु विस्फोटकानि च ।
अभ्यङ्गेनप्रणश्यन्ति कोमलत्वञ्चजायते ॥ २९ ॥
प्रभूतान्यपि श्वित्राणि तैलेनानेनमर्दयेत् ।
चिरोत्थितमपि श्वित्रं विनष्टं तत्क्षणाद्भवेत् ॥ ३० ॥

मिरच, निशोथ, कूठ, हरताल, मनसिल, देवदारु, दोनों हल्दी, कूठ, जटामांसी, लालचंदन, इन्द्रायण, कनेर, आक का दूध, गौ के गोबर का रस २-२ तोला, सिंधिया २ तो०, कड़वा तैल १ सेर, गोमूत्र आठ सेर डाल लोहपात्र में पकालें, इससे पामा, विचर्चिका, दाद, फोड़े नष्ट होते हैं और चमड़ी मुलायम होती है। शीघ्र पैदा हुये और पुराने श्वेत कुष्ट इसके लगाने से नष्ट हो जाते हैं ॥ २९-३० ॥

पटोलपत्रं कटुका मञ्जिष्टा शारिवा निशा । पटोलादिघृत
जातीशमीनिम्बपत्रं मधुकं क्वथितं घृतम् ।
एभिर्लेपास्युररुजो व्रणा विस्राविणः शिव ॥ ३१ ॥

हे शिव परवरपत्र, कुटकी, मजीठ, अनन्तमूल, चमेली पत्र, शमीपत्र, निम्बपत्र, मोरेठी के क्वाथ से पकाया घृत लगाने से बहने वाले घाव ठीक हो जाते हैं ॥ ३१ ॥

शंखपुष्पी वचा सोमो ब्राह्मीब्रह्मसुवर्चला: । ब्राह्मीघृतम्
अभया च गुडूची च आटरुषकवाकुची ॥ ३२ ॥
एतैरक्षसमैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
कंटकार्य्योरसप्रस्थं क्षीरप्रस्थसमन्वितम् ॥ ३३ ॥

एतद्ब्राह्मीघृतंनाम स्मृतिमेधाकरं परम् ॥ ३४ ॥

शंखपुष्पी, वच, सोमवल्ली, ब्राह्मी, सफेद हुरहुर या ब्रह्मसुवर्चला नामक औषधि, हर्रा, गुडूची, अरूसा, वाकुची २–२ तोला, घृत १ सेर. कटैली का रस १ सेर, गोदुग्ध १ सेर डाल पकावें, यह ब्राह्मी घृत स्मृति मेधा ( बुद्धि ) वर्द्धक है ॥ ३४ ॥

अग्निमन्थो वचा वासा पिप्पली मधुसैन्धवम् । स्वरभंगे
सप्तरात्रप्रयोगेण किन्नरैरिवगीयते ॥ ३५ ॥

हरनीमूल छाल, वच, अडूसा, पीपल, सेंधानमक, मधु में मिला सात दिन खाने से किन्नरों के समान गाने वाला होता है ॥ ३५ ॥

अपामार्गः गुडूची च वचाकुष्टं शतावरी ।
शंखपुष्पाभया साज्यं विडङ्गं भक्षितं समम् ॥ बुद्धिवृद्धौ
त्रिभिर्दिनैर्नरं कुर्य्याद् ग्रंथाष्टशतधारिणम् ॥ ३६ ॥

अपामार्ग, गुडूची, वच, कूठ, शतावर, शंखपुष्पी, हर्रा, विडंग का चूर्ण घृत से खाने से तीन दिन में १०८ ग्रंथों को याद करने वाला हो जाता है ॥ ३६ ॥

अद्भिर्वा पयसाज्येन मासमेकन्तु सेविता । वचाप्रयोगः
वचाकुर्य्यान्नरं प्राज्ञं श्रुतिधारणसंयुतम् ॥ ३७ ॥

दूध से, घृत से या पानी से एक मास वच का चूर्ण लेने से मनुष्य को विद्वान् बना देती है ॥ ३७ ॥

चन्द्रसूर्य्यग्रहे पीतं पलमेकं पयोन्वितम् ।
वचायास्तत्क्षणं कुर्य्यान्महाप्रज्ञायुतं नरम् ॥ ३८ ॥

चन्द्र या सूर्य ग्रहण के समय एक पल वच का चूर्ण दूध के साथ लेने से फौरन ही महा बुद्धिमान बना देती है ॥ ३८ ॥

भूनिम्बत्रिफलापर्पटैश्च शृतं जलं । रक्तशोधकम्
पटोलीमुस्तकाभ्याञ्च वासकेन च नाशयेत् ।
विस्फोटकानि रक्तं च नात्रकार्य्याविचारणा ॥ ३९ ॥

चिरायता, नींवछाल, त्रिफला, पित्तपापरा का क्वाथ या परवरपत्र मोंथा, अडूसा का क्वाथ, फोड़े, फुन्सी और रक्त विकार को दूर कर देते हैं, इसमें संदेह नहीं ॥ ३९ ॥

कतकस्यफलं शंखं सैन्धवं त्र्यूषणं वचा । नेत्ररोगे
फेनोरसाञ्जनं क्षौद्रं विडङ्गानिमनः शिला ॥ ४० ॥
एषावर्त्तिर्हन्ति काचं तिमिरं पटलंतथा ॥ ४१ ॥

निर्मली फल, शंख, सेंधा नमक, त्रिकुटा, वच, समुद्रफेन, रसौंत, विडंग, मनशिल, को पीस, मधु से वत्ती, बना लें इसके लगाने से तिमिर, पटल, कांच यह आंखों के रोग दूर हो जाते हैं ॥ ४१ ॥

प्रस्थद्वयं माषकस्य क्वाथश्च द्रोणमम्भसाम् । कर्णरोगेतैलम्
चतुर्भागावशेषेण तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४२ ॥
कांजिकस्याढकंदत्वा पिष्टान्येतानिदापयेत् ।
पुनर्नवा गोक्षुरकं सैन्धवं त्र्यूषणंवचा ॥ ४३ ॥
लवणं सुरदारुश्च मजिष्टा कण्ट कारिका ।
नस्यात्पानाद्धरत्येव कर्णशूलं सुदारुणम् ॥ ४४ ॥
वाधिर्य्यं सर्व रोगांश्चह्यभ्यंगाच्च महेश्वर ॥ ४४ ॥

उरद दो सेर ले १६ सेर पानी में पकावे चौथाई भाग शेष रहने पर छान लें तिल तेल १ सेर में डालें कांजी ४ सेर डालें, और पुनर्नवा, गुखुरू, सेंधा नमक, त्रिकुटा, बच, नमक, देवदारु, मजीठ, कटैली का कल्क डाल पकालें इसके नस्य और पीने से कर्णशूल, वधिरता, नष्ट होती है मर्दन से सब रोग दूर हो जाते हैं ॥ ४४ ॥

पलद्वयं सैन्धवञ्च शुंठी चित्रक पञ्चकम् ॥ ४५ ॥

सौवीरं पंचप्रस्थं च तैलप्रस्थं पचेत्ततः ।

असृग्दर स्वर प्लीहा सर्व वात विकारनुत्॥४६॥ वातरोगे

सेंधा नमक, सोंठ, चित्रक पंचाग २–२ पल का कल्क बना पांच सेर सौवीर डाल एक सेर तिल तैल पका लें इसके लगाने से रक्त प्रदर, स्वर भेद, प्लीहा, समस्त वात विकार दूर हो जाते हैं ॥ ४६ ॥

उदुम्बरं वटं सर्वं जम्बूद्वयमथार्जुनम् ।

पिप्पलीञ्च कदम्बञ्च पलाशं लोध्र तिन्दुकम् ।

मधूकमाम्रसजञ्च वदरं पद्मकेशरम् ।

शिरीष वीजंकतकमेतत्काथेन साधितम् ॥

तैलं हान्तिव्रणांल्लेपाच्चिरकालभवानापि ॥ ४८ ॥ व्रणे

ऊमर छाल, बट छाल, पाकर, जामुन, अर्जुन छाल, पीपल, कदम, ढांक लोध तेन्दू महुया, चीड़, वेर, पद्माख, नागकेशर, शिरस, असन, निर्मली के क्काथ से पकाया हुआ तैल लगाने से वहुत पुराने व्रण अच्छे हो जाते हैं ॥ ४८ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे घृततैलादिवर्णनं नाम द्वि नवत्यधिक शततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं॰ विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥

हरि रुवाच ।

पलाण्डु जीरके कुष्टमश्वगन्धाजमोदकम् । वुद्धिवृद्धौ

वचा त्रिकुटकञ्चैव लवणं चूर्णमुत्तमम् ॥ १ ॥

ब्राह्मीरसैर्भावितञ्च सर्पिर्मधुसमन्वितम् ।

सप्ताहं भक्षितं कुर्य्यान्निर्मलाञ्चमतिं पराम् ॥ २ ॥

भगवान कहने लगे । प्याज, जीरा, कूठ, असगंध अजवाइन, वच त्रिकुटा, लवण, का चूर्ण बना ब्रह्मी रस की ७ सात भावना दे मधु घृत से खाने से एक सप्ताह में सुन्दर बुद्धि कर देता है ॥ २ ॥

सिद्धार्थकवचाहिङ्गु करञ्जं देवदारुच ।

मञ्जिष्टा त्रिफला विश्वं शिरीषोरजनीद्वयम् ॥ ३ ॥

प्रियंगुनिम्व त्रिकटु गोमूत्रेणैव घर्षितम ।

नस्यमालेपनञ्चैवतथा चोद्वर्त्तनंहितम् ॥ ४ ॥

अपस्मार विषोन्माद शोषालक्ष्मी ज्वरापहम् ।

भूतेभ्यश्चभयं हन्ति राजद्वारेषु योजनात् ॥ ५ ॥

अपस्मारेनस्यं

सफेद सरसो, वच, हींग, कंज, देवदारु, मजीठ त्रिफला, सोंठ, शिरस वीज, हल्दी दोनो, प्रियंगु, नींव, त्रिकुटा, का गोमूत्र के साथ किया नस्य, लेप, उपटन, अपस्मार, विष, उन्माद, शोष, दरिद्र, ज्वर, मूतों से भय राजद्वार से भय को दूर करता है ॥ ५ ॥

निम्बं कुष्टं हरिद्रे द्वे शिग्रु सर्षपजं तथा । कण्डूहरम्

देवदारु पटोलञ्च धान्यं तक्रेण घर्षितम् ॥ ६ ॥

देहं तैलाक्तगात्रं वै नयेदुद्वर्त्तनेन च ।

पामाकुष्टानिनश्येयुः कण्डू' हन्ति च निश्चितम् ॥ ७ ॥

नीवफल, कूठ, हल्दी दोनों, सेंजनाबीज, सरसों, देवदारु, परवल, धनिया, तक्र में पीस उबटन करें और बाद को तैल लगावें, इससे खाज, कुष्ट, खुजली निश्चय कर दूर हो जाती है ॥ ७ ॥

सामुद्रं सैन्धवं क्षारो राजिका लवणं विडम् । परिणामशूले
कटुलोहरजश्चैवं त्रिवृत्सूरणकं समम् ॥ ८ ॥
दधिगोमूत्रपयसा मन्दपावक पाचितम् ।
बलाग्निवर्धकं चूर्णं पिवेदुष्णेन वारिणा ॥ ९ ॥
जीर्णेऽजीर्णे तु भुञ्जीत मांस्यादिघृतमुत्तमम् ।
नाभिशूलं मूत्रशूलं गुल्मप्लीहभवञ्चयत् ॥ १० ॥
सर्वशूलहरं चूर्णं जठरानलदीपनम् ।
परिणामसमुत्थस्य शूलस्य च हितं परम् ॥ १० ॥

समुद्रनमक, सेंधानमक, यवक्षार, राई, विडलवण, कुटकी, लोह चूर्ण, निशोथ, जिमीकंद का समान चूर्ण, गौ का दही, गौ का मूत्र जल में डाल मंदाग्नि में पकालें, यह चूर्ण वल, अग्नि को बढ़ाता है, यदि गर्म जल से लिया जाय। यह चूर्ण पचजाने पर मांसरोहिणी (जटामांसी) का बनाया घृत पीने से नाभि शूल, मूत्रशूल, गुल्म, प्लीहा का शूल और सभी शूलों को दूर करता है, उदराग्नि वर्धक है, परिणाम शूल के लिये यह विशिष्ट भेषज है ॥ १० ॥

अभयामलकं द्राक्षा पिप्पली कंटकारिका ।
शृंगीपुनर्नवा शुण्ठी जग्धा कासं निहन्ति वै ॥११॥ कासे

संभालू, आमला, दाख, पीपल, कटैलीमूल, काकरासिंगी, नपुर्नवा, सोंठ का चूर्ण खाने से खांसी दूर हो जाती है ॥ ११ ॥

अभयामलकं द्राक्षा पाठा चैव विभीतकम् ।

शर्कराया समं चैव जग्धं ज्वरहरं भवेत् ॥ १२ ॥ ज्वरे

हर्रा, आमला, वहेड़ा, दाख, पाठा का चूर्ण समान शकर मिला खाने से ज्वर नष्ट हो जाता है ॥ १२ ॥

त्रिफला वदरं द्राक्षा पिप्पली च विरेककृत् । विरेके

हरीतकी सोष्णानीरैर्लवणाश्च विरेककृत् ॥ १३ ॥

त्रिफला, जंगली बेर, दाख, पीपल का चूर्ण दस्त लाता है इसी तरह हर्रा, नमक गर्म जल से लेने पर भी विरेचन कराता है ॥ १३ ॥

कूर्ममत्स्याश्वमहिष गोश्रृगालाश्च वानराः । ज्वरेधूपः

विडालबर्हिकाकाश्च वराहोलूककुक्कुटाः ॥ १४ ॥

हंस एषाश्च विडमूत्रं मांसं वा रोमशोणितम् ।

धूपंदद्याज्ज्वरार्त्तेभ्य उन्मत्तेभ्यश्च शान्तये ॥

कछुवा, मछली, घोड़ा, भैसा, गौ, स्यार, वन्दर, विल्ली, मोर, कौवा, सुअर, उल्लू, मुर्गा, हंस इनजीवों के मल, मूत्र, मांस, रोम, रक्त, की धूप ज्वर, उन्माद, को नष्ट कर देती है ॥ १५ ॥

एतान्यौषधजातानि कथितानि उमापते । औषधप्रशंसा

निघ्नन्तितांश्च रोगांश्च वृक्षामिन्द्राशनिर्यथा ॥ १६ ॥

हेशिव उपयुक्त कही हुई दवाइयां उन उन रोगों को बिजली जैसे वृक्षों को नष्ट कर देती है वैसे ही नष्ट कर देती हैं ॥ १६ ॥

औषधं भगवान्विष्णुः संस्मृतोरोगनुद्भवेत् ।

ध्यातोऽर्चितः स्तुतो वापि नात्रकार्या विचारणा ॥ १७ ॥

भगवान विष्णु ही सच्ची औषधि है इनका ध्यान, पूजन, स्मरण निश्चय ही रोग को दूर कर देता है ॥ १७ ॥

हयायुर्वेद माख्यास्ये हयं सर्वार्थलक्षणम् । अश्वायुर्वेदः
काकतुण्डः कृष्णजिह्वो वृक्षास्यश्चोष्णतालुकः ॥ १ ॥
करालोहीनदन्तश्च शृङ्गी विरलदन्तकः ।
एकाण्डश्चैव जाताण्डः कंचुकीद्विखुरी स्तनी ॥ २ ॥
मार्जारपादो व्याघ्राभः कुष्टविद्रधिसन्निभः ।
यमजोवामनश्चैव मार्जारः कपिलोचनः । ३ ॥
एतद्दोषीहयस्त्याज्य उत्तमोऽश्वस्तुरुष्कजः ।
मध्यमः पञ्चहस्तश्च कनीयाश्च त्रिहस्तकः ॥ ४ ॥

धन्वन्तरि जी कहने लगे—घोड़ों की चिकित्सा को और उनके लक्षणों को कहता हूं–काकतुण्ड, कृष्णजिव्ह, वृक्षास्य, उष्णतालु, कराल, हीनदन्त, श्रृङ्गी, विरलदन्त, एकाण्ड, जाताण्ड, कंचुकी, द्विखुरी, द्विस्तनी मार्जारपाद, व्याघ्राभ, कुष्ट विद्रधि के समान यमन, वामन बिल्ली याबंदर केसमाननेत्र वाले घोड़े त्याज्य होते हैं । तुर्की घोड़ा उत्तम होता है । पांच हाथ का घोड़ा मध्यम, तीन हाथ का कनिष्ट माना गया है ॥ ४ ॥

असंहता ये च वाहाह्रस्वकर्णास्तथैव च ।
शवलाभाः प्रभावेषु न हीनाश्चिरजीविनः ॥ ५ ॥
रेवन्तपूजनाद्धोमाद्रक्ष्याश्च द्विजभोजनात् ।
सरलं निम्बपत्राणि गुग्गुलं सर्षपान्घृतम् ॥ ६ ॥
तिलंचैव वचांहिंगु वध्नीयाद्वाजिनोगले । ७ ॥

जो घोड़ा मजबूत हो और छोटे कानों वाला हो, कबरे रंग का, प्रभाव वाला घोड़ा चिरजीवी होता है । घोड़ों को रेवन्त पूजन से होम से ब्राह्मणों को भोजन कराके रक्षण करें । सरल, निम्बपत्र, गूगल, सरसों घृत, तिल, वच, हींग की पोटली गले में बांधे ॥ ७ ॥

आगन्तुजं दोषजन्तु व्रणं द्विविधमीरितम् ।
चिरपाकं वातजन्तु श्लेष्मजं क्षिप्रपाककम् ॥ ८ ॥
कण्ठदाहात्मकं पित्ताच्छोणितान्मन्दवेदनम् ।
आगन्तुजन्तु शस्त्राद्यैर्दुष्टव्रण विशोधनम् ॥ ९ ॥

आगन्तुज और दोषज दो प्रकार के व्रण होते हैं। वातज और श्लेष्मज बहुत दिनों में पकते हैं, जल्दी पकने वाले, कण्ठ में दाह करने वाले पित्तज कहलाते हैं, रक्त से मन्द वेदनावाले होते हैं। आगन्तुज भी मन्द वेदना वाले होते हैं। खराब घावों को शस्त्रादि से शोधन करना चाहिये ॥ ९ ॥

एरण्डमूलं द्विनिशंचित्रकं विश्वभेषजम् ।
रसोनं सैन्धवं वापि तक्रकाञ्जिक पेषितम् ॥ ९ ॥
तिलसक्तुकपिण्डिका दधियुक्ता ससैन्धवा ।
निम्बपत्रयुतं पिण्डं व्रणशोधन रोपणम् ॥ १० ॥

एरण्डमूल, दोनों हल्दी, चित्रक, सोंठ, लहसन, सेंधानमक, मट्ठा और कांजी में पीस लेप करना। तिल, सत्तू, सेंधा नमक, दही के साथ पीस लगाना। नीम की पत्ती का लेप व्रण को शोधन रोपण करता है ॥ १० ॥

पटोलं निम्बपत्रञ्च बचा चित्रक मेव च ।
पिप्पली शृङ्गवेरञ्च चूर्णमेकत्र कारयेत् ॥ ११ ॥
एतत्पानात्क्रिमिश्लेष्म मंदानिल विनाशनम् ।

परवल, नीवपत्र, बच, चित्रक, पीपल, सोंठ का चूर्ण खिलाने से क्रमि, कफ, मन्दाग्नि को नष्ट करता है ॥ ११ ॥

निम्बपत्रं पटोलञ्च त्रिफला खदिरं तथा ।
क्वाथयित्वा ततोवाहं स्रुतरक्तं विचक्षणः ॥
त्र्यहमेवप्रदातव्यं हयकुष्टोपशान्तये ॥ १३ ॥

नीम पत्र, परवल, त्रिफला, खदिर, का क्वाथ रक्तमोक्ष करा के तीन दिन पिलाने से घोड़े का कुष्ट दूर करता है ॥ १३ ॥

सव्रणेषु च कुष्टेषु तैलं सर्षपजं हितम् ।
लशुनादिकषायश्च पानभुक्त्युपशान्तये ॥ १४ ॥

व्रण और कुष्ट रोग में सरसों का तैल हित कर है । लहसुन का क्वाथ भूख प्यास को बढ़ाने वाला है ॥ १४ ॥

मातुलुङ्गरसोपेतं मांसीनां रसकेन वा ।
सद्योदद्यात्तत्र नस्यमन्यैर्वातैः सुसंदुतैः ॥ १५ ॥

विजोरा, नीबू का रस, जटामांसी रस मिला नस्य देने से वातज रोग दूर हो जाते हैं ॥ १५ ॥

पलद्वयं प्रथमेन्हि एकैक पलवृद्धितः ।
यावद्दिनानि पूर्णानिपलान्यष्टादशोत्तमे ॥ १६ ॥
अधमेऽष्टपलानिस्युर्मध्यमेस्युश्चतुर्दश ।
शरन्निदाघयोर्नैव देयं नैवतु दापयेत् ॥ १७ ॥

पहिले दिन एक पल तैल पिलावे दूसरे दिन दो पल इस प्रकार १८ पल तक बढ़ावें यह उत्तम मात्रा हैं । अधम मात्रा ८ पल की समझें और मध्यम १४ पल को समझें परन्तु शरद, ग्रीष्ममें, न दें और न दिलावे ॥ १७ ॥

तैलेन वातिके रोगे शर्कराज्य पयोन्वितैः ।
कटुतैलैः कफेव्योषैः पित्ते च त्रिफलाम्बुभिः ॥१८॥

वातज रोगों में शकर, घृत, दूध के साथ कटु तैल दें। कफरोग में त्रिकुटायुक्त कटु तैल पिलावे, पित्तजरोगों में त्रिफला मोंथा युक्त कटु तैल दें ॥ १८ ॥

शालिषष्टिकदुग्धाशी हयो हि न जुगुप्सितः ।
पक्वजम्बूनिभोहेमवर्णोऽश्वो न जुगुप्सितः ॥ १६ ॥

घोड़े को शालि, शाठी, दुग्ध, देना उत्तम है। पके जामुन के से रंग वाला, सोने के रंग का घोड़ा उत्तम कहलाता है ॥ १६ ॥

अर्द्धप्रहरणेधुर्य्ये गुग्गुलुं प्राशयेद्धयम् ।
भोजयेत्पायसं दुग्धं सत्वरं सुस्थिरोहयः ॥ २० ॥

बोझा ढोने से या चोट लगने से थक जाने पर गूगल खिलाना, दूध, खीर, खिलाने से भी घोड़ा जल्द ठीक हो जाताहै ॥ २० ॥

विकारे भोजने दुग्धं शाल्यन्नं वातले ददेत् ।
कर्षं मांसरसैः पित्ते मधुमुद्गरसाज्यकैः ॥ २१ ॥

वात रोग में दूध, शालि का भोजज दें। या मांस रस दें पित्तज रोगों में एक तोला मधु मिला मूग का रस घृतयुक्त दें ॥ २१ ॥

कफेमुद्गान्कुलत्थान्वा कटुतिक्तान्कफेहये ।
बाधिर्य्ये व्याधिते ग्रासे त्रिदोषादौ तु गुग्गुलुः ॥२२॥

कफ रोग में मूंग, कुलथी, या कटुतिक्त रस कुटकीयुक्त दें। बधिरता या त्रिदोषज रोगों में गूगल देना चाहिये ॥ २२ ॥

घासैर्दूर्वा सर्वरोगे प्रथमेऽन्हिपलं ददेत्।
विबर्धयेत्ततः कर्षमेकान्हि पलपंचकम् ॥ २३ ॥

समस्त रोगों में दूब घास दें पहिले दिन १ पल दें फिर प्रति दिन एक तोला बढाते जांय जब तक पांच पल हो जावे ॥ २३ ॥

पाने च भोजनेचैव अशीति पलकं परम्।
मध्येषष्ठिश्चाधमे चत्वारिंशच्च भोगिषु ॥ २४ ॥

खाने पीने की मात्रा उत्तम मात्रा ८० पल की है और मध्यम मात्रा ६० पल की अधम मात्रा ४० पल की है ॥ २४ ॥

व्रणेकुष्टेषु खञ्जेषु त्रिफला काथसंयुतम्।
मन्दाग्नौशोथरोगे च गवां मूत्रेणयोजितम् ॥ २५ ॥

व्रण कुष्ट, खंजता में त्रिफला का क्वाथ दें मंदाग्नि, शोथरोग में त्रिफला गौ मूत्र के साथ दें ॥ २५ ॥

वातपित्ते व्रणेव्याधौ गोक्षीरं घृतसंयुतम्।
देयं कृशानां पुष्ट्यर्थं मांसैर्युक्तं च भोजनम् ॥ २६ ॥

वात पित्त और व्रण रोग में गौ दुग्ध घृत युक्त दें या कृशों को पुष्टि के अर्थ मासयुक्त भोजन दें ॥ २६ ॥

सुपिष्टायाः प्रदातव्यं गुडूच्यापलपंचकम्।
प्रभाते घृत संयुक्तं शरद्ग्रीष्मे च वाजिनाम् ॥ २७ ॥
रोगघ्नं पुष्टिदं चापि बलतेजोविबर्धनम्।
तदेवाश्वायदातव्यं क्षीरयुक्तमथापिवा ॥ २८ ॥

पांच पल पिसी हुई गुडूचा घृत में मिला प्रातः काल शरद

ग्रीष्म ऋतु में दें यह रोग नाशक पौष्टिक बल तेज बढाने वाली होती है अन्य ऋतुओं में उपरोक्त विधि से या दूध के साथ देनां चाहिये ॥ २८ ॥

गुडूचीकल्पयोगेन शतावर्य्यश्वगन्धयोः ।
चत्वारि त्रीणिमध्यस्य जघन्यस्य पलानि हि ॥२६॥

गुडूची की तरह शतावरी, असगंध भी दें इनकी मात्रा उत्तम ४ पल, ३ पल मध्यम १ पल की अधम हैं ॥ २६ ॥

अकस्माद्यत्र वाहानामेकरूपं यदाभवेत् ।
म्रियते च यदा क्षिप्रमुपसर्गं तमादिशेत् ॥ ३० ॥
होमाद्यै रक्षया विप्रभोजनै र्वलिकर्मणा ।
शान्त्योपसर्गशान्तिः स्याद्धरीतक्यादिकल्पतः ॥ ३१ ॥

एकदम घोड़ों का एक रूप हो जाना या जल्द २ मरना उपसर्ग कहलाता है । इस उपसर्ग को होम, ब्राह्मण भोजन, उपसर्ग शान्ति से या हरीतकी कल्प से शान्त करें ॥ ३०-३१ ॥

हरीतकी गवां मूत्रैस्तैलेन लवणान्विता ।
आदौ पंच ततः पंच वृद्धया पूर्ण शतावधि ।
उत्तमा च शतंमात्रास्त्वशीतिः षष्टिरेववा ॥ ३२ ॥

हर्रा ५ का चूर्ण नमक, तेल मिला गोमूत्र से दें, प्रतिदिन ५-५ हर्रा बढा सौ तक करें, यह सौ की उत्तम मात्रा है, अस्सी की मध्यम, साठ की अधम मात्रा होती है ॥ ३२ ॥

## अथ गजायुर्वेदः

गजायुर्वेद माख्यास्ये उक्ताः कल्पा गजेहिताः ।
गजेचतुर्गुणामात्रा स्ताभिर्गजरुगर्दनः ॥ ३३ ॥

अब गजायुर्वेद कहते हैं, इसमें भी उपरोक्त योग ही कार्य करते हैं, परन्तु मात्रा चौगुनी कर देना चाहिये ॥ ३३ ॥

गजोपसर्ग व्याधीनां शमनं शान्तिकर्मच ।
पूज यित्वासुरान्विप्रान्रत्नैर्गां कपिलां ददेत् ॥ ३४ ॥

गजोपसर्ग रोग में शान्ति कर्म देव ब्राह्मणों के पूजन से करें, या रत्न, एवं गौदान से करें ॥ ३४ ॥

दन्तिदन्तद्वयेमालां निबध्नीयादुपोषितः ।
मंत्रेणमंत्रितान्वैद्यो वचासिद्धार्थ कांस्तथा ॥ ३५ ॥

हाथी के दोनों दांतों में उपवास करके मंत्र से अभिमंत्रित कर माला या वच, सरसों को बांधे ॥ ३५ ॥

सूर्य्यादिशिवदुर्गाश्रीविष्णवर्चा रक्षयेद्गजम् ।
वलिंदद्याच्चभूतेभ्यः स्नापयेच्चचतुर्घटैः ॥ ३६ ॥

सूर्य, शिव, दुर्गा, लक्ष्मी, विष्णु की पूजा हाथी की रक्षा करती है, भूतों को वलि दें और चार घड़ों से स्नान करावें ॥ ३६ ॥

भोजनं मंत्रितं दद्याद्भस्मनोद्धूनयेद्गजम् ।
भूतरक्षा शुभामेध्या वारणं रक्षयेत्सदा ॥ ३७ ॥

मंत्रित भोजन दें और राख को उस पर डालें, भूत रक्षा हाथी के रक्षणमें सबसे उत्तम मानी गई है ॥ ३७ ॥

त्रिफलापंचकोले च दशमूलं विडंगकम् ।
शतावरी गुडूची च निम्बवासक किंशुकाः ॥ ३८ ॥
गजरोग विनाशाय हितोरूक्षः कषायकः ।
आयुर्वेदद्वयोक्तानामुक्तं संक्षेपसारतः ॥ ३९ ॥

त्रिफला, पंचकोल, दशमूल, विडंग, शतावर, गुडूची, नीव, अडूसा, ढांक का क्वाथ हाथियों के सभी रोगों को दूर कर देता है, अश्वायुर्वेद गजायुर्वेद में संक्षेप से सारभूत योग कहे जाते हैं ॥ ३९ ॥

इति श्रीगारुडे महापुराणे गजायुर्वेद निरूपणं नामैकोधिकद्विशततमो
ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूडामणि पं०विश्वेश्वरदयालुप्रणीतया
विश्वेश्वरी टीकया सनाथी कृतः समाप्तः ॥ २०१ ॥

---

॥ हरिरुवाच ॥

एकं पुनर्नवामूलमपामार्गस्य वा शिव । योनि शूले
सरसं योनिनिः क्षिप्तं वराङ्गस्यव्यथांहरेत् ॥
प्रसूतिवेदनाञ्चैव तरुणीनां व्यथां हरेत् ॥ १ ॥

अकेली पुनर्नवा की जड़ या अपामार्ग की जड़ ताजी लेकर योनि में रखने से प्रसूति समय की वेदना और तरुणता में हुई स्त्रियों की योनि वेदना का शमन होता है ॥ १ ॥

भूमिकुष्माण्डमूलं वै शालि चूर्णमथापिवा । स्तन्यवृद्धौ
सप्ताहं दुग्धपीतं स्यात्स्त्रीणां वहुपयस्करम् ॥ २ ॥

विदारीकंद का चूर्ण शालि चूर्ण दुग्ध के साथ सात दिन पीने से स्त्रियों के दूध को बहुत बढा देता है ॥ २ ॥

रुद्रेन्द्रवारुणी मूलं लेपात्स्त्रीस्तनवेदना । योनिशूले नश्येत्घृतपक्का च कार्यावश्यन्तु पोलिका ॥
भक्षितासामहेशान योनिशूलं विनाशयेत ॥ ३ ॥

इन्द्रायण मूल के लेप से स्तनवेदना नष्ट हो जाती है। घृत में पकाई पूड़ी खाने से योनिशूल दूर हो जाता है ॥ ३ ॥

प्रलेपिता कारवेल्ल मूलेनैव विनिर्गता । योनिभ्रंशहरं योनिः प्रवेशमायाति नात्रकार्या विचारणा ॥ ४ ॥

करेले की जड़ का लेप वाहर निकली हुई योनि को भीतर ले जाने वाला होता है इसमें संदेह नहीं ॥ ४ ॥

नीलीपटोलमूलानि साज्यानितिलवारिणा । जालगर्दभे पिष्टान्येषां प्रलेपोवैजालगर्दभरोगनुत् ॥ ५ ॥

नील, परवर, की जड़ तिल के पानी से पीस घृत मिला लेप करने से जालगर्दभ ( अग्नि वात ) रोग दूर होता है ॥ ५ ॥

पाठामूलं रुद्रपीतं पिष्टंतण्डुलवारिणा । मसूरिकायाम् पापरोगहरंस्याच्च कुष्टपानं तथैव च ॥ ६ ॥

हेरुद्र पाठामूल चावल धोवन के साथ पीने से चेचक दूर होती है इसी प्रकार कुष्ट पान से भी दूर हो जाती है ॥ ६ ॥

वास्योदकञ्च समधुपीतमन्तर्गतस्य वै ।
पापरोगस्यसंतापनिवृत्तिं कुरुते शिव ॥ ७ ॥

वासी जल में मधु मिला पीने से चेचक का भीतरी संताप दूर हो जाता है ॥ ७ ॥

घृततुल्या रुद्रलाक्षा पीता क्षीरेण वै सह । प्रदरे
प्रदरं हरते रोगं नात्रकार्या विचारणा ॥ ८ ॥

दूध के साथ हेशिव घृत मिला लाख का चूर्ण पीने से रक्त प्रदर रोग दूर होजाता है ॥ ८ ॥

द्विजयष्टीत्रिकटुकं चूर्णं पीतं हरेच्छिव । रजोरोधे
तिलकाथेनसंयुक्तं रक्तगुल्मं स्त्रिया हर ॥ ९ ॥
कुसुमस्य निवद्धञ्च तरुणीनां महेश्वर ॥ १० ॥

भारंगो, त्रिकुटा का चूर्ण तिल के क्वाथ के साथ पीने से हेशिव रक्त गुल्म, रजोरोध नष्ट हो जाता है ॥ ९ १० ॥

रक्तोत्पलस्य वैकन्दं शर्करा तिलसंयुतम् । गर्भपाते
पीतं स शर्करं स्त्रीणां धारयेद्गर्भपातनम् ॥ ११ ॥
रक्तस्रावस्यनाशः स्याच्छीतोदक निषेवणात् ।

रक्त कमलकन्द, तिल, शकर का चूर्ण शकर के शर्बत के साथ पीने से गर्भपात नष्ट होता है । ठंडा पानी पीने से रक्तस्राव मिट जाता है ॥ ११ ॥

पीतन्तुकाञ्जिकंरुद्र कथितं शरपुङ्खया । प्रसूतिकरम्
हिंगुसैन्धवसंयुक्तं शीघ्रं स्त्रीणां प्रसूतिकृत् । १२ ॥
मातुलुङ्गय वैमूलं कटिवद्धं प्रसूतिकृत् ॥ १३ ॥

शरपुंखा की जड़ को कांजी में पका हींग, सेंधा नमक मिला पिलाने से शीघ्र ही प्रसूदि होती है ॥ १२ ॥

विजौरा, नीबू की जड़ कमर में बांधने से भी प्रसूति ( बच्चा पैदा ) शीघ्र होता है ॥ १३ ॥

अपामार्गस्य वैमूलं गर्भवत्यास्तुनामतः। पुत्रपुत्रीपरीक्षा
उत्पाट्यमानेसकले पुत्रः स्यादन्यथा सुता ॥ १४ ॥

गर्भवती के नाम से अपामार्गमूल उखाड़ने से यदि पूरी जड़ उखड़ आवे तो पुत्र होगा कम उखड़ने से पुत्री होगी यह जाने ॥ १४ ॥

अपामार्गस्यवैमूले नारीणां शिरसिस्थिते। गर्भशूले
गर्भशूलं विनश्येत नात्रकार्या विचारणा ॥ १५ ॥

अपामार्ग की जड़ गर्भवती के शिर पर रखने से गर्भशूल दूर हो जाता है इसमें संदेह नहीं ॥ १५ ॥

कर्पूरमदनफलमधुकैः पूरितःशिवयोनि। संकोचे
योनिः शुभास्याद् वृद्धाया युवत्याः किं पुनर्हर ॥ १६ ॥

कपूर, मैनफल, मोरेठी का चूर्ण योनि में भरने से वृद्धा स्त्री की भी योनि संकुचित हो जाती है फिर जवान का तो कहना ही क्या है ॥१६

यस्यबालस्य तिलकः कृतो गौरोचनाख्यया। बालरोगे
शर्करा कुष्टपानं च दत्तंसस्याद्मनिर्भयः॥
विषभूतग्रहादिभ्यो व्याधिभ्यो बालकः शिव ॥ १७ ॥

जिस बालक के गौरोचन का तिलक किया जाय या शकर के साथ कूठ खिलाया जाय तो वह बालक ग्रह, भूत और रोगों से निर्भय रहता है ॥ १७ ॥

शंखनाभिवचाकुष्ट लोहानां धारणं सदा। बालोपसर्गे
बालानामुपसर्गेभ्योरुद्र रक्षाकरं भवेत् ॥ १८ ॥

शंखनाभि, वच, कूठ, लोह, का पहिराना बच्चों को उपसर्ग से बचाता है ॥ १८ ॥

पलाश चूर्णं समधु गव्याज्यामलकान्वितम् । बुद्धिवृद्धौ सविडङ्गं पीतमात्रं नरं कुर्य्यान्महामतिम् ॥ १६ ॥
मासे कैन महादेव जरामरण वर्जितः ॥ २० ॥

पलाश बीज चूर्ण, आमला, गौघृत, मधु, विडंग, का समान भाग किया चूर्ण एक मास खाने से बुद्धि बढ़ाता है और जरामरण को दूर करता है ॥ २० ॥

पलाश वीजं सघृतं तिलमध्वन्वितं समम् । जरामरणे सप्ताहं भक्षितं रुद्र जरां नर्यात संक्षयम् ॥ २१ ॥

ढांक के बीज, घृत, तिल, मधु, समान भाग मिला सात दिन खाने से बुढ़ापा नष्ट हो जाता है ॥ २१ ॥

रुद्रामलक चूर्णंवै मधुतैल घृतान्वितम् । रसायने जग्ध्वामासं युवा स्याच्च नरो वागीश्वरोभवेत् ॥ २२ ॥

हेरुद्र आमला चूर्ण, मधु, तैल, घृत युक्त एक मास खाने से मनुष्य बुद्धिमान और जवान हो जाता है ॥ २२ ॥

शिवामलक चूर्णंवै मधुना उदकेनवा ।
वलानि कुर्य्यान्नागस्य प्रत्यूषेभक्षितं शिव ॥ २३ ॥

हर्रा और आमले का चूर्ण मधु से या जल से प्रातः लेने पर हाथी का सा वल देता है ॥ २३ ॥

कुष्ट चूर्णं साज्य मधु प्रातर्जग्ध्वा भवेन्नरः ।
साक्षात्सुरभिर्देहोवै जीवेद्वर्षसहस्रकम् ॥ २४ ॥

कुष्ठ चूर्ण, घृत, मधु, के साथ प्रातः काल खाने से स्वर्ण समान देह वाला और हजार वर्ष जीने वाला होता है ॥ २४ ॥

माषस्यत्रिदलान्येव वितुषाणि महेश्वरः ।
घृत भावित शुष्काणि पयसा साधितानिवै ॥ २५ ॥
समध्वाज्यपयोभिश्च भक्षयित्वा च कामयेत् ।
स्त्रीणां शतं महादेव तत्क्षणान्नात्र संशयः ॥ २६ ॥

उरद की दाल पानी में भिगो छिलके रहित कर घृत से भूने जब लाल रंग हो जाय तब दूध डाल पकावें ठंडा होने पर मधु घृत मिला खाने से शीघ्र ही सौ स्त्रियों से रमण करने की इच्छा करता है ॥ २५ । २६ ॥

रसश्चैरण्डतैलेन गन्धकेन शुभोभवेत् ।
त्रिकालोदकसंघुष्टो बलकृद्भक्षणाद्भवेत् ॥ २७ ॥

पारद को गंधक के साथ मर्दन कर एरण्ड तैल में पकावें फिर त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिमद, ( दालचीनी, इलायची, पत्रज ) की भावना दें रखले और सेवन करने से भी बल बढ़ाता हैं ॥ २७ ॥

दुग्धं बितुषमाषैश्च शिम्बीबीजैश्चसाधितम् ।
अपामार्गस्यतैलेन पीतं स्त्रीशत कामकृत् ॥ २८ ॥

छिलके रहित उरद और कौंच बीज डाल पकाया दूध अपामार्ग तैल मिला पीने से सौ स्त्रियों से भोग करने वाला होता है ॥२८॥

इति श्री गारुड़े महापुराणे घृततैलादिवर्णनं नाम द्वि अधिक द्वि शततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥

# अथ गवायुर्वेदः

॥ हरिरुवाच ॥

या गौर्द्वेष्टिस्वकं वत्सं तस्या देयं स्वकंपयः ।
लवणेन समायुक्तं तस्या वत्सः प्रियो भवेत् ॥ १ ॥

भगवान बोले—जो गाय अपने बछड़े को प्यार नहीं करती हो, उसे उसी का दूध नमक मिला देने से बछड़े को प्यार करने लगती है ॥ १ ॥

शुनोऽस्थिकटिबद्धंहि महिषाणां गवांतथा ।
कृमिजालंपातयति सकलं नात्र संशयः ॥ २ ॥

कुत्ते की हड्डी कमर में बांधने से गाय और भैंसों के समस्त कृमि जाल को निकाल देता है ॥ २ ॥

गोजरायुनाभिपातःस्याद्गुञ्जामूलस्य भक्षणात् ॥ ३ ॥

गुञ्जामूल के खिलाने से गौ की जरायु ( आंवल ) निकल जाती है ॥ ३ ॥

वरुणफलस्य रसं करेण मथितं शिव ।
चतुष्पाद् द्विपदयोः कृमिजालं निपातयेत् ॥ ४ ॥

वरुण फल का रस हाथ से मल कर देने से मनुष्य और पशुओं के कृमि जाल को निकाल देता है ॥ ४ ॥

व्रणश्चशमयेद्रुद्र जयायाः पूरणात् तथा ।
गजमूत्रस्य वै पानं गोमहिष्युपसर्गनुत् ॥ ५ ॥

जयन्ती की लुगदी भरने से घाव नष्ट हो जाता है, हाथी का मूत्र पान कराने से गौ, भैंस के रोग दूर हो जाते हैं ॥ ५ ॥

समसूरं शालिबीजं पीतं तक्रेणघर्षितम् ।
क्षीरे गोमहिषस्यैव गोः पुंसश्चहितं भवेत् ।। ६ ।।

मसूर, शालिबीज, तक्र में पीस पीना, गाय, भैंस, स्त्री के दूध बढ़ाने में हितकर है ॥ ६ ॥

पत्रञ्चशरपुंखाया दत्तं सलवणं शिव ,
वारिस्फोटं हयानाञ्च केसराणां विनाशयेत् ॥ ७ ॥

शरपोंखा के पत्ते लवण मिला देने से घोड़े के शेरों के पानी वाले फोड़े नष्ट हो जाते ।। ७ ॥

घृतकुमारीपत्रमेव दत्तं स लवणं हर ।
तुरंगम केसराणां कण्डूर्नश्येन्नसंशयः ॥ ८ ॥

ग्वार पाठे का पत्ता नमक मिला खिलाने से घोड़ों की और शेर की खुजली दूर हो जाती है ॥ ८ ॥

इति श्री गारुडे महापुराणे गवायुर्वेद वर्णनं नाम त्रयोध्किक द्विशततमो ऽध्यायः श्रीमच्चिकित्सक चूड़ामणि पं० विश्वेश्वरदयालुप्रणीतया विश्वेश्वरी टीकया समलंकृतः समाप्तः ॥

---

## अथ निघण्टुकम्

### सूत उवाच

एवं धन्वन्तरिः प्राह सुश्रुताय च वैद्यकम ।
अथनामानि वक्ष्यामि औषधीनां समासतः ॥ १ ॥

सूतजी कहने लगे । जब इस प्रकार धन्वन्तरि जी सुश्रुत से वैद्यक कह चुके तब बोले अबहम संक्षेप से औषधियों के नाम कहते है ।

स्थिराविदारिगन्धा च शालपर्ण्यं शुमत्यपि ।
लांगली कलशी चैव क्रोष्टुपुच्छा गुहामतः ॥ २ ॥

शालिपर्णी को स्थिरा, विदारिगन्धा, अंशुमती कहते हैं। पृश्नि पर्णी को लांगली, कलशी, क्रोष्टुपुच्छा, गुहा कहते हैं ॥ २ ॥

पुनर्नवाथ वर्षाभूः कठिल्लकास्त्वरुणा तथा ।
एरण्डोरुबूका स्यादामण्डो वर्द्धमानकः ॥ ३ ॥

श्वेत पुनर्नवा को वर्षाभू और रक्त पुनर्नवा को कठिल्लक, अरुणा कहते हैं एरण्ड को उरुबूक, आमण्ड, बर्द्धमान कहते हैं ॥ ३ ॥

झषा नागबलाज्ञेया श्वदंष्ट्रा गोक्षुरोमतः ।
शतावरी वराभीरु पीवरीन्दीवरी वरी ॥ ४ ॥

नाग बलाको झषा कहते हैं। गुखुरु को गोक्षुर, श्वदंष्टा कहते हैं शतावरी को वरा, भीरु, पीवरी इन्दीवरी, वरी, कहते हैं ॥ ४ ॥

व्याघ्रीतु बृहती कृष्णा हंसपादी मधुस्रवा ।
धावनी कंटकारी स्यात्क्षुद्रा सिंही निदग्धिका ॥ ५ ॥

भटकटैया को व्याघ्री, वृहती, कृष्णा कहते हैं। हंसपदी को हंसपदी, मधुस्रवा कहते हैं। फलकटैया को धावनी, कंटकारी, क्षुद्रा, निदग्धिका कहते हैं ॥ ५ ॥

बृश्चिका ऽप्यमृता काली विषघ्नी सर्पदंष्ट्रिका ।
मर्कटी चात्मगुप्ता स्यादार्षेयी कपिकच्छुका ॥ ६ ॥

नाकुलीकंद को बृश्चिका, काली, विषघ्नी, सर्पदंष्ट्रिका कहते हैं। कौंच को मर्कटी, आत्मगुप्ता, आर्षेयी, कपिकच्छुका कहते हैं ॥ ६ ॥

मुद्गपर्णी क्षुद्रसहा माषपर्णी महा सहा ।
त्यजापरा च महाज्ञेया दण्डयोन्यंकसंज्ञया ॥ ७ ॥

मुग्दपर्णी को क्षुद्रसहा, माषपर्णी को महासहा कहते हैं । त्यजा, परा, महा, दण्डयोनि यह बड़े ( महान ) के नाम हैं ॥ ७ ॥

न्यग्रोधस्तु वटो ज्ञेयः अश्वत्थः कपिलो मतः ।
प्लक्षोऽथगर्दभाण्डः स्यात्पर्कटी च कपीतनः ॥ ८ ॥

वट को न्यग्रोध कहते हैं, पीपल को अश्वत्थ, कपिल कहते हैं । पाकर को प्लक्ष, गर्दभाण्ड, पर्कटी, कपीतन कहते हैं ॥ ८ ॥

पार्थस्तु ककुभो धन्वी विज्ञेयोऽर्जुननामभिः ।
नन्दीवृक्षः प्ररोहीस्यात्पुष्टकारीति चोच्यते ॥ ९ ॥

अर्जुन वृक्ष को पार्थ, ककुभ, धन्वी और अर्जुन के नामों से पहिचाने । नन्दी वृक्ष ( तुन ) गया पीपल को प्ररोही पुष्टिकारी भी कहते हैं ॥ ९ ॥

वंजुलो वेतसो ज्ञेयो भल्लातश्चाप्यरूष्करः ।
लोध्रःसावरको धृष्टस्तिरीटश्चापि कीर्त्तितः ।

वेंत को वंजुल, वेतस कहते हैं । भिलावे को भल्लातक, अरूष्कर कहते हैं । लोध को लोध्र, सावरक, धृष्ट, तिरीट कहते हैं ॥ १० ॥

वृहत्फला महाजम्बू ज्ञेया वालफलाऽपरा ॥ १० ॥
तृतीया जलजम्बूः स्यान्नादेयी साचकीर्त्तिता ।
कणा कृष्णोपकुञ्ची च शोण्डी मागधिकेति च ।
कथितापिप्पली तज्ज्ञैस्तन्मूलं ग्रंथिकं मतम् ॥ ११ ॥

बड़े फलवाली को महाजम्बू छोटे फलवाली को क्षुद्रजम्बू कहते हैं। तीसरी जलजामुन होती है, इसे नादेयी कहते हैं। पीपल को कणा, कृष्णा, उपकुल्या, शोण्डी, मागधी कहते हैं। पीपल की जड़ पीपरामूल कहलाती है, इसको ग्रन्थिक कहते हैं ॥ ११ ॥

ऊषणं मरिचं ज्ञेयं शुण्ठी विश्वं महौषधम् ।
व्योषं कटुत्रयं विद्यात्त्र्यूषणं तच्च कीर्त्यते ॥ १२ ॥

मरिच को ऊषण । सोंठ को विश्व महौषधम् कहते हैं। सोंठ, मिर्च, पीपल, को व्योष, कटुत्रय त्र्यूषण कहते हैं ॥ १२ ॥

लांगली हलिनी च स्याच्छ्रेयसी गजपिप्पली ।
त्रायन्ती त्रायमाणास्यान्निर्गुण्डीसुवहास्मृता ॥१३॥
चित्रकस्याच्छिखी वह्निरग्नि संज्ञाभि रुच्यते ॥ १४ ॥

करियारी को लांगली, हलिनी कहते हैं गुला बांस को भी कहते हैं। गजपीपर को श्रेयसी गजपिप्पली भी कहते हैं। त्रायमाणा (नखी) को त्रायन्ती और त्रायमाणा भी कहते हैं। संभालू को निर्गुण्डी और सुवहा कहते हैं ॥ १३ ॥

चित्रक को शिखी, वह्नि और अग्नि के नामोंसे पहिचानों ॥१४

षड्ग्रन्थोग्रावचाज्ञेया श्वेता हैमवतीतिच ।
कुटजो वृत्तकः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ १५ ॥
कलिंगेन्द्रयवारिष्ट तस्यबीजानि लक्षयेत् ॥ १५ ॥

बच को षड्ग्रन्था, बचा कहते हैं मीठी बच को श्वेता, हैमवती कहते हैं। कुढा को वृत्तक, शक्र, बत्सक, गिरिमल्लिका कहते हैं। इसके बीज कलिंग, इन्द्रयव अरिष्ट, के नाम से पुकारे जाते हैं ॥ १६ ॥

मुस्तको मेध नामास्यात्कौन्ती ज्ञेया हरेणुका ॥ १६ ॥

नागरमोथा को मुस्तक और मेघके नामों से जानो। रेणुका बीज को कौन्ती, हरेणुका कहते हैं ॥ १६ ॥

एलाच बहुला प्रोक्ता सूक्ष्मैला च तथात्रुटिः।
पद्मा भार्गी तथा कांजी ज्ञेया ब्राह्मणयष्टिका ॥ १७ ॥

बड़ी इलायची को एला, बहुला, और छोटो इलायची को त्रुटि कहते हैं। भार्गी, पद्मा, कांजी ब्राह्मणयष्टिका यह भारंगी के नाम है ॥ १७ ॥

मूर्वामधुरसा ज्ञेया तेजनी तिक्त बल्लिका।
महानिम्बो वृहन्निम्बो दीप्यकस्याद्यवानिका ॥ १८ ॥

मूर्वा ( मुरहरी ) को मूर्वा, मधुरसा, तेजनी, तिक्तवल्ली कहतेहैं, बकायन को महानिम्ब और वृहन्निंब कहते हैं। अजवाइन को दीप्यक और यवानी कहते हैं ॥ १८ ॥

विडंग क्रमिशत्रुः स्याद्रामठं हिंगुरुच्यते।
अजाजी जीरकं ज्ञेया कारवी चोपकुञ्चिका ॥ १९ ॥

विडंग को क्रमिशत्रु कहते हैं। हींग को रामठ, हिंङ्गु कहते है। सफेद जीरे को अजाजी, जीरकं और काले जीरे को कारवी, उपकुञ्चिका कहते है ॥ १९ ॥

विज्ञेया कटुकातिक्ता स्यात् तथा कटुकरोहिणी।
तगरं स्यान्नतं वक्रं चोचं त्वग्वराङ्गकम् ॥ २० ॥

कुटकी को कटुका, तिक्ता कटुरोहिणी कहते है तगर को नतं, वक्रं और दालचिनी को चोचं, त्वच, बराङ्गकम् कहते है ॥ २० ॥

उदीच्यं वालकं प्रोक्तं ह्रीवेरं चाम्बुनामभिः ।
पत्रकं दल संज्ञाभिश्चोरकं तस्करा ह्वयम् ॥ २१ ॥

सुगन्धवाला को उदीच्य, वालक, ह्रीवेर, जल के नाम से जानों पत्रज को दल नामों से और चोरक को तस्करादि नामों से जानो ॥ २१ ।

हेमाभं नाग संज्ञाभिर्नागकेसर उच्यते ।
असृक्कुंकुममाख्यातं तथा काश्मीरवाह्लिकम् ॥ २२

नागकेशर को हेमाभ और हाथी के नामों से जाने । केशर को असृक् ( रक्त ) कुंकुम, काश्मीर, वाह्लीक नामों से जाने ॥ २२ ॥

अयो लोहं समुद्दिष्टं योगिकै र्लोहनामभिः ।
पुरं, कुटन्नटं विद्यान्माहिषाक्षः पलङ्कषः ॥ २३ ॥

लोहे को अयस् और लोह के नामों से जाने । गूगल के पुरं, कुटन्नटं, महिषाक्ष, पलंकषः यह नाम है ॥ २३ ॥

काश्मरी कट्फला ज्ञेया श्री पर्णी चेति कीर्तिता ।
शल्लकी गजभक्ष्या च पत्री च सुरभी रसाः ॥ २४ ॥

खंभारी को काश्मरी, कट् फला, श्रीपर्णी कहते हैं । शल्लकी ( इसका गोंद शिला रस होता है ) इसे शल्लकी, गजभक्ष्या, पत्री, सुरभी, रसा नामों से जानो ॥ २४ ॥

धात्री मामलकी विद्यादक्षश्चैव विभीतकः ।
पथ्याभया च विज्ञेया पूतनाच हरीतकी ॥ २५ ॥

आमले को धात्री, आमलक कहते हैं । वहेड़े को विभीतक, अक्ष, कहते हैं । हर्रा को पथ्या, अभया, पूतना, हरीतकी कहते हैं ॥ २५ ॥

त्रिफला फलमेवोक्ता तच्चज्ञेयं फलत्रिकम् ।
उद्कीर्यो दीर्घवृन्त: करञ्जश्चेति कीर्तित: ॥ २६ ॥

त्रिफला ( हर्रा, बहेड़ा, आमला ) का फल, कहते त्रिफ
कंज को उदकीर्य्य, दीर्घवृन्त, करञ्ज कहते हैं ॥ २६ ॥

यष्टीयष्ट्याह्वयं प्रोक्तं मधुकं मधुयष्टिका ।
धातकी ताम्रपर्णीस्यात्समंगा कुञ्जरा मता ॥ २७ ॥

मोरेटी को यष्टी, मधुक, मधुयष्टी, यष्ट्याह्वयं कहते हैं । धाय के फूलों को धातकी, ताम्रपर्णी, समंगा, कुंजरा कहते हैं ॥ २७ ॥

सितं मलयजं शीतं गोशीर्षं शित चंदनम् ।
विद्याद्रक्तं चंदनं च द्वितीयं रक्त चन्दनम् ॥ २८ ॥

सफेद चंदन को सितं, मलयजं, शीतं, गोशीर्षं, सितचंदनम् कहते हैं । लाल चंदन को चंदन, रक्त चंदनम् कहते हैं ॥ २८ ॥

काकोली च स्मृता वीरा वयस्या चार्कपुष्पिका ।
शृङ्गी कर्कटशृङ्गी च महा घोषा च कीर्तिता ॥ २९ ॥

काकोली को वीरा, वयस्या, अर्कपुष्पिका कहते हैं । काकड़ासिंगी को शृङ्गी, कर्कट शृङ्गी, महाघोषा कहते हैं ॥ २९ ॥

तुगाक्षीरी शुभावांशी विज्ञेया बंशलोचना ।
मृद्वीका च स्मृता द्राक्षा तथा गोस्तनिकामता ॥ ३० ॥

बंशलोचन को तुगाक्षीरी, शुभा, वांसी, बंशलोचना कहते हैं । दाखों को ( मुनक्कों को ) मृद्वीका, द्राक्षा, गोस्तनी कहते हैं ॥ ३० ॥

स्यादुशीरं मृणालञ्च सेव्यं लामज्जकं तथा ।
शारिवा गोपवल्ली च गोपीभद्रा च कथ्यते ॥ ३१ ॥

खसको उशीर, मृणाल, सेव्यं, लामज्जकं कहते हैं। सफेद अनंतमूल को शारिवा, गोपवल्ली, गोपी कहते हैं ॥ ३१ ॥

दन्ता कटंकटेरी च ज्ञेया दारुनिशेति च ।
हरिद्रा रजनी प्रोक्ता पीतिका रात्रिनामिका ॥ ३२ ॥

जमालगोटा को दन्तो, और भद्रा कहते हैं। दारु हल्दी को कटङ्कटेरी, दारुनिशा कहते हैं। हल्दी को हरिद्रा, रजनी पीतिका, रात्रि के नामों सेजाने ॥ ३२ ॥

वृत्तादन्ती छिन्नरुहा नीलवल्ली रसामृता ।
वसुकोटश्च विज्ञेयो वाशिरः काम्पिल्ल कोमतः ॥३३॥

गुडूची को वृत्तादनी, छिन्नरुहा, नीलवल्ली, रसा, अमृता कहते हैं रक्त अमामार्ग को वसु, कटी, बशिर, कहते हैं। कबीला को काम्पिल्ल, वाशिर कहते हैं ॥ ३३ ॥

पाषणभेदकोऽरिष्टो ह्यश्मभित्कुट्टभेदकः ।
घण्टाको मुष्कको ज्ञेयो वचोऽथ सूचकोमतः ॥ ३४ ॥

पाखान भेद को पाषाण भेद, अरिष्ट, अश्मभित्, कुट्टभेदक कहते हैं। घंटापाटल को घण्टाक, मुष्कक कहते हैं बचः सूचक भी नाम है ॥ ३४ ॥

सुरसोवीजकश्चैव पीतशालोऽभिधीयते ।
वज्रवृत्तो महावृत्तः स्नुही स्नुक्च सुधा गुडा ॥ ३५ ॥

विजैसार (चिरोजी का वृत्त)इसे सुरस, वीजक, पीतशाल कहते हैं। सेंहुड को वज्रवृत्त, महावृत्त, स्नुही, स्नुक्, सुधा, गुडा कहते हैं ॥ ३५ ॥

तुलसी सुरसा विद्यादुपस्थेति च कथ्यते ।
कुठेरकोऽप्यर्जुनकः पर्णी सौगन्धि पर्णिकः ॥ ३६ ॥

तुलशी को सुरसा, तुलशी कहते हैं । बोबई वन तुलशी को कुठेरक, अर्जुनकः, पर्णी, सौगन्धिपर्णिक कहते हैं ॥ ३६ ॥

नीलश्चसिन्धुवारश्च निर्गुण्डीति सुगन्धिका: ।
ज्ञेया सुगन्धिपर्णीति वासन्ती कुलजेति च ॥३७ ॥

नीलपुष्पा संभालू को नील, सिन्धुवार, निर्गुण्डी, सुगन्धि का सुगन्धि पर्णी कहते हैं । वेला को बासन्ती, कुलजा भी कहते हैं ॥३७॥

कालीयकं पीतकाष्टं कतकाख्यः पुनः स्मृतः ॥
गायत्री खदिरो ज्ञेयस्तद्भेदः कन्दरो मतः ॥ ३८ ॥

पीत चंदन ( पतंग ) को कालीयक, पीतकाष्ट, कतकाख्य कहते हैं । कत्था ( खदिर ) को गायत्री, खदिर, कन्दर कहते हैं ॥ ३८ ॥

इन्दीवरं कुवलयं पद्मं नीलोत्पलं स्मृतम् ।
सौगन्धिकं शतदलमञ्जं कमलमुच्यते ॥ ३९ ॥

कमल को इन्दीवर, कुवलय, पद्म, नीलोत्पल, सौगन्धिक, शतदल, ग्ञ्ज, कमल, कहते हैं ॥ ३९ ॥

अजवर्णो भवेदूर्जो वाजिकर्णोऽश्वकर्णकः ।
श्लेष्मातकस्तथा शेलुर्बहुवारश्च कथ्यते ॥ ४० ॥

चीड़ ( जिससे राल निकलती है ) को अज वर्ण, अर्ज, बाजि-कर्ण अश्वकर्ण कहते हैं लभेरा को श्लेष्मातक, शेलुः बहुवार कहते हैं ॥ ४० ॥

सुनन्दकः ककुद्धद्रं छत्राकी छत्रसंज्ञका ।

कवरी कुम्भको धृष्टः त्रुद्‌धा धनकृत्तथा ॥ ४१ ॥

सौंफ को सुनन्दक, ककुद्दद्, छत्राकी, छत्रा कहते हैं। कृष्ण-धत्तूर को कवरी, कुम्भक, धृष्ट, त्रुद्धिया, धनकृत् कहते हैं ॥ ४१ ॥

कृष्णार्जकः करालश्च कालमालः प्रकीर्तितः ।

प्राचीवला नदीकान्ता काकजंघाथ वायसी ॥ ४२ ॥

काली तुलशी को कृष्णार्जक, कराल, कालमाल कहते हैं। काकजंघा को प्राचीवला, नदीकान्ता, काकजंघा, वायसी कहते हैं ॥४२॥

ज्ञेया मूषिकपर्णी तु भ्रमन्ती चाखुपर्णिका ।

विषमुष्टिद्रावणश्च केशमुष्टिरुदाहृता ॥ ४३ ॥

मूषाकर्णी को मूषिकपर्णी, भ्रमन्ती, आखुपर्णी कहते हैं। विष-मुष्टिशाक को विषमुष्टि, द्रावण, केशमुष्टि कहते हैं ॥ ४३ ॥

किलिही कुटकीं विद्यादन्तकश्चाम्लवेतसः ।

अश्वत्था वहुपत्रा च विधेया चामलक्यपि ॥ ४४ ॥

कुटकी को किलही भी कहते हैं। अमलवेंत को अम्लवेतस, अन्तक कहते हैं; आमले को अश्वत्था, बहुपत्रा, आमलकी कहते हैं ॥ ४४ ॥

अरूषकं पत्रशूकं त्तीरी राजादनं मतम् ।

महापत्रं दाडिमञ्च तमेव करकं वदेत् ॥ ४५ ॥

अडूसे को पत्रशूक कहते हैं। खिरनी को चीरी और राजादन कहते हैं। अनार को महापत्रं, दाडिमं, करकं कहते हैं ॥ ४५ ॥

मसूर विदला शष्पा कालिन्दीति निरुच्यते ।
कण्टकाख्या महाश्यामा वृत्तपादी च वक्ष्यते ॥ ४६ ॥

रक्तनिशोथ को मसूर विदला, शष्पा, कालिंदी कहते हैं । विधारे को कण्टकाख्या, महाश्यामा, वृत्तपादी कहते हैं ॥ ४६ ॥

विद्यादु कुम्भी निकुम्भा च त्रिभंडी त्रिपुटी त्रिवृत ।
सप्तला यवतिक्ता च चर्मा चर्मकसेति च ॥ ४७ ॥

जमालगोटे को निकुम्भा, कुम्भी कहते हैं । श्वेतनिशोथको त्रिभण्डी त्रिपुटी, त्रिवृत् कहते हैं । सातला ( सींकाकाई ) को ही यवतिक्ता, चर्मा, चर्मकषा कहते हैं ॥ ४७ ॥

शंखिनी सुकुमारी च तिक्ताक्षी चाक्षिपीलुकम् ।
गवाक्षी चामृता श्वेता गिरकर्णी गवादिनी ॥ ४८ ॥

शंखिनी ( सीतासरसों ) को शंखिनी, सुकुमारी, तिक्ताक्षी, अक्षिपीलुक कहते हैं । इन्द्रायण को गवाक्षी, अमृता, गिरिकर्णी, गवादिनी कहते हैं ॥ ४८ ॥

काम्पिल्लकोऽथ रक्ताङ्गो गुण्डा रोचनिकेतिच ।
हेमक्षीरी स्मृतापीता गौरी वै कालदुग्धिका ॥ ४९ ॥

कबीले को रक्तांग, गुण्डारोचनिका कहते हैं, सत्यानासी को पीता, हेमक्षीरी, गौरी, कालदुग्धिका कहते हैं ॥ ४९ ॥

गाङ्गेरुकी नागबला विशाला चेन्द्रवारुणी ।
तार्क्ष्यं शैलं नीलवर्णमञ्जनञ्चरसाञ्जनम् ॥ ५० ॥

नागवला को गंगेरुकी, नागवाला कहते हैं। इन्द्रायण को विशाला कहते हैं। रसोत को तार्च्य, शैलं, नीलाञ्जन, रसाञ्जन भी कहते हैं॥ ५० ॥

निर्यासो यश्च शाल्मल्या स मोचरससंज्ञकः।
प्रत्यकपुष्पी खरो ज्ञेय अपामार्गो मयूरकः॥ ५१ ॥

सेंमल के गोंद को मौचरस कहते हैं। अपामार्ग को प्रत्यकपुष्पी, खर, अपामार्ग, मयूरक कहते हैं॥ ५१ ॥

सिहांस्यवृषवासकमाटरुषकमादिशेत्।
जीवको जीवशाकश्च कर्बुरश्च शटीं विदुः॥ ५२ ॥

अडूसे को सिंहास्य, वृष, वासक, अटरूषक कहते हैं। जीवक को जीवक, जीवशाक कहते हैं, कचूर को कर्बूरं, शठी कहते हैं॥ ५२ ॥

कट्फलं सोमवृक्षः स्यादग्निगन्धा सुगन्धिका।
शताङ्गं शतपुष्पा च मिसिमधुरिका स्मृता॥ ५३ ॥

कैफरा को कट्फल, सोमवृक्ष कहते हैं। राल को अग्निगन्धा, सुगन्धिका कहते हैं। सौंफ को शतांग, शतपुष्पा, मिसि, मधुरिका कहते हैं॥ ५३ ॥

ज्ञेयं पुष्करमूलं च पुष्करं पुष्कराह्वयम्।
यासोऽथ धन्वयासश्च दुस्पर्शोऽथदुरालभा॥ ५४ ॥

पुष्करमूल को पुष्कर, पुष्कराह्वयं कहते हैं। जवासा को यास, धन्वयास, दुस्पर्श, दुरालभा कहते हैं॥ ५४ ॥

वाकुची सोमराजी च सोमवल्लीति कीर्त्तिता।
मार्कवः केशराजश्च भृङ्गराजो निगद्यते॥ ५५ ॥

वाकुची को सोमराजी, सोमवल्ली कहते हैं। घमरे को मार्कव, केशराज, भृङ्गराज् कहते हैं ॥ ५५ ॥

प्रोक्तस्त्वेडगजस्तज्ज्ञैश्चक्रमर्दकसंज्ञकः।
सुरंगी तगरः स्नायुः कलनासा तु वायसी ॥ ५६ ॥

पवांर को चक्रमर्द, एडगज कहते हैं। तगर को सुरङ्गी, तगर, स्नायु, कहते हैं काकनासा (कन्नाटेरे)को कलनासा, वायसी कहते हैं॥५६

महाकालः स्मृतो वेलस्तण्डुलीयो घनस्तथा।
इक्ष्वाकुस्तिक्ततुम्बी स्यात्तिक्तालाबुर्नि गद्यते ॥ ५७ ॥

वेल को महाकाल कहते हैं, चौराई को तण्डुलीयक, घन कहते हैं। कड़वी तोमी को इक्ष्वाकु, तिक्ततुम्बी, तिक्तालाबु कहते हैं ॥ ५७ ॥

धामार्गवोऽथ विज्ञेयः कोषातक्यथ यामिनी।
विद्यात्कोशातकीभेदं कृतवेधनसंज्ञका ॥ ५८ ॥
जीमूतकाख्या च खुड्डाकोदेवताडकः।
गृध्रादना गृध्रनखी हिंगुकाकादनी मता ॥ ५९ ॥

तरोई को धामार्ग, कोषातकी कहते हैं। कटुतरोई ( देवदाली ) को कृतवेधन, जीमूत, खुड्डाक, देवताड़ कहते हैं। नखी को गृध्रादना, गृध्रनखी कहते हैं। हींग को हिंगु, काकादनी कहते हैं ॥ ५८-५९ ॥

अश्वारिश्चैव बोद्धव्यः करवीरोऽश्वमारकः।
सिन्धुःसन्धवसिन्धूत्थमणिमन्थमुदाहृतम् ॥ ६० ॥

रक्तकनेल को अश्वारि, करवीर, अश्वमारक कहते हैं। सेंधेनमक को सिन्धु, सैन्धव, सिन्धूत्थ, मणिमन्थ कहते हैं ॥ ६० ॥

क्षारो यवाग्रजश्चैव यवक्षारोऽभिधीयते।
सर्जिका सर्जिकाक्षारो द्वितीयः परिकार्त्तितः॥ ६१॥

यवक्षार को क्षार, यवाग्रज, यवक्षार कहते हैं। सज्जीखार को सर्जिकाक्षार कहते हैं॥ ६१॥

काशीशं पुष्पकाशीशं विज्ञेयं नेत्रभेषजम्।
धातुकाशीश काशी च संज्ञेयं तच्च कीर्त्तितम्॥ ६२॥

कसीस को काशीश, पुष्पकाशीश, नेत्रभेषज, धातुकाशीश, काशी कहते हैं॥ ६२॥

सौराष्ट्री मृत्तिकाक्षारं कांक्षी वै पंकपर्पटी।
विद्यात्समाक्षिकं धातु ताप्यंताप्युत्थसंभवम्॥ ६३॥

गोपीचंदन को सौराष्ट्री, मृत्तिकाक्षार, कांक्षी, पंकपर्पटी कहते हैं। स्वर्णमाक्षिक को माक्षिकधातु, ताप्य, ताप्यसंभव कहते हैं॥ ६३॥

शिलामनः शिला ज्ञेया नेपाली कुलटीति च।
आलं मनस्तालकं वा हरितालं विनिर्दिशेत्॥ ६४॥

मनसिल को शिला, मनःशिला, नैपाली, कुलटी कहते हैं। हरताल को आल, मनः, तालक, हरिताल कहते हैं॥ ६४॥

गन्धको गन्धपाषाणो रसः पारद उच्यते।
ताम्रमौदुम्बरं शुल्वं विद्यान्म्लेच्छमुखं तथा॥ ६५॥

गन्धक को गन्धक, गन्धपाषाण कहते हैं। पारे को रस, पारद कहते हैं। तामें को ताम्र, औदुम्बर, शुल्व, म्लेच्छमुख कहते हैं॥ ६५॥

अद्रिसारस्त्वयस्तीक्ष्णं लोह कश्चापि कथ्यते।
माक्षिकं मधु च क्षौद्रं तच्चपुष्परसं स्मृतम्॥ ६६॥

लौह को अद्रसार, अयस्, तीक्ष्णं, लोहं कहते हैं। शहद को माक्षिक, मधु, क्षौद्र, पुष्परस कहते हैं ॥ ६६ ॥

ज्येष्टंतु सोदकं तत्स्यात्काञ्जिकन्तु सुवीरकम्।

सिता सितोपला चैव मत्स्यण्डा शर्करामता ॥ ६७ ॥

कांजी को ज्येष्टाम्बु, काञ्जिक, सौवीरक कहते हैं। मिश्री को सिता, सितोपला, कहते हैं। शकरको मत्स्यण्डी, शर्करा कहते हैं ॥६७॥

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगंधि त्रिजातकम्।

नागकेशर संयुक्तं तच्चतुर्जात मिष्यते ॥ ६८ ॥

दालचीनी, इलायची, पत्रज तीनों को त्रिसुगन्धि, त्रिजात कहते हैं। नागकेशर के साथ ही चातुर्जात कहलाता है ॥ ६८ ॥

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः।

कथितं पंचकोलञ्च कोलकं कोलसंज्ञया ॥ ६९ ॥

पीपर, पीपरामूर, चव्य, चित्रक, सोंठ को पंचकोल कहते हैं, इसे कोलसंज्ञक भी कहते हैं ॥ ६९ ॥

प्रियंगुः कंगुका ज्ञया कोरदूषश्च कोद्रवः।

त्रिपुटः पुटसंज्ञश्च कलायो लङ्कको मतः ॥ ७० ॥

सतीनो वर्त्तुलश्चैव वेणुश्चापिकीर्त्तितः।

पिचुकं पित्तलं चार्द्ध बिडाल पदकं तथा ॥ ७१ ॥

कंगुनी को कंगु, प्रियंगु कहते हैं। कोदों को कोरदूष, कोद्रव कहते हैं। चटरा को त्रिपुट, पुट कहते हैं। मटर को कलाय, लङ्कक, सतीन, वर्त्तुल, बेणु कहते हैं। तोले को पिचुक, पित्तलं, अर्द्ध, बिडालपदकं कहते हैं

विद्यात्कर्षं तथा चापि सुवर्णं कवलग्रहम् ।
पलार्द्धं शुक्तिमिच्छन्ति तथाष्टौमाषकास्त्वति ॥ ७२ ॥

दो तोले को कर्ष, सुवर्ण कवलग्रह कहते हैं। दो कर्ष का आधा पलहोता है इसे पलार्धं और शुक्ति कहतेहैं। तोला आठ मासेका होता है ॥

पल बिल्वं च मुष्टिः स्याद्द्वेपले प्रसृतं वदेत्।
अञ्जलिं कुडवश्चैव विद्यात्पल चतुष्टयम् ॥ ७३ ॥

पल को पल विल्व, मुष्टि कहते हैं । दो पलको प्रसृति अञ्जलि कहते हैं । चार पल को कुडव कहते हैं ॥ ७३ ॥

अष्टमानं पलान्यष्टौ तच्चमानमितिस्मृतम् ।
चतुर्भिः कुडवैप्रस्थं प्रस्थाश्चत्वार आढ़कः ॥ ७४ ॥

आठ पल का अष्टमान होता है । चार कुडव का प्रस्थ होता है। चार प्रस्थ ( सेर ) का आढक होता है ॥७४॥

कांशपात्रंश्च संप्रोक्तो द्रोणश्च चतुराढ़के ।
तुला पलशतं प्रोक्तं भारोविंशत्पलः स्मृतः ॥ ७५ ॥
मानमेवं विधं प्रोक्तं शुष्कद्रव्येषु पण्डितैः ।
द्रवद्रव्येषु चोद्दिष्टं द्विगुणं परिकीर्तितम् ॥ ७६ ॥

आढक को ही कंस, पात्र कहते हैं । चार आढक का एक द्रोण होता है । सौपल की तुला होती है । बीस पल का एक भार होता है । शुष्क द्रव्य का पंडितों ने इस प्रकार मान बतलाया है द्रव द्रव्यों में दूना लेना चाहिये ॥ ७६ ॥

भद्रदारुदेवकाष्टं दारुस्याद्देवदारुकम् ।
कुष्टमामयमाख्यातं मांसीश्च नलदंशनम् ॥ ७७ ॥

देवदारु को भद्रदारु, देवकाष्ट, दारु, देवदारु कहते हैं कूठ को कुष्ट और आमय कहते हैं। जटामांसी को मांसी, नलदंशन कहते हैं ७७

शङ्खः शुक्तिनखः शंखो व्याघ्रो व्याघ्र नखः स्मृतः।
पुरं पलङ्कषं विद्यान्महिषाक्षगुग्गुलुः ॥ ७८ ॥

शंख को शुक्ति नख, शख कहते हैं। नख को व्याघ्रनख, व्याघ्र कहते हैं। गूगल को पुरं, पलङ्कषं, महिषाक्ष गुग्गुलु कहते हैं ॥ ७८ ॥

रसो गन्धरसो बोलो सर्जः सर्जरसो मतः।

रस से पारद, शिलारस, बोल ( खूनखराबा ) का बोध होता है सर्ज से सर्जरस राल का बोध होता है ॥

प्रियंगु फलिनी श्यामा गौरी कान्तेति चोच्यते।

प्रियंगु को—फलिनी, श्यामा, गौरी, कान्ता कहते ॥ ९ ॥

करञ्जोनक्तमालः स्यात्पूतिकश्चिरविल्वकः।
शिग्रुशोभाञ्जनो नाम ज्ञानमानश्चकीर्तितः ॥ ८० ॥

कंज को—करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, चिरविल्व कहते हैं। सँजने को–शिग्रु, शोभांजन, ज्ञानमान कहते हैं ॥ ८० ॥

जया जयन्ती शरणी निर्गुण्डी सिन्धुवारकः।
मोरटा पीलुपर्णी च तुण्डीस्यात्तुण्डि केरिका ॥८१॥

जयन्ती को—जया, जयन्ती, शरणी कहते हैं। संभालू को सिन्धुवार, निर्गुण्डी कहते हैं। मूर्वा को मोरटा, पीलुपर्णी कहते हैं। कुन्दुरुकी को तुण्डी, तुण्डि केरिका कहते हैं ॥ ८१ ॥

मदनो गालवो बोधो घोटा घोटी च कथ्यते ।
चतुरंगुलसंपाको व्याधिघाताभि संज्ञकः ॥ ८२ ॥

मैनफल को—मदन, गालव, बोध, घोएटा, घोटी कहते हैं। अमलतास को चतुरंगुल, संपाक, व्याधिघात कहते हैं ॥ ८२ ॥

विद्यादारग्बधंराजवृक्षं रैवत संज्ञकम् ।
दन्तीकाकेन्दु तिक्तास्यात्कण्टकी च विकंकतः ॥ ८३ ॥

आरग्वध को–राजवृक्ष, रैवत सज्ञक कहते हैं। दन्ती को काकेन्दु तिक्ता कहते हैं विकंकत को–कंटकी, विकंकत कहते हैं ॥ ८३ ॥

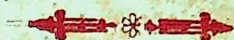
निम्बोऽरिष्टः समाख्यातः पटोलं कोलकं विदुः ।
वयस्था च विशल्या च छिन्ना छिन्नरुहामता ॥ ८४ ॥
वत्सादन्यमृता चेति गुडूचीनामसंग्रहः ।
किरात तिक्तकश्चैव भूनिम्बः काण्डतिक्तकः ॥ ८५ ॥

नींब को अरिष्ट कहते हैं। परवर को पटोल, कोल कहते हैं। गुडूचो को वयस्था, विशल्या, छिन्ना, छिन्नरुहा, वत्सादनी, अमृता कहते हैं। चिरायते को किराततिक्त, भूनिम्ब, काण्डतिक्त कहते हैं ॥ ८४–८५ ॥

इति श्री गारुड़े महापुराणे पूर्वखण्डे चतुरोत्तर द्विशततमोऽध्यायः २०४

श्रीमत् चिकित्सक चूडामणि पंडित विश्वेश्वरदयालु प्रणीतया
॥ विश्वेश्वरी टीकया सनाथीकृतः समाप्तः ॥

# सिद्ध विश्वेश्वर तन्त्र



समस्त तंत्र ग्रन्थों में उत्कृष्ट और सिद्धफलप्रद है इसमें कलियुग में सिद्ध होने वाले देवताओं के ही मंत्र हैं और सिद्ध होने की विधियां हैं जो अब तक गुप्त थीं वही सप्रमाण ग्रन्थान्तरों से पूर्ण कर प्रकाशित की गई है देखने योग्य हैं। मू० १) रु०।

अपने घर को स्वर्ग बनाने की इच्छा वालों के लिये

# दीर्घजीवन और कर्तव्य शिक्षण

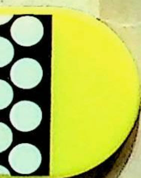


यह बहुत ही उपयोगी पुस्तकें हैं इनके जोड़ की पुस्तकें खोजने पर भी न मिलेंगी आरोग्यता और सच्चरित्रता दोनों का ही पूर्ण वर्णन इनमें है दोनों का मूल्य १।) रु० है।

मिलने का पता—

**श्री हरिहर प्रेस,**
बरालोकपुर-इटावा ( यू० पी० )

श्री हरिहर प्रेस, बरालोकपुर-इटावा (यू० पी०)



विषय संख्या ५३०.३ / ४ आगत नं० १६५१०

लेखक वैद्यराज पं० विशम्भरदयाल

शीर्षक अनुभूत योग माला

| दिनांक | सदस्य संख्या | दिनांक | सदस्य संख्या |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| दिनांक | सदस्य संख्या | दिनांक | सदस्य संख्या |
| --- | --- | --- | --- |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

